"मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज : एक अध्ययन"

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, नांदेड के मानव्यविद्या संकाय अंतर्गत पीएच.डी.(हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध-प्रबंध

:: शोध छात्र ::

श्री. वानखेडे विलास कोंडिबा
एम.ए., बी.एड.,एम.फिल, सेट (हिंदी)

:: शोध निर्देशक ::

डॉ. भगवान एन. जाधव
सहयोगी प्राध्यापक
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग एवं अनुसंधान केंद्र,
पीपल्स कॉलेज, नांदेड

:: अनुसंधान केंद्र ::

पीपल्स कॉलेज, नांदेड
दिसंबर-२०२१

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि शोध छात्र **श्री वानखेडे विलास कोंडिबा** ने मेरे निर्देशन में स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड से पीएच.डी. (हिंदी) की उपाधि के लिए **'मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज : एक अध्ययन'** शीर्षक पर शोध कार्य किया है।

श्री वानखेडे विलास कोंडिबा द्वारा प्रस्तुत यह शोध-प्रबंध उनके द्वारा संकलित तथ्यों पर आधारित एवं पूर्णतः मौलिक है। प्रस्तुत शोध-प्रबंध को पीएच. डी. उपाधि की हेतु अपनी संस्तुति सहित अग्रेसित करता हूँ।

मेरी जानकारी के अनुसार प्रस्तुत शोध-प्रबंध का कोई अंश या खंड इससे पूर्व कहीं पर प्रस्तुत नहीं किया गया है और न ही अन्यत्र कोई उपयोग किया गया है।

स्थान : नांदेड

शोध निदेशक

तिथि : / /२०२१

डॉ. भगवान एन. जाधव

सहयोगी प्राध्यापक

स्नातकोत्तर हिंदी विभाग एवं अनुसंधान केंद्र,

पीपल्स कॉलेज, नांदेड

प्राक्कथन

हर युग का साहित्यकार और साहित्य प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रुप से समाज से जुडा होता है। साहित्यकार समाज में व्याप्त प्रवृत्ति, विकृति एवं संस्कृति का अपने साहित्य में अंकन करता है। तत्कालीन समाज में घटित सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक घटनाओं को साहित्यकार अपनी रचना में अभिव्यक्त करता हैं। इस दृष्टि से साहित्य और इतिहास का अटुट संम्बध प्राचीन काल से ही रहा है। 'हिंदी-मराठी साहित्य के एतिहासिक वीरकाव्य का मुल तत्व प्राचीन संस्कृत साहित्य में परिलक्षित होता हैं। संस्कृत भाषा के प्राचीन साहित्य में पौराणिक वीर चरित्र नायकों के गुणों और कार्यों का वर्णन किया जाता था। इसी प्रकार संस्कृत साहित्य में पौराणिक वीर नायकों के स्थान पर मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में ऐतिहासिक वीर नायकों के गुणों और कार्यों का वर्णन किया जाने लगा। दोनों भाषा के साहित्यकारों ने ऐतिहासिक वीर नायकों के गुणों और कार्यों का अपने साहित्य में चित्रण किया है। मध्यकालीन हिंदी-मराठी के ऐतिहासिक वीरकाव्य के अधिकांश कवि किसी-न-किसी राजा के आश्रीत थे। मध्यकालीन हिंदी-मराठी के ऐतिहासिक वीरकाव्य में शेकडों कवियों ने अपने आश्रयदाता राजाओं के चरित्र का गान किया है। मध्यकालीन भारतीय राजाओं में छत्रपति शिवाजी महाराज एक प्रमुख राजा थे। दक्षिण भारत के महाराष्ट्र प्रदेश में छत्रपति शिवाजी महाराज का जन्म सन् १९ फरवरी, १६३० में हुआ था। शिवाजी महाराज के दरबारी और अन्य मध्यकालीन हिंदी-मराठी के साहित्यकारों ने ऐतिहासिक घटनाओं के साथ उनके व्यक्तित्व का स्वरुप साहित्य में अंकित किया है। छात्रकाल से ही मैं मध्यकालीन वीर और शौर्यवादी साहित्यिक कृतियों के प्रति आकर्षित रहा हूँ।

मध्यकालीन भारतीय साहित्य में शौर्य और वीरता की प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होती हैं। मध्यकालीन हिंदी-मराठी के भारतीय साहित्य में समकालीन राजाओं के शौर्य और वीरता का वर्णन किया गया हैं। मेरा शिवाजी महाराज के ऐतिहासिक प्रमुख घटनाओं का अध्ययन पाठशाला और महाविद्यालय के स्तर पर हुआ था। परंतु मेरे मन में शिवाजी महाराज पर लिखित शिवकालीन या मध्यकालीन साहित्यिक स्वरुप को जानने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई। इसलिए मैने शिवाजी महाराज से संबंधित मध्यकालीन हिंदी-मराठी के साहित्य का अध्ययन किया। शिवाजी महाराज पर मध्यकालीन दोनों भाषा के साहित्य में वर्णित स्वरुप का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए समग्र चर्चा के उपरांत 'मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज : एक अध्ययन' ही मेरे अनुसंधान का मुख्य विषय बना। इस विषय का अध्ययन सुक्ष्मता और योजनाबध्दता से संपन्न हो इसलिए शोध प्रबंध को निम्नलिखित पाँच अध्यायों में पूरा किया हैं।

प्रथम अध्याय : मध्यकालीन हिंदी-मराठी के ऐतिहासिक वीरकाव्य के प्रमुख कवि : संक्षिप्त परिचय :

प्रस्तुत अध्याय में भारतीय साहित्य में ऐतिहासिक वीरकाव्य की पृष्टभूमि के साथ-साथ आदिकालीन हिंदी-मराठी के वीरकाव्य को प्रस्तुत किया हैं। मध्यकालीन ऐतिहासिक वीरकाव्य का संक्षिप्त परिचय देकर इस अध्याय को दो चरणों में विभक्त किया हैं। अध्याय के प्रथम चरण में मध्यकालीन हिंदी साहित्य के ऐतिहासिक वीरकाव्य के प्रमुख पाँच कवियों का संक्षिप्त अध्ययन किया हैं। इस ऐतिहासिक प्रमुख पाँच कवियों में क्रमश: केशवदास, भूषण, लाल, सूदन और पदमाकर कवि हैं। प्रथम अध्याय के द्वितीय चरण में मध्यकालीन मराठी साहित्य के ऐतिहासिक वीरकाव्य के प्रमुख पाँच कवियों का संक्षिप्त अध्ययन किया है। इन प्रमुख पाँच कवियों में अनंत फंदी, होनाजी बाळा, परशराम, प्रभाकर और सगनभाऊ हैं। इन

दोनों भाषा के ऐतिहासिक वीरकाव्य के प्रमुख कवियों का व्यक्तित्व और कृतित्व संक्षिप्त रुप से स्पष्ट किया है।

द्वितीय अध्याय : मध्यकालीन हिंदी साहित्य में वर्णित छत्रपति शिवाजी महाराज का स्वरुप :

इस अध्याय को अध्ययन की सुविधा हेतु दो चरणों में विभक्त किया है। प्रस्तुत अध्याय के प्रथम चरण में मध्यकालीन हिंदी साहित्य में वर्णित शिवाजी महाराज के व्यक्तित्व का बहिरंग स्वरुप अंकित किया है। विभिन्न सात मुद्दों के आधार पर उनके बहिरंग स्वरुप को स्पष्ट किया हैं। इस अध्याय के द्वितीय चरण में मध्यकालीन हिंदी साहित्य में वर्णित शिवाजी महाराज के व्यक्तित्व का अंतरिक स्वरुप स्पष्ट किया है। शिवाजी महाराज के अंतरंग स्वरुप का वर्णन करने के लिए विभिन्न उन्नतीस मुद्दों का आधार लिया हैं।

तृतीय अध्याय : मध्यकालीन मराठी साहित्य में वर्णित छत्रपति शिवाजी महाराज का स्वरुप :

इस अध्याय में मध्यकालीन मराठी साहित्य में वर्णित शिवाजी महाराज के स्वरुप को स्पष्ट किया हैं। शिवाजी महाराज के स्वरुप को स्पष्ट करने के लिए इस अध्याय को दो चरणों में विभक्त किया है। अध्याय के प्रथम चरण में मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के बहिरंग स्वरुप को स्पष्ट किया है। विभिन्न नौं मुद्दों के आधार पर उनके बहिरंग स्वरुप का चित्रण किया है। इस अध्याय के द्वितीय चरण में मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के अंतरंग स्वरुप को स्पष्ट किया है। मध्यकालीन मराठी साहित्य के अंतरंग स्वरुप को स्पष्ट करने के लिए विभिन्न उन्नतीस मुद्दें का आधार लिया हैं।

चतुर्थ अध्याय : मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में वर्णित छत्रपति शिवाजी महाराज के स्वरुप का तुलनात्मक अध्ययन :

प्रस्तुत अध्याय में मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के स्वरुप को स्पष्ट किया हैं। इस अध्याय के अध्ययन की सुविधा हेतु दो चरण में विभक्त किया है। अध्याय के प्रथम चरण में मध्यकालीन हिंदी-मराठी के साहित्य में वर्णित शिवाजी महाराज के बहिरंग स्वरुप को स्पष्ट किया हैं। दोनों भाषा के साहित्य में वर्णित बहिरंग स्वरुप की तुलना कर उनके साम्य और भेद को स्पष्ट किया हैं। अध्याय के दूसरे चरण में मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में वर्णित शिवाजी महाराज के अंतरंग स्वरुप को स्पष्ट किया हैं। दोनों भाषा के साहित्य में वर्णित उनके अंतरंग स्वरुप का तुलनात्मक अध्ययन किया हैं। दो भाषाओं के मध्यकालीन साहित्य में शिवाजी महाराज के अंतरंग स्वरुप में साम्य और भेदों को उजागर किया है।

पंचम अध्याय : उपसंहार एवं निष्कर्ष :

अनुसंधान के अंतिम अध्याय में पूरे शोध प्रबंध के सभी अध्यायों का विवेचित सारांश उपसंहार के रुप में स्पष्ट किया हैं। समग्र अनुसंधान अध्ययन के कार्यकाल में आए हुए अनुभवों का विवेचन करके सकारात्मक दृष्टि से निष्कर्ष प्रस्तुत किए हैं।

शोध-छात्र

श्री. वानखेडे विलास कोंडिबा

प्रतिज्ञा-पत्र

मैं प्रतिज्ञा पूर्वक घोषित करता हूँ कि, **'मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज : एक अध्ययन'** इस विषय पर शोध प्रबंध शोध निर्देशक **प्रा. डॉ. भगवान एन. जाधव** पीपल्स कॉलेज, नांदेड के मार्गदर्शन में मैंने स्वंय स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, नांदेड के मानव्य विद्या संकाय अंतर्गत 'हिंदी' विषय में विद्यावाचस्पति (पीएच.डी.) उपाधि हेतु लिखा है।

यह शोध प्रबंध या इसका कोई भी भाग अन्यत्र कहीं भी या किसी भी उपाधि हेतु अथवा परीक्षा हेतु किसी अन्य विश्वविद्यालय में प्रस्तुत नहीं किया गया है।

स्थान : नांदेड

शोध छात्र

तिथि : / /२०२१

श्री. वानखेडे विलास कोंडिबा

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत अनुसंधान **'मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज : एक अध्ययन'** को सम्पन्न बनाने में जिन-जिन शुभचिंतकों तथा आत्मीयजनों की ओर से प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रुप से सहायता मिली उन सब के प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

प्रस्तुत अनुसंधान श्रध्देय गुरुवर्य प्रा. डॉ. भगवान एन. जाधव जी के निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरा हुआ हैं। इसलिए उनके प्रति मैं अपनी अगाध श्रध्दा सादर समर्पित करता हूँ। जिन्होंने मुझे इस अनुसंधान कार्य के लिए निरंतर प्रेरित करते हुए बडे ही स्नेह और प्रेम से मार्गदर्शन किया हैं। उन्होंने अपनी व्यस्तता के बावजुद मेरे लिए समय देकर अनुसंधान में आनेवाली कई समस्याओं का निराकरण किया हैं। प्रस्तुत अनुसंधान कार्य के लिए उनकी आलोचनात्मक दृष्टि के साथ-साथ मुझे आर्थिक सहयोग भी मिला हैं। यह मेरा सौभाग्य हैं कि, आपके कुशल निर्देशन में मुझे चिकित्सक दृष्टि प्राप्त हुई है। इसलिए मैं सदा उनके ऋण में रहना पसंद करुँगा।

इस अनुसंधान कार्य को पूरा करने में पीपल्य कॉलेज, नांदेड के विद्यमान प्रधानाचार्य एवं हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष मेरे गुरुवर्य प्रा. डॉ. रावसाहेब एम. जाधव जी का भी मैं बहुत आभारी हूँ। मेरे संस्था के उपप्रधानाचार्य प्रा. डॉ. सिध्देवाड जी और प्रा. डॉ. कोंपलवार जी का भी आभार प्रकट करना चाहुँगा। इस शोध कार्य के लिए हिंदी विभाग के अवकाश प्राप्त गुरवर्या डॉ. तस्निम पटेल जी, प्रो. रमा नवले जी और मेरे एम.फिल लघु शोध प्रबंध के निर्देशक प्रो. डॉ. एस.एल.मुनेश्वर जी इन तीनों गुरुओं के प्रति मैं धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। हिंदी

विभाग में कार्यरत प्रा. डॉ. मुकुंद जी कवडे जिन्होंने अनुसंधान के प्रति मेरी रुची बढ़ाकर निरंतर शोध कार्य के लिए प्रेरित किया है, इसलिए मैं उनका विशेष आभार प्रकट करता हूँ। हिंदी विभाग में तासिका तत्व पर कार्यरत मेरे सहयोगी डॉ. भीमराव घोडगे, डॉ. सैयद, डॉ. शरद कदम, प्रा. वर्षा मोरे, प्रा. प्रिति यादव, इन सभी का मैं धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। डॉ. बाबु गीरि, डॉ. भीमराव घोडगे, और प्रा. वर्षा मोरे जी का मैं विशेष आभारी रहूँगा क्योंकि उन्होंने इस शोध प्रबंध के वर्तनी की गलतियों में सुधार करने में सहायता की हैं। एन.एस.बी. कॉलेज, नांदेड के मराठी विभाग में तासिका तत्व पर कार्यरत प्रा. व्यंकटराव जी जाधव सर को भी में धन्यवाद देना चाहूँगा। उन्होंने मुझे मध्यकालीन मराठी साहित्य के इतिहास और कुछ रचनाओं को समझाने में बडा सहयोग किया है, इसलिए मैं उनके प्रति आभार प्रकट करता हूँ। मेरे संस्था में वाणिज्य विभाग के प्रा. डॉ. सी.के. हरनावळे जी, शरदचंद्र कॉलेज, नायगांव के हिंदी विभागाध्यक्ष मेरे गुरुवर्य प्रा. डॉ. वट्टमवार जी अवकाश प्राप्त गुरुवर्या प्रा. डॉ. इनामदार मॅडम, स्वा.रा.ती.म.विश्वविद्यालय, नांदेड के समाजशास्त्र संकुल में कार्यरत प्रा. डॉ. बाबुराव जाधव जी, पं. जवाहरलाल नेहरु कॉलेज, नांदेड के प्रा. डॉ. शिवाजी शिंदे आदि के प्रति मैं धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

पीपल्स कॉलेज, नांदेड के ग्रंथपाल प्रा. संदीप गायकवाड जी, जिन्होने मेरे अनुसंधान विषय के नए आयामों पर मेरे साथ समय-समय पर चर्चा करते रहे। प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष उनके साथ की गई चर्चा का लाभ भी मुझे इस अनुसंधान में हुआ है। उन्होंने मेरे अनुसंधान कार्य के लिए अवश्यक ग्रंथ सामग्री उपलब्ध कराई, इसलिए उनका मैं विशेष आभार प्रकट करता हूँ। ग्रंथालय के उनके अन्य सहकारियों में श्री. विजय सावणे, गोविंद कुंटे, सौ. वंदना झाडे, श्री देविदास हिंगोले इन सभी ने शोधकार्य के लिए आवश्यक ग्रंथ सामग्री ढूँढकर मुझे देने के लिए सहयोग किया इसलिए मैं उनका सदैव आभारी रहुँगा।

मैं अपने माता-पिता को प्रणाम करता हूँ, जिन्होंने मेरे इस कार्य की सफलता के लिए प्रतिकूल स्थितियों में जीवन यापन करनेवाली मेरी वंदनयी पूज्य माता जी सौ. लक्ष्मीबाई तथा पिताजी कोंडिबाराव वानखेडे इनके प्रति मैं जन्म-जन्मांतर तक ऋणी रहना पसंद करुँगा। मेरे प्रिय बडे भाई माधवराव वानखेडे तथा माँ समान भाभी सौ. प्रतिभा माधवराव वानखेडे जिन्होंने इस कार्य की सफलता के लिए हर संभव सहायता की है। मेरे प्रिय भाई और भाभी का मैं सदैव ऋण में रहना चाहुँगा। मेरी प्यारी एकलौती बहन वनमाला गोविंदराव जाधव एवं मित्रों के समान मेरे जीजा जी गोविंदराव जाधव इनके प्रति भी मैं आभार प्रकट करता हूँ। मेरी प्रिय भतीजी शिवानी वानखेडे, भतीजा प्रथमेश वानखेडे और मेरा प्यारा भांजा वेदांत जाधव, भांजी वेदिका जाधव आदि के ऋण में रहना पसंद करुँगा। मेरे पारिवारिक सदस्यों में चचरे भाई मारोतीराव वानखेडे, स्व. गोविंदराव वानखेडे, बालाजीराव वानखेडे, प्रल्हादराव वानखेडे, सह. शिक्षक सुधाकर जी वानखेडे, अम्रतराव वानखेडे इन सभी का मैं आभार प्रकट करता हूँ। कोई भी कार्य पारिवारिक सदस्यों के बीना संभव नहीं होता हैं। मेरा यह शोध कार्य भी मेरे परिवार सहयोग से सफल हुआ है, इसलिए मैं इन सभी पारिवारिक सदस्यों का आभार प्रकट करता हूँ।

इस शोधकार्य में मित्रों का प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोग रहा हैं। शोधकार्य को पूरा करने में मुझे डॉ. संजय भालेराव डॉ. सुनिल जाधव, प्रा. अनंद गिरी, सह. शिक्षक सदानंद ताटे, राजेश नरवाडे, राहुल कोंडेवाड, प्रा. सुनिल भद्रे, सह. शिक्षक रमेश वानखेडे, प्रा. उत्तम वानखेडे, भगवान वानखेडे, शिवाजी वानखेडे, गणेश वानखेडे, सुभाष वानखेडे, सुरेश आपतवाड आदि मित्रों का प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रुप में शोध कार्य को पूरा करने में सहयोग रहा है। इन सभी मित्रों के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ। इस शोधकार्य के लिए औरंगाबाद से कीर्ति प्रकाशन के प्रकाशक सुर्यकांत यादव,

कानपुर से पुजा प्रकाशन के प्रकाशक ब्रिजेश पांडे, देवकुमार पांडे आदि सभी के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

अल्पावधि में इस शोध प्रबंध कार्य को सुंदर ढ़ंग से तथा गलतियाँ विरहित और आकर्षक बनानेवाले अर्पित मल्टीसर्व्हीस, डी.टि.पी. टंकलेखन पौर्णिमानगर, नांदेड के डॉ. सुखदेव पाटील जी और उनकी सुविद्य पत्नी सौ. सुवर्णा सुखदेव पाटील का भी धन्यवाद ज्ञापित करना मैं अपना नैतिक कर्तव्य समझता हूँ।

साथ ही मैं उन सभी का भी आभार व्यक्त करना चाहूँगा कि, जिन्होंने मुझे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रुप में इस अनुसंधान कार्य के लिए सदा प्रेरित किया है।

शोध-छात्र

श्री. वानखेडे विलास कोंडिबा

एम.ए., बी.एड्, एम.फिल, सेट (हिंदी)

पीपल्स कॉलेज, नांदेड

अनुक्रमणिका

मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज : एक अध्ययन

अ. क्र.	अध्यायों का नाम	पृष्ठ सं.
१.	प्रथम अध्याय मध्यकालीन हिंदी-मराठी के ऐतिहासिक वीरकाव्य के प्रमुख कवि : संक्षिप्त परिचय	०१-७१
२.	द्वितीय अध्याय मध्यकालीन हिंदी साहित्य में वर्णित छत्रपति शिवाजी महाराज का स्वरुप	७२-१८५
३.	तृतीय अध्याय मध्यकालीन मराठी साहित्य में वर्णित छत्रपति शिवाजी महाराज का स्वरुप	१८६-२९१
४.	चतुर्थ अध्याय मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में वर्णित छत्रपति शिवाजी महाराज के स्वरुप का तुलनात्मक अध्ययन	२९२-३७४
५.	पंचम अध्याय उपसंहार एवं निष्कर्ष	३७५-३९३
६.	परिशिष्ट संदर्भग्रंथ-सूची	३९४-४००

प्रथम अध्याय

मध्यकालीन हिंदी-मराठी के ऐतिहासिक वीरकाव्य के प्रमुख कवि : संक्षिप्त परिचय

प्रथम अध्याय

मध्यकालीन हिंदी-मराठी के ऐतिहासिक वीरकाव्य के प्रमुख कवि : संक्षिप्त परिचय

१.०) वीर काव्य की पृष्टभूमि

१.१) आदिकालीन हिंदी का ऐतिहासिक वीरकाव्य

१.२) मध्यकालीन हिंदी का ऐतिहासिक वीरकाव्य

१.३) मध्यकालीन हिंदी के ऐतिहासिक वीरकाव्य के प्रमुख कवि

१.३.१. केशवदास

१.३.२. भूषण

१.३.३. लाल कवि

१.३.४. सूदन

१.३.५. पदमाकर

१.४) आदिकालीन मराठी का वीरकाव्य

१.५. मध्यकालीन मराठी का ऐतिहासिक वीरकाव्य

१.६) मध्यकालीन मराठी के ऐतिहासिक वीरकाव्य के प्रमुख कवि

१.६.१. अनंत फंदी

१.६.२. होनाजी बाळा

१.६.३. परशराम

१.६.४. प्रभाकर

१.६.५. सगनभाऊ

प्रथम अध्याय

मध्यकालीन हिंदी-मराठी के ऐतिहासिक वीरकाव्य के प्रमुख कवि : संक्षिप्त परिचय

१.०) वीर काव्य की पृष्टभूमि :

हर युग का साहित्यकार समाज की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, परिस्थितियों को प्रत्यक्ष या अपत्यक्ष रुप में प्रकट करता हैं। किसी भी साहित्यिक रचना को समझने के लिए उस काल की समग्र परिस्थितियों का अध्ययन करना पड़ता हैं। साहित्यकार जब रचना का निर्माण करता है, तो वह तत्कालीन समय की सामाजिक संस्कृति, विकृति और प्रवृत्ति को अभिव्यक्त करता है। साहित्यकार आखिर समाज से जुडा हुआ होता है। तत्कालीन समाज की व्यवस्था की छटा साहित्यिक रचना में अनायास आ ही जाती हैं।

मनुष्य की स्वाभाविक मूल प्रवृत्ति है कि, उसे अतीत के प्रति अत्याधिक जिज्ञासा होती हैं। एक साहित्यकार में समाज के अतीत के दर्शन और पुनर्निर्माण करने की कला होती हैं। इतिहास केवल अतीत में घटित घटनाओं को बुध्दि के आधार पर वस्तुनिष्ठता के साथ प्रकट करता हैं। साहित्यकार उसी घटनाओं को अपनी भावनात्मक कल्पनाशक्ति के द्वारा ऐतिहासिक सत्य को प्रकट करता हैं। इतिहास और साहित्य दोनों का काम एक ही होता है, सत्य को प्रकट करना। परंतु दोनों के अभिव्यक्ती में अंतर होता है। इस अभिव्यक्ति के अंतर को स्पष्ट करते हुए डॉ. धनंजय लिखते है-"इतिहास और साहित्य दोनों अतीत की घटनाओं की व्याख्या अपने-अपने ढंग से करते हैं। साहित्य घटना में कुछ अर्थ खोजने की चेष्ठा करता है, उसके पिछे की परिस्थितियों का पता लगाकर अपनी सभी खामियों-विशेषताओं के साथ इसमें प्रतिबिंबित हो उठता हैं। सही अर्थों में अतीत का पुनर्निर्माण साहित्यद्वारा ही होता है।"[१]

इस प्रकार साहित्यकार इतिहास में प्रचलित अतीत के सत्य की रक्षा करते हूए अपनी कल्पनाशक्ति से साहित्यिक कृति का सृजन करता हैं। मनुष्य के अतीत के प्रति जिज्ञासा वृत्ति के कारण उस काल के नायक और घटनाओं की कल्पना कर उत्साहित होता रहता हैं। इस जिज्ञासा की पूर्ति के लिए साहित्यकार की भी दृष्टि ऐतिहासिक साहित्य निर्माण की ओर प्रवृत्त होती हैं। साहित्य दो प्रकार का होता हैं। १. अस्थायी साहित्य २. स्थायी साहित्य। समाज में अस्थायी साहित्य कुछ सालों बाद समाज से उपेक्षित हो जाता हैं। स्थायी साहित्य जो हर युग में समाज को उपदेश, प्रेरणा, चेतना को युगों-युगों तक निर्माण करने में सहायक होता हैं। वीर साहित्य स्थायी साहित्य के अंतर्गत आता हैं। इस साहित्य में मनुष्य के पराक्रम, शौर्य और वीरता के गुणों को प्रकट किया है।

प्राचीन काल से ही मनुष्य का जीवन संघर्ष और संग्राम से जुडा रहा था। मनुष्य अपनी सुरक्षा के लिए किसी-न-किसी टोलियों का सहारा लेता था। हमेशा युध्द का माहौल बना रहता था। उस काल में मनुष्य का जीवन एक हाथ में तलवार तो दूसरी हाथ में गृहस्थी संभालता था। दो भिन्न-भिन्न टोलियों का युध्द होने पर विजित टोली पराजित टोलियों पर अपनी सत्ता स्थापित करती। अतत: हम कह सकते है कि, मनुष्य में युध्द वीरता की प्रवृत्ति मूल रुप में विद्यमान थी। 'वीर' शब्द मूल रुप से शूर अथवा योध्दा के लिए प्रयुक्त होता है। किसी एक नायक के वीरतापूर्ण गुणों का वर्णन किया जाता हैं। युध्द जो अस्त्र-शस्त्र, चलाने में कुशल हो, युध्द कला में निष्णात, यज्ञ, दान, दया, धर्मादी कर्मो में दक्ष रहनेवाला व्यक्ति वीर कहाँ जा सकता हैं। ऐसे वीरों के कर्म, गुणों को प्रकट करनेवाला साहित्य (काव्य) वीर साहित्य हैं। वीरकाव्य के संदर्भ में धीरेन्द्र वर्मा कहते हैं, "वीरकाव्य के अंतर्गत उन समस्त काव्यों को सम्मिलित किया जाता है, जिनका आधार ऐतिहासिक घटनाएँ है या जिनमें आश्रयदाताओं की कीर्ति, युध्द-सज्जा, गर्वोकित्याँ, युध्द एवं वीरतापूर्ण कार्य-कलाप का चित्रण किया गया हो।"[२]

अर्थात वीरकाव्य में कवि अपने ऐतिहासिक आश्रयदात्ता राजा के युध्द, यश, उनकी वीरता, पराक्रम का जो ऐतिहासिक घटना से संम्बध रखता उस ऐतिहासिक घटना को कवि अपने काव्य में वर्णित करता है।

वीर काव्यधारा साहित्य का अभिन्न अंग है। हर युग में वीर साहित्य की प्रवृत्ति परिलक्षित होती रही हैं। यह प्रवृत्ति कभी गौण रुप में रही तो कभी प्रधान रुप में रही है। साहित्य में इस काव्यधारा का अस्तित्व हर युग में रहा ही हैं। विश्व साहित्य में वीरकाव्य की चर्चा करे; तो युरोप के प्राचीन कवि 'होमर' के महाकाव्य में वीरता का सबल प्रमाण मिलता है। कवि होमर ने 'इलियड' यह महाकाव्य इ. सन. पूर्व सातवीं शताब्दि में लिखा है। यह एक ऐतिहासिक वीरकाव्य है। इस महाकाव्य में ट्राय राज्य के साथ ग्रीक लोगों के युध्द का वर्णन है। विकिपिडिया पर उपलब्ध जानकारी के अनुसार, "इस महाकाव्य में ट्राय के विजय और ध्वंस की कहानी तथा युनानी वीर एकलिंस के वीरत्व की गाथाएँ हैं। इलियड में जिस युग की घटनाओं का उल्लेख है उसको वीर युग कहते हैं।"[३] इस तरह 'होमर' कवि का काव्य भी विश्वसाहित्य में ऐतिहासिक घटनाओं के युध्द वर्णन का परिचय देता है। इसमें नायक के शौर्य और पराक्रम का चित्रण किया है। इसी तरह भारत में भी वीर साहित्य की प्रवृत्ति प्राचीन ग्रंथों में भी दिखाई देती है। ऐतिहासिक वीरकाव्य के मूल तत्व प्राचीन भारत के पौराणिक ग्रंथों में हैं। ऋग्वेद संहिता में कुछ मंत्रों में इंद्रदेव का गुणगाण इसलिए किया है, कि उन्होंने शत्रु राजा पर विजय प्राप्त की हैं। देव स्तुती के साथ विजयी राजा की प्रशंसा भी की हैं। 'रामायण', 'महाभारत' आदि संस्कृत के पौराणिक ग्रंथों में देवताओं के साथ विजयी राजा की प्रशंसा भी की है। देवासुर संग्राम घटना में सरस्वती तट पर वृत्र के मारे जाने का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता हैं। 'शतपथ ब्राह्मण' यह ग्रंथ ऋग्वेद कालीन वीरकाव्य का विकसित रुप हैं। पुराणों में देवासुर संवाद और युध्दों का वर्णन किया हैं। लौकिक संस्कृत साहित्य में 'रामायण', 'महाभारत' आदि पौराणिक ग्रंथों में देवताओं की गौरव गाथा और

उनके युध्दों का वर्णन दिखाई देता हैं। संस्कृत कवि वाल्मिकि ने 'रामायण' ग्रंथ में राम-रावन युध्द के प्रमुख घटनाओं में दोनों की वीरता का वर्णन किया हैं। इस ग्रंथ में प्रमुख नायक 'राम' को बना कर उनकी वीरता और पराक्रम को प्रस्तुत किया हैं। उसके बाद 'महाभारत' में भी व्यास कवि ने पांडव और कौरव के महाभंयकर कुरुक्षेत्र में हुए रणसंग्राम का वर्णन किया हैं। अन्य पौराणिक ग्रंथों में भी युध्दों का प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष रुप से वर्णन किया हैं। 'रामायण', महाभारत' ऐतिहासिक वीर काव्य न हो पर वीरकाव्य की परम्परा रुपी वृक्ष के बीज इससे जरुर दिखाई देते हैं। वीरकाव्य परंपरा की प्रवृत्ति को स्पष्ट करते हुए डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त कहते हैं, "वाल्मिकि का 'रामायण', अश्वघोष का 'बुध्द चरित्र' कालीदास का रघुवंश, चाहे इन्हें विशुध्द ऐतिहासिक काव्य न कहाँ जा सके किंतु वे ऐतिहासिक व्यक्तियों को लेकर काव्य रचना करने की प्रेरणा तो दे ही सकते हैं। इतना ही नहीं भारतीय नाट्यसाहित्य मालविकाग्नि मित्र, मुद्राराक्षस, आदि तो इतिहास और काव्य को और भी निकट ला देते हैं।"[४] स्पष्ट है कि, संस्कृत के पौराणिक काव्य ग्रंथ के साथ-साथ मालविकाग्नि और मुद्राराक्षस नाटकों ने साहित्य को ऐतिहासिकता के साथ जोडने में बडा योगदान रहा हैं। संस्कृत नाट्य साहित्य से ही आगे वीरकाव्य धारा प्रवाहित हुई हैं। पाली भाषा में भी ऐतिहासिक वीरकाव्य काव्य लिखा गया हैं। पाली भाषा साहित्य में बौध्द धर्म के विभिन्न सिध्दांत और दर्शन की प्रधानता है। इस काल के ग्रंथों में गौतम बुध्द और सम्राट अशोक के दानवीर, दयावीर के साथ उन्हें आदर्श नायक के रुप में प्रस्तुत किया हैं। परंतु इस काल में युध्दवीर वीरता का प्रमुख गुण है उसका वर्णन उपलब्ध नहीं हैं। इस काल में किसी ऐतिहासिक युध्दों का वर्णन पाली भाषा साहित्य में नहीं किया होगा। युध्दवीरता को लेकर इस काल में किसी प्रकार की कोई रचना उपलब्ध नहीं हैं। इस पाली भाषा साहित्य पर गौतम बुध्द जी के विचार और उपदेश का प्रभाव रहा हैं। वे अहिंसावादी विचारधारा के होने से युध्द वीरता का वर्णन साहित्य में भी नहीं हुआ होगा।

प्राकृत भाषा साहित्य में अधिकतर रचनाएँ चरित्र काव्य में ही लिखी हैं। इन साहित्य में जैन तिर्थकारों का जीवनव्रत और धार्मिक उपदेश देना प्रधान विषय रहा हैं। इस काल में लिखे गए रास काव्यों में कुछ रचनाओं में युध्द वर्णन, पराक्रम और वीरता का वर्णन दिखाई देता हैं। 'भरतेश्वर बाहुबलीदास' में भरतेश्वर और बाहुबली दोनों भाईयों के युध्दों का वर्णन वर्णित हैं। यदपि रचनाकार शालीभद्र सूरी का प्रमुख उद्देश वीरता की बजाए जीव हिंसा, कुल बान्धवों के नाश का दिग्दर्शन करना हैं। विजयसेन सूरी ने 'रेवंतगिरिरास' में जैन तिर्थकार रेवंतगिरी के ऐतिहासिक महत्व का प्रतिपादन करते हुए बीच-बीच में दानवीरों की संघ-यात्रा, उनकी दानवीरता, मूर्ति पराक्रम का वर्णन किया हैं। 'नेमिनाथरास' में मुनि सुमति गुणि ने जैन तिर्थकार के चरित का वर्णन ५८ छन्दों में करते समय नायक के पराक्रम, विवाह, वैराग्य, तपस्या आदि का वर्णन दिया हैं। 'कच्छुलीरास' में कच्छुली नगरी के पट्टाधिपति उदयसिंह सूरी के पराक्रम, धर्मप्रचार और आध्यात्मिक सिध्दि का प्रतिपादन अत्यंत संक्षेप में किया हैं।

अत: प्राकृत भाषा में रचित जैन तिर्थकारों के जीवनवृत में कुछ युध्द वीरता के प्रसंग आये भी हो पर उनका प्रमुख उद्देश ऐतिहासिक वीरकाव्य लिखना नहीं था। उन्होंने तिर्थकार का चरित्र और उनके जैन धर्म का उद्देश उपदेश करना यह था। फिर भी ऐतिहासिक वीरकाव्य परंपरा में रास काव्यों का महत्व निश्चित ही रहा हैं।

१.१) आदिकालीन हिंदी का ऐतिहासिक वीरकाव्य :

आदिकाल के समाजिक और राजनैतिक परिस्थितियों का अध्ययन करने से पता चलता है, कि देश पर विदेशी शासको के द्वारा आक्रमण किया गया हैं। १० वीं शताब्दि में महमूद गजनवी और १२ शती में मुहम्मद गौरी ने आक्रमण कर देश के अलग-अलग भागों पर अपनी सत्ता प्रस्थापित कर रहे थे। समकालीन राजा राष्ट्रियता के कारण आक्रमणकारियों का विरोध नहीं कर रहे थे। वे अपने

छोटे राज्य को ही देश समझते थे। देश में इस समय में गृहकलह भी शुरु हुआ था। इस युध्द के वातावरण से जनता त्रस्त रहती थी। असंतोष, निराशा से जनता अध्यात्म और ईश्वर की अराधना में लगी। इस काल के कवियों ने एक ओर योग, उपदेश, अध्यात्मक की बात कही तो दूसरी ओर युध्द और तलवार के गीत भी गाए हैं। कहा जाता है कि, इस काल के कवि कलम के साथ-साथ तलवार के भी धनी थे। अपने अश्रयदाता राजा के साथ युध्द क्षेत्र में भी जाते थे। सही अर्थ में इसी काल में ऐतिहासिक वीरकाव्य परंपरा का विकसित रुप दिखाई देता है। इस काल में चारण और भाट कवियों का योगदान रहा हैं। रासों काव्य की अधिकांश रचनाएँ ऐतिहासिक वीरकाव्य के अंतर्गत आती हैं।

हिंदी साहित्य के आदिकाल को आ. रामचंद्र शुक्ल ने 'वीरगाथा' काल कहाँ है। इसी तरह आ. विश्वनाथ इसे 'वीरकाल' कहते हैं। इस काल में चारण कवि के साहित्य की प्रधानता होने के कारण डॉ. ग्रियर्सन और रामकुमार वर्मा ने 'चारणकाल' नाम दिया है। इस काल में जैनेंत्तर कवियों ने किसी न किसी राजा के राजाश्रित कवि होने के कारण अपने आश्रयदाता के गुण, पराक्रम, शौर्य, ऐश्वर्य, का चित्रण भी काव्य में किया हैं। इस काल के प्रमुख चारण और भाट कवियों के महत्वपूर्ण साहित्यिक स्थान के बारे में डॉ. हरदेव बाहरी लिखते है कि, "महाभारत मे सूत और मागधों की वहीं स्थिति है जो हिंदी में चारणों और भाटों की।"[५] स्पष्ट है, की हिंदी साहित्य में संस्कृत साहित्य से ही वीरकाव्य धारा प्रवाहित हुई हैं। आदिकाल में चारण और भाटों ने इस वीरकाव्य परंपरा का निर्वाहन किया है। इस काल में चारण और भाट कवि राजा और सेनाओं में अपने गीतों के माध्यम से शक्ति का संचार भर देते थे। वे निरंतर युध्द में बलिदान के लिए राजा और सेना को प्रेरित करते थें। अपनी रचनाओं से अपने राजाओं के शौर्य और पराक्रम का वर्णन करते थे। इस काल में रासों काव्य महत्त्वपूर्ण है, जो ऐतिहासिक वीरकाव्य में गीना जाता हैं। लेकिन कुछ रासों काव्य रचनाओं की ऐतिहासिकता पर ही संदेह लगा हुआ है। पृथ्वीराज राजा के दरबारी कवि

चंद्रबरदाई ने 'पृथ्वीराज रासो' की रचना की है। इसमें राजा पृथ्वीराज के युध्दों का वर्णन हैं। हिंदी साहित्य का यह प्रथम 'महाकाव्य' है। इस महाकाव्य में पृथ्वीराज राजा की ऐतिहासिक घटनाएँ संदिग्ध हैं। इस काल के सात्यि में कल्पना और अतिशयोक्ति की अधिकता होने के कारण इसके ऐतिहासिकता पर संदेह बना हुआ हैं। इस रचना में युध्द वर्णन अत्यंत ऱ्हदयग्राही, ओजपूर्ण एवं मर्मस्पर्शी बन गया हैं। सुलतान गोरी पर पृथ्वीराज ने विजय प्राप्त कर सुलतान को बंदी बनाकर दिल्ली चले गए और चारों तरफ उनके यश की जय जयकार की आवाजे घुम रही हैं। जैसे-

"जै जै जै चहु आन। बजी रजजुग जुग बानी।

गज बन्धि बन्धि सुरतान को। गाय ढिल्ली ढिली नृपति।"[६]

अर्थात पृथ्वीराज और सुलतान गौरी के बीच घनघोर युध्द हुआ। युध्द में सुलतान की हार हो गयी। उस सुलतान को बंदी बनाकर हाथी से बांधकर पृथ्वीराज दिल्ली लेकर गये। इसी काल में 'परमाल रासों' के रचनाकर जगणिक सं. १२३० के आसपास चंदेलवंशी राजा परमर्दिदेव के दरबारी कवि रहे थे। इन्होंने 'आल्हा' और 'उदल' दो क्षत्रिय सामंतों की युध्द वीरता का वर्णन किया हैं। उत्तरप्रदेश में इसे 'अल्हखण्ड' नाम से जाना जाता हैं। 'खुमानरासों' काव्य में दलपति विजय जो मेवाड के राजा खुमान द्वितीय के शौर्य का वर्णन किया हैं। यह ५००० छन्दों का वीररस प्रधान ग्रंथ हैं। आ. शुक्ल ने इस रचना को वीरगाथाकाल में ९ शती की रचना माना हैं। कवि भट्ट केदार ने भी कन्नोज के सम्राट जयचंद के प्रताप और पराक्रम का विस्तृत वर्णन किया हैं।

इस प्रकार हिंदी के वीरगाथा काल में कवियों ने अपने आक्षयदाता की प्रशंसा और वीरता का वर्णन करते समय अतिशयोक्ति और काल्पना का सहारा लिया हैं। इसी दृष्टि से इन रचनाओं की ऐतिहासिकता पर प्रश्न उठना स्वाभाविक हैं। लेकिन इन रचनाओं को वीरकाव्य सौष्ठव की दृष्टि से उपेक्षित

नहीं कर सकते। कवियों ने अपने काव्य में वीर नायक के चरित्र के गुणों को उभारा हैं। इसके बाद इसी रचनाओं का प्रभाव मध्यकालीन हिंदी के ऐतिहासिक वीरकाव्य पर स्पष्ट रुप से दिखाई देता है।

१.२) मध्यकालीन हिंदी का ऐतिहासिक वीरकाव्य :

हिंदी साहित्य के मध्यकाल में भक्ति, रीति, नीति, श्रृंगार साहित्य के साथ-साथ ऐतिहासिक वीर काव्य धारा में भी लेखन हुआ हैं। देश के अधिकांश भागों पर मुगल सत्ता प्रस्थापित हो चुकी थी। देश का अधिक भू भाग विदेशी शासकों के हाथ में चला गया था। देश के अधिकांश राजा ने ऐश्वर्यता और विलासिता में अपना जीवन जीने का लक्ष्य बना लिया था। वे राजा विदेशी शासकों की अधिनता को स्वीकार करने में ही धन्यता मानते थें। इस कारण जनता भी निराश होकर धर्म, भक्ति और मुक्ति के मार्ग का आधार खोज रही थी। राजा लोग अपने छोटे-छोटे राज्य को अपना देश समझकर शासन करते थे। तो दूसरी ओर विदेशी शासक की सत्ता का विरोध कर, अपने स्वतंत्र स्वराज्य का निर्माण करनेवाले राजा भी हुए। जिसमें सम्राट अशोक, छ. शिवाजी महाराज, छत्रसाल राजा प्रमुख थे। इस काल में भी आदिकाल की तरह राजा के आश्रय में कवि रहते थे। अपने आश्रयदाताओं के यश, पराक्रम, कीर्ति, वीरता का ऐतिहासिक वर्णन काव्य के माध्यम से प्रकट कर अपने कर्तव्य का पालन कर रहें थे। यहाँ मध्यकालीन हिंदी में ऐतिहासिक वीरकाव्य का संक्षेप में अवलोकन करेंगे।

आदिकालीन वीर काव्य की परंपरा मध्यकाल में भी रही हैं, जिसमें कवि, जोधराज ने 'हम्मिर रासों' काव्य में रणथम्भोर के राव हम्मिर और अल्लाउद्दीन खिलजी के युध्द का वर्णन किया हैं। जटमल कवि ने 'गोराबादल की कथा' में पदमिनी के प्राप्ति के लिए अलाउद्दीन का सिंहल राज्य पर आक्रमण और अन्य राजा रत्नसेन के घटनाओं का वर्णन किया हैं। मान कवि के 'राज विलास' काव्य

में मेवाडाधिपति महाराणा राजसिंह के पूर्वजों से लेकर उनके जीवन के अंतिम ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन हैं। श्रीधर कवि ने 'जंगनामा' में फरुखसियर और जहाँदारशाह के युध्दों का वर्णन किया हैं। सदानंद कवि ने अपने आक्षयदाता भगवंतराय पर 'रासा भगवतसिंह' में आश्रयदाता के अंतिम युध्द का वर्णन किया हैं। गुलाब कवि ने 'करहिया कौ रायसों', में आश्रयदाता करहिया और भरतपुराधिश जवाहरसिंह के मध्य हुए युध्दों का चित्रण किया हैं। बादर कवि ने 'वीरमायण' में राव वीरम के पुत्र गोगा एवं सिंध के जोईया मुसलमानों के बीच के युध्द का वर्णन हैं। 'गाडण पसाइत' कवि के 'गुण जोधायण' में रणमल के वीर पुत्र जोधाजी की वीरता का निरुपण किया है। मेवाड के महाराणा जयसिंह के आश्रित कवि किशोरदास द्वारा रचित 'राजप्रकाश' में राजसिंह के वैभव, शौर्य एवं पराक्रम की व्यंजना की हैं। वीरभाण कवि ने 'राजरुपक' में अपने आक्षयदात्ता जोधपुर नरेश अभयसिंह और गुजरात के सूबेदार शेर विलदखाँ के मध्य हुए युध्द का चित्रण है। वृंध्द कवि ने 'वचनिका' में औरंगजेब के विरुध्द दारा की ओर से लडते हुए रुपसिंह का बलिदान और 'सत्त स्वरुप' में शहजाद मुअज्जम की ओर से लडते राजसिंह के बल, पराक्रम, शौर्य का चित्रण हुआ हैं।

मध्यकालीन ऐतिहासिक वीरकाव्य की रचनाओं के वर्णन में अतिशयोक्ति और कल्पनाओं के साथ-साथ ऐतिहासिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण हैं। राजश्रीत कवियों ने अपने राजा के ऐतिहासिक घटनाओं को अपने काव्य में अंकीत किया हैं। इस मध्यकालीन ऐतिहासिक वीर काव्यधारा के बारे में धीरेंद्र वर्मा कहते है कि, "हिंदी साहित्य की महत्वपूर्ण धारा हैं। सुचारु रुप में इसका अनुशीलन करके भारत के अतीत गौरव और शौर्यपूर्ण कार्य-कलाप से युक्त भारतीय इतिहास का नवनिर्माण किया जा सकता है।"[७] मध्यकालीन हिंदी साहित्य में ऐतिहासिक काव्य की ऐतिहासिकता, चरित्र, घटना, प्रसंग, वर्णन को नकारा नहीं जा सकता। उन काव्यों में वर्णित युध्द, पराक्रम, वीरता, इतिहास प्रसिध्द भी है। यह ऐतिहासिक साहित्य भारतीय इतिहास को समझने के लिए सहायक होगा।

अंत: साहित्य रचना होने से कोरी बौध्दिकता के बदले भावनात्मकता का होना स्वाभाविक हैं।

इस प्रकार ऐतिहासिक वीर काव्य की पृष्टभूमि में विश्व साहित्य के वीरकाव्य की तरह भारत में यहीं परंपरा प्राचीन रहीं हैं। भारत के पौराणिक ग्रंथों में इस ऐतिहासिक काव्यधारा के मूलभूत तत्व दिखाई देते हैं। भारत में ऐतिहासिक काव्यधारा के विकास में ऋग्वेद, पुराण, संस्कृत ग्रंथ, प्राकृत और अपभ्रंश से होकर हिंदी साहित्य में आयी हैं। मध्यकाल में ऐतिहासिक वीरकाव्य का अधिक विकसित रुप दिखाई देता हैं। यही परंपरा आगे आधुनिक काल में राष्ट्रिय स्वतंत्रता आंदोलन में प्रेरक बनी हैं। वीरता और राष्ट्रीयता की दृष्टि से यह वीर काव्य हिंदी के मध्यकालीन साहित्य में एक गौरवपूर्ण निधि हैं। जो मातृभूमि और राष्ट्रीयता का प्रतिनिधित्व करनेवाला काव्य हैं। यही काव्य धारा आधुनिकाल में राष्ट्रीय आंदोलन में सहायक रही है। यही वीर काव्यधारा आधुनिक हिंदी साहित्य में 'राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक काव्यधारा' के नाम से प्रवाहित हुई है।

१.३) मध्यकालीन हिंदी के ऐतिहासिक वीरकाव्य के प्रमुख कवि :

हिंदी साहित्य के आदिकाल में ऐतिहासिक वीरकाव्य लिखा गया हैं। उसी प्रकार अन्य आदिकालीन काव्यधाराओं के साथ-साथ मध्यकाल में ऐतिहासिक वीरकाव्यधारा भी प्रवाहित हुई। मध्यकाल में भक्ति, रीति, प्रीति, नीति और श्रृंगारिक साहित्य के साथ ऐतिहासिक वीरकाव्य भी लिखा गया हैं। ऐतिहासिक महापुरुषों की वीरता, पराक्रम, शौर्य का वर्णन इस काव्यधारा में किया गया हैं। इस प्रकार की काव्यधारा के जो कवि हुए है, उनमें से प्रमुख पाँच कवियों का व्यक्तित्व और कृतित्व का अध्ययन निम्नरुप से किया हैं।

१.३.१. केशवदास :

हिंदी साहित्य में आदिकाल के ऐतिहासिक वीरकाव्य की परंपरा का निर्वाह कवि केशवदास ने किया हैं। जहाँ वे एक ओर रीतिबध्द श्रृंगार काव्य परंपरा के प्रतिष्ठाता है वहीं दूसरी ओर मध्यकालीन ऐतिहासिक प्रबंध काव्य परंपरा के प्रतिष्ठाता भी हैं। इस प्रमुख मध्यकालीन कवि केशवदास के व्यक्तित्व और कृतित्व का संक्षिप्त परिचय निम्न रुप से हैं।

- **व्यक्तित्व :**

मध्यकालीन हिंदी साहित्य के अधिकांश कवियों का व्यक्तित्व और कृतित्व संदिग्ध है। कवि केशवदास के जीवन और साहित्यिक परिचय के बारे में मतभिन्नता विद्वानों में रही हैं। साहित्य में कवि केशवदास की उपलब्ध जानकारी के अनुसार उनके व्यक्तित्व के पहलुओं को निम्न रुप से स्पष्ट किया जा सकता है।

जन्म :

केशवदास के जन्म तिथि के बारे में विद्वानों में मतैक्य नहीं हैं। लाला भगवानदीन ने केशव का जन्म चैत्र संवत १६१८ वि. और मृत्यु सं. १६८० मानते हैं। हिंदी साहित्य के अधिकांश विद्वान जिसमें डॉ. टीकमसिंह तोमर ने 'हिंदी वीरकाव्य' में, डॉ. नगेंद्र का 'हिंदी साहित्य का बृह्रत इतिहास' आ. रामचंद्र शुक्ल का हिंदी साहित्य का इतिहास', धीरेन्द्र वर्मा का 'हिंदी साहित्य', डॉ. गणपतिचंद्र का 'हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास' आदि साहित्यिक इतिहासकारों ने केशवदास का जन्म सं. १६१२ माना गया हैं। इससे स्पष्ट होता है कि, केशवदास का जन्म ई. स. १५५५ को धनाढ्य जाति में पं. काशीनाथ के घर टेहरी नामक ग्राम में हुआ था।

नाम :

केशवदास का पूरा नाम केशव काशीनाथ मिश्र हैं। केशव के पितामह का नाम पं. कृष्णदत्त था। जिनका गोत्र 'भारद्वाज' है। केशव के पितामह पं. कृष्णदत्त जी राजा मधुकरशाह के राज्यत्वकाल में ओरछा आए थे। केशवदास के दादाजी और पिताजी दोनों भी संस्कृत के बडे विद्वान पंडित थे। केशवदास को अन्य दो भाई है। उनके बडे भाई का नाम बलभद्र और छोटे भाई का नाम कल्याणदास था। तीनों भी भाई कवि ही बने थे। उनके बडे भाई बलभद्र ने 'नखशिख' नामक काव्य लिखा है, तो छोटे भाई कल्यणदास ने हिंदी में 'स्फूट पदों' की रचना की हैं।

आश्रयदाता :

केशवदास के आश्रयदाता ओरछा नरेश महाराज रामसिंह के भाई इंद्रजीत सिंह के राजकवि थे। केशवदास लोकनीति, लोकव्यवहार और दरबारी नियमों के अच्छे ज्ञाता एवं जानकार थे। केशवदास उनके राजकवि के साथ-साथ मंत्र गुरु और मंत्री थे। राजा इंद्रजीत सिंह ने उन्हें २१ ग्राम देकर सम्मानीत भी किया था। इस संदर्भ में उन्होंने स्वयं कविप्रिया में केशवदास ने लिखा हैं।

"गुरु करि मान्यो इंद्रजित तन मन, कृपा विचारि।
ग्राम दये इकबीस तब, ताके पाँय पखारि।।"[८]

अर्थात राजा इंद्रजीत ने केशवदास को पहले अपना गुरु बनाया हैं। उन्होंने तन से मन, सेवा की और आर्शीवाद माँगा। उन्होंने मुझे २१ ग्राम देकर सम्मानीत किया है। राजा इंद्र जीत सिंह के राजदरबार में केशवदास का अत्याधिक सम्मान और ठाटबाट रहता था। एक बार राजा इंद्रजीत की नर्तकी रायप्रबीन को अकबर दरबार का बुलाया आया था। राजनर्तकी के द्वारा प्रस्ताव ठूकरा देने पर इंद्रजीत सिंह को एक करोड रुपये का जुर्माना लगाया जाता है। केशवदास बीरबल के

पास जाकर उनकी प्रशंसा कर अपने नीति चातुर्य से अकबर द्वारा लगाए गए एक करोड रुपये का दंड माफ करवा कर वापस आते है इसके अलावा केशवदास को छः लाख रुपय की हुडियाँ पुरस्कार स्वरुप मिल जाती हैं। राजा इंद्रजीत सिंह के कहने पर केशवदास ने रसिकप्रिया, कविप्रिया और रतनबावनी की रचना की है।

मृत्यु :

मध्यकाल में भक्ति, श्रृंगार, रीति के साथ-साथ आदिकालीन वीरकाव्य धारा को मध्यकाल में प्रस्थापित करने का काम कवि केशवदास ने किया है। तीस वर्ष तक ओरछा में रहने के बाद वहाँ से प्रयाग चले गए। वही उनकी मृत्यु सं. १६१७ या १६२३ के बीच हुई है।

- **कृक्तित्व :**

कवि केशवदास ने लक्षण-ग्रंथ ही नहीं लक्ष्य ग्रंथ भी लिखे हैं। श्रृंगार रस ही नहीं अन्य रसों की व्यंजना की हैं। उन्होंने मुक्त काव्य के साथ-साथ प्रबंध काव्य भी लिखा है। इनकी प्रमुख रचनाओं में रसिकप्रिया (१५९१ ई.) कविप्रिया (१६०१ ई.) रामचंद्रिका (१६०१ ई.) रतन बावनी (१६०७ ई.) वीरसिंह देव चरित (१६०७ ई) विज्ञान गीता (१६०७ ई.) जहाँगीर जसचंद्रिका (१६१२ ई.) नखशिख और छन्दमाल आदि हैं।

इनके प्रमुख रचनाओं में से ऐतिहासिक वीर काव्य की तीन रचनाएँ हैं। इन तीन रचनाओं में ऐतिहासिक व्यक्तियों का चरित्र चित्रण किया हैं। इन तीन रचनाओं के नाम १. रतन बावनी २. वीरसिंह देव चरित ३. जहाँगीर-जस-चंद्रिका हैं। इनके तीन ऐतिहासिक वीरकाव्य की कृतियों का निम्न रुप से संक्षेप में अध्ययन करेंगे।

रतन बावनी :

केशवदास ने रतनबावनी की रचना १६०७ में की हैं। डॉ. भगीरथ मिश्र ने इस रचना का ऐतिहासिक घटनाक्रम सं. १६३९ को मानते है। जब ओरछा के राजा मधुकरशाह के जेष्ठ पुत्र तथा इंद्रजीत सिंह के बडे भाई रत्नसिंह अकबर सेना के विरुध्द बंगाल प्रांत में हो रहे विद्रोह को शांत करने के लिए गए थे। उस समय राजा रत्नसिंह २४०० सेना की फौज लेकर एक विशाल ७००० सेना की फौज के विरुध्द अंत तक लडते रहे। राजा रत्नसिंह की वीरता पराक्रम का वर्णन इस रचना में हुआ है। युध्द के लिए जब रत्नसिंह निकलते है, तब एक ब्राह्मण उन्हें प्रतिष्ठा खो जाने की बात कहने पर रत्नसिंह उसे उत्तर देते हैं, कि "प्राणों के जाने पर फिर प्राण (जन्म) मिल सकता है, पर प्रतिष्ठा के जाने पर फिर प्रतिष्ठा नहीं मिलती।"[९] अर्थात युध्द करना क्षत्रिय धर्म का पालन करना और अपने प्राणों को अर्पित करने की बात रत्नसिंह कहते हैं। युध्द में पिछे हटना उन्हें अपमान लगता हैं। उसके बाद राम प्रकट होते है और उन्हें पूर्वजन्म की कथा बताते हैं। रत्नसिंह को भगवान प्रसन्न होने पर वह अपने परिवार और पीता मधुकरशाह की रक्षा का वर माँगता हैं। परंतु शत्रु सेना की शक्ति बहुत अधिक होने से अंत में वह अकेला ही रहता है। पर वह अंत तक हिम्मत नहीं हारता। शत्रुओं को मारते-मारते युध्द क्षेत्र में वीरगती को प्राप्त होता है।

इस प्रकार 'रतन बावनी' बावन छन्दों में विभक्त एक छोटा सा काव्य हैं। युध्द का चित्रण पारंपारिक परीपाठी पर किया है। इसमें भगवान गणेश की वंदना सहित ५३ उपलब्ध छंद हैं।

वीरसिंह देव चरित :

केशवदास ने इस ऐतिहासिक वीरकाव्य की रचना १६०७ ई. में की है। इस ग्रंथ में वीरसिंह देव और बुंदेलों का जीवन चरित्र उनका शौर्य युध्द राज्य प्राप्ति और ऐश्वर्य का वर्णन किया गया हैं। इस ग्रंथ की शुरुवात राजस्तुति,

मंगलाचरण और उसके बाद लोभ और दान के संवाद से होती हैं। उनके संवादों के पश्चात बुंदेला वंश की उत्पत्ति, वीरसिंह देव की प्रारंभिक विजय, मुराद की मृत्यु, सलीम का मेवाड से लौटकर विद्रोह, वीरसिंह-सलीम भेट, अबुल फजल की हत्या, वीरसिंह अकबर सेना के साथ युध्द का वर्णन करते हैं। युध्द वर्णन में वीरसिंह देव की वीरता के बारे में केशवदास लिखते हैं-

"बीरसिंघ देव पौरि बाहिर दपटि दौरि बैरिन,
को सैन बेर बीसक कचौदि गौ।"[१०]

अर्थात वीरसिंह देव युध्दभूमि में पैर जमाते ही शत्रु भाग जाता है और वीरसिंह शत्रु सेना को मार रहें है। वीरसिंह की वीरता और धाक शत्रुओं पर थी।

इस ग्रंथ में आगे मरियन मकानी मृत्यु, जहाँगीर का राज्यभिषक अब्दुला खाँ का ओरछा पर आक्रमण, वीरसिंह देव का बुंदेल खंड लौटना आदि ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन किया हैं। इस ग्रंथ की घटना, चरित्र, प्रसंग यथार्थ और वास्तविक हैं। इस ग्रंथ की ऐतिहासिकता के दृष्टि से आ. विश्वनाथ मिश्र कहते हैं कि, "वीरसिंह ने अबुल फजल का वध किया था। केशव ने घटना को जिस रुप में प्रस्तुत किया है उसमें वास्तविकता का अंश अधिक हैं, ऐसा मानने में कोई आपत्ति नहीं जान पडती।"[११] अंतः इस ग्रंथ की अधिकांश घटनाएँ ऐतिहासिक हैं, जो वीरसिंह देव की वीरता, पराक्रम, शौर्य, दान आदि का वर्णन किया हैं। इस वर्णन में कोरा इतिहास नहीं बल्कि ऐतिहासिक घटना प्रसंग को लेकर कल्पना और कहीं-कहीं अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन भी किया हैं। इस ग्रंथ की रचना ३३ अलग-अलग प्रकाशों में विभक्त हैं।

जहाँगीर जस चंद्रिका :

केशवदास के इस ग्रंथ में दो सौं छंद है। इसमें बादशाह जहाँगीर के वैभव, पराक्रम और न्याय की प्रशंसा की हैं। इसकी रचना सन १६१२ में की गई हैं। इस काव्य का आरंभ में मंगलाचरण से होता है। नायक के पुर्वजों का

गुणगाण करके भाग्य और उदय दोनों अपनी संवाद के माध्यम से अपनी श्रेष्ठता का दावा करते हैं। इनकी श्रेष्ठता का निर्णय जहाँगीर दरबार में होता हैं। जहाँगीर के दरबारी वैभव का वर्णन कवि केशवदास करते हैं। उनकी इतिहास प्रसिध्द न्याय व्यवस्था का चित्रण करते हैं। इसके साथ जहाँगीर के युध्दवीरता और दानवीरता रुप को अंकित किया हैं।

इस प्रकार उपर्युक्त केशवदास की तीनों भी रचनाएँ ऐतिहासिक वीरकाव्य के अंतर्गत आती हैं। केशवदास के कृतित्व का अध्ययन करने के पश्चात यह स्पष्ट हो जाता हैं कि, उन्होंने आदिकालीन भक्ति, रीति, श्रृंगार और वीरकाव्य को पुनरस्थापित किया हैं।

इसमें कोई संदेह नहीं हैं कि, उन्होंने आदिकालीन ऐतिहासिक वीरकाव्यधारा को रीतिकाल की ओर उन्मुख किया है। उनके बाद कवि भूषण, लाल, सुदन, पदमाकर जैसे अन्य बहुत सारे ऐतिहासिक वीरकाव्य की रचना करनेवाले कवियों ने इसे आगे आधुनिकाल तक पहुँचाया। लेकिन जिस प्रकार अपनी रचनाओं में केशवदास ने संवाद शैली को अपनाया था, उस स्थान पर अन्य कवि पहुँचे ही नहीं। उनका स्थान अकबर दरबार के नौ रत्नों में से एक था। हिंदी साहित्य के मध्यकाल के प्रसिध्द कवियों में सुरदास और तुलसीदास के पश्चात केशवदास का ही नाम आता है। केशव रीतिकाल के प्रस्तोता आचार्य कवि के रुप में हिंदी साहित्य में चिरस्मरणीय रहेंगें। इसके अलावा उनका नाम रीतिमुक्त ऐतिहासिक वीरकाव्य के प्रणेता रुप में भी महत्वपूर्ण है।

१.३.२. भूषण :

मध्यकालीन ऐतिहासिक वीरकाव्य के प्रमुख महत्वपूर्ण प्रसिध्द कवियों में से 'भूषण' कवि हैं। भूषण कवि ने अपने आश्रयदाता की सच्ची वीरता का वर्णन किया है। भूषण के साहित्य के अधिकांश घटना, प्रसंग, ऐतिहासिक हैं। अपने काव्य नायक को सामान्य जनता के सामने एक आदर्श राजा के रुप में प्रस्तुत

किया हैं। भूषण ने छ. शिवाजी और राजा छत्रसाल के सच्ची वीरता, पराक्रम और शौर्य का वर्णन किया हैं। भूषण कवि के व्यक्तित्व और कृतित्व का संक्षेप में निम्न रुप से अध्ययन करेंगे।

- **व्यक्तित्व :**

मैंने कुछ उपलब्ध प्रमाणों और अधिकांश विद्वानों के मतों का अध्ययन किया है। उस अध्ययन के पश्चात भूषण का व्यक्तित्व निम्न प्रकार हैं।

जन्म :

भूषण कवि के जन्म तिथि के बारे में विद्वानों में मतभिन्नता हैं। भूषण का जन्म आ. रामचंद्र शुक्ल सन् १६२३ ई. को मानते है, तो मिश्र बंधु सन् १६१४ ई. मानते हैं। इन से विपरित मतंव्य शिवसिंह सेंगर रखते हुए तो भूषण को शिवाजी के बदले छ. शाहु के समकालीन मानते हुए उनका जन्म सं. १७३८ मानते हैं। सेंगर का यह मत पूर्णतः गलत सिध्द हुआ हैं। क्योंकि स्वंय भूषण ने शिवराज भूषण ग्रंथ के समाप्ती तिथि सं. १७३० अर्थात १९७३ ई. बताते हैं। इसलिए भूषण शाहु के दरबारी न होकर छ. शिवाजी महाराज के दरबारी कवि है। भूषण जन्म स्थान, पिता, कुल के संदर्भ में 'शिवराज भूषण' में स्वंय लिखते- "दुज कन्नोज कुल कस्यपी, रतनाकर सुत धीर तीर। बसंत तिबिक्रमपुर सदा, तरनि तनुजा।"[१२]

अर्थात इनका जन्म कानपूर जिले के तिकवांपुर गाँव में हुआ है। उनके पिता का नाम 'रत्नाकर त्रिपाठी' था। केशवदास का गोत्र कश्यप कन्याकुब्ज ब्राह्मण परिवार था। यही उपलब्ध प्रमाण है, जो भूषण कवि ने स्वंय लिखा था। इससे स्पष्ट है कि, भूषण उत्तर भारते के कानपुर जिला तिकवांपुर गाँव के निवासी थे। उनके पिताका नाम 'रत्नाकर' था जो कन्या कुब्ज ब्राह्मण थे।

नाम :

साहित्यिक विद्वानों ने भूषण के मूल नाम अपने अपने मतों के अनुसार बताया है। डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त ने भूषण का नाम 'मतीराम', 'मुरलीधर', या 'पतिराम' रहने की संभावना जताई हैं। पं. हरिशंकर ने 'ब्रजभूषण', 'रामभूषण', 'गिरिजा भूषण' कहाँ हैं। कुँवर महेंद्र पालसिंह द्वारा सन १९३० के लेख का उल्लेख करते हुए पं. राजनारायण शर्माने भूषण का नाम 'पतिराम' बताया हैं। आ. विश्वनाथ प्रसाद जी ने शाहजी राजे के दरबारी कवि जयराम पिंडे और अन्य प्रमाणों की संभावना से उनका नाम 'घनश्याम' बताया हैं। इन सब विद्वानों के मंतव्य में भूषण के निश्चित नाम के बारे में अधिकृत प्रमाण नहीं मिला है। वे हिंदी साहित्य जगत में 'भूषण' के नाम से ही जाने जाते हैं। उनका मूल नाम भूषण नहीं है, बल्कि उन्हें राजा रुद्रसाल सोलंकी की द्वारा दी गई उपाधि है। इस उपाधि के बारे में स्वयं भूषण 'शिवराजभूषण' में स्पष्ट करते हुए लिखते हैं- "कुल सुलंक चित कुटपति, साहस सील समुद्र। कवि भूषण पदवी दई, ऱ्हदय राम सुत रुद्र।"[१३] अर्थात 'ऱ्हदयराम' के पुत्र चित्रकुट के राजा महान, साहसी, जो शील के समुद्र है। इसी ऱ्हदय राम के पुत्र राजा रुद्रशाह सोलंकी ने भूषण को 'कवि भूषण' की पदवी प्रदान की हैं। भूषण के मूल नाम के बारे में न उनके साहित्य में कुछ मिला न विद्वानों को कुछ प्रमाण मिला है। अतः वह हिंदी साहित्य और इतिहास में भी भूषण नाम से जाने पहचाने जाते हैं।

बाल्यकाल :

कवि भूषण के बचपन के बारे में अलग अलग किंवदंत्ती बताई जाती है। उन में से एक किंवदंत्ती के अनुसार भूषण बचपन से लेकर युवा अवस्था के प्रारंभ तक घर में निकम्में पडे रहते थे। मौज करना उन्हें बहुत पसंद था। अन्य तीन भाईयों में सबसे बडा भाई चिंतामणी जो दिल्ली के सम्राट के दरबार में कवि थे। चिंतामणी ही घर की पूरी जिम्मेदारी उठाते थे। मतिराम और निलकंठ भूषण के

छोटे भाई थे। किंवदतीं के अनुसार बचपन में भूषण जब एक बार खाना खाते वक्त अपनी भाभी (चिंतामणी की पत्नी) से दाल में नमक कम होने से नमक की माँग की थी। भाभी ने ताना मारते हुए कहाँ, "हाँ तो बहुत सा नमक कमाकर तुमने रखा है न, जो उठा लाऊँ।" इस व्यंग्योक्ति पर भूषण न सहने के कारण तत्काल भोजन छोडकर उठते हुए बोले, "अच्छा अब जब नमक कमाकर लायेंगे तभी यहाँ भोजन करेंगे।" ऐसा कहकर भूषण घर से निकलकर सोती हुई कवित्व शक्ति को विकसित कर प्रसिध्द अच्छे कवि बन गए। कहाँ जाता है कि, बडे कवि बनने के बाद में अपने घर हाथी पर नमक की बोरियाँ भीजवाँ दी थी।

मृत्यु :

भूषण की मृत्यु तिथि के बारें में विद्वानों में मतभिन्नता हैं। मध्यकालीन हिंदी साहित्य में एक स्वदेश, स्वाभिमान, एकात्मता, की भावना को जागृत करनेवाले ऐतिहासिक सत्य को बडी रोचकता के साथ प्रस्तुत करनेवाले कवि भूषण थे। स्वाभिमानी कवि भूषण की मृत्यु अधिकांश विद्वान सं. १७७२ (ई. १७१५) में मानते हैं।

आश्रयदाता :

विद्वानों ने भूषण के आश्रयदाताओं के नामों की संख्या १५ बताई हैं। इसका कारण यह है कि, उन आश्रयदाता राजाओं के उपर भूषण के साहित्य में एक या दो छंद उपलब्ध होते हैं। भूषण के साहित्य में केवल एक या दो छंद के आधार को प्रमाण मानकर उन्हें १५ आश्रयदाताओं के नामों के साथ जोडना गतल होगा। इस संदर्भ में ही डॉ. राजमल बोरा लिखते हैं कि "वास्तव में इन सबकों भूषण का आश्रयदाता नहीं मानना चाहिए। क्योंकि भूषण ने किसी-किसी के संम्बध में तो एक या दो छंद ही लिखे हैं। और ये प्रसंग वश या शिष्टाचार के नाते भी हो सकते हैं। फिर उनमें से कुछ भूषण के बादवाले भी हैं। जिनके समय में भूषण का वर्तमान रहना संदिग्ता हैं।"[१४] भूषण ने लिखे एक या दो छन्द से

उनकों आश्रयदाता कहना गलत होगा। उन्होंने आदरयुक्त भावना से इस प्रकार के एक-दो छंद लिखे है। इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि, कवि भूषण दक्षिण से अपनी मातृभूमि उत्तर भारत में जाते समय जब वह कही रुके हो, तो उसी अवकाश के समय ऐसे छंद लिखे होंगे इस प्रमुख रुप से कवि भूषण ने छ. शिवाजी महाराज और राजा छत्रसाल को अपने काव्य का नायक बनाकर उनके उपर साहित्यिक रचना लिखी हैं। इन दो राजओं में से राजा छत्रसाल पर उन्होंने केवल दस छंद ही लिखे हैं। परंतु शिवाजी महाराज पर उन्होंने शिवराजभूषण, शिवा बावनी और 'फुटकल पद' की रचना की हैं। इन दोनों राजाओं में से साहित्य के प्रमुख नायक शिवाजी महाराज ही थे। शिवाजी महाराज के ही राजदरबारी कवि भूषण थें। वे शिवाजी महाराज के आश्रय में सन् १६७३ तक रहे अपनी मातृभूमि उत्तर भारत जाते समय शिवराज भूषण नामक ऐतिहासिक वीर काव्य का ग्रंथ शिवाजी महाराज को भेट रुप में प्रदान किया था। अतः भूषण केवल शिवाजी महाराज के ही राज दरबारी कवि रहे थे।

- **कृतित्व :**

भूषण के कृतियों के बारें में विद्वानों में मत्तभिन्नता हैं। परंतु जो उपलब्ध ग्रंथ है उनमें शिवराज भूषण, शिवा बावनी, छत्रसाल दशक हैं। इसके अतिरिक्त उनके नाम पर भूषण हजारा, भूषण-उल्हास, दुषण उल्हास आदि ग्रंथ है जो वर्तमान में उपलब्ध नहीं हैं। इन रचनाओं के अतिरिक्त उनके नाम पर कुछ स्फुटकाव्य भी उपलब्ध है। कविभूषण के प्रमुख कृतियों का संक्षिप्त अध्ययन करेंगे।

शिवराज भूषण :

शिवाजी महाराज पर 'शिवराज भूषण' नायक काव्य की रचना की हैं। शिवराज भूषण इस ग्रंथ का मुख्य प्रधान उद्देश शिवाजी महाराज की वीरता, पराक्रम, यश का वर्णन करना रहा हैं। भूषण ने यह ग्रंथ लिखकर स्वयं शिवाजी

महाराज के हाथों में थमा दिया था। इस ग्रंथ के निर्माण तिथि को स्पष्ट करते हुए स्वयं भूषण लिखते हैं- "सुभ सत्रहसे तीस पर, बुध सुदि तेरस मान भूषण सिव-भूषन कियो, पढिये सुनो सुजान।"[१५]

अर्थात कवि भूषण ने शुभ संवत १७३० (श्रावण) सुदी तेरस बुधवार को शिवराज भूषण ग्रंथ लिखकर पूरा किया हैं। इस शिव-भूषण ग्रंथ को सभी गुणी, ज्ञानी लोग पढे और सुने। इस तिथि को अगर प्रमाण माने तो सन् १७७३ को कवि भूषण ने यह ग्रंथ लिखकर पूरा किया था। इस ग्रंथ की शुरुवात परंपरागत के अनुसार मंगलाचरण से की गई हैं। इस ग्रंथ के नायक शिवाजी महाराज की वीरता, पराक्रमी और उनके यश का वर्णन करते हुए अलंकार और उसके उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। इस ग्रंथ में कुल १०५ अलंकार है, जिसमें ९९ अर्थालंकार, चार शब्दालंकार और दो चित्र और संकर नामक अलंकार हैं। शिवाजी महाराज के समकालीन लिखा गया, यह हिंदी का ऐतिहासिक वीरकाव्य है। इस ग्रंथ की अधिकांश घटना, प्रसंग इतिहास से संम्बध रखते हैं।

शिवा बावनी :

इस रचना में कुल ५२ छंद हैं। शिवाजी महाराज के पराक्रम से शत्रु के उपर धाक (भय) का वर्णन हैं। यह वर्णन कुल ५२ छंदो में होने से इसका नाम 'शिवा बावनी' रखा है। इस ५२ छंदों में शिवाजी महाराज की वीरता, पराक्रम, शत्रुओं पर धाक, औरंगजेब की निंदा, उनके वंशजों की प्रशंसा, शत्रुपक्ष की दुर्दशा, शत्रु-स्त्री की दुर्दशा का वर्णन, हिंदू धर्म रक्षक रुप का वर्णन ५२ छंदों के माध्यम से किया हैं। अलंकारों के बंधनों से जिस ओजस्वी वाणी की कमियाँ 'शिवराजभूषण में रही थी, उसे शिवा बावनी ग्रंथ ने पूरा किया था। यह मुक्त रुप से लिखने के कारण इन छंदों में वीर, रौद्र तथा भयानक रसों के कई अनुठे उदाहरण मिलते हैं।

छत्रसाल दशक :

इस ग्रंथ में बुंदेल के राजा छत्रसाल के युध्द की प्रशंसा दस छंदों में की गई हैं। भूषण कवि दक्षिण से उत्तर आते-जाते समय राजा छत्रसाल के दरबार में कुछ दिन ठहरते थे। इसी अवकाश के समय में उन्होंने इस छंदों की रचना की हैं। दस ग्रंथ के इस छंद और दो दोहे में छत्रसाल हाडा और छत्रसाल बुंदेला की तुलना की गई है। उसके बाद नौ कवित्त और एक छप्पय में वीर बुंदेला की प्रशंसा की हैं। इस छोटकाव्य ग्रंथ में बुंदेला युध्दों के यश का गान किया है। इसी राजा छत्रसाल ने भूषण के सम्मानित कर वे राज्य से जाते समय उनके पालखी को स्वयं अपना कंधा लगाया था।

फुटकर काव्य :

उपर्युक्त तीन संग्रहों के अतिरिक्त भूषण के कुछ स्फुट पद भी प्राप्त होते हैं। इस प्राप्त पदों की संख्या ६५ मानी जाती हैं। उस में से ३६ पद शिवाजी महाराज के वीरता, पराक्रम, किसी न किसी युध्द की घटना से सम्बधित हैं। उनके स्फुट पदों में दस छंद श्रृंगार को अंकित करते हैं। उसके बाद चार पद शिवाजी महाराज के पोते शाहुजी पर लिखे हैं। अन्य अलग-अलग राजाओं पर कुछ एक-दो पदों को लिखा हैं। उसमें शेष पदों में सोलंकी नरेश, रिवाँ नरेश, राजा जयसिंह का पुत्र रामसिंह, पौरचा नरेश, हाडा के राजा बुध्दसिंह, कुमाउँ नरेश, दारा तथा औरंगेज के युध्द पर एक छंद लिखा गया हैं। शिवाजी महाराज पर लिखे छंदों में उनके धाक का वर्णन है। इसके साथ अंतिम युध्द और ऐतिहासिक घटनाओं में जैसे कर्नाटक पर चढाई, गोवलकुंडा के सुलतान से कर वसुल करना, बीजापुर की स्वंय युध्द में जाकर रक्षा करना आदि का उल्लेख है।

संक्षेप में, अगर कहाँ जाए तो भूषण के पहले किसी भी कवियों की रचनाओं में शुध्द जातीय भावनाओं की प्रधानता नहीं थी। उन कवियों के अनुसार कामिनी (स्त्री) ही युध्द का कारण हो सकती थी। भूषण के साहित्य में पहली बार

हिंदू जाति का नाम आया हैं। उन्होंने औरंगजेब मुस्लिम शासक है, इसलिए उनका विरोध नहीं किया बल्कि वह क्रूर, अत्याचारी, नीतिभष्ट्र था। इसलिए उसका विरोध किया है। भूषण ने अपने साहित्य में अधिकांश ऐतिहासिक घटनाओं को प्रकट किया हैं। भूषण के साहित्य में शिवाजी महाराज के संदर्भ में घटना प्रसंग को व्यवस्थित तिथि क्रम के रुप में जोड दिया जाए, तो एक ऐतिहासिक जीवनी बन सकती हैं। इस दृष्टि से भी ऐतिहासिक अनुसंधान महत्वपूर्ण माना जा सकता है।

इस प्रकार मध्यकालीन हिंदी साहित्य में केशवदास के बाद भूषण ने ऐतिहासिक वीरकाव्य की परंपरा का अनुसरण किया है। हिंदी साहित्य के इतिहासकार मिश्रबंधु कवि भूषण को 'हिंदी नवरत्न' में पाँचवा स्थान देते हैं। भूषण के पहले तुलसीदास, सुरदास, देव, बिहारी का नाम आता है। भूषण शिवाजी महाराज के दरबारी कवि थे। उन्होंने अन्य कवियों की तरह राजा की झूठीं प्रशंसा नहीं की है। उन्होंने बुंदेला के छत्रसाल राजा पर दस छंद लिखे। ऱ्हदयराम के पुत्र रुद्रसाल सोलंकी ने भूषण को 'कविभूषण' की उपाधि दी। शिवाजी महाराज ने भी भूषण को 'कवि कुलसचिव' पद नियुक्त किया हैं। शिवाजी महाराज का पराक्रम, वीरता की अमर गाथा शिवराज भूषण में अंकित हुई हैं। अपनी रचनाओं में शिवकालीन युग का चित्रण कर समकालीन समाज जीवन और इतिहास को अपने छंद में पिरोया था। कवि भूषण स्पष्टवादीता, स्वाभिमान, सत्य का पक्षधर, अन्याय के विरोधी, एकात्मता, स्वदेश, मातृभूमि प्रेम के प्रति चेतना जागृत करनेवाले एकमात्र मध्यकालीन कवि थे। इस दृष्टि से कवि भूषण हिंदी साहित्य जगत को हमेशा याद रहेंगे।

१.३.३. लाल कवि :

मध्यकालीन हिंदी के ऐतिहासिक वीरकाव्य की परंपरा में लाल कवि का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं। उन्होंने इतिहास प्रसिध्द बुंदेला के राजा

'छत्रसाल' की वीरता, कवि, पराक्रम, शौर्य, यश का वर्णन 'छत्रप्रकाश' नामक रचना में किया हैं। लाल कवि का व्यक्तित्व और कृतित्व निम्न रुप से प्रकट किया जा सकता है।

- **व्यक्तित्व :**

जन्म :

लाल कवि के पूर्वज आंध्र प्रदेश में राजमहेंद्री जिले के नृसिंह क्षेत्र 'धर्मपूरी' नामक ग्राम के निवासी थे। इनके पूर्वजों में काशीनाथ भट्ट थे। उनके छः पुत्रों में से जेष्ठ पुत्र का नाम 'गिट्टा' था। उसी की एकलौती संतान नागनाथ थी। इसी नागनाथ के दसवीं पीढी में लाल कवि का जन्म सं. १७१५ (१६५८ ई.) में हुआ था। इनका गोत्र, मुदगल था। बुंदेलखंड की महारानी दुर्गावती ने दमोह के पास 'संकोली' नामक गाँव पूर्वजों को दिया था। यही संकोली ग्राम में लाल कवि का जन्म हुआ था।

नाम :

लाल कवि का नाम 'गोरेलाल पुरोहित' था। वे 'लाल कवि' के उपनाम से ही साहित्य जगत में जाने जाते हैं।

आश्रयदाता :

बुंदेलखंड के राजा चम्पतराय के पुत्र छत्रसाल थे। इन्हीं छत्रसाल ने मुगलों के विरुध्द अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित किया था। लाल कवि राजा छत्रसाल के आश्रित दरबारी राजकवि थे। राजा छत्रसाल ने स्वंय लाल कवि को बढई, पढारा, अमानगंज, सगेरा और दुग्धा नामक पाँच गाँव दान में दिए थे। कवि ने अपने आश्रयदाता राजा छत्रसाल की वीरता, पराक्रम, शौर्य, यश का वर्णन 'छत्रप्रकाश' नामक काव्य ग्रंथ में किया हैं।

मृत्यु :

ऐतिहासिक वीरकाव्य में बुंदेला के राजा छत्रसाल के यश, पराक्रम और वीरता का वर्णन करनेवाले लाल कवि की मृत्यु सन १७१० ई. (सं. १७६७) के आसपास हुई थी। क्योंकि 'छत्रप्रकाश' ग्रंथ में वर्णित अंतिम घटना 'लोहगढ विजय' हैं। यह युध्द राजा छत्रसाल ने १६ दिसंबर १७१० को जीत लिया था। अत: लाल कवि की मृत्यु १७१० ई. के आसपास मानना चाहिए।

- **कृतित्व :**

लाल कवि ने अनेक ग्रंथ लिखे हैं। इनके द्वारा लिखित ग्रंथ उपलब्ध न होने के कारण विद्वानों में मताभिन्नता हैं। डॉ. भगीरथ मिश्र ने 'हिंदी साहित्य का बृहत इतिहास' में और वीरेंद्र वर्मा ने अपने 'हिंदी साहित्य' में लाल कवि के दस ग्रंथ माने हैं। जिसमें १. छत्रप्रकाश २. छत्रप्रशस्ती ३. छत्रछाया ४. छत्रकीर्ति ५. छत्रसाल शतक ६. छत्रहजारा ७. छत्रछन्द ८. छत्रदंड ९. राजविनोद १०. बरबै आदि ग्रंथ हैं। उपयुक्त दस ग्रंथों में से 'छत्रप्रकाश' को छोडकर अन्य नौ ग्रंथ अप्राप्य हैं। इसके अतिरिक्त डॉ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र अपने 'हिंदी साहित्य का अतीत' इस ऐतिहासिक ग्रंथ में चार ग्रंथ मानते हैं जिसमें १. छत्रप्रकाश २. राजविनोद ३. विष्णु विलास ४. बरबै। इन में से वह १९०६ और १९२९ के नए अनुसंधान के अनुसार 'विष्णु विलास' को विवृत्त कर दिया हैं। 'विष्णु विलास' ग्रंथ छत्रसाल हाडा के दरबारी एक अन्य कवि 'लाल' का मानते हैं। जो बुंदेला के कवि लाल से भिन्न थे। टीकमसिंह तोमर ने भी इसी बात को स्पष्ट किया हैं। इसी संदर्भ में डॉ. भगीरथ मिश्र 'हिंदी साहित्य के बृहत इतिहास' में कहते है कि, "छत्रसाल हाडा सन १६५८ ई (सं. १७१५) में दारा और औरंगजेब के बीच में होनेवाले धौलपुर के युध्द में वीरगति को प्राप्त हुए थे। लगभग इसी समय छत्रप्रकाशकार गोरेलाल उर्फ लाला कवि पैदा हुए थे।"[१६] अर्थात लाल कवि के नाम से दो कवि मध्यकाल में हुए एक 'छत्रसाल हाडा' के राजाश्रय में तो दूसरे

लाल कवि बुंदेला के 'छत्रसाल राजा' के समय हुए थे। एक ही नाम के दो अलग-अलग कवि थे। अंतः दूसरे कवि का नाम ही गोरेलाल है, जिन्होंने ऐतिहासिक वीरकाव्य 'छत्रप्रकाश' की रचना की है।

गोरेलाल कवि का एकमात्र प्रसिध्द ऐतिहासिक वीरकाव्य 'छत्रप्रकाश' हैं। इस वीरकाव्य में बुंदेला के राजा छत्रसाल के ऐतिहासिक पराक्रम, वीरता का वर्णन हैं। इस ऐतिहासिक वीरकाव्य की रचना का संक्षिप्त परिचय निम्न रुप से है।

छत्रप्रकाश :

बुंदेला के राजा छत्रसाल पर ऐतिहासिक वीर काव्य लाल कवि ने लिखा हैं। इस रचना में राजा छत्रसाल के युध्दों का वर्णन किया है। लाल कवि ने छत्रसाल राजा की आज्ञा से ही स्वय 'छत्रप्रकाश' की रचना की हैं। लाल कवि 'छत्रप्रकाश' में स्वयं लिखते हैं कि, "धन चंपति के औतरौ, पंचम श्री छत्रसाल। जिनकी आज्ञा सिस धरि, करी कहानी लाल।"[१७]

अर्थात वैभव संपन्न चंपतराय के घर में पाँचवे पुत्र के रुप में छत्रसाल का जन्म हुआ। राजा छत्रसाल की आज्ञा का पालन करते हुए मैं (लाल कवि) उनकी कहानी को प्रकट करता हूँ। 'छत्रप्रकाश' में लिखित इन पक्तियों से स्पष्ट होता हैं, कि लाल कवि ने छत्रसाल राजा के आदेश से छत्रप्रकाश काव्य की रचना की हैं। इस रचना का अंतिम घटनाक्रम राजा छत्रसाल के द्वारा लोहगढ विजय तक का वर्णन आया हैं। अंतः छत्रप्रकाश १६ दिसम्बर १७१० ई. में लिखकर पूरा किया हैं। इसमें कुल २६ अध्याय है, जो दोहा, चौपाई में रचित हैं। काव्य के आरंभ में गणेश वंदना और सरस्वती वंदना की गई हैं। उसके बाद दो अध्यायों में बुंदेला वंश का वर्णन हैं। तीसरे अध्याय में राजा छत्रसाल के पूर्वजन्म की कथा दी गई हैं। चतुर्थ अध्याय में राजा छत्रसाल के बचपन की मनोरंजक घटनाओं का वर्णन किया हैं। उसके बाद उनके पिता चंपतराय के संघर्षपूर्ण जीवन का चित्रण

किया हैं। चंपतराय का राज्य मुगलों के हाथ में जाने का वर्णन हैं। इसके पश्चात् छत्रसाल राजा के द्वारा स्वतंत्र राज्य स्थापना की इच्छा व्यक्त की हैं। इस कार्य के लिए दक्षिण भारत में मावल प्रदेश के राजा शिवाजी महाराज से प्रेरणा ली। शिवाजी महाराज के प्रेरणा और सलाह पर। अपने राज्य की रक्षा की थी। संख्या में कम सेना होने के बावजुद उन्होंने शक्तिशाली मुगलों की सेना को कम पराजित किया हैं। छत्रसाल राजा के युध्दों का वर्णन करते हुए लाल कवि लिखते है। "कबहूँ उमडि अचानक आवै। बन सम बुमडि लोह बरसावै।"[१८] अर्थात जिस प्रकार से अचानक आकाश में, बादल आकर बरसते है और लुप्त हो जाते हैं, उसी प्रकार छत्रसाल राजा और उसकी सेना शत्रु पक्ष पर अचानक आकर आक्रमण कर तुरंत लुप्त हो जाते थे। राजा छत्रसाल के इस छापामार युध्दनीति का प्रवर्तक शिवाजी महाराज है। जिन्होंने इस युध्दनीति का समय के अनुरुप उपयोग किया था। शिवाजी महाराज से प्रेरणा लेकर राजा छत्रसाल ने इस प्रकार की युध्द नीति का उपयोग किया हैं।

'छत्रप्रकाश' में लाल कवि ने 'छत्रसाल' राजा के दानवीर, दयावीर के साथ युध्द वर्णन का सजीव चित्रण किया हैं। राजा छत्रसाल पर लाल कवि ने 'छत्रप्रकाश' नामक ऐतिहासिक वीरकाव्य लिखा है। छत्रसाल राजा से संबंधित ऐतिहासिक घटनाओं की सत्यता को भी स्पष्ट किया हैं। शेख अफगन के विरुध्द युध्द में राजा छत्रसाल का भाग जाना इस ऐतिहासिक घटना का वर्णन भी कवि लाल ने किया हैं। इसी 'छत्रप्रकाश' ग्रंथ की ऐतिहासिक घटनाओं की सत्यता को उजागर करते हुए डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त लिखते है, "वस्तुतः यह काव्य एक सच्चे वीर की सच्ची गाथा है, जिसमें वीरता के उच्च लक्ष्य का प्रतिपादन हुआ हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से भी यह अत्यंत महत्वपूर्ण है।"[१९] 'छत्रप्रकाश' ग्रंथ में ऐतिहासिक सत्य घटनाओं का वर्णन सत्यता के साथ किया हैं। छत्रसाल जैसे राजा की वीरता उनके पराक्रम को प्रस्तुत किया हैं। यह ग्रंथ ऐतिहासिक

वीरकाव्य के रुप में राजा छत्रसाल के ऐतिहासिक घटनाओं को हमेशा अभिव्यक्त करता रहेगा।

लाल कवि ने मध्यकालीन भारत के बुंदेला प्रदेश के राजा छत्रसाल की ऐतिहासिक गाथा को प्रस्तुत किया है। काव्य के ऐतिहासिक नायक छत्रसाल राजा के वीर, शौर्य, पराक्रम, यश, दान, दया, आदि के गुणों का वर्णन किया हैं। इसमें कोई संदेह नहीं हैं कि, उनकी रचनाओं में ऐतिहासिक घटनाओं के युध्दों का वर्णन किया है। लाल कवि ने मध्यकालीन हिंदी साहित्य में ऐतिहासिक वीरकाव्य के परंपरा को अधिक सशक्त किया है। उनका हिंदी के ऐतिहासिक वीरकाव्य में अपना एक स्वतंत्र स्थान हैं। उनके काव्य में न ऐतिहासिक इतिव्रतात्मकता है, ना झूठी प्रशंसा है और ना ही अतिशयोक्ति पूर्ण काल्पनिक वर्णन किया हैं। ऐतिहासिक सत्यता को ध्यान में रखकर भावना के आधार पर घटनाओं का वर्णन किया है।

अतः लाल कवि ने राजा छत्रसाल पर ऐतिहासिक वीरकाव्य लिखा है। मध्यकालीन हिंदी के ऐतिहासिक वीरकाव्य के प्रमुख कवियों में हमेशा इनका नाम लिया जाएगा।

१.३.४. सूदन :

मध्यकालीन हिंदी साहित्य के ऐतिहासिक वीरकाव्य परंपरा में कवि सूदन का नाम बडे आदर के साथ लिया जाता हैं। उत्तर मध्यकालीन ऐतिहासिक वीरकाव्य में प्रमुख कवियों में भूषण, लाल कवि के बाद कवि सूदन महत्वपूर्ण कवि हैं। कवि सूदन ने अपनी ऐतिहासिक रचना सुजान-चरित्र में युध्दों का वीर रसात्मक वर्णन किया हैं। कवि सूदन के व्यक्तित्व और कृतित्व का अध्ययन निम्न रुप से करेंगे।

- **व्यक्तित्व :**

जन्म :

सूदन कवि के जन्म तिथि के बारे में हिंदी साहित्य जगत को कोई प्रामणिक तिथि अब तक नहीं मिली हैं। कवि सूदन के जीवन और मृत्यु के बारे में भी अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं हैं। परंतु उन्होंने स्वयं अपने ग्रंथ सुजान-चरित्र में अपना अल्पपरिचय केवल दो पक्तियों में दिया है। वह कहते है कि,

"मथुरापुर सुभ धाम माथुर, कूल उतपति बर।

पिता बसंत सुनाम, सूदन जानहू सकल कवि।"[२०]

अर्थात सूदन कवि का जन्म स्थान उत्तर प्रदेश के मथुरा शहर में हुआ। मथुरा के निवासी माथुरा चौबे थे। इनके पिता का नाम बसंत था। हिंदी साहित्य जगत में इन्हें 'सूदन' नाम से जाना जाने लगा। इनके बारे में इतना ही परिचय 'सुजान चरित्र' में दिया है, जो प्रामाणिक भी है। इनके बारे में विस्तृत जानकारी हिंदी साहित्य में उपलब्ध नहीं है। विकिपीडिया में प्राप्त कुछ जानकारी से यह पता चला है, कि उनके गुरु मकरंद कवि थे। उनका परिवार मथुरा का मूल निवासी था। उनके गुरु और परिवार के संदर्भ में विकिपिडीया में बताया गया है, "कोई मकरंद कवि सूदन के गुरु कहे जाते है, जो मथुरा के निवासी थे। कुछ लोग प्रसिध्द कवि सोमनाथ को उनका गुरु मानते हैं। सूदन की पत्नी का नाम सुंदरदेवी था, जिसमें उन्हें तीन पुत्र हुए थे।"[२२] सूदन के गुरु के बारे में मतभिन्नता हैं। वह मथुरा के निवासी थे। उनके पत्नी का नाम सुंदरदेवी था। उन्हें तीन संतान भी हुई थी। अतः हम यह कह सकते हैं, कि सूदन कवि का जन्म मृत्यु और उनके जीवन के संदर्भ में कोई प्रामाणिक जानकारी केवल उपर्युक्त स्वयं लिखित एक दोहे में से प्राप्त होती है।

आश्रयदाता :

सूदन कवि भरतपुर के महाराजा बदनसिंह के पुत्र महाराजा सुजानसिंह (सुरजमल) के राजाश्रय में रहते थे। अपने आश्रयदाता सुजानसिंह की कीर्ति, यश, पराक्रम और युध्दों का विस्तृत वर्णन किया हैं। सुजान सिंह ऐतिहासिक चरित्र के उपर कवि सूदन ने 'सुजान चरित्र' नाम से ऐतिहासिक वीरकाव्य की रचना की हैं। ऐतिहासिक वीरकाव्य के लिए उन्होंने भी काव्य का नायक वीर राजा सुजानसिंह को चुना था। इतिहास प्रसिध्द चरित्र के संदर्भ में उदयनारायण तिवारी लिखते हैं, कि, "जिस प्रकार भूषण को शिवाजी और गोरेलाल को छत्रसाल मिले इसी प्रकार सूदन को भी एक सच्चा वीर चरित नायक मिल गया। भरतपुर नरेश राजा सुरजमल जाट के नीति-कौशल तथा राज्य-प्रबंध की सभी इतिहासकार मुक्तकंठ से प्रशंसा करते हैं।"[२२] अतः इससे स्पष्ट हो जाता हैं, कि सुरजमल राजा के युध्दनीति और राज्यव्यवस्था ऐतिहासिकता की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण हैं। कवि भूषण के द्वारा शिवाजी और कवि लाल द्वारा राजा छत्रसाल का जिस प्रकार ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन किया है, उसी प्रकार कवि सूदन ने सुरजमल (सुजान सिंह) के ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन किया है।

- **कृतित्व :**

सूदन कवि के व्यक्तित्व की तरह ही कृतित्व में भी केवल 'सुजान चरित्र' यही एकमात्र प्रामाणिक रचना उनके नाम पर उपलब्ध हैं। इस में भरतपुर के राजा सुजान सिंह की वीरता का वर्णन किया हैं। सूदन कवि ने इसमें ऐतिहासिक युध्द, घटनाओं, वस्तुओं का विस्तृत विवरण दिया है। इसी कारण ऐतिहासिक वीरकाव्य में सुजान चरित्र यह प्रसिध्द रचना हैं।

सुजान चरित्र :

भरतपूर के राजा सुजानसिंह के ऐतिहासिक चरित्र को इस ग्रंथ में प्रकट किया है। सुजान चरित्र के ऐतिहासिक घटनाओं के वर्णन से यह स्पष्ट हो जाता

हैं, कि सुजान चरित्र का रचनाकाल सं. १८०२ से सं. १८१० तक का लगभग सभी विद्वान मानते है। सुजानसिंह के १७४५ से १७५३ ई तक के युध्दों का इसमें वर्णन किया गया हैं। सुजान चरित्र के अध्यायों को 'जंग' नाम दिया गया हैं। इसमें कुल सात जंग हैं, जो विभिन्न अंको में विभक्त हैं। प्रथम जंग में कुल चार अंक हैं। जिसमें पहले अंक में मंगलाचरण के पश्चात पूर्ववत और समकालीन १७५ कवियों के नामों का उल्लेख किया हैं। उसके बाद में भरत राजवंश का वर्णन किया है। दूसरे, तिसरे और चौथे अंकों में सं. १८०२ में सुजानसिंह और असदखाँ के बीच हुए युध्द का वर्णन हैं। इस युध्द में असदखाँ का पराजय और उसके मारे जाने का वर्णन है। द्वितीय जंग में आमेर पर माधोसिंह के साथ दक्षिणीयों की चढाई के बाद आमेरवालो के द्वारा सुजान सिंह की सहायता माँगना और ईश्वर सिंह की सहायता कर मराठों की पराजय का वर्णन किया हैं। तृतीय जंग में बख्शि सलावत खाँ के विरुध्द सं. १८०५ के युध्द में मुगल सरदारों का वध सलाबत खाँ द्वारा संधि की प्रार्थना करने का निर्देश है।

चतुर्थ जंग में सं. १८०६ के रुस्तमखाँ तथा सुजानसिंह के बीच घोर-संग्राम का वर्णन है। इस युध्द में रुस्तुम खाँ युध्द में मारा जाता हैं। उसकी सेना डरकर भागने का सुंदर वर्णन किया है। पंचम जंग में, सं. १८०९ में रायबड गुजरसिंह के साथ युध्द तथा उसके परास्त हो जाने की घटना का वर्णन है। षष्ट जंग में, अहमदशाह द्वारा वजीर मनसूर को मंत्री पद से हटकर दिल्ली से निकाल दिया था। दिल्ली से मनसूर द्वारा राजा सुजानसिंह की सहायता माँगी पर राजा के द्वारा यह कहा गया कि, जब तक दिल्ली के सिंहासन पर कोई दूसर बादशाह नहीं बैठता तब तक सहायता न करने की बात कहते हैं। राजा की सलाह पर मनसूर द्वारा अकबर शाह को दिल्ली सम्राट घोषित करते है। उसके बाद सुजानसिंह के द्वारा दिल्ली पर आक्रमण और शहरे लुटने के बाद मिली वस्तुओं का विस्तृत वर्णन कवि ने दिया हैं। इसी जंग के अंतिम अंको में कोटरा के युध्द में शाही सेना का पराजय गाजीउद्दीन को मराठों की सहायता के बावजुद पराजय

और संधि में मनसूर को फिर से अवध की नवाबी मिलने का वर्णन हैं। ग्रंथ के अंतिम संप्तम जंग में मराठा सरदार मल्हारराव के साथ होने वाले युध्द की तैयारी दिखाकर सुजानसिंह की विजय के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हुए अचानक ग्रंथ की समाप्ति कर दी हैं। इसके बाद में इतिहास के अनुसार रानी की नीति कुशलता से सुजान सिंह के उपर कोई संकट न आते हुए संधि हो जाती है।

इस ग्रंथ में सुजान सिंह के पराक्रम, वीरता की घटनाएँ कपोल कल्पित नहीं बल्कि ऐतिहासिक हैं। इस ग्रंथ पर यह भी आरोप लगाया जाता हैं, कि इसमें वस्तुओं के नामों स्थल नामों की लंबी सूची दी गई हैं। जो इस ग्रंथ में वर्णनों का विस्तृत विस्तार किया हैं। शस्त्र अस्त्रों और वस्त्रों की लंबी सूचि के कारण पाठको की रोचकता और गंभीरता में बाधा पहुँचती हैं। लेकिन केवल इसी कारण ऐतिहासिक काव्य का महत्व कम नहीं होता। ऐतिहासिक वीरकाव्य की दृष्टि से यह ग्रंथ बहुत महत्वपूर्ण हैं। इस ग्रंथ की ऐतिहासिकता के बारे में टीकमसिंह तोमर कहते हैं कि, "यह ग्रंथ ऐतिहासिक दृष्टि से अमूल्य कृति है। वर्णित विषयों का जितना विस्तृत एवं तथ्यपूर्ण वर्णन इस ग्रंथ में मिलता हैं, उतना उक्त विषय सम्बधि अन्य ग्रंथों में संभवतः न मिल सकेगा। अतएव यह पुस्तक पाठकों के इतिहास- ज्ञान की वृध्दि करने में विशेष रुप से सहायक होती है।"[२३] इस तरह सुजानचरित्र में ऐतिहासिक घटनाओं और वस्तुओं का जो सुक्ष्मता के साथ वर्णन किया हैं, वह तत्कालीन समय के ऐतिहासिकता को दर्शाता हैं। युध्द में जो लुट मिली उस वस्तु, सामग्री का वर्णन किया हैं। सुजानसिंह के ऐतिहासिक वीरता का वर्णन सुदन कवि ने अधिकांश यथार्थ घटनाओं को प्रकट किया हैं। अंतः सुजानसिंह राजा की ऐतिहासिक वीरता, पराक्रम, युध्द वर्णन का चित्रण 'सुजानचरित्र' इस वीरकाव्य में अंकित किया हैं।

मध्यकालीन हिंदी साहित्य जगत में कवि सुदन का ऐतिहासिक वीरकाव्यधारा में महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं। उन्होंने ऐतिहासिक वीर राजा सुजानसिंह के सात युध्दों में उनके वीरता का वर्णन किया हैं। जो कार्य आदिकालीन कवि से लेकर मध्यकालीन कवि केशवदास, भूषण, लाल कवि ने किया है, उसी परंपरा का निर्वाहन सूदन कवि ने किया हैं। हिंदी साहित्य के उत्तर मध्यकाल के प्रमुख कवि भूषण के ऐतिहासिक वीरकाव्य के बाद कवि सूदन का नाम लिया जाता हैं। 'सुजानचरित्र' यह उनकी ऐतिहासिक वीरकाव्य की रचना हिंदी साहित्य जगत को अमूल्य देन हैं।

इस प्रकार मध्यकालीन हिंदी साहित्य में मध्यकालीन ऐतिहासिक वीरकाव्य के प्रमुख कवियों में कवि सूदन के व्यक्तित्व और कृतित्व को स्पष्ट किया है।

१.३.५. पदमाकर :

हिंदी साहित्य के मध्यकाल में अंतिम चरण के प्रतिभा संपन्न ब्रजभाषा के कवि पदमाकर माने जाते है। इनके समय को हिंदी साहित्य में उत्तरमध्यकाल या रीतिकाल माना जाता हैं। पदमाकर रीतिकालीन कवियों में सुप्रसिध्द और विशेष सम्मानित कवि थे। इनकी विशषता यह है कि, वह मूलतः हिंदी भाषी न होते हुए भी हिंदी साहित्य में अपनी छाप छोडी है। अहिंदी प्रदेश के अनेक कवियों ने हिंदी और संस्कृत के साहित्य में श्रीवृध्दि करने में योगदान दिया है। इसी में एक प्रमुख नाम पदमाकर कवि का है पदमाकर प्रमुख रुप से श्रृंगारिक कवि माने जाते हैं। प्रवृत्ति के आधार पर इनके काव्य को तीन भागों में विभक्त किया जाता हैं। १. श्रृंगारकाव्य २. प्रशस्ति काव्य ३. भक्तिकाव्य। इनमें से दूसरी प्रवृत्ति में जो प्रशस्ति काव्य हैं उसमें १. हिम्मत बहादुर विरुदावली २. जगद्विनोद ३. प्रतापसिंह विरुदावली जैसे तीन ग्रंथ हैं। प्रशस्ति काव्य में जो प्रथम ग्रंथ हिम्मतबहादुर विरुदावली यह रचना ऐतिहासिक वीरकाव्य के अंतर्गत आती हैं। इसमें हिम्मत

बहादूर के युध्दों का वर्णन हैं। अत: कवि पदमाकर ने श्रृंगारिक काव्य के साथ-साथ ऐतिहासिक वीरकाव्य की रचना भी की है।

- **व्यक्तित्व :**

जन्म :

रीतिकाल में ऐतिहासिक वीर रसात्मक काव्य लिखनेवाले कवि पदमाकर तैलंग ब्राह्मण थे। अत्तिगोत्रीय यजर्वेद ब्राह्मण थे। इनके पूवजों में मूल पुरुष मधुकर भट्ट। जो मध्यप्रांत के 'सागरनामक' ग्राम में रहते थे। पदमाकर कवि का जन्म मध्यप्रदेश (मध्यप्रांत) के सागर नामक गाँव में सं. १८१० (१७५३ ई.) में हुआ था। इनके कुछ पूर्व पुरुष उत्तर के बाँदा में जाकर बस गये थे। इसलिए उन्हें 'बाँदा वाला' भी कहते हैं। आ. रामचंद्र शुक्ल इनका जन्मस्थान उत्तरप्रदेश के बॉदा को मानते हैं। लेकिन इनके पिता मोहनलाल भट्ट मध्यप्रदेश के सागर में रहते थे। इसलिए उनके जन्म गाँव के बारें में संदिग्धता हैं।

नाम :

पदमाकर का मूल नाम 'प्यारेलाल' था। सागर नामक नगर में जन्म होने के कारण अपना नाम पदमाकर रखा था।

शिक्षा :

पदमाकर एक जन्मजात प्रतिभासंपन्न कवि थे। इनके पूरे परिवार का वातावरण कविमय था। पदमाकर के पिता श्री मोहनलाल भट्ट ब्रजभाषा के प्रसिध्द कवि थे। इनके कूल में अनेकविध समृध्द कवि हुए, जिस कारण उनके कूल (वंश) का नाम ही 'कविश्वर' हो गया था। इनके पिता का राजधानियों में बहुत सम्मान था। कुछ दिन महाराज रघुनाथराव, पन्ना के महाराज हिंदूपति के गुरु हुए और जयपूर नरेश महाराज प्रतापसिंह से उन्हें 'कविराज' शिरोमणि की पदवी देकर अच्छी खासी जागीर दे दी थी। ऐसे कविराज शिरोमणि उनके पिता

मोहनलाल के सानिध्य में ही कवि पदमाकर ने कविता लिखना और मंत्रसिध्दि की शिक्षा प्राप्त की थी।

अश्रयदाता :

पदमाकर कवि किसी एक राजा के दरबार में स्थायी रुप से एकनिष्ठ नहीं रहें। वे निरंतर अपने आश्रयदाता को बदलते रहें। तत्कालीन 'सागर' के नरेश रधुनाथराव अप्पा साहब की प्रशंसा में एक कविता सुनाकर एक लाख की मुद्राएॅं पुरस्कार में प्राप्त की थी। उसके बाद 'बाँदा' में जाकर रहें और महाराज जैतपुर तथा सुगरा-निवासी नोने अर्जुनसिंह को अपना शिष्य बनाया। उसके पश्चात दतिया के महाराज परिक्षत के दरबार में गए, वहाँ से रजधान के गोसाई 'अनुपगिरी' उपनाम हिम्मत बहादुर के यहाँ गए। उसके बाद सितारा जाकर महाराज रघुनाथराव के दरबार में पहुँचे। जयपुर के सवाई महाराज प्रतापसिंह, राजा जगतसिंह, उदयपुर के महाराज के यहाँ रहें। एक बार बाँदा जाते समय बुंदी नरेश ने इनका आदर सत्कार किया था। उसके पश्चात ग्वालियर नरेश महाराज जगतसिंह ने इन्हें अपना राजकवि नियुक्त किया। जगतसिंह की प्रशंसा में पदमाकर ने जगद्विनोद काव्य की रचना कवि की हैं। अत: हम कह सकते हैं कि पदमाकर कवि किसी एक राजा के राजदरबार में एकनिष्ठ नहीं रहे। जीवन के अंत तक वह आश्रयदाताओं को बदलते रहे। उनका जीवन अस्थायी रहा हैं।

मृत्यु :

रीतिकालीन अंतिम सर्वोत्कृष्ट, सह्रदय समाज के प्रसिध्द कवि पदमाकर जी अपने जीवन के अंतिम दिनों में कुष्ट रोग से रोगगृस्त हुए थे। वह गंगाजल औषधमूलक के लिए कानपूर चले गए। कहाँ भी जाता है कि, वे रोगमुक्त भी हो गए थे। इसके बाद जीवनकाल के अंतिम समय में उन्होंने 'गंगालहरी' रचना को लिखकर कानपुर के ही गंगा किनारे ८० वर्ष की आयु में सं. १८९० (१८३३ ई.) को उनकी मृत्यु हो गई। आज भी सागर के तालाब घाट पर पदमाकर जी की

मूर्ति स्थापित है। जो एक हिंदी के प्रतिभासंपन्न बहुआयामी व्यक्तित्व का परिचय देती हैं।

- **कृतित्व :**

पदमाकर कवि में काव्य लिखने की जन्मजात प्रतिभा थी। वे ९ वर्ष की उम्र से ही कविता लिखने लगे थे। मध्यकलीन हिंदी साहित्य में पदमाकर कवि ने दो प्रकार का काव्य लिखा है। १. मौलिक काव्य २. अनुदित काव्य। उनके प्रथम प्रकार के मौलिक काव्य रचनाओं में तीन प्रवृत्तियाँ दिखाई देती है। जिसमें १. प्रशस्ति काव्य २. लक्षण ग्रंथ ३. भक्ति या वैराग्य से सम्बधित रचनाएँ।

इनके कृतित्व के बारे में विद्वानों में मतभिन्नता हैं। पहले प्रकार के विद्वानों में टीकमसिंह तोमर, उदयनारायण तिवारी, डॉ. भगीरथ मिश्र, धिरेद्रं वर्मा के मतानुसार, कवि पदमाकर के उपलब्ध ग्रंथों की संख्या नौ मानी हैं। जो प्रकाशित भी हो चूकी हैं। जिसमें १. हिम्मत बहादुर विरुदावली २. जगद्विनोद ३. पदमाभरण ४. राम रसायण ५. प्रबोध पचासा ६. हितोपदेश ७. आलीजाह प्रकाश ८. प्रतापसिंह विरुदावली ९. गंगालहरी आदि ग्रंथ हैं। तो कुछ अन्य विद्वानों ने अर्जुन-रासगा, अश्वमेध भाषा, लिलहारी लीला, तीन ग्रंथो को जोडकर कुल ग्रंथ संख्या ११ बताते हैं। इन कुल ११ सभी ग्रंथों में तीन ग्रंथ जिसमें हिम्मत बहादुर विरुदावली, प्रतापसिंह विरुदावली और जगद्विनोद के वर्णन में ऐतिहासिकता का आधार हैं। इन तीन ग्रथों में से 'हिम्मत बहादुर विरुध्दावली' ऐतिहासिक वीरकाव्य की रचना है। इस रचना में हिम्मतबहादूर के युध्दों का वर्णन किया है। अन्य दो ग्रंथ में से प्रथम ग्रंथ जगद्विनोद में पदमाकर ने अपने जयपुर के आश्रयदाता जगतसिंह की प्रशंसा की हैं परंतु इसका मुख्य लक्ष्य नायिका भेद का वर्णन करना था। इस ग्रंथ में छ: प्रकरण ७३१ छंद में लिखा गया है। इसी ग्रंथ के संदर्भ में आ. विश्वनाथ प्रसाद ने 'जगद्विनोद' में प्रधान उद्देश नायिका भेद ही माना है। इस ग्रंथ में रस विवेचन भी अंत में समाविष्ट हैं। श्रृंगार का विस्तार

और अन्य रसों का संक्षेप में निरुपण हैं। इसर तरह 'जगद्विनोद' इस काव्य रचना में भी नायिका का वर्णन किया है। यह एक श्रृंगार रसात्मक रचना हैं। इसमें युध्दों का वर्णन नहीं हैं और नहीं वीर रस की अभिव्यक्ति हुई हैं। जगद्विनोद में सभी रसों में प्रमुख 'श्रृंगार रस' के विस्तार में उसका विलास भी निहित है।

इसी प्रकार 'प्रतापसिंह विरुदावली' का आधार कोई ऐतिहासिक युध्द नहीं हैं। केवल युध्द के लिए युध्द का वर्णन किया गया हैं। इसमें जयपूर के सवाई प्रतापसिंह राजा के यश वर्णन किया गया है। ६८ पृष्ठों का यह प्रताप सिंह विरुध्दावली ग्रंथ पदमाकर कवि के वंशजों के पास जयपूर में आज भी सुरक्षित हैं।

हिम्मत बहादुर विरुदावली :

कवि पदमाकर मध्यकालीन हिंदी साहित्य में रीतिकाल के श्रृंगारिक कवियों में प्रसिध्द तो है ही लेकिन उन्होंने ऐतिहासिक वीरकाव्य की भी रचना की हैं। मध्यकालीन हिंदी के ऐतिहासिक वीरकाव्य में भी उनका स्थान बहुत महत्वपूर्ण हैं। पदमाकर जी की 'हिम्मत बहादुर विरुदावली' वीर रसात्मक काव्य रचना है। इस रचना में हिम्मतबहादुर के ऐतिहासिक तीन युध्दों का वर्णन किया है। कहाँ यह जाता हैं कि, पदमाकर कवि ने तीसरा युध्द अपनी आँखों से देखकर उसका सुक्ष्म युध्द वर्णन काव्य में किया है। हिम्मतबहादुर विरुदावली के रचना संदर्भ में आ. रामचंद्र शुक्ल कहते हैं कि, "पदमाकरजी ने हिम्मतबहादुर विरुदावली नाम की एक वीररस की बहुत ही फडकती हुई पुस्तक लिखी।"[२५] इससे स्पष्ट है कि, 'हिम्मतबहादूर विरुदावली' यह वीर रसात्मक ऐतिहासिक वीरकाव्य हैं। इसमें हिम्मत बहादुर के द्वारा किये गये युध्दों का वर्णन किया हैं। यह रचना सन् १७९२ (सं. १८४९) के आसपास लिखी गई होंगी क्योंकि पदमाकर सं. १८४९ से सं. १८५६ तक हिम्मतबहादूर के आश्रित थे। इस रचना में कूल २११ छंद हैं। हिम्मत

बहादुर 'कुल' पहाड में रहनेवाले एक ब्राह्मण के लडके थे। बचपन से पिता की मृत्यु के कारण माता पालन-पोषण करने में असमर्थ होने से इस बालक को राजेंद्रगिरी नामक गोसाई के हाथ सौंप दिया। गुरु राजेंद्र गिरी के देहांत के बाद अनुपगिरी (हिम्मतबहादुर) अपने भाई और दो चार दोस्तों को लेकर लखनऊ के नवाब शुजाउदौला की सेना में नौकर हुए। ग्रंथ के प्रथम सर्ग में मंगलाचरण और भगवान कृष्ण के चरणों में हिम्मतबहादुर को विजय करने की प्रार्थना की गयी हैं। द्वितीय सर्ग के ४४ छंदों में हिम्मतबहादुर के युध्दों की अतिशयोक्तिपूर्ण प्रशंसा की है। उसके बाद बुंदेलखंड पर चढाई कर दतिया तथा पन्ना राज्य का कुछ भाग अधिकार में ले लिया था। तीसरे सर्ग में केवल १६ छंद हैं। इसमें सेना की सजावट तथा हिम्मत बहादुर के प्रतिपक्ष पर आतंक का वर्णन किया हैं। चतुर्थ सर्ग में ११९ छंद हैं। इसमें हिम्मतबहादुर की अर्जुन सिंह पर चढाई तथा युध्दों का वर्णन है। पंचम सर्ग में हिम्मतबहादुर और अर्जुनसिंह इनके बीच नयागाँव (नौगाँव) और अजयगढ के बीच हुए भयंकर युध्द का विस्तृत वर्णन करते हैं। इस युध्द में हिम्मतबहादुर के हाथों से अर्जुनसिंह मारे जाने की कथा हैं। अंत में हिम्मत बहादुर को आर्शीवाद देकर कथा का समापन किया गया हैं।

इस रचना की विशेषता यह हैं कि अपने नायक के साथ-साथ प्रतिपक्ष की वीरता का भी सुंदर चित्रण किया हैं। ऐतिहासिक युध्दों का वर्णन अतिश्योक्तिपूर्ण और वर्णनात्मक शैली में किया हैं। इस ग्रंथ के विवरण और घटना के संदर्भ में टीकमसिंह तोमर लिखते है, "इसमें हिम्मतबहादुर का अतिश्योक्तिपूर्ण वर्णन है, पर घटना ऐतिहासिक विवरण पर अलंबित है। कवि ने अर्जुनसिंह का भी सच्चा और तत्थपूर्ण वृत्त दिया है।"[२६] इससे स्पष्ट होता है कि, इस रचना में दोनों ऐतिहासिक पुरुषों के बीच हुए युध्द का ऐतिहासिक महत्व हैं। इस कृति में उसी ऐतिहासिकता और तथ्य घटनाओं का वर्णन किया हैं।

कवि सूदन की तरह पदमाकर कवि ने भी वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया है। इसमें वस्तु, शस्त्र, व्यक्ति का विस्तृत विवरण के कारण काव्य की रसात्मकता खंडित हो जाती है। भाषा की दृष्टि से अरबी, फारसी, बुंदलखंडी का प्रयोग किया गया हैं। अलंकारों का अत्याधिक प्रयोग भी रचनाकार के द्वारा किया गया हैं। इस रचना में व्यंग्यपूर्ण और उत्साहपूर्ण संवादों का अभाव रहा है। फिर भी भाषा की दृष्टि से कवि पदमाकर अपना विशेष स्थान रखते हैं। रीतिकालीन श्रृंगारिक साहित्य के साथ-साथ ऐतिहासिक वीरकाव्य में भी केशव, भूषण, लाल, सूदन जैसे कवियों में अपना विशेष स्थान रखते हैं। पदमाकर कवि ने मध्यकालीन हिंदी साहित्य के तीन काव्यधारा में भक्ति, रीति और वीर साहित्य में भी अपना महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर चुके हैं।

अंतः हम यह कह सकते हैं कि, ऐतिहासिक वीरकाव्य परंपरा आदिकालीन साहित्य से मध्यकाल तक पहुॅची हैं। अपने युग के ऐतिहासिक व्यक्तियों एवं घटनाओं का प्रस्तुतिकरण कर समकालीन वातावरण एवं विभिन्न दृश्यों के चित्रण किया है। ऐतिहासिक नायक की वीरता, शौर्य और आत्म बलिदान के भावनाओं की अभिव्यंजना की है। काव्य, छंद योजना भाषा, शैली एवं पध्दति के क्षेत्र में नूतन प्रयोगों की दृष्टि से इस परम्परा की हिंदी साहित्य को विशेष देन हैं। इस महत्वपूर्ण मध्यकालीन काव्यधारा के संदर्भ में धीरेंद्र वर्मा कहते है, "हिंदी साहित्य में यह महत्वपूर्ण धारा है। सुचारु रुप से इसका अनुशीलन करके भारत के अतीत गौरव और शौर्यपूर्ण कार्य-कलाप से युक्त भारतीय इतिहास का नव-निर्माण किया जा सकता हैं।"[२७] स्पष्ट है कि, ऐतिहासिक वीर काव्यधारा में अतीत का गौरव और शौर्य, पराक्रम की अभिव्यक्ति हुई है।

मध्यकालीन हिंदी साहित्य में ऐतिहासिक वीरकाव्य की परंपरा भारतीय इतिहास के लिए सहायक बनेगी। यह काव्यधारा अतीत के बलिदान और शौर्यपूर्ण वीरता के भावों का चित्रण हिंदी साहित्य में एक गौरवपूर्ण निधि हैं।

हालांकि यह साहित्य अन्य काव्यधारा को साहित्य के दृष्टि से संख्या में कम होते हुए भी मातृभूमि और राष्ट्रीयता का प्रतिनिधित्व करनेवाला साहित्य हैं। यही काव्यधारा आधुनिक काल में राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा में प्रवाहित हुई हैं। यह और बात हैं कि, मध्यकाल की यह काव्यधारा विद्वानों के एकांगी दृष्टिकोन के कारण अब तक उपेक्षित एवं अप्रतिष्ठित रही हैं। इसी मध्यकालीन ऐतिहासिक वीर काव्यधारा का हिंदी साहित्य में स्वतंत्र अध्ययन और अनुसंधान की आवश्यकता हैं।

१.४) आदिकालीन मराठी का वीर काव्य :

महाराष्ट्र यह संतों और पराक्रमी वीरों की भूमि है। इस प्रदेश में प्राचीन परंपरा से ही भक्ति और शक्ति दोनों की पूजा होती रही है। मनुष्य जीवन में वीरत्व और वैराग्य दोनों साथ-साथ चले हैं। महाराष्ट्र के सामाजिक और राजनीतिक पतन को देखकर जनता और साहित्यकार भक्ति और मुक्ति की ओर मुड गयी। मराठी साहित्य के आदिकाल में संस्कृत के वेद, पुराण, रामायण, महाभारत आदि पौराणिक ग्रंथों के कथा और उपदेश को मराठी कवियों ने वर्णित किया हैं। आदिकालीन मराठी के काव्य ग्रंथों में पौराणिक वीर चरित्र नायक भगवान राम और कृष्ण के द्वारा किए गये युध्दों का वीर रसात्मक वर्णन किया है। पौराणिक ग्रंथों के नायकों के युध्द वर्णन में मराठी कवियों का उद्देश ईश्वरी महीमा या भक्ति ही रहा हैं। आदिकालीन मराठी कवि भास्कर भट्ट बोरीकर ने सन १३१३ में लिखित 'शिशुपाल वध' में सौ ओवियाँ शिशुपाल वध प्रसंग पर वीर और करुन रस दिखाई देता है। इस रचना का प्रमुख उद्देश श्रीकृष्ण की भक्ति करना ही रहा है। महानुभाव पंथ की आद्य कवयित्री महादंबा ने 'धबने' अर्थात वीरों के उपर रचित गीत (जो शादियों में गाये जाते थे) में भगवान कृष्ण और रुक्मिनी के बीच हुए युध्द का वीररसात्मक वर्णन किया है।

सन १३१६ में कवि दामोदर पंडित ने भागवत दशमस्कंध पर आधारित 'वछाहरण' काव्य की रचना की है। इस रचना में श्रीकृष्ण के द्वारा अघासुर वध ब्रह्मदेव के द्वारा गोपाल और 'गो' की अपहरण के घटना पर वीररस की अभिव्यक्ति हुई है। संत चोंभा ने 'उखाहरण' की रचना १८ अध्यायों में की हैं। इस काव्य में श्रीकृष्ण के पोते अनिरुध्द और बाणासुर की गंधर्व कन्या उषा के विवाह की कथा हैं। भगवान श्रीकृष्ण इस विवाह के विरुध्द थे। इसलिए उन्हें बाणासुर के साथ युध्द करना पड़ा था। इसमें भगवान शंकर और कृष्ण के युध्द का भी वर्णन हैं। युध्दभूमि में वीरों के द्वारा प्रतिपक्ष की ललकार और युध्दभूमि में शस्त्रास्त्रों की आवाजों से वीररस का परिपाक हुआ है। इस काव्य में देवी देवताओं का मानवीकरण किया गया हैं। जातवेद बहिरा कविने 'भैरवी टीका' काव्य में श्रीकृष्ण के द्वारा किया गया पुतिन वध, कालिया मर्दन, कंसवध, शिशुपाल वध आदि घटनाओं में वीररस दिखाई देता हैं। कृष्णदास शामा विरचित ने 'श्रीकृष्णचरित्रकथा' में भागवत के दशमस्कंध का आधार लेकर रचना को उन्नीस अध्यायों में विभक्त किया है। इसमें श्रीकृष्ण के द्वारा पुतनावध, शकटवध, अघासुर वध, बकासुर वध, कंस वध, जैसे युध्द प्रसंगों में वीररस की अभिव्यक्ति हुई है।

मराठी काव्य में पहली बार पौराणिक ग्रंथ में भगवान राम के चरित्र को संत एकनाथ महाराज ने 'भावार्थ रामायण' में वर्णित किया हैं। इसमें राम-रावण युध्द के चित्रण में वीर रस दिखाई देता है। राम-रावण युध्द पर कृष्णदास मुद्गल ने आठ हजार ओवीयाँ और मुक्तेश्वर कवि ने रामायन के युध्द कांड पर विस्तृत वर्णन किया हैं। आदिकालीन मराठी काव्य का प्रधान उद्देश पौराणिक नायकों का चरित्र और उनके प्रति श्रध्दा और भक्तिभाव का रहा है। आदिकालीन मराठी कवियों का प्रमुख उद्देश वीररस की अभिव्यक्ति करना नही था। इन कवियों के संदर्भ में प्र. न. जोशी लिखते है कि "प्राचिन मराठी कवींना भक्तिरस हवा, वीररस हवा, श्रृंगाररस हवा, शांतरस हवा, पण माध्यम पूर्वपरंपरेचे हवे.

कौरव-पांडवांच्या युध्दातील, भीमजरासंध युध्दातील वीररस हवा."[२८] अर्थात आदिकालीन मराठी कवियों को अपनी रचनाओं में भक्ति, वीर, श्रृंगार, शांतरस की अभिव्यक्ति करना अपेखित था। परंतु इस विभिन्न रसों की अभिव्यक्ति का विषय पौराणिक ग्रंथ की कथा और पौराणिक चरित्र नायक को आधार बनाते थे। कवि कौरव-पांडव, भिम-जरासंध के युध्द में वीररस प्रकट करना चाहते हैं। प्राचीन मराठी कवियों ने वीर रस को जागृत करने के लिए पौराणिक ग्रंथों के युध्द का आधार लिया है। यह कवि लौकिक जीवन, देश की राजनीति और युध्द वर्णन से बहुत दुर रह चुके हैं। आदिकालीन मराठी काव्य में पौराणिक नायकों के वर्णन में वीररस की अभिव्यक्ति हुई हैं। आदिकाल के मराठी साहित्य में केवल पौराणिक काव्य लिखकर ईश्वर की भक्ति करना इन कवियों का प्रस्तुत उद्देश रहा हैं।

१.५. मध्यकालीन मराठी का ऐतिहासिक वीरकाव्य :

आदिकालीन मराठी साहित्य में पौराणिक, भक्ति, मुक्ति, नीति और श्रृंगार विषयक रचनाओं का निर्माण हुआ है। आदिकालीन मराठी साहित्य के पौराणिक चरित्र नायकों की जगह मध्यकालीन मराठी साहित्य में ऐतिहासिक चरित्र नायकों का वर्णन किया है। मध्यकालीन मराठी के साहित्य में प्रमुख तीन काव्यधाराएँ प्रवाहित थी। उसमें १. संतकाव्य २. पंथकाव्य ३. तंतकाव्य या इसे 'शाहिरी काव्य' भी कहा जाता हैं। इनमें से प्रथम दो संत और पंथ काव्य का प्रमुख उद्देश भक्त और अलौकिक जीवन को अभिव्यक्ति करना था। आदिकालीन मराठी साहित्य और पंत साहित्य के प्रमुख उद्देश के बारे में 'मराठी साहित्य समालोचन' ग्रंथ में लिखा है कि, "सामान्यताः मागील कालखंडाप्रमाणे या कालखंडातही काव्याचा मुख्य उदेश्य भक्ति हाच आहे."[२९] अर्थात जीस प्रकार से आदिकालीन मराठी काव्य का मुख्य उद्देश भक्ति रहा है; उसी प्रकार मध्यकालीन पंत साहित्य का भी भक्ति ही प्रमुख उद्देश्य रहा हैं। संत और पंत

साहित्य लौकिक जगत से कही दूर चला गया था। पंत काव्य रीतिबध्द, पांडित्यपूर्ण वर्णन से अलौकिक जीवन की अभिव्यक्ति तक सीमित रहा है।

मध्यकालीन मराठी साहित्य में तीसरी काव्य धारा तंत काव्य अर्थात 'शाहिरी काव्य' जो मनुष्य के लौकिक और ऐतिहासिक जीवन को अभिव्यक्त करता हैं। भारत के अधिकांश भागों पर विदेशी सत्ता स्थापित हो चुकी थी। समाज का राजनीतिक और सामाजिक पतन हो रहा था। मध्यकालीन शाहिरों (कवि) ने अपने ऐतिहासिक वीरकाव्य के माध्यम से लोगों में उर्जा, शक्ति और चेतना का संचार किया हैं। मध्यकालीन शाहिरी काव्य के संदर्भ में म.न. अदवंत लिखते हैं कि, "संतकाव्य महाराष्ट्राच्या अध्यात्मिक जीवनाचे प्रतिबिंब असले तरी शाहिरी काव्य महाराष्ट्राच्या राजकीय व सामाजिक जीवनाचे प्रतिबिंब आहे."[३०] अर्थात प्राचिन और मध्यकालीन संत काव्य मनुष्य के अलौकिक और अध्यात्मिक जीवन को अभिव्यक्त करता हैं। शाहिरी काव्य महाराष्ट्र के राजनीतिक और सामाजिक जीवन का चित्रण करता है। शाहिरी साहित्य के तीन प्रकारों में (पवाडे, लावणी, और कवन अर्थात (स्फुटपद) में समान, राजनीति, ऐतिहासिक घटनाओं का चित्रण शाहिरों ने किया है। महाराष्ट्र में समाज, मराठी साहित्य और शाहिरों को राजाश्रय मील गया था। ऐतिहासिक वीर राजाओं के दरबार में रहकर राजा और उनके पूर्वजों की वीरता, पराक्रम आदि गुणों का वर्णन शाहिरों ने अपने रचनाओं में किया है। इसी मध्यकाल में राजाश्रय प्राप्त होने पर मराठी काव्य ने ऐतिहासिक रुप धारण कर लिया था। पौराणिक चरित्र नायकों के स्थान पर ऐतिहासिक चरित्र नायकों के युध्द का वर्णन किया जा रहा था। शाहिरी साहित्य में पवाडों के माध्यम से ऐतिहासिक वीर पुरुषों पर ऐतिहासिक वीरकाव्य (पवाडों) की रचना होने लगी थी। पराक्रम करने वाले वीर और उस पराक्रमों का गान करनेवाले शाहिर कहें जाने लगे। शाहिरों के पवाडों के संदर्भ में मराठी कहा जाने लगा कि 'शुर मर्दाचा पोवाडा शुर मर्दानी ऐकावा' अर्थात शुर वीर मर्दों के

पवाडे शुर वीर मर्द को सुनना चाहिए। इस प्रकार के शाहिरों के विधान से राजा और प्रजाओं में जोश, उमंग, उत्तेजना से वीरता के भावों को उत्तेजित करते थे।

मराठी के ऐतिहासिक वीरकाव्य में प्राचीन साहित्य काल के तेरहवीं शताब्दी में 'महकावती की जीवनी' से शुरुवात हुई थी। यह रचना गद्यपद्यात्मक होने के कारण इसे राजवाडे 'चंम्पु काव्य' नाम देते हैं। इसके बाद शिवाजी महाराज के काल तक प्रमुख रुप से कोई ऐतिहासिक रचना उपलब्ध नहीं है। सन् १६५९ में शाहिर अज्ञानदास ने शिवाजी महाराज पर अफजला खाँ वध के ऐतिहासिक घटना के उपर 'अफजलखाँ-वध' नामक पवाडे की रचना की हैं। दूसरा ऐतिहासिक पवाडा शिवाजी महाराज के सरदार तानाजी मालुसरे पर शाहिर तुळशीदास ने 'तानाजी मालूसरा के पराक्रम का वर्णन किया हैं। उपर्युक्त दोनों पवाडे ऐतिहासिक वीरकाव्य की दृष्टि से अत्याधिक महत्वपूर्ण हैं। दोनों पवाडों में युध्द, वीरता, पराक्रमों का वर्णन शाहिरों ने किया हैं। इसी काल में बाजी पालकर पर शाहिर सयाजी ने ऐतिहासिक पवाडे की रचना की है। अज्ञान यमाजी ने दत्ताजी जाधव पर एक पवाडा भी लिखा था। शिवकाल में उपर्युक्त चार ऐतिहासिक पवाडे लिखे गये हैं। महाराष्ट्र के मराठा सत्ता के उत्कर्ष काल में पवाडे लिखने की परंपरा खंडित भी हो गयी थी। इस काल ऐतिहासिक वीरकाव्य भी (पवाडे) लिखे भी गये होगें। परंतु वर्तमान समय में, वे पवाडे मराठी साहित्य में उपलब्ध नहीं है।

पेशवाई काल में ऐतिहासिक पवाडों की दृष्टि से उत्कर्ष का काल माना जाता हैं। इस काल में ऐतिहासिक वीर पेशवा सवाई माधवराव और दूसरे बाजीराव पेशवा पर अत्याधिक पवाडे लिखे गये थे। इस काल में शाहिर रामजोशी ने पुणे के वर्णन पर 'ब्राह्मणी राज्य जोरदार' नामक पवाडा लिखा हैं। पुणे की पेशवाई और पुणे के अकाल का भी चित्रण उनके अन्य एक पवाडे में दिखाई देता है। रामा सटवा शाहिर ने पानिपत के ऐतिहासिक मराठा-अफगान

युध्द पर ऐतिहासिक पवाडे में मराठी के पराक्रमों को वर्णित किया है। इस काल में अन्य शाहिरों में, सातप्पा, बाळा बहेरु, गोपीनाथ, कुशामाळी, चिळु सुतार, येसु तेली, दमाजी, अप्पा तांबोळी, मोतिराम, जनार्दन, माधवसुत, आदि असंख्य शाहिरों ने मराठों के ऐतिहासिक घटनाओं और चरित्र नायकों का वर्णन किया हैं। इस काल के ऐतिहासिक वीरकाव्य की रचना करनेवाले प्रमुख महत्वपूर्ण पाँच शाहिरों में अनंत फंदी, होनाजी बाळा, परसराम, प्रभाकर, और संगनभाऊ हैं। इन पाँच प्रमुख शाहिरों के व्यक्तित्व और कृतित्व का अध्ययन निम्न रुप से करेंगे।

१.६) मध्यकालीन मराठी के ऐतिहासिक वीरकाव्य के प्रमुख कवि :

मध्यकालीन मराठी साहित्य में संत, पंत, साहित्य के साथ-साथ तंत अर्थात शाहिरी साहित्य का भी निर्माण हुआ है। इस काल में भक्ति, मुक्ति, रीति, प्रीति, नीति साहित्य के साथ-साथ ऐतिहासिक वीर काव्य की रचना हुई हैं। ऐतिहासिक वीर काव्य 'पोवाडे' को लिखनेवाले कवि को शाहिर कहा जाता हैं। मध्यकालीन मराठी शाहिरों ने पवाडों के माध्यम से ऐतिहासिक वीर काव्य की रचना की हैं। इन शाहिरों ने हिंदी के वीरकाव्य की तरह अपने आश्रयदाता के वीरता, पराक्रम और उनके यश का गान किया है। मध्यकालीन मराठी के प्रमुख पाँच शाहिरों (कवि) के व्यक्तित्व और कृतित्व का निम्न रुप से अध्ययन करेंगे।

१.६.१. अनंत फंदी :

मध्यकालीन भारत में महाराष्ट्र की राजनीति, सत्तासंघर्ष, ऐतिहासिक चरित्र, युध्द और पराक्रम का वर्णन कवि अनंत फंदी ने किया है। मध्यकालीन मराठी के ऐतिहासिक वीरकाव्य 'पोवाडा' लिखनेवाले शाहिरों में प्रमुख अनंत फंदी है। मराठी के ऐतिहासिक पवाडे के साथ-साथ हिंदी में भी उन्होंने 'नाना फडणिस' पर एक पोवाडे लिखा हैं। हिंदी और मराठी दोनों भाषाओं में रचना करनेवाले अनंत फंदी के व्यक्तित्व और कृतित्व का निम्न रुप से अध्ययन करेंगे।

- **व्यक्तित्व :**

जन्म :

शाहिर अनंत फंदी का जन्म यजुर्वेदी ब्राह्मण परिवार में सन् १७४४ में हुआ था। अनंत फंदी का उपनाम घोलप था। उनका मूल जन्म गाँव संगमनेर है। उनके पूर्वज गोंधळी का व्यवसाय करते थे।

माता-पिता :

अनंत फंदी के माता का नाम राऊबाई था। फंदी के बचपन में ही पिता की मृत्यु हो गयी थी। पितृछाया से वंचित अनंत फंदी का लालन-पालन उनकी माता राऊबाई ने ही किया था।

बाल्यकाल :

पितृछाया से वंचित और माँ के अत्याधिक प्रेम से लडका अनंत फंदी पुरी तरह बीगड़ गया था। गाँव में दिन भर निकम्मा ओर आवारा घुमते रहता था। केवल दो वक्त का खाना खाने ही घर में आता था। उसके इस व्यवहार पर माँ के साथ एक बार अनबन हो गयी और अनंत फंदी रुठकर भवानी बाबा के मठ में जाकर बस जाता हैं। माता के द्वारा सिध्द पुरुष भवानी को अनंत के व्यवहार को बताया गया। भवानी बाबा के कृपा और आशिर्वावाद से अनंत फंदी को कवित्व करने की प्रेरणा मिल गयी। अनंद फंदी की अदृश्य जन्मजात प्रतिभा को नई चेतना मिल गयी थी। अनंत फंदी मराठी साहित्य के प्रमुख महान शाहिर बन गये।

परिवार :

फंदी के माता का नाम राऊबाई था। फंदी के बचपन में ही पिता की मृत्यु हो गयी थी। अनंत फंदी के पत्नी का नाम म्हाळसाबाई था। उनके दो पुत्रों में पहला पुत्र श्रीपत फंदी उर्फ सवाई फंदी तो दूसरा पुत्र बापु फंदी था। इनका

प्रथम पुत्र श्रीपत फंदी (फंदी मूल) शाहिर बना तो द्वितिय पुत्र की जवानी में मृत्यु हो गयी थी।

आश्रयदाता :

अनंत फंदी महाराष्ट्र में पुणे के पेशवाकालीन राजदरबार के प्रमुख कवि रहे हैं। सवाई माधवराव पेशवा के आश्रय में उनके दरबार में रहे। उनकी मृत्यु के पश्चात रावबा जी के कार्यकाल में उन्हें अत्याधिक सफलता मीली थी। दूसरा बाजीराव पेशवा के आश्रय में तो प्रमुख सलाहकार के रुप में भी कार्य किया हैं। दूसरे बाजीराव ने सवाई माधवराव के मृत्यु के उपर 'माधव निधन काव्य' लिखने का आदेश अनंत फंदी को दिया था। संवत १८५७ से सं. १८७५ के समय में अनंत फंदी चिंतामणि सांगलीकर, बालासाहेब मिरजकर, फत्तेसिंह गायकवाड आदि के आश्रय में रहे थे।

मृत्यु :

मध्यकालीन मराठी के शाहिरी साहित्य को प्रतिष्ठा और प्रसार निर्माण करने का महत्वपूर्ण काम शाहिर अनंत फंदी ने किया था। ग्रंथ, लावणी, किर्तनकार, और ऐतिहासिक पवाडों की रचना करनेवाले अनंत फंदी की मृत्यु सन १८१९ में हो गयी थी।

- **कृतित्व :**

मध्यकालीन मराठी के शाहिर अनंत फंदी ने अपने ७५ साल के जीवनकाल में काव्यग्रंथ, पोवाडे, लावनीयाँ, कवने, की रचना करते हुए एक किर्तनकार के रुप में भी सुप्रसिद्ध रहें। उन्होंने जीवन के शुरुवाती पच्चीस साल में श्रृंगारिक लावणीयाँ और कुछ ऐतिहासिक पवाडों का निर्माण किया था। जीवन के उत्तरकाल में ऐतिहासिक पोवाडे और 'माधवनिधन काव्य' की रचना की हैं। उनके द्वारा मराठी में शाहिरी साहित्य अत्याधिक लिखा गया होगा परंतु कालवश

वह साहित्य उपलब्ध नहीं हैं। वर्तमान समय में उनके नाम पर सात पोवाडे पच्चिस लावनीयाँ और एक 'माधवनिधन काव्य' यह काव्यग्रंथ उपलब्ध हैं। तत्कालिन समय में यह बडे प्रसिध्द शाहिर थे। समकालीन शाहिर 'होनाजी बाळा' ने तो अनंदी फंदी के लोकप्रियता की प्रशंसा करते हुए कहा था कि, "मोठ्या मोठ्या राज्यांमधि महशूर। जग जाहीर चारी तर्फा।"[३१]

अर्थात शाहिर अनंत फंदी बडे-बडे राज्यों में लोकप्रिय हो चुके थे। राज्य के चारों दिशाओं में प्रसिध्द और जग जाहिर हो गये थे। समकालीन प्रसिद्ध शाहिर होनाजी बाळा के द्वारा अनंत फंदी की प्रशंसा में अतिशयोक्ति बिल्कूल भी नहीं है। अनंत फंदी ने मराठी में अत्याधिक साहित्य की रचना की होगी परंतु अभी मराठी साहित्य जगत इससे अनभिज्ञ है। शाहिर अनंत फंदी ने ऐतिहासिक चरित्र नायक और ऐतिहासिक घटनाओं को अपने पवाडे का विषय बनाया हैं। उनके द्वारा लिखित सात पवाडे में, नाना फडणीस, फत्तेसिंह गायकवाड, यशवंतराव होळकर, दुसरा बाजीराव, चिंतामणराव पटवर्धन, डाकूरजी, खडर्या के ऐतिहासिक युध्द पर भी एक पवाडा उपलब्ध हैं। ऐतिहासिक यशवंतराव होळकर पवाडें में यशवंतराव के युध्द का वर्णन करते हुए अनंत फंदी लिखते हैं कि,

"दोन फौजेमधिं जाऊन कणसापरि कत्ताल केली।
तमास कंपु पळ सुटला चहुकडे गेले हो पेंढारी।।"[३२]

अर्थात यशवंतराव ने अपनी सेना को साथ लेकर पुणे पर आक्रमण किया था। दो लाख की प्रतिपक्ष की पेंढारी सेना में घुसकर उनकी सेनाओं को ज्वार के भुट्टे कनिस की तरह उनके धड से सर काटने लगे थे। इनके आक्रमण से पेंढारी चारों तरफ भागने लगे। इस ऐतिहासिक युध्द का वर्णन अनंत फंदी ने किया हैं। 'माधवनिधन काव्य' में अनंत फंदी ने सवाई माधवराव के मृत्यु के बाद नाना फडणिस, परसराम भाऊ और शिंदे के परस्पर राजनीतिक दावपेच का वर्णन किया हैं। यह ग्रंथ छः अध्यायों में विभक्त हैं। इस ग्रंथ में पहले पाँच अध्यायों में

दूसरे बाजीराव पेशवा के गुणों की प्रशंसा, सहानुभूति और उनके प्रति भक्तिभाव का वर्णन किया है। ग्रंथ के अंतिम छठे अध्याय में सन १८०३ में हुए पेंढारी के दंगें और अकाल के कारण प्रजा की दुरावस्था का वर्णन किया है। नाना फडणिस पर हिंदी में पोवाडे की रचना अनंत फंदी ने कि हैं। उन्होंने मराठी में 'कवन' (काव्यप्रकार) की भी रचना की हैं। शाहिर अनंत फंदी को मराठी में 'कवनांचा सागर' अर्थात कवन के समुद्र कहा जाता है। कवन यह रचना हिंदी के स्फुट पदों की तरह होती हैं।

अत: अनंत फंदी मध्यकालीन मराठी के प्रसिध्द शाहिर हैं। उन्होंने ऐतिहासिक व्यक्ति और घटनाओं पर ऐतिहासिक काव्य 'पवाडे' की रचना की है। 'माधवनिधन काव्य' की रचना दूसरा बाजीराव पेशवा के आदेश पर उनके आश्रय में रहकर की है। श्रृंगारिक लावणी और कवन (स्फुटपद) की भी रचना की है। शाहिर अनंत फंदी ने शाहिर साहित्य को पुनर्जिवित करने का प्रयास किया हैं। मराठी के शाहिरी साहित्य को विभिन्न प्रदेशों में पहुँचाने का काम किया है। संत पंतों के अध्यात्मिक साहित्य को छोडकर लौकिक जीवन पर ऐतिहासिक वीर काव्य की रचना शाहिर अनंत फंदी ने की है। उनके रचनाओं में मराठी, उर्दू, हिंदी, संस्कृत, भाषा के शब्दों का प्रयोग हुआ है। उन्होंने मराठी के अतिरिक्त हिंदी भाषा में 'नाना फडणीस' पोवाडे की रचना की हैं। मध्यकालीन मराठी साहित्य में वीर और श्रृंगारिक काव्य की रचना करनेवाले शाहिर अनंत फंदी का नाम बडे आदर के साथ लिया जाता है।

१.६.२. होनाजी बाळा :

मध्यकालीन मराठी साहित्य के अठराहवीं शताब्दि के उत्तरार्ध और उन्नीसवीं शती के पूर्वाध में होनाजी बाळा प्रसिद्ध शाहिर रहे हैं। होनाजी बाळा ने ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित पवाडे की रचना की हैं। उनके रचनाओं में वीर और श्रृंगार इस दिखाई देता हैं। ऐतिहासिक खडकी, खर्ड्या के युध्द, सवाई

माधवराव, दूसरे बाजीराव, पेशवे पर पोवाडा किया हैं। मध्यकालीन मराठी शाहिरी साहित्य में ऐतिहासिक वीरकाव्य की रचना करनेवाले शाहिर होनाजी बाळा के व्यक्तित्व और कृतित्व का निम्न रुप से अध्ययन करेंगे।

- **व्यक्तित्व :**

जन्म :

शाहिर होनाजी बाळा का जन्म लिंगायत संप्रदाय के नंदगवळी समाज में सन १७५४ में हुआ था। होनाजी के दादा का नाम सातप्पा और पिता का नाम सयाजी था। होनाजी बाळा का पुरा नाम होनाजी सयाजी शिलारखाने था। होनाजी के बचपन में ही पिता का निधन हुआ।

शिक्षा :

होनाजी जन्मजात प्रतिभासंपन्न कवि थे। होनाजी के दादा सातप्पा और उनके चाचा बाळा बहेरु दोनों शाहिर थे। उन्हें काव्य लिखने की शिक्षा और प्रेरणा उनके घर में ही मीली थी। बचपन में ही उनको कवित्व के प्रति प्रोत्साहित किया गया।

आश्रयदाता :

होनाजी बाळा सवाई माधवराव पेशवे के आश्रय में रहते थे। इनके उपर एक पोवाडे की रचना भी की थी। सवाई माधवराव के मृत्यु के पश्चात दूसरा बाजीराव पेशवा के आश्रय में रहने लगें। इनके आश्रय में रहकर खडकी और अष्टि के युध्द पर पोवाडा लिखा था। दूसरा बाजीराव पर तीन पवाडे की रचना की हैं। वे पेशवे के शासक सवाई माधवराव और दूसरे बाजीराव पेशवे के आश्रय में रहे हैं। दूसरा बाजीराव पेशवे के आश्रय में होनाजी बाळा को अत्याधिक प्रसिद्धी मिली थी।

मृत्यु :

होनाजी बाळा को पवाडे और लावणियों में अत्याधिक प्रसिध्दी मिलने के कारण उनके विरोधी लोग उनसे द्वेष करते थे। उनको मिल रही प्रसिध्दी के कारण उनके विरोधियों ने एक रात उन्हें मारने के लिए गुंडे भेजे थे। अत: उसी रात सन १८४४ को वानवडी के खेत में उनकी हत्या कर दी गयी। मराठी के प्रसिद्ध शाहिर होनाजी बाळा का व्यावसायिक द्वेष के कारण खुन हुआ था।

- **कृतित्व** :

होनाजी बाळा ने मध्यकाल में सवाई माधवराव और दूसरा बाजीराव पेशवे शासन काल को अत्यंत नजदिक से देखा था। सवाई माधवराव के आश्रय में दो पवाडों को लिखा है। पहले पवाडे में उनके दरबार में रंगों के त्यौहार का वर्णन किया है तो दूसरे पवाडें में ऐतिहासिक खर्ड्या के युध्द का वर्णन किया है। होनाजी बाळा लिखने के साथ-साथ गायन का भी काम करते थे। ऐतिहासिक मराठों और निजामों के बीच सन १७७५ में एक युध्द हुआ था। यह युध्द खर्ड्या (तहसिल जामखेड जि. अहमदनगर) के स्थान पर हुआ। इस युध्द का वर्णन करते हुए होनाजी बाळा लिखते हैं कि,

"होता रणखंदळी। यंत्राचा भडिमार न दिसे धुर्म सूर्य निराळीं।

मोकलितां शरजाळीं। भयाभित गज अश्व शूर शत्रुसैन्य माळोमाळीं।।"[३३]

अर्थात खर्ड्या स्थान पर मराठों और निजामों के बीच युद्ध में बंदुक की गोलियाँ और तोफों से गोले दागे जा रहे थे। तोफों की आग के गोले से मानों आकाश में सुर्य दिखाई नहीं दे रहा था। रंनभूमि में निजामों के हत्ती, घोडे और शुर सेना भयभित होकर चारों दिशाओं में भागने लगी थी। अत: मराठों ने यह युध्द जीत लिया था। ऐतिहासिक युध्द का सजीव और वीरतापूर्ण चित्रण होनाजी बाळा ने अपने पोवाडे में किया हैं। शाहिर होनाजी बाळा ने अन्य एक खडकी

युध्द पर ऐतिहासिक वीर काव्य (पवाडे) की रचना की हैं। खडकी स्थान पर मराठा संस्थानिकों के सरदार और अंग्रेजों के बीच युध्द हुआ था। इस मराठा अंग्रजों के युध्द का वर्णन करते हुए होनाजी बाळा 'खडकी व अष्टीची लढाई' नामक पोवाडे में लिखते हैं कि,

"बंदुकी तोफेचे गोळे येतात लष्करामधी।

रक्ताचे पूर वाहताती जशी भरुन चालली नदी।।"[३४]

अर्थात युध्द में अंग्रेंजों की ओर से मराठों के सेना दलों के उपर बंदुक की गोलियाँ और तोफों से गोले दागे जा रहे थे। मराठा सेनाओं की ओर से भी इसका प्रतिकार किया गया। दोनों सेनाओं के खुन से मानों नदी को बाढ आ गयी हो। मराठा सेना का नेतृत्व करनेवाले मारोपंत दीक्षित शत्रु की तोफ के गोले से मारे जाते हैं। अंग्रेजों की सेना का कर्नल बई और कॅप्टन फोर्ड नेतृत्व कर रहे थे। शाहिर होनाजी बाळा ने इस ऐतिहासिक खडकी के युध्द का वर्णन अपने काव्य में किया हैं। दूसरे बाजीराव पेशवा की स्तुतीपरक तीन पवाडों की भी रचना की हैं।

शाहिर होनाजी बाळा ने ऐतिहासिक वीरकाव्य पवाडे के साथ-साथ श्रृंगार परक लावणियों का भी निर्माण किया हैं। दूसरा बाजीराव के ऐश्वर्य और विलासी जीवन पर लावणियों की रचना की हैं। उनके लावणियों में मराठा स्त्री के अंतरमन का सुक्ष्म चित्रण किया है। उनकी लावणियाँ पौराणिक और संगीत की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण हैं। होनाजी बाळा की भाषा सरलता, कोमलता और प्रसाद युक्त गुणों से परिपुर्ण है। उनके ऐतिहासिक पवाडों में ओजस्विता के साथ वीररस की अभिव्यक्ति हुई हैं। उन्होंने भावनाप्रधान भाषा में वर्णनात्मक, कल्पनात्मक और चित्रात्मक शैली का प्रयोग किया है।

मध्यकालीन मराठी साहित्य में शाहिर होनाजी बाळा ने ऐतिहासिक घटना और चरित्र का वर्णन अपने पवाडे के माध्यम से किया हैं। काव्य के माध्यम से

अपने प्रदेश की सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक स्थिति का चित्रण किया हैं। उन्होंने प्रथमतः तमाशा में लावणियों को अलग-अलग सुरों में गाने का अविष्कार किया हैं। मध्यकालीन मराठी साहित्य के ऐतिहासिक वीरकाव्य में शाहिर होनाजी बाळा का महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं।

१.६.३. परशराम :

मध्यकालीन मराठी के शाहिरी साहित्य में तत्कालीन देश और समाज जीवन का यथार्थ और सुक्ष्म निरीक्षण कर अपने साहित्य में वर्णित करनेवाले शाहिर परशुराम थे। उन्होंने अपने पोवाडे के माध्यम से देश की राजनीतिक घटना और स्थिति का निर्भयता के साथ यथार्थ चित्रण किया हैं। अंग्रेजी सत्ता के कारण देश और समाज की दुर्दशा को अभिव्यक्त किया हैं। यह समकालीन प्रसिध्द शाहिर राम जोशी, अनंत फंदी से भी अधिक श्रेष्ठ और प्रसिद्ध रहे हैं। अपने पवाडे के माध्यम से ऐतिहासिक चरित्र के घटनाओं पर काव्य का निर्माण किया हैं। उनके ऐतिहासिक पवाडों में मल्हारराव होळकर, फत्तेसिंह गायकवाड, खंडेराव महाराज, पर ऐतिहासिक वीरकाव्य की रचना की हैं। मराठी साहित्य और इतिहास में उपलब्ध जानकारी के अनुसार शाहिर 'परसराम' के व्यक्तित्व और कृतित्व का अध्ययन निम्न रुप से करेंगे।

- **व्यक्तित्व :**

जन्म :

शाहिर परशराम का जन्म सन १७५४ को नाशिक जिल्हा सिन्नर तहसिल के 'वावी' नामक गाँव में हुआ था। वह दर्जी (सिंपी) समाज से होने के कारण अपने पूर्वजों के दर्जी (कपडे बुनने) का व्यवसाय करते थे। बचपन से ही भगवान विठ्ठल पर अत्याधिक श्रध्दा और शक्ति थी।

शिक्षा :

शाहिर परशराम ने अपनी शिक्षा भगवान बाबा देवापुरकर के अनुग्रह से प्राप्त की थी। बाबा देवापुरकर ही उनके गुरु थे। इन्हीं के उपदेश और आदेश से शाहिर परसराम ने पवाडे और लावणियों की रचना की है। इन्होंने संत साहित्य और पौराणिक ग्रंथों का अध्ययन किया था।

आश्रयदाता :

शाहिर परशराम मल्हारराव होळकर के आश्रय में रहें। इन्हीं के आश्रय में रहकर उनपर भी एक पवाडे की रचना की थी। कुछ वर्षों के बाद बड़ौदा के फत्तेसिंह गायकवाड के आश्रय में रहें।

मृत्यु :

शाहिर परशराम ने अपनी इच्छा से शके १७६६ अर्थात सन १८४४ को मृत्यु स्विकार कर ली थी। शायद उन्हें अपने मृत्यु का आभास या कुछ लक्षण दिखाई दिये होगें। अपनी मृत्यु के कुछ दिन पूर्व उन्होंने पडोसी राज्य और अपने प्रांत के शाहिरों को जलसे के लिए आमंत्रित किया था। इस कार्यक्रम में सभी शाहिरों की रचनाओं को सुना और अपनी रचनाओं को भी सुनाया था। अंत में एकत्रित सभी शाहिरों और लोगों के सामने अपने मृत्यु के संदर्भ में स्वंय कहते है कि, "आजपासून आमचे मरण चार दिवसांनी आहे, गंगेच्या काठी मंजुरास मरण्यास जातो."[३५] अर्थात शाहिर परशराम चार दिन बाद जलसा कार्यक्रम में उपस्थित सभी शाहिर और लोगों के सामने अपनी इच्छा मृत्यु को जाहीर करते हैं। वह गंगा के नदी के किनारे मंजुरा स्थान पर मरने के लिए जाने की बात कहते हैं। शाहिर परशराम का कहा वह सच हो गया और उनकी मृत्यु चार दिन बाद गंगा नदी के किनारे पर हो गयी थी।

- **कृतित्व :**

मध्यकाल के समकालीन शाहिरों में राजनीति और समाज के यथार्थ रुप को अपने काव्य में प्रकट करनेवाले निर्भिक कवि शाहिर परशराम है। उन्होंने देश की दशा, दुर्दशा का निरीक्षण कर देशस्थिति पर तीन पवाडों की रचना की थी। अंग्रेजों के सत्ता कारण से मराठा समाज के दुर्दशा का यथार्थ चित्रण किया है। तत्कालिन समाज में व्याप्त विसंगतियों पर व्यंग्य किया हैं। इन्होंने ऐतिहासिक चरित्र नायक मल्हारराव होळकर के द्वारा किये गए ऐतिहासिक युध्द का वर्णन अपने काव्य में किया हैं। इस ऐतिहासिक युध्द की घटनाओं का चित्र प्रस्तुत करते हुए शाहिर परशराम लिखते हैं कि,

"कुंभरीवर झाली लढाई रात्रंदिस लाही भाजे।
खंडेराव रणीं कामीं आले ढिगाचीं भरली जहाजे।।"[३६]

अर्थात मल्हारराव होळकर ने कुंभरी पर ऐतिहासिक जीत प्राप्त की थी। इस युध्द में खंडेराव की मृत्यु हो गयी थी। मानों रणभूमि में मृतक सैनिकों के ढेरों से जहाज भरे जाते। इसी पोवाडे में उनके पूर्वजों की प्रशंसा और पराक्रम का भी वर्णन किया हैं। बडौदा के फत्तेसिंहा गायकवाड पर भी एक पोवाडे की रचना की हैं। उनके अन्य पवाडों में खंडेराव महाराज, मुंबई बंदराचा, नामक पवाडों के साथ अंग्रेजों पर भी पवाडे लिखे हैं।

शाहिर परशराम ने ऐतिहासिक वीर काव्य के साथ लावणी की भी रचना की हैं। शाहिर परशराम लावणी लिखकर और स्वयं अपने हाथ में वीणा लेकर मधुर स्वर में गाते भी थे। तमाशों में पुरुषों के द्वारा स्त्रियों की वेशभूषा परिधान करने की प्रथा सबसे पहले शाहिर परशराम ने शुरु की थी। पेशवेकाल के अंतिम चरण के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि शाहिर परशराम थे। उनके लावणियों में पौराणिक विषय भी रहे हैं। समाज और मानव जीवन के स्वभाव को सशक्त रुप में प्रकट किया हैं। उनके लावणियों में स्त्री के विभिन्न रुपों का वर्णन किया हैं।

लावनीयों में समाज जीवन और ऐतिहासिक पवाडों में राजनीतिक यथार्थ जीवन को अभिव्यक्त किया हैं।

मध्यकालीन मराठी के शाहिरी साहित्य में ऐतिहासिक चरित्र और घटनाओं पर वीरकाव्य की रचना हुई हैं। सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति करने के लिए लावणियों की रचना शाहिर परसराम ने की हैं। उनकी भाषा में वेदों के पारिभाषिक शब्द और ग्रामीण उपमानों का प्रयोग हुआ हैं। सामाजिक विसंगतियों के लिए व्यंग्यपूर्ण शब्दों का प्रयोग किया है। उनके ऐतिहासिक काव्य में ओजस्वी वाणी को प्रकट करते समय वर्णनात्मक शैली का प्रयोग हुआ है। उनकी रचनाओं में विसंगतियों को दर्शाने के लिए विनोदी और व्यंग्य (हास्य व्यंग्य) की शैली का प्रयोग हुआ है। समाज और देश के विसंगतियों को हास्य व्यंग्य के द्वारा वर्णित करनेवाले एकमात्र समकालीन शाहिर परशराम थे। शाहिर परशराम यथार्थ, स्पष्टवादी, निर्भिक, स्वाभिमानी, शाहिर के रुप में मराठी साहित्य के अध्यताओं को हमेशा प्रेरित करते रहेंगे।

१.६.४. प्रभाकर :

मध्यकालीन मराठी साहित्य में ऐतिहासिक वीरकाव्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण कवि शाहिर प्रभाकर है। पेशवा शासन काल में अद्वितीय शाहिर और मध्यकालीन शाहिरों के ताज शाहिर प्रभाकर कवि रहें हैं। उनके अपने साहित्यिक रचनाओं में इतिहास और काव्य का समन्वय दिखाई देता है। महाराष्ट्र के मध्यकालीन ऐतिहासिक घटना प्रसंगों का वर्णन अपने काव्य में किया हैं। पोवाडे के रचनाओं में समकालीन शाहिर रामजोशी और होनाजी बाळा से श्रेष्ठ शाहिर प्रभाकर रहे हैं। पेशवाई काल की अंतिम ऐतिहासिक घटनाओं की भी हकिकत प्रभाकर कवि ने प्रकट की हैं। इस महान शाहिर के व्यक्तित्व और कृतित्व की विस्तृत जानकारी उपलब्ध नहीं हैं। शाहिर प्रभाकर के पवाडे, कविता, लावणी और

मराठी के साहित्य इतिहास के विद्वानों के मतों का अध्ययन करने के पश्चात निम्न रुप से उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को स्पष्ट किया जा सकता है।

- **व्यक्तित्व :**

जन्म :

शाहिर प्रभाकर के रचनाओं में वर्णित ऐतिहासिक घटना प्रसंगों के आधार पर उनका जन्म सन. १७५५ के आसपास माना जाता हैं। हालांकि चरित्रकारों ने उनका जन्म शके १६९१ अर्थात सन् १७६९ को मानते हैं। लेकिन उनके साहित्य में सन १७६९ जो जन्मतिथि के आस-पास की ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन उनके लावनी में वर्णित हुआ हैं। शाहिर प्रभाकर के कृतित्व को आधार बनाकर उनके जन्म संदर्भ में य.न. केळकर अपने 'ऐतिहासिक पोवाडे' ग्रंथ में लिखते हैं कि, "लावणीवरुन प्रभाकर सन् १७७० गंगुहैबतीच्या फडात सामील झालेला होता ऐवढे निश्चित दिसते. प्रभाकर गंगु हे बतीच्या फडातील एक गाणारा साथीदार होता. म्हणजे अर्थात कमीत कमी पंधरा वर्ष वयाचा असलाच पाहिजे म्हणजे इ.स. १७७० च्या पूर्वि पंधरा वर्ष त्याचा जन्मकाळ नेल्याशिवाय गत्यंतर नाही."[३७] अर्थात शाहिर प्रभाकर के गंगुहैबती के तमाशा के फड में सन १७७० में शामिल हुआ था। उस समय प्रभाकर की आयु लगभग पंद्रह वर्ष की होंगी। इससे स्पष्ट होता हैं कि, चरित्रकार भी प्रभाकर को उम्र के पंद्रह साल में ही कवित्व करने की ओर संकेत किया करते हैं। अतः शाहिर प्रभाकर का जन्म सन् १७५५ को गंगापुर गाँव के चित्पावन कोकणस्थ ब्राह्मण परिवार में हुआ था।

परिवार :

इनका पुरा नाम प्रभाकर जनार्धन दातार था। उनके पिता जनार्धन दातार पुना के पेशवाई महल में कारकून शिलेदार की नोकरी करते थे। उनके पूर्वज महाराष्ट्र में रत्नागीरी जिले के मरुड गाँव के निवासी थे। जनार्धन दातार को तीन संताने थी। उन तीन संतानों में से प्रभाकर जेष्ठ पुत्र थे। जनार्धन के अन्य

दो संतानों में से एक पुत्र की जवानी के २० वर्ष की उम्र में मृत्यु हुई उनका दूसरा एक लडकईं घर छोडकर भाग गया था।

आश्रयदाता :

शाहिर प्रभाकर पुने के पेशवे शासक के आश्रीत थे। सवाई माधवराव पेशवे के आश्रय में रहकर माधवराव पर तीन पवाडे लिखे। इन तीन पवाडों में से ऐतिहासिक घटना खर्ड्या के युध्द का वर्णन एक पवाडे में किया गया हैं। सवाई माधवराव के मृत्यु पश्चात दूसरा बाजीराव पेशवा के आश्रय में उन्हें अत्याधिक सम्मान मिला है। दूसरा बाजीराव की विलासिता पर उन्होंने ३५ लावणियाँ और तीन पवाडे लिखे हैं। उनके अतिरिक्त थोरले सयाजीराव, दूसरा संभाजीराव, राघोजी आदि के आश्रय में रहकर उनकी और उनके पूर्वजों की पवाडें के माध्यम से प्रशंसा की हैं।

मृत्यु :

शाहिर प्रभाकर को अपने अंतिम दिनों में पैसों की कमी के कारण गरीबी और दारिद्र्य में जुझना पडा। गरीबी में जीवन संघर्ष करते हुए सन १८४३ में शाहिर प्रभाकर की मृत्यु हो गयी।

- **कृतित्व :**

शाहिर प्रभाकर अपने पंद्रह वर्ष की आयु से ही लावणी और पवाडों की रचना करना शुरु कर चुके थे। इसी काल पुणे में प्रसिध्द गंगु हैबती के तमाशा के फड में शामिल हो गये थे। गंगु हैबती स्वयं कवि और गायक था। अत: गंगुहैबती के उपदेश और प्रेरणा से कुछ ही वर्षों में प्रभाकर तमाशा फड में शाहिर के रुप में प्रसिध्द हो गये। शाहिर प्रभाकर ने गंगु हैबती को अपने गुरु स्थान के रुप में मान लिया था। कुछ वर्ष बाद सवाई माधवराव पेशवा के आश्रय में रहकर अपने आश्रयदाता पर तीन पवाडों की रचना की हैं। सवाई माधवराव

के दरबार में होली के त्यौहार पर रंग लगाने के ऐतिहासिक कार्यक्रम का वर्णन एक पवाडें में किया हैं। अन्य दो पवाडे में सवाई माधवराव की मृत्यु और खर्ड्या के ऐतिहासिक युध्द का वर्णन किया है। मराठा और निजामों के बीच सन् १७७५ में हुए ऐतिहासिक युध्द का वर्णन करते हुए शाहिर प्रभाकर लिखते हैं कि,

"सुटती तोफा घुंद दणादण। गुंगत गोळे येती छणाछण।।

सो सो करिती बाण सणासण। खालेल घोडे उडती टणाटण।।"[३८]

अर्थात खर्ड्या स्थान पर मराठा और निजामों के बीच ऐतिहासिक युध्द में दोनों ओर से तोफें चलाने पर दणादण की आवाजें आ रही हैं। तोफों के गोले छणछन की आवाजों के साथ सेनाओं पर गीर रहे हैं। धनुष्य से निकलते हुए बाणों की सों-सों की आवाजें आ रही हैं। इन सभी आवाजों से जमिन पर घोडे अपने जगह पर टणाटण उड रहें हैं। इस प्रकार शाहिर प्रभाकर ने खर्ड्या के युध्द का चित्रमयी वर्णन पाठकों के सामने प्रकट किया है। इस मराठा और निजामों के युध्द में मराठा से हार मिलने पर निजाम ने संधि कर ली है। शाहिर प्रभाकर ने दूसरा बाजीराव पेशवा की विलासिता और ऐश्वर्य पर ३५ लावणियाँ रचना की है। बाजीराव के उपर दो पवाडों की रचना कर उनकी प्रशंसा भी की है। पेशवाई के वंश वर्णनों पर दो पवाडे लिखे। अन्य पवाडों में राघाजी आंग्रे, सयाजीराव प्रथम और द्वितीय पर एक-एक पवाडा की रचना की हैं। अहिल्यादेवी होळकर, नाना शंकर सेठ, पेस्तनजी पर भी एक-एक पवाडा लिखा गया हैं। अत: शाहिर प्रभाकर ने ऐतिहासिक घटना पर वीरकाव्य लिखे हैं। ऐतिहासिक पुरुषों पर प्रशस्ति परक रचना भी की हैं।

शाहिर प्रभाकर ऐतिहासिक पवाडों के कारण अत्याधिक चर्चा में रहे हैं। समकालीन शाहिर रामजोशी, होनाजी बाळा, अनंत फंदी, सगनभाऊ, परशराम शाहिरों से भी शाहिर प्रभाकर भाषा की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ शाहिर रहे है। उनकी भाषा और भावना पाठकों के ऱ्हदय तक पहुँचती हैं। अपने पवाडों में हिंदी, उर्दू,

संस्कृत, अग्रेंजी आदि शब्दों का प्रयोग किया हैं। उन्होंने वर्णनात्मक शैली में तत्कालीन समाज और जीवन का स्वाभाविक चित्रण प्रस्तुत किया हैं। ऐतिहासिक युध्द में चित्रात्मकता का प्रयोग किया हैं। शाहिर प्रभाकर ने पेशवा के सत्ताकाल की उन्नति और अवनती को अपनी आँखों से देखकर उसका वर्णन रचनाओं में किया हैं। मध्यकालीन मराठी के ऐतिहासिक वीर काव्य में महत्वपूर्ण शाहिर प्रभाकर हैं।

१.६.५. सगनभाऊ :

मध्यकालीन मराठी के शाहिरी साहित्य में धर्म से मुस्लिम होते हुए भी पंढरपुर के भगवान विठ्ठल की भक्ति करनेवाले एकमात्र शाहिर सगनभाऊ थे। सगनभाऊ केवल मुस्लिम शाहिरों में ही नहीं बल्कि मध्यकालीन मराठी के प्रमुख शाहिरों में से एक हैं। सगनाभाऊ ने समकालीन राजनीतिक और सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्रण भी किया हैं। उनकी रचनाओं में ऐतिहासिक पोवाडे, श्रृंगारिक लावणियाँ और कुछ कवने (स्फुट) पद भी शामिल हैं। पेशवा काल के अंतिम प्रसिध्द शाहिर सगनभाऊ रहे हैं। मध्यकालीन प्रमुख शाहिर सगनभाऊ के व्यक्तित्व और कृतित्व के संदर्भ में बहुत ही कम जानकारी उपलब्ध हैं। उपलब्ध जानकारी के अनुसार सगनभाऊ के व्यक्तित्व और कृतित्व का अध्ययन निम्न रुप से करेंगे।

- **व्यक्तित्व :**

जन्म :

शाहिर सगनभाऊ का जन्म एक मुस्लिम परिवार में शके १७०० अर्थात इ.सन १७७८ में महाराष्ट्र के 'जेजुरि' नामक गाँव में हुआ। मराठी साहित्य में उनके माता-पिता, परिवार के बारें में अधिक जानकारी उपलब्ध नही हैं।

व्यवसाय :

शाहिर सगनभाऊ के पूर्वजों का मुख्य व्यवसाय शस्त्रास्त्रों को धार देना अर्थात 'सिकालगीरी' का व्यवसाय था। सिकालगीर व्यवसाय में उनका मन नहीं लगता था। वह अपने पूर्वजों के व्यवसाय को छोडकर पुना चले गये। पुना में आकर रामा गोंधळी के साथ मिलकर तमाशा का फड तैयार किया। पुना में ही स्थायी रुप से रहकर तमाशा का फड चलाने का काम किया था।

आश्रयदाता :

शाहिर सगनभाऊ पुना के पेशवा दूसरा बाजीराव के आश्रय में रहे थे। अंग्रेजों के द्वारा सन १८१८ के आसपास पेशवाई समाप्त होने के बाद वे सातारा के छत्रपति शिवाजी महाराज के वंशज प्रतासिंह महाराज के आश्रय में रहने लगे थे। इनके आश्रय में रहकर आश्रयदाता के पराक्रम और युध्दों की प्रशंसा पवाडों के माध्यम से की हैं।

मृत्यु :

मध्यकालीन मराठी के प्रमुख शाहिर सगनभाऊ हैं। इन्होंने बडी निर्भयता के साथ अपने काव्य में राजनीतिक और सामाजिक जीवन का चित्रण किया है। शाहिर सगनभाऊ की मृत्यु शके १७६२ अर्थात सन १८४० में हुई है।

- **कृतित्व :**

शाहिर सगनभाऊ ने अपने पूर्वजों का व्यवसाय छोडकर रघु और रामा गोंधळीयों के साथ मिलकर पुणे में तमाशा का फड तैयार किया। इस फड में सगनभाऊ लावनी की रचना करते तो गाने का काम साबु और रामा गोंधळी करते थे। सगनभाऊ ने अनेक पौराणिक ग्रंथ और संत साहित्य का अध्ययन किया था। दूसरा बाजीराव पेशवा के कार्यकाल में सगनभाऊ कवित्व की दृष्टि से लोकप्रिय हुए थे। दूसरे बाजीराव की विलासवृत्ती पर १५ लावणियों का निर्माण

किया था। उनकी प्रशस्ति में दो पवाडों की रचना की हैं। सातारा के प्रतापसिंह महाराज की प्रशंसा करते हुए दो पोवाडे लिखे। शाहिर सगनभाऊ ने ऐतिहासिक खडकी, पानिपत युध्दों का भी वर्णन अपने पोवाडे में किया हैं। मराठा और अंग्रेजों के बीच खडकी नामक युध्द का वर्णन करते हुए इस युध्द में शहिद बापु गोखले के संदर्भ में सगनभाऊ लिखते हैं कि,

"युध्द केले त्याने युध्द केलें बहुत। बाबासाहेब विश्र्वास देउन माहुलीस गेला।।"[३९] अर्थात बापु गोखले ने इस युध्द में अंत तक अपनी वीरता दिखाई थी। बाबासाहेब अर्थात दूसरा बाजीराव पेशवा ने युध्द करने का वचन देकर विश्र्वासघात करके युध्द छोडकर माहुली भाग जाता हैं। मराठा सेनाओं का प्रतिनिधित्व करनेवाले बापु गोखले युध्द में शहिद हो जाते हैं।

शाहिर सगनभाऊ ने पानीपत स्थान पर सन १७६१ में ऐतिहासिक पानीपत युध्द का वर्णन अपने पवाडे में किया हैं। पानीपत युध्द के प्रसंग पर सातारा के राजा प्रतापसिंह के आश्रय में इस पवाडे की रचना की है। पानीपत में अफगान के अहमदशाह अब्दाली और मराठों के एकत्रित सरदारों के बीच यह युध्द हुआ था। इस भयंकर युध्द का नेतृत्व मराठों की ओर से सदाशिवराव और विश्र्वासराव पेशवे कर रहे रहे थे। इस युध्द में उनकों साथ देने के लिए होळकर, गायकवाड, सिधियाँ, सुरजमल राजा आदि लोग थे। इस पानीपत के रणभूमि के युध्द का सजीव चित्रण करते हुए सगनभाऊ लिखते हैं कि,

"पानपतावर सुरु लढाई भाउ अंबारीत कमान तीर।
बाण बंदुकीचे फैर झाडती तोफेचे गोळे पडे जसे गार।।"[४०]

अर्थात पानीपत पर अफगान और मराठों के बीच युध्द शुरु हुआ था। सदाशिव भाऊ उमरी में बैठकर बान चला रहे थे। रणभूमि में बाणों और बंदुक की गोलियों की बौछार हो रही थी। तोफ के गोले ऐसे दाग रहे हैं मानों आसमान से ओले गीर रहे हों। इस भयंकर युध्द में सदाशिवराव भाऊ की तोफ का गोला

लगने से मृत्यु हो जाती हैं। अंत में सेना और सरदारों का आत्मविश्वास टुट जाता हैं। ऐतिहासिक पानीपत युध्द में अंतिम समय में मराठों की हार हो जाती हैं। इस ऐतिहासिक युध्द पर वीर रसात्मक काव्य (पवाडे) की सगनभाऊ ने रचना की हैं। दूसरा बाजीराव पर लिखित पवाडों में खडकी युध्द के बाद बाजीराव पेशवा का पुना छोडना और स्वराज्य दुर्दशा का चित्रण सगनभाऊ ने किया है।

शाहिर सगनभाऊ ने ऐतिहासिक वीर काव्य के साथ-साथ श्रृंगारिक लावणियाँ भी लिखी हैं। लावणियों में नारी के बाह्य सौंदर्य का वर्णन नहीं बल्कि अंतरिक मनोभावों का चित्रण किया हैं। उनकी नायिका जीवन के व्यवहार और सतर्कता का उपदेश देती हैं। उन्होंने पौराणिक ग्रंथ रामायण और महाभारत के उदाहरणों को वीरकाव्य में प्रकट किया हैं। मराठों का रुढी, परंपराओं के प्रति स्वाभिमान दिखाई देता है। उनकी भाषा सरल, स्पष्ट और भावना प्रधान हैं। अपनी रचनाओं में वीर, श्रृंगार और करुण रसों का अधिक प्रयोग किया हैं। सगनभाऊ धर्म से मुस्लिम होकर भी हिंदू धर्म के आराध्य भगवान विठ्ठल, धर्मग्रंथ और संतों के प्रति अत्याधिक श्रध्दा-भक्ति थी। वह केवल मुस्लिम मराठी भाषा के शाहिरों के पक्तियों में नहीं बल्कि मध्यकालीन मराठी के प्रमुख पाँच शाहिरों में से एक हैं। मध्यकालीन मराठी साहित्य में शाहिर साहित्य की वैभशाली परंपरा शाहिर सगनभाऊ की मृत्यु के पश्चात लगभग समाप्त सी हो गयी थी।

अंत में हम कह सकते हैं कि मराठी साहित्य के आदिकाल में पौराणिक संस्कृत साहित्य पर आधारित चरित्र नायक का वीर रसात्मक वर्णन, काव्य का विषय बनाया गया था। उनके पौराणिक नायकों के द्वारा किये गऐ युध्द का वर्णन काव्यों में किया हैं। मध्यकालीन मराठी साहित्य में पौराणिक नायकों के स्थान पर ऐतिहासिक चरित्र नायकों के युध्द का वर्णन शाहिरी कवियों के द्वारा किया जाने लगा। मराठी साहित्य में ऐतिहासिक वीरकाव्य की शुरुवात शाहिरों के पोवाडे काव्य प्रकार से शुरु हो गयी थी। इसमें मध्यकालीन मराठी के प्रमुख शाहिरों में

अनंत फंदी, होनाजी बाळा, परशराम, प्रभाकर और सगनभाऊ प्रमुख शाहिर हैं। इन शाहिरों के अलावा अन्य सैकडों शाहिरों ने ऐतिहासिक वीरकाव्य मराठी में लिखा। अतः मध्यकालीन मराठी साहित्य में ऐतिहासिक वीरकाव्य की परंपरा रहीं हैं।

निष्कर्ष :

साहित्य और इतिहास दोनों भी समाज के पथदर्शन का काम करते हैं। प्राचीन काल से ही मनुष्य का जीवन संघर्ष और संग्राम से जुडा रहा हैं। वीरता मनुष्य की मूल प्रवृत्ति हैं। आदिकालीन साहित्य से ही पौराणिक चरित्र नायकों के युध्द, पराक्रम और उनकी वीरता का वर्णन पौराणिक ग्रंथों में किया गया हैं। वीर काव्यधारा साहित्य का अभिन्न अंग है। ऐतिहासिक वीरकाव्य के मूल तत्व भारतीय पौराणिक ग्रंथों में दिखाई देते हैं। विश्वसाहित्य में युरोप के प्राचीन कवि 'होमर' ने इलियड महाकाव्य में 'ट्राय' राज्य के ऐतिहासिक युध्द का वर्णन किया है। वीर काव्यधारा देश और प्रदेश तक सीमित नहीं बल्कि वह विश्व साहित्य का भी अभिन्न अंग हैं। प्राचीन हिंदी और मराठी भाषा में भी भारतीय प्राचीन संस्कृत के पौराणिक ग्रंथों से यह प्रवृत्ति धीरे-धीरे विकसित होकर ऐतिहासिक रुप धारण कर चुकी हैं। दोनों भाषा में पौराणिक चरित्र नायकों के स्थान पर ऐतिहासिक चरित्र नायकों के वीरता, पराक्रम और उनके युध्दों का वर्णन किया जाने लगा।

हिंदी साहित्य के आदिकाल में चारण और भाट कवियों ने इस ऐतिहासिक वीरकाव्य का निर्वाहन किया हैं। इस काल में हिंदी साहित्य के चंदबरदाई कवि ने पृथ्वीराज रासों, कवि जगणिक ने परमाल रासो, दलपति विजय ने खुमान रासों में ऐतिहासिक चरित्र नायकों पर वीरकाव्य लिखा है । हिंदी साहित्य का मध्यकालीन ऐतिहासिक वीर काव्य के अंतर्गत अत्याधिक ऐतिहासिक घटना और वीर नायकों का वर्णन अपने काव्य में किया हैं। इन काव्यधारा के प्रमुख कवि केशवदास ओरछा के नरेश रामसिंह के भाई इंद्रजीत सिंह के आश्रय में रहें थे।

कवि केशवदास ने रतनसिंह की वीरता पर 'रतन बावनी' वीरसिंह देव बुंदेला के जीवन चरित्र पर 'वीरसिंह देव चरित' और जहाँगिर बादशाह के उपर जहाँगीर जस चंद्रिका काव्य ग्रंथ लिखा है। इन तीनों काव्य में उनके ऐतिहासिक युध्द, पराक्रम, वीरता और वैभव का वर्णन किया है। कवि 'भूषण' ने अपने आश्रयदाता शिवाजी महाराज के ऐतिहासिक और सच्ची वीरता का वर्णन किया हैं। उनका जन्म उत्तर भारत के कन्याकुब्ज ब्राह्मण परिवार में हुआ हैं। उनके प्रमुख ग्रंथों में शिवाबावनी, शिवराज भूषण, छत्रसाल दशक, और कुछ स्फुट पद उपलब्ध होते हैं। उनके द्वारा लिखित शिवाबावनी और शिवराज भूषण में शिवाजी महाराज के ऐतिहासिक वीरता पराक्रम, युध्दों का वर्णन किया हैं। बुंदेला के राजा छत्रसाल की वीरता पर छत्रसाल दशक में दस छंद में उनका वर्णन किया हैं। उन्होंने स्फुट पदों में शिवाजी महाराज के साथ-साथ अन्य राजा और सरदारों की वीरता और प्रशंसा की हैं।

लाल कवि ने बुंदेला के राजा छत्रसाल की वीरता, पराक्रम, शौर्य, पर 'छत्रप्रकाश' नामक ऐतिहासिक वीरकाव्य की रचना की हैं। लाल कवि का जन्म भी बुंदेलखंड के संकोली में उनका हुआ था। राजा छत्रसाल के आश्रय में रहकर 'छत्रप्रकाश' काव्य ग्रंथ में छत्रसाल के पिता चंपतराव का संघर्षपूर्ण जीवन और छत्रसाल राजा के युध्द, पराक्रम आदि घटनाओं का वर्णन किया हैं। सुदन कवि भारतपुर के राजा सुजानसिंह के आश्रय में रहकर 'सुजान-चरित्र' यह ऐतिहासिक वीरकाव्य लिखा हैं। उनका जन्म उत्तरप्रदेश के मथुरा शहर में हुआ था। अपने 'सुजान चरित्र' काव्य में सुजानसिंह के पराक्रम, वीरता, युध्दों का ऐतिहासिक वर्णन हैं। मध्यकालीन ऐतिहासिक वीरकाव्य के अंतिम प्रमुख कवि पदमाकर हैं। कवि पदमाकर का जन्म मध्यप्रदेश के 'सागर' नामक गाँव में हुआ है। वे अपने आश्रयदाताओं को हमेशा बदलते रहते थे। उनके द्वारा लिखे गये ऐतिहासिक 'हिम्मत बाहदुर विरुदावली' काव्य में हिम्मत बहादुर के तीन

ऐतिहासिक युध्दों का वर्णन हैं। हिंदी साहित्य में ऐतिहासिक वीर काव्य साहित्य का अभिन्न अंग हैं।

संस्कृत के पौराणिक ग्रंथों से मराठी साहित्य में ऐतिहासिक वीरकाव्य की काव्यधारा प्रवाहित हुई है। मराठी के प्राचीन काव्य में पौराणिक संस्कृत ग्रंथों के चरित्र नायक कृष्ण, राम के पौराणिक घटना प्रसंग में उनके वीरता, पराक्रम और युध्दों का वर्णन होता रहा हैं। मराठी साहित्य के मध्यकाल में संत साहित्य, पंत साहित्य, और तंत साहित्य (शाहिरी साहित्य) अर्थात इसे ही ऐतिहासिक वीर काव्य कहा जाता है। शाहिरी साहित्यकारों ने ही मध्यकालीन मराठी साहित्य को ऐतिहासिक और सामाजिक जीवन के साथ जोड दिया है। मध्यकालीन मराठी के शाहिरों (कवि) ने अपने काव्य में संस्कृत के पौराणिक चरित्र नायकों के स्थान पर ऐतिहासिक चरित्र नायकों के युध्द, वीरता, पराक्रम का वर्णन करना शुरु किया है। मध्यकालीन मराठी ऐतिहासिक वीरों के घटना, प्रसंग का वर्णन अपने पवाड़ों के माध्यम से किया है।

ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन करनेवाले शाहिरों में प्रमुख शाहिर अनंत फंदी है। इनका जन्म महाराष्ट्र के 'संगमनेर' गाँव में सन १७४४ में हुआ हैं। इन्होंने ऐतिहासिक वीर सवाई माधवराव पर 'माधवनिधन काव्य' इस काव्य ग्रंथ की रचना की है। उन्होंने सात ऐतिहासिक पवाडों में नाना फडणिस, फत्तेसिंह गायकवाड, यशवंतराव होळकर, दूसरा बाजीराव, चिंतामणराव, ठाकूरजी और खर्ड्या के ऐतिहासिक युध्द का वर्णन किया हैं। शाहिर होनाजी बाळा का जन्म लिंगायत सम्प्रदाय के नंदगवळी समाज में सन १७५४ में हुआ हैं। माधवराव पेशवा और दूसरा बाजीराव के आश्रय में रहकर ऐतिहासिक 'खर्ड्या और अष्टि' के युध्द का वर्णन किया है। होनाजी बाळा ने मराठा और अंग्रेजों के बीच हुए खडकी के युध्द का भी वर्णन किया हैं। शाहिर परसराम का जन्म १७५४ में 'वावी' नामक गाँव में हुआ है। उन्होंने मल्हारराव होळकर के आश्रय में रहकर

उनके द्वारा किये गये कुंभरी के ऐतिहासिक युध्द पर एक पवाडे की रचना की है। इसके बाद बडौदा के फत्तेसिंह गायकवाड के आश्रय में रहकर एक ऐतिहासिक पवाडा लिखा हैं। शाहिर प्रभाकर का जन्म सन १७५५ को गंगापुर गाँव में चित्पावन कोकणस्थ ब्राह्मण परिवार में हुआ है। अपने आश्रयदाता सवाई माधवराव के मृत्यु के बाद दूसरा बाजीराव के आश्रय में गये थे। सवाई माधवराव पर तीन और दूसरे बाजीराव पेशवा पर तीन पवाडों के साथ-साथ खर्ड्या के ऐतिहासिक युध्द के वर्णन पर भी एक पोवाडा लिखा हैं। शाहिर होनाजी बाळा धर्म से मुस्लिम होते हुए भी मध्यकालीन मराठी के प्रमुख शाहिरों में इनका नाम लिया जाता हैं। महाराष्ट्र के 'जेजुरि' नामक गाँव में सन १७७८ में उनका जन्म हुआ। दूसरा बाजीराव के आश्रय में रहें थे। पेशवाई समाप्त होने के बाद सातारा के प्रतापसिंह महाराज के आश्रय में रहें। दूसरा बाजीराव की प्रशस्ति पर दो पवाडे और प्रतापसिंह महाराज पर दो ऐतिहासिक पोवाडे लिखे हैं। ऐतिहासिक खडकी युध्द, पानीपत युध्द पर भी ऐतिहासिक पोवाडे की रचना की हैं।

अतः हिंदी-मराठी दोनों भाषा के साहित्य में ऐतिहासिक वीरकाव्य के मूल तत्व संस्कृत साहित्य प्राचीन ग्रंथों में दिखाई देते हैं। पौराणिक ग्रंथों के चरित्र नायकों की जगह ऐतिहासिक चरित्र नायकों के युध्द का वर्णन किया जाने लगा। यही से दोनों साहित्य में ऐतिहासिक वीरकाव्य के काव्यधारा की शुरुवात हुई हैं। मध्यकाल में दोनों भाषाओं के साहित्य में ऐतिहासिक वीरकाव्य लिखा गया है।

संदर्भ सूची :

१. डॉ. धनंजय, हिंदी के ऐतिहासिक नाटकों में इतिहास तत्त्व, पृ. सं. ३०

२. धीरेन्द्र वर्मा, हिंदी साहित्य, पृ. सं. १३८

३. hi.m.विकिपीडिया ottg/wiki/ इलियाड

४. डॉ. गणपति चंद्र गुप्त, हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, पृ. सं. ३६१

५. डॉ. हरदेव बाहरी, हिंदी काव्य शैलियों का अध्ययन, पृ. सं. १३.

६. डॉ. उदयनारायण तीवारी, वीरकाव्य पृ. सं. १७७

७. धीरेन्द्र वर्मा, हिंदी साहित्य पृ. सं. १७९

८. कवि प्रिया, सातवीं बार, सन १९२४, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, पृ. सं. १०

९. आ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, हिंदी साहित्य का अतीत पृ. सं. १०१

१०. डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त, हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, पृ. सं. ३७८

११. आ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, हिंदी साहित्य का अतीत, पृ. सं. १०१

१२. डॉ. भगवानदास तिवारी, भूषण : साहित्यिक एवं ऐतिहासिक अनुशीलन, पृ. सं. ४५

१३. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराजभूषण, पृ. सं. १५

१४. राजमल बोरा, भूषण और उनका साहित्य, पृ. सं. ६६

१५. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण पृ. सं. २२२

१६. डॉ. भगीरथ मिश्र, हिंदी साहित्य का ब्रहत इतिहास, पृ. सं. ३९२

१७. लाल कवि रचित छत्रप्रकाश, श्याम सुंदरदास बा.ए. और कृष्ण बलदेव वर्मा तथा का.ना. प्र. सभा द्वारा प्रकाशित, इलाहबाद, नवाँ अध्याय दोहा १ पृ. सं. ६५

१८. आ. रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास पृ. सं. २४८

१९. डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त, हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, पृ. सं. ३८३

२०. डॉ. उदयनारायण तीवारी, वीरकाव्य पृ. सं. ३६१

२१. https://hi.m.wikipedia.otglwiki सूदन

२२. डॉ. उदयनारायण तिवारी, वीरकाव्य, पृ. सं. २८२

२३. टीकमसिंह तोमर, हिंदी वीरकाव्य पृ. सं. ३३२

२४. आ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, हिंदी साहित्य का अतीत पृ. सं. १८८

२५. आ. रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास पृ. सं. २३०

२६. टीकमसिंह तोमर, हिंदी वीरकाव्य पृ. सं. २४४

२७. धीरेंद्र वर्मा, हिंदी सहित्य पृ. सं. १७९

२८. डॉ.प्र.न.जोशी, मराठी वाङ्मयाचा विवेचक इतिहास-प्राचीन काळा, पृ. सं. ५०५

२९. वि.सी. सरवटे, मराठी साहित्य समालोचन, पृ. स. १६

३०. सं. म.ना. अदवंत, पैंजण, प्रस्तावना से, पृ. सं. ०३

३१. सं. रा. श्री. जोग, मराठी वाङ्मयाचा इतिहास, (तृतीय खंड), पृ. सं. ४२७

३२. सं. य. न. केळकर, ऐतिहासिक पोवाडे (प्रथम भाग), पृ. सं. ३६०

३३. वही, पृ. सं. २६८

३४. वही, पृ. सं. ३८६

३५. ल. रा. नसिराबादकर, प्राचीन मराठी वाङ्मयाचा इतिहास, पृ. सं. ३०१

३६. सं. य. न. केळकर ऐतिहासिक पोवाडे (तृतीय खंड), पृ. सं. १७६

३७. सं. य.न. केळकर, ऐतिहासिक पोवाडे (प्रथम भाग) प्रस्तावना से, पृ. सं. ९१

३८. सं. यन. क. केळकर, ऐतिहासिक पोवाडे (प्रथम भाग), पृ. सं. २२३

३९. वही, पृ. सं. ३८५

४०. वही, पृ. सं. १२०

द्वितीय अध्याय

मध्यकालीन हिंदी साहित्य में वर्णित छत्रपति शिवाजी महाराज का स्वरुप

द्वितीय अध्याय

मध्यकालीन हिंदी साहित्य में वर्णित छत्रपति शिवाजी महाराज का स्वरुप

२.१) मध्यकालीन हिंदी साहित्य में वर्णित शिवाजी महाराज का बहिरंग स्वरुप

२.१.१. शिवाजी महाराज के राजवंश का वर्णन

२.१.२. जन्म एवं नामकरण

२.१.३. आकृति और वेशभूषा

२.१.४. क्रिया-प्रतिक्रिया का चित्रण

२.१.५. किले रायगढ़ का वर्णन

२.१.६. शिवाजी महाराज के नगाडों का वर्णन

२.१.७. शिवाजी महाराज की तलवार का वर्णन

२.२) मध्यकालीन हिंदी साहित्य में वर्णित शिवाजी महाराज का स्वरुप

२.२.१. बचपन और शिक्षा

२.२.२. नम्रता

२.२.३. बुध्दि चातुर्यता

२.२.४. दृढ़ प्रतिज्ञा

२.२.५. स्वाभिमान

२.२.६. श्रध्दावान

२.२.७. साहसी और निर्भयता

२.२.८. कार्यक्षमता

२.२.९. कुशल संघटक

२.२.१०. कुशल राजनीतिज्ञ

२.२.११. कुशल युध्दनीतिज्ञ

२.२.१२. प्रजाहित दक्ष

२.२.१३. स्वधर्माभिमान

२.२.१४. हिंदू धर्म रक्षक

२.२.१५. वीर योध्दा

२.२.१६. पराक्रमी राजा

२.२.१७. पराक्रमी सेना नायक

२.२.१८. शत्रु पक्ष पर धाक

२.२.१९. दयावीर

२.२.२०. दानवीर

२.२.२१. वैभव संपन्न राजा

२.२.२२. अवतारी पुरुष

२.२.२३. कीर्ति और यशवंत राजा

२.२.२४. दूरदर्शिता

२.२.२५. उदारमतवादी

२.२.२६. न्यायप्रिय राजा

२.२.२७. बहुजन प्रतिपालक

२.२.२८. स्त्री के प्रति आदरभाव

२.२.२९. आदर्श शासक

द्वितीय अध्याय

मध्यकालीन हिंदी साहित्य में वर्णित छत्रपति शिवाजी महाराज का स्वरुप

२.०) प्रस्तावना :

मानव मन में अपने अतीत के प्रति तीव्र आकर्षण होता हैं। अतीत के घटनाओं को जानने और समझने की एक जिज्ञासा उसके मन में होती हैं। इसके लिए वह इतिहास या ऐतिहासिक साहित्य को पढने लगता हैं। किसी महापुरुषों के कार्य को जानने और समझने के लिए केवल इतिहास का ही एक मात्र सहारा लेना गलत होगा। उन महापुरुषों के कार्य को ऐतिहासिक साहित्य में भी उजागर किया है। कुछ नये अनुसंधान और उपलब्ध प्रमाणों से इतिहास के पुनर्लेखन की माँग भी हो रही है। कुछ इतिहासकारों ने भी समाज, व्यक्ति और महापुरुषों का इतिहास भी अपनी सुविधा या अध्ययन की सीमा के कारण तोड मरोडकर लिखा हैं। ऐसे समय में उन महापुरुषों के कार्य को जन मानस के सम्मुख रखने के लिए ऐतिहासिक साहित्य का आधार लेना जरुरी हो जाता है। ऐतिहासिक साहित्य के साहित्यकारों ने यही काम निरंतरता से किया है और कर रहें हैं।

इतिहास में इतनी शक्ति नहीं हैं कि वह किसी ऐतिहासिक चरित्र नायक को जन मानस में आदर्श के रुप में स्थापित करें। केवल साहित्य ही यह कार्य कर सकता है। पौराणिक चरित्र नायक 'राम' आज समाज के मानस पटल पर इसलिए हैं कि उनके यश और कीर्ति को संस्कृत के महाकवि 'वाल्मीकि' ने रामायण इस महाकाव्य में लिखा है। संसार में अनेक पराक्रमी 'राम' के नाम का जन्म हुआ। परंतु जिस राम का यश महाकवि वाल्मीकि ने लिखा वही राम आज तक जन सामान्य के मन में स्थापित हैं। 'रावन' जो शक्ति, युक्ति, बुध्दि और उनकी युध्द नीति के गुणगान, यशगान करनेवाला कोई कवि नहीं मीला, इसलिए उनकी जनमान्य प्रतिमा मलिन हो चुकी है। उसी प्रकार महर्षि व्यास ने 'कृष्ण' के चरित्र को जनमानस में स्थापित किया है। इन्होंने 'महाभारत' ग्रंथ लिखकर

कृष्ण के द्वारा धर्मज्ञान के उपदेश को प्रस्तुत किया। इसी प्रकार से ऐतिहासिक साहित्य लिखनेवाले कवियों ने भी ऐतिहासिक चरित्र नायक को जन सामान्य के मानस पटल पर उनके यश और कीर्ति को प्रस्तुत किया हैं।

प्राचीन भारत में गौतम बुध्द, चंद्रगुप्त मौर्य, अशोक सम्राट, महाराणा प्रताप जैसे अनेक ऐतिहासिक महापुरुष आज भी हजारों सालों के बाद हमें प्रेरणा दे रहे हैं। उसी प्रकार मध्यकालीन भारत में मानवीय श्रेष्ठ गुणों से पुरिपूर्ण जो व्यक्ति, समाज, देश और विश्व के लिए आदर्श शिवाजी महाराज है। वे आज भी एक दीपस्तंभ के रुप में दिखाई देते हैं। भारतीय इतिहास के साथ-साथ भारतीय साहित्यकारों ने भी शिवाजी महाराज के 'शिवचरित्र' को सामान्य जन तक पहुँचाया हैं। 'शिव चरित्र' में इतिहास के नये उपलब्ध प्रमाणों और अनुसंधान से जो परिवर्तन हुआ, उसी प्रकार साहित्य में भी यही प्रवृत्ति दिखाई देती हैं। समाज और समय की आवश्यकता के अनुरुप राम और कृष्ण के स्वरुप प्रतिमा को साहित्यकारों ने परिवर्तित किया हैं, उसी प्रकार मध्यकालीन शिवाजी महाराज की साहित्यिक प्रतिमा और आधुनिक काल में शिवाजी महाराज की साहित्यिक स्वरुप में साहित्यकारों ने प्रासंगिकता के अनुसार परिवर्तित करने का प्रयास किया है।

शिवाजी महाराज के चरित्र को लेकर अलग-अलग भारतीय भाषाओं में हजारों ग्रंथ लिखे गए हैं। जिसमें बंगला साहित्य में शिवाजी महाराज का स्वरुप मुख्य रुप से राजनीतिक थी। अन्य भाषाओं में भी लिखी है। लाला लजपतराय ने 'उर्दू' में शिवाजी महाराज पर जीवनी लिखी है। असामी में अतुलचंद्र हजारीका द्वारा लिखित 'छत्रपति शिवाजी' की रचना तो गडिराम व्यंकटेश शास्त्री ने तेलगु भाषा में शिवाजी पर महाकाव्य लिखा। कन्नड भाषा में श्रीनिवास ने 'शिवाजी' नामक रचना लिखी हैं। गुजराती भाषा में १८९० में ऐदलजी पटेल ने 'सुरत नी तवशिख' लिखा है। तात्पर्य है कि, अलग-अलग भारतीय भाषाओं में विभिन्न विधाओं में शिवाजी महाराज के स्वरुप का चरित्र चित्रण दिखाई देता है।

शिवाजी महाराज के समकालीन और मध्यकालीन भारतीय साहित्य में शिवाजी महाराज का चरित्र चित्रण प्रमुख मराठी, संस्कृत और हिंदी इन तीन भाषाओं में किया गया है। संस्कृत साहित्य में शिवाजी महाराज के दरबारी कवि परमानंद ने 'शिव भारत' अर्थात 'अनुपुराण' इस ग्रंथ की रचना की। उसके बाद शहाजी के दरबारी कवि जयराम पिंडे नें 'पर्णाल पर्वत ग्रहणाख्यान' काव्य लिखा है। सन् १६७४ में संकर्षण सकळकळे द्वारा लिखित 'शिवकाव्य' की रचना की गयी है। सन् १६७४ में गागा भट्ट ने 'शिवराज्यभिषक' यह ग्रंथ लिखा हैं। संस्कृत साहित्य में शिवाजी महाराज को विष्णु के अवतार, हिंदुधर्म रक्षक, हिंदुधर्म उध्दारक, दयावीर, दानवीर, धर्मवीर, म्लेच्छनाशक आदि धार्मिक प्रतिमा के साथ चित्रित किया हैं।

मराठी भाषा के शिवकालीन साहित्य में 'अफजल वध' के बाद माता जिजाबाई के सामने शाहिर अज्ञानदासने 'अफजल वध' का पवाडा प्रस्तुत किया था। शाहिर तुलसीदास ने भी सरदार तानाजी मालसरे पर पोवाडे की रचना की हैं। संत तुकाराम महाराज और रामदास स्वामी ने शिवाजी महाराज की प्रशंसा की है। शिवाजी महाराज की मृत्यु के पश्चात मराठी जीवनीकारों ने भी शिवाजी महाराज के चरित्र को प्रस्तुत किया हैं। मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज की साहित्यिक प्रतिमा विष्णु के अवतार, धर्मरक्षक, वीरयोध्दा के साथ-साथ 'गोब्राह्मण प्रतिपालक' का रुप पेशवेकालीन साहित्य में प्रचलित किया गया।

शिवकाल में संस्कृत कवि परमानंद ने शिवाजी महाराज पर 'शिवभारत' यह ग्रंथ लिखा है। हिंदी के मध्यकालीन साहित्य में वीर शिवाजी महाराज पर उनके राजदरबारी कवि भूषण ने 'शिवराजभूषण' यह महत्वपूर्ण काव्य लिखा है। महाकवि भूषण ने इसी ग्रंथ से हिंदी में शिवाजी महाराज के चरित्र को अमर बनाया। भूषण द्वारा लिखित 'शिवा बावनी' भी शिवाजी महाराज के चरित्र को स्पष्ट करता है। भूषण के नाम पर कुछ 'फुटकर' (स्फुटपद) पद भी उपलब्ध होते

है। जिस में शिवाजी महाराज के स्वरुप का चित्रण स्पष्ट दिखाई देता है। 'लाल' कवि ने शिवाजी महाराज का हिंदू संघटक के रुप को चित्रित किया हैं। उनके बाद हिंदी साहित्य के मध्यकाल में शिवाजी महाराज पर किसी भी प्रकार के ग्रंथ की उपलब्धता नहीं हैं। इसी प्रकार संस्कृत और मराठी के मध्यकालीन साहित्य में शिवाजी महाराज पर कुछ शताब्दियों तक साहित्य ही नहीं लिखा गया। बडे आश्चर्य की बात हैं कि, इतने बडे वीर यौध्दा, पराक्रमी राजा के चरित्र को साहित्यकारों ने द्वारा दुर्लक्षित किया था। फिर कुछ शताब्दियों के बाद भारत में राष्ट्रिय चेतना को जगाने के लिए शिवाजी महाराज पर साहित्य लिखा जाने लगा अलग-अलग भारतीय भाषाओं में शिवाजी महाराज के स्वरुप को समाज के सामने रखने का प्रयास किया है। आधुनिक काल में हिंदी की अलग-अलग विधाओं में शिवाजी महाराज पर प्रचुर मात्रा में साहित्य लिखा गया है।

वाल्मीकि ने संस्कृत भाषा में 'राम' को लोगों के मन में अमर कर दिया। हिंदी के मध्यकालीन साहित्य में 'राम' को तुलसीदास ने 'रामचरित मानस' लिखकर घर-घर पहुँचाया हैं। उसी प्रकार महाकवि भूषण ने शिवाजी महाराज की यश और कीर्ति को पूरे भारवर्ष में 'शिवराज भूषण' ग्रंथ लिखकर अमर कर दिया हैं।

२.१) मध्यकालीन हिंदी साहित्य में वर्णित शिवाजी महाराज का स्वरुप :

मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज के स्वरुप का अध्ययन करने के लिए दो भगों में १. बहिरंग स्वरुप २. अंतरंग स्वरुप में विभक्त किया हैं। शिवाजी महाराज के 'बहिरंग स्वरुप' में आकृती, वेशभूषा, रंग, रुप, शारीरिक सुंदरता जो प्रथम दर्शि दिखाई देती है, उसका वर्णन किया हैं। 'अंतरंग स्वरुप' में गुणों और विशेषताओं का अध्ययन करेंगें। शिवाजी महाराज के गुणात्मक स्वरुप को स्पष्ट करते हुए भूषण कहते हैं-

"सुन्दरता गुरुता प्रभुता भनि भूषन होत है आदर जामैं।

सज्जनता औ दयालुता दीनता कोमलता झलकै परजा मैं।

दान कृपानहु को करिबो करिबो अभै दीनन को बार जामैं।

साहन सों रन टेक बिवेक इते गुण एक सिवा सरजा मैं।।"[१]

अर्थात शिवाजी महाराज में सज्जनता, दयालूता, कोमलता, आदरभाव (नम्रता), बडप्पन, प्रभुता, प्रजा के प्रति साहिष्णुता आदि गुण झलकते हैं। साहस के साथ युध्द करना, शत्रु को अभयदान देना, युध्द का प्राण (प्रतिज्ञा) कर विवेक के साथ निर्णय लेने के संपूर्ण गुण एक अकेले शिवाजी महाराज में है। मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज के बहिरंग और अंतरंग स्वरुप का अध्ययन निम्न प्रकार से करेंगे।

२.१) मध्यकालीन हिंदी साहित्य में वर्णित शिवाजी महाराज का बहिरंग स्वरुप :

२.१.१. शिवाजी महाराज के राजवंश का वर्णन :

शिवाजी महाराज का राजवंश 'सूर्यवंशी' कूल का हैं। 'सूर्यवंशी' पृथ्वी पर श्रेष्ठ कुल माना जाता है हिंदू धर्म के अनुसार इसी कूल में भगवान राम का जन्म हुआ हैं। कंस को मारने के लिए पृथ्वी पर कृष्ण के रुप में भगवान विष्णु ने जन्म लिया। इसी राजवंश के संदर्भ में भूषण कहते हैं कि-

"रजत है दिनराज को वंस अवनि अवतंस।

जामै पुनि पुनि अवतरे, कंसमथन प्रभु अंस।।"[२]

अर्थात श्रेष्ठ सूर्यकूल में रावन को मारने के लिए प्रभू राम ने और कंस को मारने के लिए भगवान कृष्ण ने जन्म लिया।

इसी 'सूर्यवंशी' कुल का एक बडे 'बली' नाम के राजा हुए जिन्होंने भगवान शिव को अपना शीश देकर सीसौदिया की पदवी पाई। इसके बारे में भूषण लिखते हैं-

"महावीर ता वंश में, भयो एक अवनीस।

लियो बिरद 'सीसौदिया' दियो ईस को सीस।।"[३]

इससे स्पष्ट है कि, सीसौदिया-वंशज क्षत्रीय हैं; जो उदयपूर और नेपाल के राज्याधिकारी थे। इसी सीसौदिया वंश के पूर्वज दक्षिण में आ कर भोसवत प्रदेश में रहने लगे और यही पर स्थायी हुए। इस संदर्भ में पं. राजनारायण शर्मा लिखते हैं कि- "मेवाड के सीसोदिया नरेश राणा लक्ष्मणसिंह का पोता सज्जनसिंह चित्तोड छोडकर सोंधवाडा में रहने लगा। उसके वंशजों में से 'देवराज जी' नामक एक पुरुष संवत् १४७२ (सन् १४१५) के लगभग दक्षिण में आया और उदयपूर के भोंसावत जागीर का मालिक होने के कारण भौंसिला कहाँ जाने लगा।"[४] स्पष्ट है कि, सिसोदे उत्तर से दक्षिण में आ गये थे। जिसमें देवराज नामक उत्तरभारत के एक राजपुत थे। भौंसले इस के बारे में शिवकालीन कवि भूषण 'भौंसिला' यह एक उपाधि मानते हुए वह लिखते है-

"जातें सरजा बिरद भौ सोहत सिंघ-समान।

रन-भ्वे-सिला सु भ्वैसिला आयुषमान खुमान।।"[५]

अर्थात सिंह के समान शोभित होने के कारण उन्हें सरजा उपाधि मिली। रणभूमि में पत्थर की शिला के समान अचल रहने के कारण उनका नाम भौंसिला पडा। इस आयुष्यमान शिवाजी राजा का 'खुमान' नाम प्रसिध्द हुआ। सरजा, भौंसिला और खुमान यह उनकी उपाधियाँ है; जो शिवाजी महाराज के दादा मालोजी राजा को मिली थी। शिवाजी महाराज को भौंसला उपाधि के कारण उन्हें 'भौंसले' कहाँ जाने लगा। उनके दादाजी मालोजी का जन्म भी इसी सीसौदिया 'सूर्यकूल' में हुआ। इस वंश के राजा गण बडे भाग्यवान उत्पन्न हुए और पराक्रमी भी थे। इस वंश के मालोजी राजे का वर्णन करते हुए भूषण लिखते है-

"ता कुल मैं नृप वृध्द सब, उपजे बखत बलन्द।

भूमिपाल तिन मैं भयो, बडो 'माल मकरंद'।।"[६]

अर्थात इस छंद में 'बखत बलन्द' फारसी शब्द हैं। बखत का अर्थ 'भाग्य', बलंद=उँचा, 'माल मकरंद' यह नाम है, यही मालोजी के नाम जाने जाते हैं। मालोजी के सखा (मित्र) अहमदनगर के निजामशाही का बादशाह था। मालोजी के मुख (चेहरे) पर युध्द के समय सदा आब रहती थी। युध्द और दान के लिए सदा जिसके मुख में पानी भरा रहता था। देवगिरी के किले के स्तम्भ स्वरुप युध्द में धैर्य के साथ खडे रहते हैं। मालोजी ने अपने बाहुबल से बहुत नाम कमाया था। उन्हें अहमदनगर की निजामशाही की सेना में सिलेदारी मिल गई। अब उन्हें एक बात की चिंता सताने लगी थी; कि उनको कोई लडका नहीं हुआ था। एक मुसलमान के पीर 'शाहशरीफ' की मिन्नत करने से उनको दो लडके हुए थे। उसी पीर के नाम पर एक का 'शाहजी' और दूसरे का 'शरिफजी' नाम रखा था। भूषण ने शिवाजी महाराज के पिता शाहजी महाराज के संबंधी लिखा हैं-

"भूषण भनि ताके भयो, भुव-भूषन नृप साहि।

रातौ दिन संकति रहै, साहि सबै जग माँहि।।"[७]

अर्थात भूषन कहते हैं कि, सर्वश्रेष्ठ महाराजा शाहजी ने इन्ही (मालोजी) के घर जन्म लिया। जिनके भय से सारी दुनियाँ के बादशाह रात-दिन भयभित रहते हैं। राजा बडे ही पराक्रमी, दानी, अपार साहसी, हिंदुओं का आधार थे। शाहजी राजे उनके पिता मालोजी राजे की जगह पर अहमदनगर निजामशाही के मनसबदार बनें। उसके बाद अहमदनगर के साथ रहकर मुगलों के विरुध्द युध्द भी किया। कुछ वर्षों के बाद अहमदनगर से अनबन होने के कारण बीजापुर के आदिलशाही शासक से जाकर मिले। शाहजी राजे को इसी काल में उनकी पत्नी जीजाबाई से 'शिवाजी' नामक पुत्र की प्राप्ती हुई।

अत: हम यह कह सकते हैं कि शिवाजी महाराज मालोजी राजा के पोते और शहाजी के पुत्र थे। उनका जन्म सूर्यकूल में हुआ है। कवि भूषण इसी की ओर संकेत करते हुए कहते है कि-

"सूर सिरोमनि सूर-कुल, सिव सरजा मकरंद।"[८]

अर्थात सरजा शिवाजी 'सूर्यकूल' के हैं। जो मकरंद (मालोजी) के वंशज हैं। शिवाजी महाराज मालोजी भौसले के पोते और शाहजी का पुत्र हैं। इस प्रकार हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज का राजवंश उनके दादा, पिता का और उनके पूर्वजों का जन्म 'सूर्यवंशी' कुल में हुआ है। यह मूल रुप से उत्तर भारत के क्षेत्रिय राजपुत थे।

२.१.२. जन्म एवं नामकरण :

मध्यकालीन भारत में निजामशाही और मुगलो के बीच सत्ता के लिए युध्द चल रहा था। शाहजी के जीवन में भी राजनीतिक अस्थिरता छा गयी थी। जीजाबाई की सुरक्षा के लिए शाहजी ने अपने पुणे और सुपा की जागीर में भेज दिया था। शाहजी राजे आदिलशाही के बंगलुरु प्रांत में रहने लगे। जीजाबाई को शिवनेरी दुर्ग में सवंत १६८४ शिवाजी महाराज का जन्म हुआ। शिवाजी महाराज के जन्म तिथि के बारे में विद्वानों में मताभिन्नता है। इतिहासकार भी अलग-अलग जन्मतिथि बताते हैं। इसलिए महाराष्ट्र सरकार ने सन् १९६६ में 'शिवाजी महाराज जन्म तिथि निर्णय समिती' की स्थापना की। उसके पश्चात महाराष्ट सरकार ने ऐतिहासिक तत्थों तथा विद्वानों से विचार विमर्श करने के पश्चात दिनांक १९ फरवरी, १६३० को मान्यता दी है।

मध्यकालीन हिंदी साहित्य में जन्म तिथि या दिनांक का कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है। शिवाजी महाराज के जन्म के बारे में कवि भूषण लिखते हैं कि,

"दसरथ जू के राम भे बसुदेव के गोपाल।

सोई प्रकटे साहि के श्री शिवराज भुवाल।।"[९]

अर्थात जिस प्रकार दशरथ के पुत्र राम का जन्म हुआ और वासुदेव के पुत्र गोपाल (श्रीकृष्ण) का जन्म हुआ उसी प्रकार से शाहजी के पुत्र श्री शिवराज (शिवाजी) का जन्म हुआ।

शिवाजी महाराज के 'शिवाजी' नाम को लेकर कवियों में मतभिन्नता दिखाई देती है। शिव (शंकर) भगवान की कृपा से जन्म होने के सम्बंधों को जोडकर श्री शिवभारत् में लिखा है।

"यतः शिवागिरेर्मूर्धिन जातः स पुरुषोतमः ।

ततः प्रसिध्दा। लोके Sस्य शिव इत्यामिधा ऽ भवत्।"[१०]

अर्थात 'शिवाजी' यह नाम इसलिए रखा है कि, शिवाजी का जन्म 'शिवगिरी' (शिवनेरी) पर 'शिव' की कृपा से हुआ है। यह मत पूर्णतः सम्मत नहीं कह सकते क्योंकि, भगवान शिव की कृपा है तो 'शिवजी' नाम होना चाहिए था। परंतु उनका नाम 'शिवाजी' रखा है। यह नामकरण सर्व सम्मत नहीं हैं। मध्यकालीन हिंदी साहित्य में कवि भूषण भी नामकरण के अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहते है कि- "हरयो रुप इन मदन को, याते भो सिव नाम।"[११] भूषण ने नाम के अर्थ का प्रतिपादन करते समय शिवाजी महाराज के शारीरिक सुंदरता की बात कही है। कामदेव का रुप हर (प्राप्त) कर उससे भी अधिक शारीरिक सुंदरता प्राप्त होने से उनका नाम 'शिवाजी' रखा गया। नामकरण के दिन का कवि भूषण वर्णन करते हुए कहते है-

"छठी छत्रपतिन को जीत्यो भाग अनायास,

जीत्यो नामकरण मैं करन-प्रवाह को।"[१२]

अर्थात जन्म के छठे दिन सहज ही उन्होंने राजाओं का भाग्य जीत लिया। उनके नामकरण के दिन लोगों को इतना दान दिया गया कि, मानो राजा कर्ण के दानशुरता को भी जीत लिया हो। शिवाजी महाराज और उनके पूर्वज शिवभक्त थे। इसलिए साहित्यकारों ने भी 'शिव' के साथ नामकरण का अर्थ प्रतिपादन किया है। कवि भूषण ने 'कामदेव' की सुंदरता से नामकरण को जोडा हैं। मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज के जन्म तिथि का उल्लेख नहीं हैं। शाहजी के पुत्र शिवाजी महाराज का वर्णन किया गया हैं। उनकी माता जीजाबाई का कहीं नाममात्र भी उल्लेख नहीं है। उनका नाम कामदेव जैसी सुंदरता के कारण 'शिवाजी' नामकरण करने का वर्णन हिंदी कवियों ने किया है।

२.१.३. आकृति और वेशभूषा :

किसी भी व्यक्ति की प्रथम भेट के समय प्रथम दर्शी हमारा ध्यान सबसे पहले उसकी आकृति और वेशभूषा पर जाता हैं। न की उस व्यक्ति के गुणों पर। प्रथमदर्शि उस व्यक्ति के व्यक्तित्व का बाह्य स्वरुप सामनेवाले व्यक्ति को प्रभावित करता हैं। इसी के आधार पर वह व्यक्ति उनके गुणों और चरित्र को आँकने का प्रयास भी करता है। साहित्यकार भी आकृति और वेशभूषा के आधार पर पात्रों की मनोदशा और उसमें होनवाले परिवर्तनों को व्यक्त करता है। मध्यकालीन कवि भूषण ने भी आकृति और वेशभूषा का चित्रण किया है। शिवाजी महाराज की आकृति और वेशभूषा का चित्रण प्रत्यक्ष रुप से नहीं बल्कि अप्रत्यक्ष रुप से किया है। कवि भूषण भी शिवाजी महाराज की आकृति और वेशभूषा का वर्णन करते हुए कहते है कि,

"भौंसिला भूप बली भुव को भुज भारी भुजंगम सों भरु लीनों।
भूषण तीखन तेज तरन्नि सों बैरिन को कियो पानिप हीनों।"[१३]

शिवाजी महाराज की भुजा और तेज का वर्णन करते हैं कि, वीर भोंसला राजा शिवाजी ने अपनी बलवति सर्प (शेषनाग) पर पृथ्वी का भार उठा लिया हैं।

शिवाजी ने अपनी प्रबल तेजरुपी सूर्य से शत्रुओं के मुख की कांति फीकी कर डाली हैं। इस छंद में उनकी शक्तिशाली भूजाओं का वर्णन किया हैं। उनकी तेज से उनके शत्रुओं के चेहरे का रंग फिका पड गया है।

शिवाजी महाराज के शरीर की सुंदरता को देखकर उन्हें कोई कामदेव कहता है, तो कोई सिंह मानता हैं। उनकी शरीर रचना का अप्रत्यक्ष वर्णन करते हुए 'शिवराजभूषण' में लिखा है-

"एक कहै अवतार मनोज को यों तन मैं अति सुंदरता है।

एक कहैं नरसिंह है संगर एक कहै नरसिंह सिवा है।"[१४]

अर्थात कोई उन्हें युध्द (संग्राम) में मनुष्य रुपी सिंह कहता है, तो कोई उन्हें नृसिंह का अवतार भी मानता हैं। शिवाजी महाराज की कामदेव की सुंदरता के साथ तुलना की है जो अतिसुंदर दिखाई देती है। शिवाजी महाराज ने बालरुप के बाल-क्रिडा में चारों दिशाओं के किलों को सहज इच्छा से ही जीत लिया। जब किशोरावस्था आयी तो बीजापुर और गोलकुंडा पर विजय प्राप्त किया जवान हुए तो बादशाह औरंगजेब को परास्त किया। शिवाजी महाराज की तीनों आवस्थाओं का वर्णन अप्रत्यक्ष रुप से कवि भूषण ने किया है। शिवाजी महाराज की आकृति के बारे में डॉ. भगवानदास तीवारी 'ग्रँड डफ' के मतों को स्पष्ट करते हुए लिखते है कि, "शिवाजी का कद छोटा था। बल की तुलना में उनमें चपलता अधिक थी। उनका चेहरा सुंदर था, जिससे वे गुणवान दिखते थे। उनके हाथ अधिक लम्बे थे।"[१५] अंत शिवाजी महाराज सुंदर, चपल, गुणवान और छोटे कद के थे। कवि भूषण ने भी इसी प्रकार ऐतिहासिक वर्णन किया जो शक्ति, चपलता, सुंदरता की ओर निर्देशित करता है।

सर जदुनाथ सरकार ने शिवाजी महाराज के समकालीन व्यक्तियों ने जो प्रत्यक्ष देखा है, उनमें से एक 'परकालदास' हैं। जब शिवाजी महाराज आगरा में उपस्थित थे, उस समय रामसिंह के सरदार परकालदास थे। उन्होंने कल्याणदास

को २९ मई १६६६ में एक पत्र लिखा था। जो पत्र राज्यस्थानी रेकार्ड में प्राप्त होता है। उस पत्र का सार इस प्रकार है "दर्शन में शिवाजी का कद इकहरा और ठिंगना है। उनका व्यक्तित्व अद्‌भूत रुप संपन्न, रंग गोरा है और बिना कहे कोई भी जान सकता है कि, यह राजपुरुष हैं। शिवाजी को दाढी है। उनका ९ वर्ष का बेटा भी अद्‌भूत सुंदर और गोरे रंग का है।"[१६] अंतः शिवाजी महाराज का कद छोटा था। रंग गोरा, चेहरे पर तेज, दाढ़ी, मुँछे है। कुछ इसी से मीलता जुलता वर्णन कवि भूषण ने भी किया है।

इस प्रकार शिवाजी का हिंदी साहित्य में सुंदर और वास्तविक वर्णन दिखाई देता है। हिंदी साहित्य के मध्यकाल में शिवाजी महाराज की आकृति और वेश भूषा का वर्णन ऐतिहासिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। उनकी भूजाएँ शक्तिशाली है, चेहरे पर तेज, दाडी, मुछें और दिखने में अत्याधिक सुंदर है।

२.१.४. क्रिया-प्रतिक्रिया का चित्रण :

प्रथमदर्शी केवल आकृति और वेशभूषा के कारण किसी व्यक्ति की छाप निर्माण होती है ऐसा नहीं कह सकते। कभी-कभी सभ्य व्यक्ति की वेशभूषा धारण कर चोर दिखने में भी सुंदर होता हैं। कभी-कभी काला और कुरुप भी सज्जन दिखाई देता है। इसलिए उनका पेहराव और शरीर रचना से उसके चरित्र का अंदाजा लगाना गलत सिध्द होता है। आज कल तो संत का वेश धारणकर ठगी व्यक्ति दिखाई देते हैं। व्यक्ति विशेष क्रिया की विशेष स्थिति का सुक्ष्म से सुक्ष्म चित्रण साहित्यकार करता है। वह पात्र के गुणावगुणों का यथार्थ चित्रण करता हैं। मध्यकालीन कवियों ने भी शिवाजी महाराज की क्रिया-प्रतिक्रिया का चित्रण किया है।

मध्यकालीन भारत में राजपूत मानों अपनी बेटियों की दूकान लगाकर बादशाहों का इंतजार करते बैठे है। जिन्हें राजा बनने का दावा करना चाहिए था, ऐसे राजपूत विलासी दरबार बैठें है। ऐसे समय में दक्षिण के नाथ शिवाजी

महाराज ने मुगलों को ललकारा अर्थात दक्षिण प्रदेश के राजा शिवाजी महाराज ने अपने मुछों पर तांव देते हुए शत्रु के अन्याय पर मुछों पर तांव देनी की प्रतिक्रिया देते है। होती है। विपरित स्थिति में वीरता का भाव परिलक्षित हुआ हैं। अन्याय और अत्याचार के विरोध में खडे होते हैं। देश के अन्य राजा लोग इसका प्रतिकार या प्रतिक्रिया नहीं देते है।

शिवाजी महाराज औरंगजेब बादशाह के दरबार में गए। दरबार में उन्हें 'पंचहजारी' मनसबदारों के साथ खडा किया गया। औरंगजेब के इस अनुचित क्रिया की प्रतिक्रिया में उन्होंने औरंगजेब को न सलाम किया, न ही कोई प्रेम की बात की थी। इस आगरा प्रसंग पर विरोध में प्रतिक्रिया स्वरुप मुँह से कुछ शब्द भी निकले। इस पर भूषण लिखते हैं-

"जानि गैरमिसिल गुसैल गुसा धारी उर,
किन्हीं न सलाम न बचन बोले सियरे।
'भूषण' भनत महावीर बलकन लाग्यो,
सारी पातसाही के उडाय गये जियरे।
तमकते लाल मुख सिवा को निरखि भये,
स्याह मुख नौरंग सिपाह मुख पियरे।।"[१७]

अर्थात आगरा दरबार में अनुचित व्यवहार को देखकर शिवाजी महाराज शांत नहीं बैठे बल्की गुस्सें में आ गये थे इस घटना पर उन्होंने क्रोध प्रकट किया। उनके लाल मुख को देखकर बादशाह के होश उड गये थे। इतना ही नहीं प्रतिक्रिया स्वरुप उन्होंने विरोध में कुछ शब्द भी कह डाले। इस अनसुने शब्दों की प्रतिक्रिया को देखकर औरंगजेब और उनके सिपाही के चेहरे का रंग उड गया।

दूसरे एक छंद में इस प्रकार के अनुचित व्यवहार को देखकर औरंगजेब दरबार में शिवाजी महाराज औरंगजेब के सामने अपने मुछों पर ताव देते हैं। जैसे-

"आनि मिल्यो अरि यों गहयो, चखन चकता चाव।

साहितनै सरजा सिवा, दियो मुच्छ पर ताव।"[१८]

अर्थात औरंगजेब अपने नेत्रों से शत्रु शिवाजी महाराजा को स्वयं आकर मिलते देख आनंदीत हैं। औरंगजेब के गर्व को तोडने के लिए शिवाजी महाराज अपने मुछों पर तांव देते है। इस प्रकार विशिष्ठ स्थिति में क्रिया की प्रतिक्रिया का सुंदर वर्णन कवि भूषण ने शिवाजी महाराज का किया हैं। इस क्रिया-प्रतिक्रिया से शिवाजी महाराज की निडरता, वीरता, स्वाभिमान स्पष्ट रुप से झलकता हैं। शिवाजी महाराज को अपमानित करने की क्रिया जहाँ घटित होती है वहाँ वे क्रोधित होकर अपनी प्रतिक्रिया को प्रकट करते हुए दिखायी देते है।

२.१.५. किले रायगढ़ का वर्णन :

शिवाजी महाराज ने अपने 'स्वराज्य' की राजधानी किले रायगड को बनाई थी। भौगोलिक दृष्टि से स्वराज्य के मध्य भाग में यह किला था। यह राज्य की सुरक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण था। इसके पहले स्वराज्य का सत्ता केंद्र 'राजगढ़' था। वह किले शत्रु को जीतने के लिए और चढाई करने के लिए आसान था। इस बात को ध्यान में रखकर उन्होंने अपने राज्य की राजधानी किले रायगड को बनाया। शिवाजी महाराज ने दक्षिण के अधिकांश किलों को जीत लिया है। उसमें से 'रायरी' नामक किले का पुन निर्माण किया था। रायरी के जंगल को व्यवस्थित करके उस किले को 'रायगड' नाम दिया गया था। इसी रायगढ किले को ही अपने स्वराज्य की राजधानी बनाया था। इस संदर्भ में भूषण कवि लिखते है कि -

"दक्षिण के सब दुग्ग जिति, दुग्ग सहार विलास।

सिव सेवक सिव गढपती, किये रायगढ वास।"[१९]

दक्षिण के समस्त किले जीत लिए थे। उस जंगल को व्यवस्थित कर शिवभक्त शिवाजी ने अपना निवास स्थान रायगड किले में ही बनाया था। शिवाजी महाराज ने इसी रायगढ किले को अपनी राजधानी घोषित कर दी थी।

शिवाजी महाराज ने रायगढ किले को राज्य की राजधानी बनाया। सभी तर्कों को जीत लिया है। रायगड किले की सभा, शोभा और प्रकृति के सौंदर्य का चित्रण किया हैं।

"मनिमय महल सिवराज के इमि रायगढ मैं राजहीं।

लखि जच्छ किन्नर असुर सुर गंधर्व हौंसनि साजहीं।

उंतग मरकत मन्दिरन मधि बहु मृदंग जु बाजहीं।

घन-समै मानहु घमरि करि घन घनपटल गल गाजही।"[२०]

अर्थात रायगढ़ किले पर मणि-जटित महल ऐसा शोभायमान है, जिन्हें देखकर यक्ष, किन्नर, गंधर्व, सुर (देवता) और असुर (राक्षस) भी रहने की इच्छा करते हैं। उँचे-उँचे नीलम जडें हुए महलों में मृदंग ऐसे बजते हैं, मानो वर्षा ऋतु में उमड-घुमड कर मेघ जोर-जोर से गर्जना करता हो। भूषण कवि ने इस छंद में रायगढ़ की भव्य दिव्य वैभव संपन्नता के प्रकृति का चित्रण किया हैं। रात के समय किले रायगढ़ के प्रकृति का चित्रण करते हुए कवि भूषण लिखते है कि,

"मुकतान की झालरिन मिलि मनि-माल छज्जा छाजहीं।

संध्या समय मानहुँ नखत गन लाल अम्बर राजहीं।।

जहाँ तहाँ ऊरध उठे हीरा किरन घन समुदाय हैं।"[२१]

अर्थात रायगढ़ के महलों में मोतियों की झालरें लटक रही है। मणि मालाओं के साथ छज्जों पर शोभित हो रही है। मानो वह संध्या के समय लाल

आकाश में नक्षत्र (तारों की तरह दिख रही है) हो। इस महलों में सभी उँचे स्थानों पर हिरे जडे हुए हैं। अर्थात इस छंद में कवि भूषण ने किले रायगढ़ के महलों की दिव्यता, सुंदरता मानो आकाश में तारों की समान चमकने का वर्णन किया हैं। इसमें भव्य महलों का वर्णन किया गया है। रायगढ के महालों का वर्णन करते हुए कवि भूषण ने कहीं-कहीं कल्पना का सहारा लिया हैं। कुछ वर्णनों में तो कल्पना के साथ-साथ अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन भी दिखाई देता है। रायगढ में अलग-अलग प्रकार के फल, फूल, वृक्ष, पक्षियों का वर्णन कवि ने बडे सुंदर ढंग से किया है। कवि भूषण रायगढ किले बगीचे में चंपा, चमेली, कमल, जैसे फूल भी है।

इसी प्रकार रायगढ में स्थित फल और वृक्षों के वर्णन में कवि भूषण कहते है कि,

"कहुँ केतकी कदली करौंदा कुन्द अरु करबीर हैं।

X X X X X X X

पीयुष ते मीठे फले कितहूँ रसाल रसाल हैं।।"[२२]

अर्थात रायगढ में अलग-अलग प्रकार के पेड और फल दिखाई देते है। उस में केतकी, केला, करौंदा, कुंद कनेर, अंगुर, अनार, सेब, कटहल, शहतूत और नींबू के वृक्ष हैं। कहीं कंदब के वृक्षों के झुंड तो कहीं हिताल, ताड, आबनूस के वृक्ष हैं और यहा अमृत से भी अधिक रसीले आम के फल हैं। रायगढ के बगीचे में फुल, फल, वृक्ष के साथ-साथ अनेक प्रकार के मनमोहक पंछी और उनके मनमोहक आवाजों का वर्णन करते हुए भूषण कहते है कि,

"लसत बिहंगम बहु लवनित बहु भाँति बाग महँ।

कोकिल कीर कपोत केली कलकल करत तहँ।।

मंजुल महरि मयूर चटुल चातक चकोर गन।

पियत मधुर मकरन्द झंकार भृंग घन।।"[२३]

अर्थात रायगढ में अलग-अलग प्रकार के पक्षियों में जैसे-कोयल, तोतें, कबूतर, ग्वालिन, मयुर (मोर), चातक, और चकोर आदि अनेक पक्षि आकाश में विहार करते हुए सुंदर मधुर शब्द (आवाज) कर रहे है। भौंरे मीठा मकरंद पी कर मदमस्त होकर गूँजन कर रहें हैं। किले पर छः ऋतुओं (अर्थात बारह महीनों) सुगन्धि फल, फुल वाला वसंत ऋतु ही रहता है। यह रायगढ किले को सुशोभित करते हैं।

इस प्रकार कवि भूषण ने रायगढ के वर्णन में कहीं-कहीं अतिशयोक्ति दिखाई देती हैं। इस प्रकार का वर्णन साहित्य की परंपरागत परिपाटी के अनुसार किया गया है। लेकिन इस वर्णन में ऐतिहासिक सत्यता को नकारा नहीं जाना चाहिए। रायगड किले में फल, फूल, वृक्ष, पक्षी और प्राकृति के सौंदर्य चित्रण में यथार्थता भी नीहित है। अंतः स्वराज्य की राजधानी किले रागयढ़ का सौंदर्य वर्णन बहुत सुंदर ढंग किया है, जो कुछ सीमा तक यथार्थ भी है। परंतु रायगढ़ किले के वर्णन में कहीं-कहीं अत्याधिक कल्पना और अतिश्योक्तिपूर्ण वर्णन भी कवि ने किया हैं।

२.१.६. शिवाजी महाराज के नगाडों का वर्णन :

मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज के 'नगाडे' का वर्णन किया है। कवि भूषण ने नगाडों की आवाजें शिवाजी महाराज की विजय शत्रु के अंतरिक भय विवशता व्यक्त किया है। नगाडे की आवाजों से शत्रू के मन में भय का वातावरण हमेशा रहता है। शिवाजी महाराज युध्द के लिए बडे उत्साह से अपनी चतुरंगिणी सेना को तैयार करते हैं। वे स्वयं भी घोडे पर सवार हो कर युध्द में विजय प्राप्त करने के लिए निकलते हैं। ऐसे समय में नगाडों की आवाजों से युध्द की तैयारी का संकेत मिलता है। भूषण एक छंद में लिखते है कि-

"साजि चतुरंग वीर रंग में तुरंग चढी।

सरजा शिवाजी जंग जीतन चलत हैं।

भूषण, भनत नाद विहद नगारन के।"[२४]

अर्थात जब चतुरंगी सेना युध्द करने के लिए तैयार होकर निकलती है, तब नगाडों की आवाज होती है। चतुरंगी सेना के साथ वह जीत प्राप्त कर आगे बढ़ते समय नगाड़ों की आवाज सुनाई देती हैं। शिवाजी महाराज ने कर्नाटक प्रदेश पर आक्रमण कर विजय प्राप्त की थी। उस समय का वर्णन और विजयी नगाडों की आवाज से कर्नाटक के सारे राजा भय के कारण सिंहल द्विप (श्रीलंका) की ओर चुपचाप भागने लगे। शिवाजी महाराज के नगाडों की आवाज से भी शत्रु के अंदर भय उत्पन्न होता है। शिवाजी महाराज के नगाडों की आवाज सुनकर शत्रु प्रदेश की स्त्रियाँ भी अपने घरों को छोडकर भागती हैं। वह स्त्री शुभ और अशुभ वार (दिन) का भी विचार नहीं करती। इतना भय नंगाडे बजते ही, उनके अंतरर्मन में आ जाता है। इन भयभित शत्रु स्त्री का वर्णन कवि भूषण करते हुए कहते है कि-

"सुनत नगारन अगार तजि अरिन की,

दारगन भाजत न बार परखत हैं।"[२५]

अर्थात नगाडों की अवाज सुनकर शत्रु स्त्री अपने घरों को छोडकर भागते समय उनको शुभ दिन की भी याद नहीं रहती है। नगाडों की आवाजों से डरी हुई, भयभित, रोती हुई स्त्री का चित्रण कवि भूषण ने किया हैं। शत्रु नगर वासियों की स्त्री के आँखों में जो आसुँ है, उसके जल से बडी-बडी नदियाँ निकलती हैं। जिन्हें पार करने के लिए बडी-बडी नोंकाओं की अवश्यकता होती है। इस प्रकार का काल्पनिक और अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन कवि भूषण ने किया हैं। वह निम्नरुप के छंद में है-

"रावरे नगारे सुनि बैर वारे नगरनि,

नैन वारे नदन निवारे चाहियतु है।"[२६]

संक्षेप में अगर कहाँ जाए तो, मध्यकालीन हिंदी साहित्य में कवि भूषण शिवाजी महाराज के नगाडों का वर्णन करते हैं। इस वर्णन में शत्रु पक्ष की स्त्री-परुष, राजा के अंदर नगाडों की आवाजे सुनकर भय, आतंक उनके अंतरमन को स्पष्ट रुप से देखा जा सकता हैं। नगाडों की आवाज से उनकी विजय और यश का संकेत भी मिलता हैं। छ. शिवाजी महाराज और उनकी सेना युध्द के लिए तैयार होकर निकलते समय नगाडों की आवाजें आती हैं। इस नगाडों के वर्णन में अतिशयोक्ति दिखाई देती है, जो शत्रु स्त्री के उपर धाक का वर्णन किया है। शत्रु के आंतरिक डर को दिखाने के लिए उनकी स्त्री डरी हुई दिखाने का प्रयास कवियों ने किया हैं। स्त्री के प्रति आदरयुक्त और पुजनिय दृष्टिकोन शिवाजी महाराज का रहा है। यह उनका दृष्टिकोन इतिहास में सर्वसम्मत हैं।

२.१.७. शिवाजी महाराज की तलवार का वर्णन :

शिवाजी महाराज की तलवार का वर्णन मध्यकालीन हिंदी के कवि भूषण ने सुंदर ढंग से किया है। तलवार उनके ही हाथ में शोभा पाती हैं। तलवार कर्म करनेवाली हैं, कर्म के आधार पर शिवाजी महाराज ने धर्म की स्थापना की हैं। तुर्क लोग काल की मौत से नहीं मरते अपितु शिवाजी के तलवार से मरते हैं। इस संदर्भ में भूषण कहते है-

"काल करत कलि काल में, नहिं तुरकन को काल।

काल करत तुरकान को, सिव सरजा करवाल।"[२७]

अर्थात भूषण कहते हैं कि, मृत्यु बेचारी तो व्यर्थ ही दुनियाँ में बदनाम है। तलवार ही म्लेच्छो और तुर्को को मारती है। शिवाजी महाराज की तलवार में स्वयं काली ने अवतार लेने से म्लेच्छो का और भूमि का उध्दार हुआ है। यहाँ

भूषण ने शिवाजी महाराज के तलवार को ईश्वरीय अवतार माना है। जो मातृभूमि का उध्दार और शत्रु का नाश (नष्ट) करने के लिए अवतरीत हुई हैं।

कवि भूषण तलवार को कभी सर्पिणी कहते है, तो कभी खगराज कहते हैं। वह भूजंग रुपी अखिल मुगल दल को खाने वाला खगराज (गरुड) है। शिवाजी महाराज की इसी तलवार ने कई सेनाओं को पराजित कर संसार में मर्यादा को स्थापित किया हैं। भूषण कहते है-

"साहि के सपूत सिवराज समसेर तेरी,
दिल्ली दल दाबि कै दिवाल राखी दुनी में।"[२८]

अर्थात शाहजी के पुत्र शिवराज की शमशेर (तलवार) दिल्ली की सेना को पराजित कर मर्यादा का रक्षण करती है। संसार में मर्यादा के साथ-साथ शिवाजी महाराज के हाथ की तलवार उनके लिए एक विशाल आभूषण हैं। दक्षिण देश की ढाल (रक्षक) है, हिंदूओं के लिए दीवार जो शत्रु के आक्रमण से बचाती है तो दूश्मन के लिए काल हैं। इसलिए भूषण लिखते है-

"हाथ को विसाल भयो भूषन बखान को।
तेरो करवाल भयों दच्छिन को ढाल भयो
हिंदू को दिवाल भयो काल तुरकान को।"[२९]

अर्थात शिवाजी महाराज के हाथ में तलवार शुशोभित दिखाई देती है। उनकी तलवार हिंदू (दक्षिण प्रदेश) की ढाल बनकर तुर्की (शत्रुओं) का नाश कर उनका काल बन चुकी हैं। शिवाजी महाराज की तलवार को ढाल का रुप देकर कवि भूषण ने ढाल समस्त संसार की रक्षा करती हैं। वह बडे-बडे जोरदार गोलों और बाणों के वार को भी लज्जित कर देती है। ढ़ाल के सामने बर्छी, तीर और गोलियों की क्या गिनती हैं, वे तो तलवार के सामने व्यर्थ सिध्द होते है।

कवि भूषण तलवार का संबंध शिवाजी महाराज के यश, दान, धन से जोडते हैं। श्रेष्ठ यश दान से मिलता है। दान से धन की प्राप्त होती है। यह प्राप्त धन तलवार से मीलता है। (अर्थात तलवार से शत्रु प्रदेश पर विजय प्राप्त कर धन और संपत्ति की प्राप्ति हाती है) वीर केसरी चिरंजीवी शिवाजी महाराज संपूर्ण संसार में प्रसिध्द हैं। इसके बारे में कवि भूषण का छंद है-

"सुजस दान अरु दान धन, धन उपजै किरवान।
सो जग मैं जाहिर करी, सरजा सिवा खुमान।"[३०]

अर्थात शिवाजी महाराज को तलवार के कारण यश, दान, धन मिलता है। अतः मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज की तलवार का प्रभावी ढंग से सुंदर चित्रण तो किया है, परंतु वह अत्याधिक अनऐतिहासिक है। इस प्रकार उनके तलवार को दैवीरुप प्रदान कर शिवाजी महाराज के पराक्रम को कम आँकना गलत सिध्द होगा। तलवार वर्णन में शेषनाग की सर्पिणी और खगराज के रुप की कल्पना की हैं। हिंदू धर्म की रक्षक जो दक्षिण की ढाल के स्वरुप का वर्णन भी किया है। शिवाजी महाराज की वीरता और पराक्रम केवल तलवार के साथ जोडना नहीं चाहिए। शिवाजी महाराज के प्रमुख शत्रों मैं से एक तलवार भी है। तलवार के वर्णन में अत्याधिक अतिश्योक्ति और कल्पना का सहारा कवियों ने लिया है। शायद इन कवियों का उद्देश तलवार के माध्यम से शिवाजी महाराज के पराक्रम और वीरता को दर्शाना होगा, परंतु इस प्रकार का वर्णन ऐतहासिक चरित्र को हानी पहुँचानेवाला होता हैं।

२.२.) मध्यकालीन हिंदी साहित्य में वर्णित शिवाजी महाराज का अंतरंग स्वरुप :

मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज के अंतरंग गुणों का वर्णन किया गया हैं। बहिरंग चित्रण में आकृति, क्रिया, प्रतिक्रिया, नगाडों, राजगढ, तलवार, जन्म और नामकरण का चित्रण हुआ है। उसी प्रकार कवि भूषण ने

शिवाजी महाराज के अंतरंग गुणों के उपर एक छंद विभिन्न गुणों को स्पष्ट करते हुए कवि भूषण कहते है-

"सुंदरता गुरुता प्रभुता भनि भूषण होत है आदर जामें।
सज्जनता औ दयालुता दीनता कोमलता झलकै परजा में।
दान कृपानहु को करिबो करिबो अभै दीनन को बर जामें।
साहस सों रनटेक बिबेक इते गुन एक सिव सरजा में।"[३१]

अर्थात प्रस्तुत छंद में शिवाजी महाराज की सुंदरता के अन्य गुण शिवाजी महाराज के साथ-साथ अन्य गुणों को अंतरंग स्वरुप के चित्रण में आते हैं। जिसमें बडप्पन, प्रभुता, प्रजा के प्रभूती, प्रजा के प्रति सज्जनता, दयालुता, नम्रता एवं कोमलता, अभयदान, युध्द करना, प्रतिज्ञा और विवेक इतने गुणे का समुचय एक शिवाजी महाराज में है। इस छंद के अतिरिक्त अन्य छंदो में भी घटना और प्रसंग के अनुरुप शिवाजी महाराज के अंतरंग स्वरुप का चित्रण हुआ है। इसका विस्तृत अध्ययन निम्न मुद्दों के आधार पर करेंगे।

२.२.१. बचपन और शिक्षा :

शिवाजी महाराज के पिता शाहजी राजे राजनीतिक अस्थिरता के कारण एक जगह पर नहीं रहे। तत्कालीन समय में मुगल और आदिलशाह के बीच युध्द चल रहें थे। जीजाबाई को शिवनेरी दुर्ग में सुरक्षित स्थान पर शाहजी राजे ने रखा था। कहाँ जाता है कि, जीजाबाई का भी स्वास्थ्य बीजापुर के हवा पानी से निरंतर खराब होता जा रहा था। शाहजी राजे ने अपने कुछ विश्वासपात्र सेवकों के साथ उन्हें शिवनेरी दुर्ग पर भेज दिया। शिवाजी महाराज का जन्म इसी शिवनेरी दुर्ग पर हुआ। बचपन से ही शिवाजी महाराज के अंदर माँ जीजाबाई ने उन्हें वीरता के रामायण, महाभारत की वीर कथाओं को सुनाया। बचपन से ही

शिवाजी महाराज ने आदिलशाही के छोटे-छोटे किलों को जीतना शुरु किया था। कवि भूषण शिवाजी महाराज की बालक्रिडा के रुप का वर्णन करते हैं कि,

"भूषण भनत, बाललीला गढ़कोट जीत्यो,
साहि के शिवाजी, कर चहूँ चक्क चाह को।"[३२]

अर्थात शाहजी के पुत्र शिवाजी महाराज ने बाल-क्रिडा में अपने प्रदेश के चारों दिशाओं के किलों को सहज इच्छा से ही जीत लिए है। हिंदी साहित्य में सुरदास ने कृष्ण और तुलसीदास ने राम के बाल स्वरुप का चित्रण बडी सुक्ष्मता से किया है। उसी प्रकार का वर्णन मध्यकाल में शिवाजी महाराज का कवि भूषण ने नहीं किया है। इसका कारण भूषण शुध्द वीर रस की ऐतिहासिक कविता लिखने वाले कवि हैं। ऐतिहासिक वीरकाव्य लिखनेवाले कवियों ने बाललीला का गान नहीं बल्कि उनकी वीरता का गान किया है।

किसी भी छंद में शिवाजी महाराज की शिक्षा के बारे में मध्यकालीन हिंदी के कवि ने वर्णन नहीं किया है। माँ जीजाबाई ने महाराज की शिक्षा घर पर ही शुरु की। अलग-अलग विषयों के विशेषज्ञ महाराज को पढ़ाने के लिए आते थे। वैसे जीजाबाई स्वयं शिक्षित राजघराने से होने के कारण शिवाजी ने माता से ही अधिक शिक्षा प्राप्त की है। जीजाबाई के संदर्भ में डॉ. वसंत मोरे लिखते हैं, "शिवाजी के गुरु में अगर किसी को श्रेष्ठ स्थान देना होगा तो, वह स्थान माता जीजाबाई को देना होगा। इस माँ ने विपरीत परिस्थितियों में अपने पुत्र को रामायण, महाभारत की कथाएँ सुनाकर सुसंस्कारित किया।"[३३] किसी भी बच्चे की माता उसका पहला गुरु होती हैं। वे ही उस बच्चे का लालन-पालन, आचार-विचार, संस्कार प्रदान करती हैं। उसी प्रकार माता जीजाबाई ने अपने बेटे शिवाजी को वीर कथाओं को सुनाया था। बचपन के स्वरुप का अधिक वर्णन उपलब्ध नहीं है। बालक्रिडा में उन्होंने किले जीतना शुरु किया था।

अत: मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज की शिक्षा के बारे में कोई वर्णन उपलब्ध नहीं मिलता है। परंतु उनकी शिक्षा में माँता जीजाबाई का बडा योगदान रहा है, यह बात जाहीर होती हैं। इससे स्पष्ट होता है कि, शिवाजी महाराज को शिक्षा और संस्कार देने में उनकी माता जीजाबाई का अत्याधिक योगदान रहा हैं।

२.२.२. नम्रता :

शिवाजी महाराज अत्याधिक नम्र थे। एक राजा में कठोरता के साथ-साथ विनम्रता होनी चाहिए। औरंगजेब ने अपने भाई और पिता के साथ जो दुर्व्यवहार किया, वह एक राजा की क्रुरता और सत्ता की लालसा को दर्शाता है। शिवाजी महाराज को कई वर्षो के बाद पिता शाहजी शिवाजी महाराज को मिलने स्वराज्य में आए तो उनका नम्रता से स्वागत किया। पिता शाहजी के प्रति वे अत्याधिक नम्र थे। शिवाजी महाराज के नम्रता गुणों के संदर्भ पं. राजनारायण शर्मा लिखते हैं कि, "इस संधि के निमित शहाजी कई वर्षो के बाद अपने पुत्र से मिलने आये। शिवाजी ने उनका बडा आदर सत्कार किया और उन्हें सब विजित प्रान्त दिखाया।"[३४] अर्थात शिवाजी महाराज अपने पिता को आदिलशाही की ओर से संधि का प्रस्ताव रखने के लिए आने के बाद उन्होनें पिता का नम्रता के साथ एक बेटे का कर्तव्य निभाया हैं। उनका बडे आदर के साथ सत्कार किया और अपने विजित प्रदेश को दिखाया है। एक शासक में कठोरता के साथ नम्रता भी होनी चाहिए। शिवाजी महाराज को बचपन से ही माता जीजाबाई ने संस्कारित किया है। इसलिए वे व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में नम्र रहते थे। शिवाजी महाराज के गुणों के बारे में लिखते समय कवि भूषण ने नम्रता के गुण की चर्चा की है। वह कहते है- "सज्जनता औ दयालुता दीनता कोमलता झलकै परजा में।"[३५] अर्थात कवि भूषण ने प्रजा के साथ सज्जनता, दयालुता के साथ दीनता जिसका तात्पर्य 'विनम्रता' है। इस प्रकार एक बडों के प्रति नम्रता का भाव हमेशा

उनके मन में होता है। वे माता-पिता, संत, ज्ञानी और बडों का आदर करते थे। शिवाजी महाराज वैभव संपन्न होने के बावजूद उनका दान बिना अभिमान का है। अर्थात दान देते समय उनकी नम्रता प्रशंसनीय है। उनके चेहरे पर ही नम्रता झलकती है। नम्रता उनके व्यक्तित्व को सुशोभित करती है।

"शोभमान जग पर किये, सरजा सिवा खुमान।

साहिन सो बिनु डर अगड, बिन गुमान को दान।।"[३६]

यहा 'गुमान' का अर्थ 'घमंड' हैं, जो बिना घमंड से शिवाजी महाराज दान भी बडे नम्रता के साथ देते हैं। दान सभी वर्गों को देते समय नम्रता उनके स्वभाव का एक बडा गुण हैं। मिर्जा राजे, औरंगजेब, आदिलशाह, कुतुबशाह के प्रति नम्रता समय-समय पर दिखाई हैं। अपने स्वाभिमान को ठेस पहुचाने पर उनका विरोध भी किया है।

इस प्रकार शिवाजी महाराज बडो का आदर करते थे। उनके सामने नम्रता का भाव रखते थें। दुर्भाग्यवश युध्द में किसी सैनिक या सरदार की मृत्यु होती है, तो वे उनके घर जाकर नम्रता और हमदर्दी दिखाते थे। सरदार तानाजी मालुसरे के बेटे रायबा के घर जाकर बडी नम्रता से सहारा देते है। एक पिता की तरह तानाजी के बेटे की शादी कराते है। इस प्रकार उनमें सभी लोगों के प्रति अपनत्व, ममता, आदरभाव, प्रतीत होता है। वे सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन में अत्यंत नम्र रहते थे। अपने जीवन में हमेशा बडों का मान सम्मान करते थे।

२.२.३. बुध्दि चातुर्यता :

सामान्यतः कोई भी व्यक्ति अपनी बौध्दिक क्षमता के अनुरुप ही सोंच, विचार और कार्य करता हैं। असामान्य व्यक्ति वही कहलाएँ जाते हैं, जो असामान्य (विशेष) कार्य करते हैं। असामान्य या विशेष कार्य के लिए असामान्य या विशेष बुध्दिमता का होना बहुत जरुरी हैं। बुध्दिमान व्यक्ति हर निर्णय बहुत

ही सोच-समझकर लेता हैं। इसलिए लिया हुआ निर्णय या कार्य कई युगों तक अमर रहता हैं। शिवाजी महाराज के तत्कालीन समय में लिए हुए निर्णय और कार्य आज भी हमें आदर्श है। वे निर्णय सोचने के लिए भी बाध्य करते हैं। आश्चर्यचकित होते हैं। वह हर निर्णय बुध्दि चातुर्य से सोच समझकर ही लेते थें। विचार किये बिना वह कोई कदम नहीं उठाते थे। उनका निर्णय बुध्दि विवेक पर आधारित होता है। कवि भूषण शिवाजी महाराज के युध्द के समय साहस और विवेक को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि- "साहस सों रनटेक विवेक"[३७] अर्थात कवि भूषण ने यहाँ 'विवेक' को विचार के रुप में अर्थ प्रतिपादित किया हैं। युध्द में साहस के साथ-साथ और विचार असामान्य बुध्दि से लडते हैं। वे जन्मजात प्रतिभा के धनी थे। किसी भावना के आवेश में आकर कोई भी निर्णय नहीं लेते है। इसी बुध्दि चातुर्यता को समकालीन संस्कृत कवि जयराम ने भगवान कृष्ण की बुध्दिमता के साथ उनकी तुलना की है। यह तुलना निःसंदेह सार्थक लगती है। जयराम कवि कहते हैं-

"ततः शिवमहिपालः तालइ कानुज बुध्दिमन।
काल स्तुरुष्कभूपानां पनालघः स्थितान्स्व कान्।"[३८]

अर्थात मध्यकालीन हिंदी के कवि भूषण भी सुबुध्दि का कारण भगवान शंकर आशीर्वाद से मानते हैं। शिवाजी महाराज पर भगवान शिवजी की कृपा अत्याधिक रही। उस कृपा से पृथ्वी पर शाहजी पुत्र भौंसिला राजा शिवाजी की बुध्दि भी सवा गुना बढ गई। इसी दृष्टि से कवि भूषण भी लिखते है-

"शंकर की किरपा सरजा पर जोर बढी कवि भूषन गाई।
ता किरपा सों सुबुध्दि बढी भुव भौंसिला साहितनै की सवाई।।"[३९]

अर्थात भगवान शंकर की कृपा अत्याधिक शिवाजी पर रही हैं। उसी कृपा के कारण पृथ्वी पर भौसला शाहजी के पुत्र शिवाजी की बुध्दी भी सवा गुना बढ

गयी है। उनके बुध्दि चातुर्य को भगवान 'शिवजी' का आशीर्वाद रहा हैं। बुध्दि के कारण उन्होंने बडे पराक्रम किये है। आगे कवि भुषण 'महाभारत' के पाँच पांडवों के पाँच गुणों का संचय अकेले शिवाजी में मानते हैं। उस में से 'नकुल' की बुध्दि चातुर्थ के बारे में कहते हैं कि वह 'नकुल' जैसी बुध्दि शिवाजी महाराज में और सहदेव जैसा तेज प्रभाव भी है। भूषण लिखते हैं कि- "नकुल अकिल, सहदेव तेज चढिकै।"[४०] अर्थात पाँच पांडवों के सभी गुण एक शिवाजी में समाहित हो गये है। उसमें से 'नकुल' की तरह बुध्दिमता और सहदेव का तेज रुप उन्हें प्राप्त था। भूषण शिवाजी महाराज को बडा ज्ञानी मानते हैं। इसका कारण यह है कि, ज्ञानवंत (बुध्दिमानी) व्यक्ति ही ईश्वर के सगुन और निर्गुण दोनों मतावलंबियों को समान मानता हैं। दोनों को समान रुप से भेदभाव रहित दान देते हैं। वह किसी एक का पक्ष लेकर दूसरे विचारों का द्वेष नहीं करता। इसी को अधिक स्पष्ट करते हुए कवि भूषण कहते हैं-

"चाहत निर्गुण सगुण को, ज्ञानवंत की बात।
प्रकट करत निर्गुण सगुन, सिवा निवाजै दान।"[४१]

अर्थात जो ज्ञानी होते है, वे व्यक्ति सगुन और निर्गुण दोनों को बराबर मानते है। शिवाजी महाराज अत्याधिक ज्ञानी थे। इसलिए दान देते समय दोनों को बराबर का दान दिया है। इस प्रकार शिवाजी महाराज की बुध्दि चातुर्य को शिव की कृपा से जोडा गया है। 'नकुल' जैसी चतुर बुध्दिमता का उपयोग युध्दों में करते रहें हैं। एक ज्ञानी व्याक्ति भेद रहित दान देता हैं, वही काम शिवाजी महाराज ने किया हैं। उनके बुध्दि चातुर्य को लिए भगवान शिवजी की कृपा मानना तर्क संगत नहीं है। उनकी समय सुचकता और कुशलता को देखकर इस प्रकार का वर्णन कवि ने किया है। वे जन्मता असामान्यबुध्दिमता के धनी थे। हर निर्णय भावनाओं के बजाये बुध्दि के आधार पर करते थे। उन में पांडवों में बुध्दिमान नकुल के जैसी बुध्दिमता थी। हिंदी साहित्य में पौराणिक चरित्र नायकों

के साथ शिवाजी महाराज की बुध्दि चातुर्य से तुलना की हैं। इस प्रकार मध्यकालीन कवियों ने शिवाजी महाराज को बुध्दिमानी राजा के रुप में वर्णित किया है।

२.२.४. दृढ़ प्रतिज्ञा :

किसी विशिष्ट उद्‌देश या लक्ष्य की प्राप्ति के लिए मनुष्य प्रतिज्ञा लेता है। प्रतिज्ञा लेने का विशिष्ट कारण होता है और उसकी पूर्ति करने का प्रयास किया जाता है। प्रतिज्ञा को पूरा करना उनके जीवन का अंतिम लक्ष्य बन जाता हैं। प्रतिज्ञा की घोषणा भी की जाती है। शिवाजी महाराज ने अपने १५ वर्ष की आयु में ही 'हिंदवी स्वराज्य' की स्थापना करने की प्रतिज्ञा (शपथ) ली थी। इस प्रतिज्ञा की पूर्ति भी उन्होंने की हैं। हिंदवी स्वराज्य की स्थापना करने की प्रतिज्ञा का मध्यकालीन हिंदी कवियों ने स्पष्ट वर्णन नहीं किया हैं। कुछ संकेत आवश्य मिलते हैं। साहित्य में प्रतिज्ञा कौन-सी ली? कहा ली? इसका वर्णन नहीं किया है। प्रतिज्ञा के संदर्भ में कवि भूषण कहते हैं कि- "मेरु सम छोटो पन, सागर सो छोटो मन।"[४२] अर्थात भूषण कहते हैं कि शिवाजी महाराज का प्रण (प्रतिज्ञा) मेरु पर्वत के समान छोटा है। यहाँ कवि को शिवाजी महाराज की प्रतिज्ञा मेरु पर्वत की तरह बडी कहना है पर उन्होंने 'मिथ्याध्य वसित अलंकार' का प्रयोग किया है। इस छंद में शिवाजी महाराज के कार्यक्षमता के सामने उनकी प्रतीज्ञा छोटी प्रतित होती है। अंत: उनकी प्रतिज्ञा को मेरु पर्वत के समान बड़ी है। उसी प्रकार उनका मन सागर की तरह विशाल हैं।

कवि भूषण अप्रत्यक्ष रुप से दृढ़ प्रतिज्ञा की ओर संकेत करते हैं। वे प्रतिज्ञा की महत्तता के बारे में कहते हैं कि सभी जीवों में प्रतिज्ञा दृढ होने के कारण और प्रतिज्ञा पुरी करने के कारण ही मनुष्य का जीवन श्रेष्ठ हैं। सभी मनुष्यों में राजा बडा हैं और समस्त राजाओं में शिवाजी महाराज श्रेष्ठ है। इसे स्टष्ट करते हुए कवि भूषण कहते है कि,

"जीवन मैं नर लोग बडो कवि भूषण भाषत पैज अडो है।

है नर लोग मैं राजा बडो सब राजन मैं सिवराज बडो है।"[४३]

अर्थात सभी जीवों में मनुष्य जीव श्रेष्ठ है। इसी जीवन में मनुष्य प्रतिज्ञा लेता हैं। इसलिए मनुष्य जीवन सबसे श्रेष्ठ है। लोक जगत में राजा बडा होता है। इस राजाओं में सबसे बडे शिवाजी महाराज है। शिवाजी महाराज की करतार (तलवार) का प्रण अर्थात प्रतिज्ञा पाप की वृध्दि और धर्म की हानी होने पर धर्म की रक्षा के लिए प्रतिज्ञा ली है। प्रण पूर्ण करने के लिए पापीयों को और म्लेच्छों आत्याचारी को मारकर प्राणियों के समुह का पालन करते हैं। कवि भूषण इसी दृष्टि से वर्णन करते हैं- "पापी घाल धरम सुपथ चालें मारताण्ड, करतार प्रण पालै प्रानिन के चंद को।"[४४] अर्थात यहाँ कवि ने शिवाजी महाराज की तलवार को दैवी रुप दिया है। वह पापियों, दुष्टों का संहार करने के लिए समस्त प्राणि समुह का रक्षण करने की प्रतिज्ञा का पालन करती है। यहाँ तलवार की प्रतिज्ञा को शिवाजी महाराज की प्रतिज्ञा से जोडना चाहिए। शिवाजी महाराज की प्रतिज्ञा पराक्रम, वीरता को तलवार के साथ सम्बंध जोडा गया हैं। उनके प्रतिज्ञा का पालन करनेवाली तलवार के रुपों को दिखाया हैं। यही तलवार जो भूमि के भर को धारण कर शत्रु को नष्ट करनेवाली और दंड देनेवाली है।

शिवाजी महाराज की प्रतिज्ञा का उद्देश के बारे में कवि भूषण ने कहाँ कि, महाबली शिवाजी पृथ्वी पर हिंदूओं का राज्य बढाने के मनसूबे बाँधते हैं। वह पृथ्वी को म्लेच्छों से रहित करना चाहते हैं। म्लेच्छों को मारने के लिए ही वे युध्द के लिए तैयार होकर युध्द करते हैं। प्रतिज्ञा के उद्देश्य के संदर्भ में भूषण लिखते हैं- "काज मही सिवराज बली हिंदुवान बढाइबे को उर ऊटै। भूषण भू निरम्लेच्छ करी चहै, म्लेच्छन मारिबे को रन जुटे।।"[४५] अर्थात पृथ्वी से शत्रुओं को नष्ट करने के मनसुबे जुटाकर हिंदूओं का राज्य बढाने के लिए युध्द ठान लेते है। भूषण ने मुस्लिम शासकों के द्वारा हिंदू राजाओं की सत्ता का अस्त होते हुए देखा

था। इसलिए शिवाजी महाराज धर्म से हिंदू होने के कारण इस प्रकार का धार्मिक पूर्वग्रह वर्णन कवि भूषण ने किया है। इस प्रकार मध्यकालीन हिंदी साहित्य में कवि भूषण ने शिवाजी महाराज की दृढ प्रतिज्ञा की ओर संकेत किया हैं। उनकी तलवार ने पापियों, दुष्टों को नष्ट कर पूरा किया है। यह प्रतिज्ञा उनके सामने मानों मेरुपर्वत और सागर की तरह छोटी प्रतीत होती है। शिवाजी महाराज ने सभी प्राणि समुह की रक्षा के लिए अपनी प्रतिज्ञा ली थी। सभी शत्रुओं को मारकर उन्होंने पृथ्वी पर हिंदवी स्वराज्य का निर्माण किया है।

२.२.५. स्वाभिमान :

किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व का स्वाभिमान अत्यंत श्रेष्ठ गुण हैं। जिस व्यक्ति में स्वाभिमान नहीं है, वह जीवित होकर भी मृतक के समान है। अपना अपमान जो व्यक्ति आँखे मुँदकर सहता है, वह कायर, हताश और कमाजोर होता है। कुछ व्यक्ति प्रसंगानुरुप स्वाभिमान दिखाते हैं। वह स्वाभिमानी व्यक्ति नहीं बल्कि, कमजोर कहाँ जा सकता है। अनुकूल परिस्थितियों में स्वाभिमान दिखाना और प्रतिकूल परिस्थितियों में भिगी बिल्ली बन जाना यह स्वाभिमान नहीं हैं। जो व्यक्ति प्रतिकूल परिस्थितियों में अपने अंदर के स्वाभिमान को सचेत रखता हो वही सच्चा स्वाभिमानी हैं। शिवाजी महाराज एक स्वाभिमान सचेत रखनेवाले हो व्यक्ति और राजा थे। उन्होंने आपने स्वाभिमान को कभी भी किसी के भी सामने कुचलने नहीं दिया।

शिवाजी महाराज ने अपने विपरित (प्रतिकूल) परिस्थितियों में भी अपने स्वाभिमान को जगाए रखा। वे कभी भी अपमान सहन नहीं करते हैं। अपमान का विरोध करते हैं, चाहे जान भी चली जाएँ तो भी उसका उन्हें कोई खेद नहीं। मध्यकाल के समय में देश के सब राजा जिस में श्रीनगर, नेपाल के राजा औरंगजेब को खिराज (कर) स्वरुप चँवर, किले और कुही, बाज आदि पक्षी भी भेजते हैं। उदयपूर, जयपूर, मारवाड, बुंदेलखंड, झारखंड और रीवाँ के राजाओं

नें तो मुगलों की नौकरी करना स्वीकार करके ही अपना इलाज (लाभ) समझा है। पुरब और पश्चिम दिशाओं के राजा भी जिस दिल्लीपति औरंगजेब की शरण ताकते हैं। औरंगजेब के सामने विपरित परिस्थितियों में सब राजा कायर बने देश में केवल शिवाजी महाराज निड़र और स्वाभिमानी रहे। स्वाभिमान शिवाजी महाराज को ही सुशोभीत करता है। तलवार को धारण करने से यौध्दा और स्वाभिमान को धारण करने से मनुष्य सुशोभित होता है। शिवाजी महाराज भी दिल्ली का दलन करने और दक्षिण दिशा के रक्षक होकर स्वाभिमान धारण करने से शोभा पाते है। भूषण शिवाजी महाराज के स्वाभिमान को व्यक्त करते हुए लिखते हैं - "दिल्ले दलन दक्खिन दिसी थम्भन। ऐंड धरण सिवराज विराजै।।"[४६]

अर्थात शिवाजी महाराज दिल्ली के बादशाह को पराजित कर दक्षिण प्रदेश के रक्षक बने है। बडे ही स्वाभिमान के साथ सिंहासन पर विराजित हुए है। कवि भूषण ने उपर्युक्त छन्द में शिवाजी महाराज के स्वाभिमान का वस्तुनिष्ठ और ऐतिहासिक वर्णन किया हैं। इसी प्रकार का वर्णन बुंदेला प्रदेश के राजा छत्रसाल के दरबारी हिंदी के लाल कवि ने किया है। लाल कवि ने शिवाजी महाराज के स्वाभिमान को अंकित करते हुए लिखा हैं कि, "ऐड एक सिवराज निबाही। करै आपनै चित की चाही। आठ पातसाही झकझोरें। सुबानी बाँधि डाँड लै छोरै।।"[४७] अर्थात शिवाजी महाराज ही एक ऐसे राजा है, जो स्वाभिमान को अंत तक निभाते हैं। उन्होंने आठ पातसाही को झकझोर दिया है। किसी शत्रु के सामने वे नहीं झुके। अपने मन के अनुसार वे अपना जीवन स्वाभिमान से जीते है। विपरीत परिस्थितियों में भी शिवाजी महाराज स्वाभिमान के प्रति अटल रहे है। वे एक मात्र ऐसे राजा है, जो स्वाभिमान को कभी गीरवी नहीं रखा। उन्होंने बादशाह औरंगजेब की अधिनता को भी स्वीकार नहीं किया। अन्य प्रदेश के राजा लोग प्रजा का रुप धारण कर उसे स्वयं और अपने देश को भेंट में दे दिया। लेकिन शिवाजी महाराज स्वाभिमान पर अटल रहे हैं। दिल्ली के बादशाह के अधिनता को स्वीकार न कर स्वतंत्र राज्य की स्थापना की थी।

कवि भूषण ने औरंगजेब आगरा के दरबार में स्वाभिमानी शिवाजी का ऐतिहासिक वर्णन काव्य में किया है। आगरा प्रसंग में उनके स्वाभिमान को स्पष्ट करते हुए भूषण लिखते हैं-

"सवन के ऊपर ही ठाढ़ो रहिवे के जोग,
ताहि खरो कियो जाय-जारिन के नियरे।
जानि गैरमिसिल गुसैल गुसा धारि उर,
किन्ही ना सलाम न बचन बोले सियरे।"[४८]

अर्थात दरबार में शिवाजी महाराज की जगह सब के सामने खडे रहने की योग्यता है। फिर भी उन्हें दरबार में जाय-जरिन (पंच हजारी) छोटे नोकरों के समीप खडा किया गया। इस अनुचित व्यवहार को जानकर शिवाजी महाराज के मन में गुस्सा आया। उन्होंने क्रोध में किसी को भी सलाम नही किया और न कुछ शितल (मिठे) वचन बोले। इस प्रकार के अपमान से वे बडे क्रोधित होकर सभी की ओरलाल मुख से देख रहे थे।

आगरा के दरबार में बडे-बडे वीर. पठान, सरदार, राजपूतों का भारी समुह खडा था। शिवाजी महाराज के पास न फौज भी और न हाथ में कोई हथियार था। स्वयं की रक्षा और सुरक्षा का कोई प्रबंध भी नहीं था, ऐसे समय में भी अपने स्वाभिमान आहत नहीं होने दिया था। भरे दरबार में स्वाभिमानी राजा नें औरंगजेब के सामने अपना मस्तक नहीं झुकाया बल्कि उसे प्रणाम तक नहीं किया। भूषण ने औरंगजेब के सामने शिवाजी महाराज के स्वाभिमान को दर्शाते हुए कहाँ है- "नायो न माथ हीं दक्खिननाथ न साथ मैं फौज न हाथ हथ्यारों।"[४९] अर्थात शिवाजी महाराज के हाथ में न हथियार था न साथ में कोई फौज थी, फिर भी दक्षिण के राजा ने अपना मस्तक औरंगजेब के सामने नहीं टेका। आगरा दरबार में अनुचित व्यवहार पर शिवाजी महाराज ने सलाम तो नहीं किया बल्कि,

अपनी मुछों पर तांव देकर अपने स्वाभिमान को दर्शाया। सच्चा स्वाभिमानी व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों में भी अपने स्वाभिमान को नहीं छोडता चाहे उसका परिणाम कुछ भी हो। शिवाजी महाराज के सामने विपरित परिस्थितियाँ होने पर भी अपने स्वाभिमान को आहत होते देख उसका कडा विरोध किया। इस संदर्भ में कवि भूषण लिखते है- "साहितनै सरजा सिवा, दियो मुच्छ पर ताव।"[५०] अर्थात शिवाजी महाराज ने भरे दरबार में अपने साथ अनुचित व्यवहार को देख अपने मुँछों पर तांव देकर अपने स्वाभिमान को दर्शाया हैं। शिवाजी महाराज के स्वाभिमान को आगरा दरबार की घटना को स्पष्ट करते हुए आ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र भी लिखते हैं कि, "औरंगजेब ने शिवाजी को आगरा में साधारण सरदारों में बैठाना चाहा। स्वाभिमानी शिवाजी ने इसे स्वीकार नहीं किया। क्रोध से आँखे लाल हो गई। ये तुरंत उसे बिना सलाम किए अपने डेरे में लौट आए।"[५१] अर्थात शिवाजी महाराज स्वाभिमान को आहत होने पर उसका विरोध कर प्रतिक्रिया देने से नहीं चुकते। शिवाजी महाराज देश के लिए भी स्वाभिमान का एक प्रतिक है। उन्होंने बचपन में ही आदिलशाह के दरबार में अपने स्वाभिमान को दर्शाया था। आदिलशाह को वे सलाम न करके सिधा अपनी जगह जाकर बैठ जाते है।

इस प्रकार हिंदी साहित्य में लाल कवि ने 'छत्रप्रकाश' में और कवि भूषण ने शिवराज भूषण और शिवा बावनी में शिवाजी महाराज के स्वाभिमानी रुप का बडे सुक्ष्मता के साथ ऐतिहासिक वर्णन किया हैं। उन्होंने बचपन में आदिलशाहा को भी सलाम नहीं किया शिवाजी महाराज बचपन से ही स्वाभिमानी थे। कवि भूषण ने औरंगजेब दरबार के ऐतिहासिक प्रसंग को ध्यान में रखकर उनके स्वाभिमान का वर्णन किया है। अपने स्वाभिमान को कभी किसी के सामने झुकने नहीं दिया। विपरित परिस्थितियों में भी स्वाभिमान को जगाये रखा था।

२.२.६. श्रध्दावान :

कोई भी व्यक्ति श्रध्दा इसलिए रखता है कि उनको विश्वास, साहस, शक्ति और प्रेरणा मिलती रहें। यहाँ पहले स्पष्ट है कि, श्रध्दा और अंधविश्वास में अंतर हैं। शिवाजी महाराज बिल्कूल अंधविश्वासू नहीं थे बल्कि ज्ञानी और विवेकवादी भक्त थे। उनकी हमेशा तुळजा भवानी, भगवान शिवजी, माता-पिता के प्रति श्रध्दा थी। उनको शक्ति, आत्मविश्वास, साहस, धैर्य के लिए निरंतर प्रेरित करते थे। कवि भूषण ने भी भवानी की स्तुति शिवराज भूषण के काव्य ग्रंथ प्रथम छंद में राजा शिवाजी महाराज को विजय प्रदान करने की आशा प्रकट की हैं। भूषण कवि भवानी देवी को विजयिनी, आदिशक्ति कालिका भवानी कहते हैं। उनकी महिमा वर्णन करते हुए उसे मधु और कैटभ देत्यें को छलनेवाली तथा महिषासुर का नाश करनेवाली चामुंडे, चंड मुंड जैसे पाखंडी राक्षसों को नष्ट करनेवाली भवानी की प्रार्थना करते है। भवानी ने सुरक्त, रक्तबीज विडाल, निशुंभ और शंभु देत्यों का नाश करनेवाली भवानी की सरस्वती का रुप वर्णित करते है। शक्तिशाली सरजा राजा शिवाजी को विजय प्रदान करने की अराधना कवि भूषण भवानी देवी के सामने करते हैं। कवि भूषण 'भवानी' को शिवाजी महाराज का श्रध्दा स्थान मानते थे। प्रतापगड किल्ले पर उन्होंने भवानी देवी की मूर्ति की प्रतिष्ठापना भी की थी। भवानी देवी उनके लिए आत्मविश्वास, साहस, शक्ति, प्रेरणा के रुप में थी। दैत्य संहारक करनेवाली भवानी से ही उन्होंने दूर्जनों के नाश की प्रेरणा ली है।

शिवाजी महाराज राजा छत्रसाल को उपदेश भी देते हैं। मुगल की अधिनता में न रहकर अपने स्वतंत्र राज्य का निर्माण करना होगा। भवानी देवी पर भरोसा रखकर स्वराज्य निर्माण का काम शुरु करें। श्रध्दा और प्रेरणा रुप में भवानी देवी का आर्शीवाद लेने की बात करते है। लाल कवि शिवाजी महाराज के उपदेश को स्पष्ट करते हुए कहते है कि,

"हमकौ को भई सहाई भवानी। भय नहिं मुगलन की मनमानी।।"[५२]

अर्थात शिवाजी महाराज छत्रसाल राजा को उपदेश देते हुए कहते हैं कि, हमें तो भवानी का आर्शीवाद है। हमें मुगलों की मनमानी पसंद नहीं है। कवि लाल (गोरेलाल) ने शिवाजी महाराज के श्रध्दास्थान के रुप में कृष्ण (ब्रजनाथ) को भी दिखाया हैं। छत्रसाल राजा का उपदेश प्रसंग पर शिवाजी महाराज कहते है-

"राखि हियै ब्रजनाथ कौ, हाथ लेउ करवार।

से रक्षा करि है सदा, यह जानौ निरधार।।"[५३]

अर्थात छत्रसाल को कहते है, तुम हाथ में तलवार लेकर युध्द के लिए तैयार हो जाओ। (कृष्ण) ब्रजनाथ आपकी हमेशा रक्षा करेगा। ब्रजनाथ पर आप विश्वास रखो। भगवान कृष्ण निराधारों की रक्षा करते है। गोरेलाल 'कवि' को छोडकर अन्य किसी कवि ने शिवाजी के श्रध्दास्थान के रुप में श्रीकृष्ण का वर्णन नहीं किया हैं। शिवाजी महाराज और उनकी सैनिकों की रणगर्जना 'हर हर महादेव' की थी। शिवाजी महाराज ने इस गर्जना से ही शत्रु के विरुध्द एक संघ और एकता की भावना तैयार की थी। भूषण ने शिवाजी महाराज को 'शिव' (महादेव) का सेवक माना है। भगवान शिवजी के उपर महाराज की बडी श्रध्दा थी। वह भगवान शिवजी का भक्त (सेवक) थे। उन्होंने १५ वर्ष की आयु में स्वराज्य की शपथ भी रोहिडेश्वर (महादेव) के मंदीर में ली थी। कवि भूषण शिवाजी महाराज को भगवान शिवजी का सेवक कहते हुए लिखते हैं कि, "सिव सेवक सिवा गढपति।"[५४] अर्थात किल्लों का पति (रक्षक, मालक) शिवाजी महाराज भगवान शिवजी का सेवक है। शिवाजी महाराज को भगवान महादेव जी की कथाओं में (कथा सुनने पर) बडा प्रेम झलकता हैं। भगवान शिवाजी की भक्ति से शाहजी पुत्र शिवाजी के चेहरें पर बड़ा आनंद आता हैं। उनको भगवान 'शिवजी' की कथा सुनने की जिज्ञासा रहती थी। इस दृष्टि से भूषण लिखते हैं कि, "सिव की कथान मैं सनेह झलकत है।"[५५] अर्थात भगवान शिवजी की कथा सुनकर उन्हें

अत्याधिक आनंद मिलता है। शिवाजी महाराज में 'शिवजी' की भक्ति उनके पूर्वजों की परंपरा की देन हैं। भूषण कवि ने उनकी शिवभक्ति के कारण भगवान महादेव को प्रसन्न करने के लिए शत्रुओं की मुंडमाला अर्पण करना, भूत-प्रेत आदि को खूब भोजन खिलाने का वर्णन किया है।

शिवाजी महाराज बचपन में पितृ-प्रेम से वंचित रहें। देश में दो बडे शासकों में सत्ता-संघर्ष चल रहा था। शाहजी महाराज ने अहमदनगर के शासक को छोडकर बीजापुर के दरबार में जा पहुँचे। बीजापुर के आदिलशाह ने उन्हें बंगलूरु के प्रदेश में भेजा। शिवाजी महाराज महाराष्ट्र के पुना में रहते थे। पितृछाया से वंचित रहने पर भी शिवाजी महाराज का पिता के प्रति प्रेम कम नहीं रहा था। शाहजी महाराज ने दूसरी शादी तुकाई से की थी, उन से व्यंकोजी राजे का जन्म हुआ था। पिता के द्वारा दूसरी शादी के कारण पितृ-द्वेष निर्माण होना स्वाभाविक माना जा सकता था। शाहजी महाराज कई वर्षों बाद पुत्र को मिलने आए तो अपने पिता शाहजी का शिवाजी महाराज ने बडा आदर सत्कार किया। शिवाजी महाराज अत्यंत पितृभक्त थे। इसलिए कवि भूषण शिवाजी महाराज का परिचय देते हुए अनेक छन्दों में उन्हें शाहजी के पुत्र रुप वर्णित करते हैं। भूषण एक छन्द में लिखते हैं कि, "साहि के सपूत पूत वीर सिवराज सिंह।"[५६] अर्थात शाहजी के सुपुत्र वीर शिवाजी सिंह के समान हैं। कवि भूषण ने पितृ-प्रेम का चित्रण विस्तृत ढंग से किया है। शिवाजी महाराज का निर्देश देते समय अनेक छंदों में 'साहितने', साहिनंद', 'साहि' आदि शब्दों के द्वारा पितृ प्रेम झलकता है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि, भूषण कवि ने शिवाजी महाराज के पिता शाहजी महाराज को श्रध्दा, प्रेरणा, मार्गदर्शक, सलाहकार के रुप में प्रकट किया है।

कवि भूषण ने पिता शाहजी महाराज का वर्णन गौरवपूर्ण विस्तृत रुप के साथ उनके वैभव का भी वर्णन किया है। माता जीजाबाई का नाममात्र भी उल्लेख भूषण और अन्य मध्यकालीन हिंदी कवियों ने नहीं किया हैं। यह बडे

अश्चर्य की बात है, शिवाजी महाराज की माता 'जीजाबाई' का कहीं पर भी वर्णन नहीं किया गया, परंतु 'शिवा बावनी' के प्रस्तावना में पं. हरिशंकर शर्मा अफजल खाँ का वध प्रसंग पर लिखते हैं कि, "शिवाजी अपनी इष्टदेवी भवानी की स्तुति कर तथा माता जीजाबाई से आशिर्वाद ले रणक्षेत्र को चल दिये।"[५७] माता जीजाबाई का आर्शीवाद और मार्गदर्शन उनके साथ हमेशा रहा हैं। जीजाबाई शिवाजी महाराज के मार्गदर्शक सलाहकार भी थी।

इस प्रकार शिवाजी महाराज के श्रध्दा स्थानों में तुळजा भवानी, भगवान शिवजी, श्रीकृष्ण, पिता शाहजी माता जीजाबाई का वर्णन किया गया हैं। शिवाजी महाराज के श्रध्दा स्थान शक्ति, स्पूर्ति, प्रेरणा, एकता, मार्गदर्शक माने जा सकते हैं। शिवाजी महाराज श्रध्दावान राजा थे। वे अंधविश्वासू नहीं बल्कि ज्ञानी भक्त थे। उनके कार्य में श्रध्दा का रुप आत्मविश्वास, शक्ति और प्रेरणा के लिए सहायक हैं।

२.२.७. साहसी और निर्भयता :

हिम्मत हमेशा बहादूरों का साथ देती है। साहस के कारण व्यक्ति सामने आये हुए कठिन संकटों का धैर्य के साथ सामना करता है। अपने विपरीत परिस्थितियों के घटना और प्रसंग में भी जो अपना साहस नहीं खोता, वहीं वीर पुरुष होता है। साहसी व्यक्ति ही युध्द में शौर्य दिखाता है। शिवाजी महाराज को बचपन से ही उनकी माता जीजाबाई ने साहस और निर्भयता से रहने की शिक्षा दी है। शिवाजी महाराज में अदम्य साहस था। बडी-बडी सेनाओं को हराने का साहस अपने अंदर रखते थे। जब युध्द में शत्रु के तोफ, बाणे, गोलियाँ चलाने पर मोरचे की आड में बचना कठिन था। ऐसे विपरित समय में महाराज आपने साथ-साथ सेनाओं के अंदर साहस भर देते थे। उनके युध्द में दिखाये गए साहस का वर्णन शब्दों में करना कठिन है। फिर भी कवि भूषण कहते है कि, "मुसकिल होति मुरचान हू की ओट में। ताही समै सिवराज हाँक मारी हल्ला कियो, दावा

बाँधि परा हल्ला वीर वर जोट में। 'भूषण' भनत तेरी हिम्मति कहाँ लों कहों।।"[५८] अर्थात युध्द में बाण, गोलीयाँ शत्रु पक्ष से चलाने पर युध्द करना मुश्किल था। फिर भी वह अपने सेनाओं में साहस भरकर आज्ञा देते है, कि शत्रु के उपर जोर से हल्ला करों। निर्भयता एक वीर योध्दाओं में ही होती हैं। शिवाजी महाराज ने पुना में टिके हुए शाईस्ता खाँ पर एक रात मुसाहिब तथा चौकीदारों को मारकर दो सौं आदमीयों को साथ लेकर महल के शयन कक्ष में प्रवेश किया। शाईस्ता खाँ के शयन कक्ष में जाकर उस पर हल्ला किया। शत्रु के लाखों सैनिकों के बीच में जाकर शाईस्ता खाँ पर वार कर उसे घायल किया था।

शिवाजी महाराज निडर और निर्भय राजा थे। वह किसी भी शत्रु से डरते नहीं थे। सामने शत्रु कितना भी बड़ा पराक्रमी और शक्तिशाली हो उसका मुकाबला निर्भयता से करते थें। उन्होने अहमदनगर, दिल्ली, बीजापूर, गोलकुंडा के बडे राजाओं का निर्भयता के साथ सामना किया। परिस्थितियाँ विपरीत हो फिर भी वह उसका सामना डटकर करते रहें। शिवाजी महाराज शत्रु के किसी भी बादशाह, राजाओं से नहीं डरते थे। इस बारे में भूषण लिखते है, "साहिन सो बिनु डर अगड"[५९] अर्थात शिवाजी महाराज किसी भी बादशाह से नहीं डरते हैं। उनकी निर्भयता उनके व्यक्तित्व को सुशोभित करती हैं। मुगल बादशाह औरंगजेब के दरबार में भी निर्भय होकर जाते हैं। दरबार में उनके साथ अनुचित व्यवहार कर शिवाजी महाराज को अपमानित किया जाता है। उनको साधारण सरदारों में खडा करने पर वे औरंगजेब बादशाह को बीना डरे इस व्यवहार पर निषेध व्यक्त करते हैं। औरंगजेब के अनुचित व्यवहार पर वे दरबारी सभी नियमों को तोडने का साहस करते है। औरंगजेब बादशाह को वे सलाम और अदब तक नहीं करते। बडी निर्भयता से औरंगजेब के सामने क्रोध प्रकट कर अपनी प्रतिक्रिया देने का साहस करते हैं। इस प्रतिक्रिया में कुछ निषेधात्मक शब्द भी कहते हैं। मुगल दरबार में इस प्रकार साहस शिवाजी महाराज के अलावा और कोई राजा नहीं कर सका। उस समय शिवाजी महाराज के साथ न फौज थी

और नहीं हाथ में कोई शस्त्र था। फिर भी वे दरबार में निर्भयता से खडे रहें। इस संदर्भ में भूषण लिखते- "नायो न माथहीं दक्खिननाथ न साथ में फौज न हाथ में हत्थारो।"[६०] अर्थात शिवाजी महाराज औरंगजेब के दरबार में बीना सेना की फौज लिए अकेले गये थे। उनके पास किसी प्रकार का कोई शस्त्र नहीं था। फिर भी औरंगजेब के सामने अपना सर झुकाकर सलाम नहीं किया। इसी दरबार में शिवाजी महाराज ने औरंगजेब के अधिन राजा, सरदार, उमराव को देखकर जरा भी नहीं डरे उन्होंने बादशाह के दरबारी नियमों को भी तो तोड दिया। इस घटना का वर्णन भूषण इस प्रकार करते हैं, "तिनको तुजुक देखि नेकहू न लरजा। ठान्यो न सलाम मान्यो न साहि को इलाम।"[६१] अर्थात औरंगजेब में अपने जन्म दिन के उत्सव का बडा शानदार प्रबंध किया था। उनके अधिन राजा, उमराव, सरदारों को देखकर शिवाजी महाराज बिल्कूल भी नहीं डरे। अनुचित जगह पर खडा करने के कारण उन्होंने औरंगजेब को सलाम नहीं किया था। सभी दरबारी नियम जो रामसिंह ने बताये थे, उन नियमों का भी तोड दिया। अतः शिवाजी महाराज में अदम्य साहस था। जो विपरीत परिस्थितियों में भी दिखाई देता हैं। साहस और निर्भयता उनके शौर्य, वीरता का कारण हैं। बड़ी निर्भयता से शत्रु के सामने खडे होते थे। शिवाजी महाराज शत्रु से डरते नहीं, बल्कि शत्रु शिवाजी महाराज से डरते थे। उन्होंने अपने साहस और निर्भयता के कारण ही अनेक पराक्रम किये हैं। अफजल खाँ, शाईस्ता खां से न डरते हुए उनका सामना किया। बादशाह के दरबार में अपने पुत्र संभाजी राजे को भी अपने साथ लेकर जाने का साहस दिखाया था। निर्भयता से दरबारी नियमों को तोड दिया था। अतः हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज के साहस और निर्भयता का वर्णन किया है।

२.२.८. कार्यक्षमता :

किसी भी कार्य की कार्य सिध्दि के लिए कार्यक्षम होना जरुरी हैं। बिना कार्यक्षमता के कार्य सिध्दी केवल कल्पना मात्र रह जाती है। जितना बडा लक्ष्य होता है, उसे प्राप्त करने के लिए उतनी बडी कार्यक्षमता की आवश्यकता होती है। शिवाजी महाराज ने हिंदवी स्वराज्य स्थापना करने का बडा लक्ष्य रखा था। लक्ष्य प्राप्ति के लिए वे हमेशा दिन-रात कार्यक्षम रहते हैं। उनकी कार्यक्षमता को देखकर शत्रु भी आश्चर्य चकित हो जाते थे। कार्यक्षम व्यक्ति ही लक्ष्य का निर्धारण कर उसे प्राप्त करने के लिए दिनरात प्रयासरत रहता है। शिवाजी महाराज भी स्वराज्य के लिए दिन और रात में भी युध्द को अंजाम देते थे।

शिवाजी महाराज में अभूतपूर्व कार्यक्षमता थी। उनकी हर सफलता के पीछे उनकी कार्यक्षमता छिपी हुई है। वह बचपन से कार्यक्षम बालक के रुप में दिखाई देते है। उन्होंने आदिलशाही प्रदेश को बचपन में ही जीतना शुरु किया था। किशोरावस्था में गोवकुंडा और बीजापुर को जीता जब जवान हुए तो दिल्ली के बादशाह औरंगजेब को जीता था। उनकी कार्यक्षमता के बारे में भूषण कहते है कि, "भूषण भनत बाल लीला गढकोट जीते साहि के सिवाजी करि चहूँ चक्क चाह को। गोलकुंडा बीजापुर जीत्यो लरिकाई ही में, ज्वानी आए जीत्यो दिल्लीपति पातस्याह को।।"[६२]

अर्थात शिवाजी महाराज ने बालक्रिडा में चारों दिशाओं के किले सहज इच्छा से जीत लिया है। किशोरावस्था में ही बीजापुर और गोवलकुंडा पर विजय प्राप्त की है। जवान होते ही दिल्ली के बादशाह को परास्त किया था। अपने लक्ष्य के प्रति बचपन से ही कार्यक्षम थे। शिवाजी महाराज ने बचपन में बाल-क्रिडा में चारों दिशाओं के किलो को सहज इच्छा से ही जीत लिया है। शिवाजी महाराज की कार्य करने की इतनी ज्यादा है कि, अन्य राजाओं के लिए जो कार्य जीवन भर में साध्य ही नहीं होता हैं, वह शिवाजी के लिए केवल एक दिन काम

हैं। उनका पराक्रम देख सभी शत्रु चकित रह जाते थे उनके कार्यक्षमता का वर्णन करते हुए भूषण कवि लिखते है कि,

"औरन को जो जन्म है, सो वाको यक रोज।

औरन को जो राज सो, सिव सरजा की मौज।।"[६३]

अर्थात दूसरे राजा संपूर्ण जीवन भर जन्मभर संघर्ष करने पर भी जो लक्ष्य प्राप्त नही कर सकते है, वो कार्य शिवाजी महाराज केवल एक ही दिन में पूरा करते थे। उनके लिए दूसरों के राज्य जीतना एक साधारण खेल की तरह है। शिवाजी महाराज की कार्यक्षमता का परिचय तब होता है, जब शाईस्ता खाँ एक लाख के सेनाओं को लेकर पुना के महल में डेरा डालकर बैठा था। शिवाजी महाराज ने केवल दो सौ सेनाओं के साथ रात में महल में घुसकर शाईस्ता खाँ की दुर्दशा की। महल में अचानक रात के अंधेरे में छापा मारकर शाईस्ता खाँ की तीन उँगलीयाँ काटी थी। दिन के साथ-साथ रात में वह स्वराज्य हित के लिए कार्यक्षम और कार्य तत्पर रहते थे। इस रात के प्रसंग का वर्णन भूषण करते हुए लिखते हैं कि, "महलन में मचाय महाभारत के भार को। तो सो को सिवाजी जेही दो सौ आदमी सौं। जित्यो जंग सरदार सौ हजार असवार को।"[६४] अर्थात पुना के महल में रात के अंधेरे में छापा मारकर महाभारत की तरह हडकंप मचा दी थी। केवल दो सौ सैनिकों को साथ में लेकर गये थे। एक लाख (सौ हजार) के सरदार शाईस्ता पर वार कर उसे घायल कर दिया। शिवाजी महाराज दिन रात स्वराज्य हित के लिए कार्यतत्पर दिखाई देते है। शाईस्ताखाँ के शयन कक्ष में जाकर उसके उपर हमला किया था। लाखों सैनिकों की संख्या होने के बावजूद बडी चपलता से साहि सलामत महल से बाहर भी निकलें। शिवाजी महाराज के कार्यक्षमता में चपलता गुणों के बारे में 'ग्रॉंड डफ' लिखते हैं- "बल की तुलना में उनमें चपलता अधिक थी।"[६५] अर्थात शिवाजी महाराज कार्यक्षम और चंचल थे। शक्ति से भी अधिक चपलता थी इसलिए वे शत्रु के हाथ में कभी नहीं

लगे। शिवाजी महाराज दिन-रात सावधान (सतर्क) रहते हैं। शिवाजी महाराज की कार्यतत्परता के कारण शत्रु दिन-रात भयभित दिखाई देता है। अचानक से कहीं शिवाजी या उनके सैनिक आकर उनके उपर हमला न करे। इसलिए शत्रु दिन-रात जागते रहते हैं। कवि भूषण कहते है- "तू तौ रातौ दिन जग जागत रहत वेऊ जागत रहत रातौ दिन बन-रत हैं।"[६६] अर्थात शिवाजी महाराज के असंभव कार्य करने से शत्रु भयभित होते है। दिन हो या रात शिवाजी महाराज युध्द के लिए हमेशा तत्पर रहते है। इसलिए उनके शत्रु कभी चैन से नहीं सो पाते हैं। शिवाजी महाराज की कार्यक्षमता के बारे में 'हिंदी विश्वकोश' में लिखा है-"युध्द यात्रा काल में सारा दिन घोडे पर बिताकर भी वह क्लांत नहीं होते थे।"[६७] स्पष्ट है कि, शिवाजी महाराज स्वयं युध्द में सेना के साथ रहते हैं। वे सारा दिन युध्द क्षेत्र में घोडे पर रहते थे। फिर भी उन्हें इसकी किसी प्रकार की कोई वेदना नहीं होती हैं। शत्रु शिवाजी महाराज की कार्यक्षमता पर चकित होते है। शिवाजी महाराज रातों रात किलों पर विजय प्राप्त कर लेते थे। औरंगजेब यह देखकर पछताता है। औरंगजेब की मनोदशा का वर्णन करते हुए भूषण लिखते है- "औरंग यों पछितात मैं, करतो जतन अनेक सिवा लेइगो दुरग सब, को जानै निसि एक।"[६८] अर्थात बादशाह औरंगजेब शिवाजी महाराज की कार्यक्षमता से पछता रहा है। अगर शिवाजी रात में किल्लों को जीत लेता है, यह मुझे पहले ही पता होता तो मैं किल्ले की रक्षा के लिए कुछ प्रयत्न करता। शिवाजी महाराज स्वराज्य के कार्यसिध्दि के लिए दिन-रात एक कर अपने कार्य के प्रति तत्पर रहने का काम करते थे।

इस तरह शिवाजी महाराज की कार्यक्षमता देख शत्रु पक्ष भयभित होता हैं। शिवाजी महाराज दिन और रात में भी युध्द करने के लिए सदैव तैयार रहते है। उनके अंदर अभूतपूर्व कार्यक्षमता थी। इसलिए सरदार, सैनिक, राजा, बादशाह सब शिवाजी महाराज से डरते थे। उन्होंने अपनी कार्यक्षमता से अफजल खाँ,

शाईस्ता खाँ, मुगल, आदिलशाह, कुतुबशाह को भी चकित किया था। युध्द प्रसंग में शिवाजी महाराज की कार्यक्षमता परिलक्षित होती है।

२.२.९. कुशल संघटक :

किसी भी राजा की सबसे बडी शक्ति प्रजा में होती हैं। प्रजा की सबसे बडी शक्ति एकता में होती हैं। अगर प्रजा का संघटन रहा तो राज्य संघटित रहता हैं। संघटित राज्य शत्रु से भी सुरक्षित रहता है। शिवाजी महाराज ने प्रजा में अन्याय, अत्याचार के विरुध्द लोगों को संघटित किया हैं। संघटित शक्ति के सामने कठिन से कठिन कार्य भी साधारण लगते है। शिवाजी महाराज ने अपने मावळ प्रदेश के लोगों को बडे ही चतुराई से संघटीत किया। जिस कारण मराठा' लोग उनके लिए मरने को भी तैयार हो गए। मावळ प्रदेश के लोगों को संघटीत कर उनमें एकता स्थापित की थी। पहले यह मराठा लोग एक संघटित नही थे। इन असंघटित मावळ प्रदेश के लोगों के संदर्भ में पं. हरिशंकर शर्मा लिखते है कि, "ये लोग बडे विश्वस्त और स्वदेशभक्त थे, परंतु इनमें संघटन की कमी थी। शिवाजी ने कर्मपथ पर पैर रखते ही इस वीर जाति को अपना सहाय्यक बनाया। उनकी घरेलू फूट दूर कर एकता स्थापित की और उन्हें मातृभूमि की रक्षा करने को तैयार किया।"[६९] मावळ प्रदेश के लोगों में शिवाजी महाराज ने पहले विश्वास जताया। उनके स्वदेश और मातृभूमि के प्रेम भावना को जगाकर उन लोगों को संघटित किया। उनके आपसी घरेलू भेदभाव, द्वेष को मिटाकर मातृभूमि रक्षा के लिए उन्हें तैयार किया था। उसके बाद धीरे-धीरे छोटे-छोटे बडे किलेदारों को अपने राज्य में सम्मेलित किया। छोटे किलेदार शिवाजी की अधिनता को सहर्ष स्वीकार कर रहे थे। जैसे मानो छोटे नदी-नाले (छोटे-छोटे किले के स्वामी) चारों ओंर से दौंडे-दौंडें आ कर गढपति शिवाजी महाराज रुपी समुद्र से मिलते है। स्वराज्य में सम्मिलित होनेवाले लोगों का वर्णन करते हुए भूषण लिखते है,

"और गढ़ाई नदी नद, सिव गढपाल दरयाव।

दौरि दोरि चहुँ ओर ते, मिलत आनि यहि भाव।"[७०]

अर्थात शिवाजी महाराज के स्वराज्य के महान और पवित्र कार्य के लिए छोटे-छोटे किल्लेदार, सरदार स्वराज्य में आ गये थे। मानो सभी नदियाँ शिवाजी रुपी समंदर में आकर मिल रही है।

शिवाजी महाराज ने अपनी आँखों से देखा था कि आपसी कलह से ही अपनी शक्ति का नाश होता है। प्रजा के महाशक्ति संघटन से ही स्वराज्य खडा हो सकता हैं। इसलिए सब को ंसाथ में लेकर स्वराज्य की नींव रखी थी। इस संदर्भ में इतिहासकार गो.स. सरदेसाई भी लिखते हैं, "वे केवल अपनी ही स्वाधीनता को स्थापित करने में सफल न हुए, वरन् उन्होंने अपनी जन्मभूमि के बिखरे हुए युध्द प्रिय लोगों में अवश्यक एकता स्थापित करने में भी सफलता प्राप्त की।"[७१] इससे स्पष्ट है कि, शवाजी महाराज ने युध्दप्रिय व्यक्तियों को संघटित कर स्वराज्य निर्माण करने में सहायक बनाने में सफल हुए। शिवाजी महाराज ने छत्रसाल राजा और अन्य राजाओं को भी संघटित किया। मध्यकालीन भारत के एक कुशल संघटक शिवाजी महाराज थे।

इस प्रकार शिवाजी महाराज ने मावल प्रदेश के लोगों को एकत्रित किया। छोटे किलेंदारों, सरदार, राजाओं को अपने राज्य में मिलाया। आपसी फूट ना हो इसका भी खयाल रखते हुए, असंघटित मराठा सरदारों को संघटित किया। अपने हिंदवी स्वराज्य को एक शक्तिशाली राज्य बनाया। देश के अन्य राजाओं को भी यवनों के विरुध्द लढने के लिए मजबुत संघटन बनाया था।

२.२.१०. कुशल राजनीतिज्ञ :

'राजनीति' यह शब्द दो शब्दों का समुह है राज+नीति। राज का मतलब 'शासन' और नीति का मतलब 'उचित समय' और उचित स्थान पर उचित कार्य करने की कला। राज्य के विशेष उद्‌देश को प्राप्त करना राजनीति कहलाती हैं। शिवाजी महाराज की गुढ राजनीति थी। सभी लोग उनकी राजनीति को देख

आश्चर्य चकित होते थे। शिवाजी महाराज ने लोगों को संघटित कर उन में मातृप्रेम, अन्याय की विरुध्द आवाज उठाने के लिए प्रेरित किया। मावल प्रदेश के लोगों को संघटित कर अपना स्वतंत्र स्वराज्य बनाया। शिवाजी महाराज के राजनीति की गुढता को देख दिलशाह, कुतुबशाह निजाम को जीतनेवाले दिल्ली के मुगल बादशाह भी शिवाजी महाराज को 'देव' कहते है। उनके राजनीति के भेद को कोई साधारण व्यक्ति समज नहीं सकता था। भूषण कवि शिवाजी महाराज की गुढ राजनीति का वर्णन करते हुए कहते है कि, "राज-काज देखि कोई पावत न भैव हैं। कहरी यदिल, मौज लहरी कुतुब कहै, बहरी निजाम के जितैया कहैं देव है।"[७२] अर्थात शिवाजी महाराज के राजनीतिक निर्णय को देखकर कोई भी शत्रु उनकी राजनीति को नहीं पहचान पाया। उनकी राजनीति में अत्याधिक गुढ़ता थी। उस राजनीतिक गुढता को आदिलशाह, कुतूबशाह, निजामशाही को जितने वाला औरंगजेब बादशाह तक पहचान नहीं पाया। यह सभी शत्रु शिवाजी महाराज को साक्षात भगवान रुप कहते हैं। शिवाजी महाराज की राजनीति सामान्य राजा और सरदारों के समझ से परे थी।

बीजापूर दरबार के आदेश पर आदिलशाही सरदार बाजी घोरपडे ने शाहजी महाराज को धोके से कैद किया। पिता के कैद होने का समाचार सुनकर शिवाजी महाराज दुविधा में पड गए। फिर अपनी राजनीतिक कुशलता से महाराज ने मुगलों से संधान बाँधकर अपने पिताजी को छुडाया। उन्होंने शत्रु का शत्रु मुगल बादशाह को अपना मित्र बनाया। मुगल बादशाह के साथ मीलकर अपने पिता शाहजी महाराज को कैद से छुडाने में सफल होते हैं। उनके इस राजनीतिक उचित निर्णय को स्पष्ट करते हुए प. राजनारायण शर्मा लिखते है कि, "शिवाजी दुविधा में पड गए। यदि वह बिजापूर से युध्द करते तो यह निश्चित था कि बीजापूर का सुलतान उनके पिता का वध कर देता। यदि वे युध्द बंद कर स्वयं बीजापुर जाते, तो उनका अंत निश्चित था। राजनीति कुशल शिवाजी ने मुगल बादशाह शाहजहाँ से संधि-वार्ता आरंभ की। शाहजहाँ ने

बीजापुर दरबार को शाहजी को छोडने के लिए लिखा। यह देख बीजापुर डर गया, क्योंकि यदि शिवाजी और मुगल मिल जाते तो बीजापुर दरबार कुचला जाता। फलतः बीजापुर दरबार ने उन्हें छोड दिया।"[७३] इससे स्पष्ट होता है कि शिवाजी महाराज ने अपनी राजनीतिक चाल से बीना कोई युध्द किए अपने पिता को बडी आसानी से आदिलशाही की कैद से छुडाया। आदिलशाह यह सब देखकर चकित हो गया था। कुछ वर्षों बाद आदिलशाह से मित्रता कर मुगलों के प्रदेश को जीतना शुरु किया। उन्होंने समयानुरुप साम, दाम, दंड, भेद को राजनीति का आधार बनाया था।

शिवाजी महाराज ने शाइस्ताखाँ और मुगलों के अनेक सरदारों को पराजित किया था। और सुरत शहर पर भी आक्रमण किया था। इस कारण औरंगजेब ने अपने योग्यतम सेनापति मिर्जा राजे जयसिंह और दिलेरखाँ को दक्षिण में भेज दिया। दोनों भी अनुभवी, कुशल राजनीतिज्ञ थे। अतः शिवाजी महाराज ने राजा जयसिंह से संधि कर ली और औरंगजेब के जीते हुए किले वापस दे दिए। परंतु शिवाजी महाराज ने राजनीतिक कुशलता से उन किल्लों पर अपनी सेना और अपना किलेदार रखा था। इनकी राजनीति कुशलता के सामने मिर्जा राजा जयसिंह भी मात खा गये थे। पूरी शक्ति के साथ राजा जयसिंह स्वराज्य पर आक्रमण करने के लिए आया था। शिवाजी महाराज ऐसे समय में मिर्जा राजे से संधि कर लेते है। इस संधि के प्रस्ताव का वर्णन करते हुए भूषण लिखते हैं कि, "तैं जयसिंहहिं गढ़ दिये, सिव सरजा जस हेत। लीन्हें कैयो बरस मैं, बार न लागी देत।"[७४] अर्थात मिर्जा राजे जयसिंह को अपने किले भी संधि में दे दिये। उन किल्लों को प्राप्त करने के लिए कई बरस लगे थे। औरंगजेब के साथ मित्रता कर अपने विजीत किलों को भी मुगलों को वापस दे दिए। भूषण ने शिवाजी महाराज की मित्रता का संकेत दिया हैं। लेकिन यह शिवाजी महाराज की राजनीतिक कुशलता थी। शिवाजी महाराज ने अवश्यकता पडने पर मुगलों की नोकरी करना तथा बीजापूर को दबाने के लिए मुगलों को मदत करना

स्विकार किया था। औरंगजेब के अग्रह पर मिलने आगरा के दरबार में गये थे। उन्हें आगरा दरबार में बंदी बनाया गया। बुध्दिचातुर्य से उनके कैद से पलायन कर जब स्वराज्य में आये। कुछ दिनों बाद मुगलों को संधि में दिये गए किले अपनी शक्ति से कुछ ही दिनों में वापस लिए थे। औरंगजेब द्वारा शिवाजी महाराज को पकडने की कोशिश बार-बार होती रही पर वे हाथ नहीं लगे। जो किले औरंगजेब को दिए उसे फिर से स्वराज्य में शामिल किए थे। फिर कुछ दिनों बादशाह औरंगजेब के सुरत शहर पर आक्रमण कर मुगलों के व्यापारी शहर का खजाना प्राप्त किया। उसके बाद कोंडाना, पुरंदर, लोहगढ जैसे किले पर फिर से विजय प्राप्त की है। अपनी राजनीतिक कुशलता का परिचय देते हुए उन्होंने अपने पिता को कैद करने वाले बीजापुर के आदिलशाही की रक्षा की। दिल्ली से चालिस हजार की सेना लेकर दिलेर खाँ ने बीजापुर पर आक्रमण किया। बीजापुर का अंत निश्चित देखकर उनके नुतन प्रधानमंत्री ने नम्रता पुर्वक शिवाजी महाराज से सहायता माँगी। शिवाजी महाराज ने स्वयं सेनाओं को साथ लेकर बीजापुर की रक्षा की। वह जानते थे, राजनीति में कोई भी सर्वकालिक शत्रु और सर्वकालीक मित्र नहीं होता। बीजापुर के रक्षा की इस घटना को स्पष्ट करते हुए भूषण लिखते है कि, "साहि के सपूत सिवराज वीर तैंने तब बाहु-बल राखी पतसाही बीजापुर की।"[७५] अर्थात शाहजी के सुपुत्र वीर शिवाजी महाराज ने अपने बाहुबल से बीजापुर के आदिलशाही का रक्षण किया। अतः शिवाजी महाराज ने अपनी राजनीति में साम, दाम, दंड, भेद का समयानुरुप उपयोग किया है। इस प्रकार शिवाजी महाराज ने अपने शासन में अलग-अलग राजनीतियों का समय के अनुरुप उपयोग किया हैं। शिवाजी महाराज ने कभी-भी किसी को अपना सर्व कालिक शत्रु नहीं माना। समय के अनुरुप संधि कर ली, फिर पूरी शक्ति से युध्द किया। समयानुसार एक शत्रु के साथ मित्रता निभाई तो दूसरे शत्रु के साथ शत्रुता शिवाजी महाराज बडे कुशल राजनीतिज्ञ थे। उनके

राजनीति के शत्रु कभी भी समझ नहीं सका। आज भी समस्त नेता और दलों के लिए शिवाजी महाराज एक राजनीतिक आदर्श हैं।

२.२.११. कुशल युध्दनीतिज्ञ :

युध्द के प्रसंग में विशिष्ट परिस्थितियों में विशिष्ट निर्णय लेनी की युध्द नीति कुशलता को युध्द नीतिज्ञ कहा जाता है। जो राजा युध्द की भूमि में समयानुरुप नीतियों (रणनीतियों) को अपनाकर युध्द करता है, वहीं युध्द में विजय होता है। कम-से-कम सैनिकों के द्वारा अधिक सैन्य को युध्दनीति से हराया जा सकता है। कुशल यौध्दा शत्रु की रणनीति को पहचानकर अपनी रणनीति में बदलाव भी करता हैं। युध्द कुशलता से कम-से-कम साधनों से अधिक से अधिक बलवान शत्रु को भी हराया जाता है। युध्द भूमि में परिस्थिती के अनुरुप निर्णय लेना पड़ता हैं। समय को देखकर युध्द नीति भी बदलनी पडती हैं। युध्दनीति के बीना युध्द करना मुर्खता होती हैं। शत्रु को देखकर युध्द की नीति राजा तैयार करता है।

शिवाजी महाराज एक युध्द कुशल युध्दनीतिज्ञ थे। उनके रणभूमि की युध्दनीति से शत्रु भी संदिग्ध एवं असमंजस्य में रहते थे। उन्होंने अपनी युध्दनीति में परंपरागत युध्दनीतियों के साथ-साथ नवीनतम युध्द नीति को भी अपनाया था। उन्होंने रणभूमि में युध्द करते समय गनिम कावा, छापामारी, निषायुध्द और उदारनीति आदि का उपयोग किया है जो पूर्णतः नयी है। शत्रु सावधान होने से पहले ही अचानक उनके उपर छापा मारते थे। शाईस्ता खाँ दक्षिण में आकर पुना के महल में रहता था। उनके साथ लाखों की फौज होने के बावजुद एक रात शिवाजी महाराज ने उस महल पर छापा मारा था। अचानक रात के अंधेरे में महल में प्रवेश कर खाँ के उपर तलवार का वार किया था। इस छापा मारी में घायल शाईस्ता दिल्ली वापस भाग गया था। औरंगजेब परेशान होकर कहता है मुझे पता होता की शिवाजी रात में सब दुर्ग लेने की योजना बना रहा है, तो मैं

सावधान रहकर अपने किले की रक्षा हेतु कुछ प्रयत्न करता। मैं अपने किले को जतन करता औरंगजेब के इस अंतरर्मन को भूषण प्रकट करते हुए कहते हैं- "औरंग यों पछितात मै, करतो जतन अनेक। सिवा लेइगो दुरग सब, को जानै निसी एक रात।"[७६] अर्थात औरंगजेब कहता हैं कि, मैं अपने किले को सुरक्षित करने का प्रयत्न करता पर कौन जानता था की शिवाजी रात में भी दुर्ग जीत लेता है। यहाँ भूषण कवि ने निषा युध्द के युध्दनीति को दर्शाया है। शिवाजी महाराज के युध्दनीति का सुदंर उदाहरण प्रस्तुत करते हुए तीरीखे दुश्कंदरी' नामक काव्य में लिखा है- "कि जाने थे चलता नै कुच इलाज। वले होइगे आजिज तो पानी के बाज। देके धूंड तो बर-जाय था वो कयास। जिवेगा भुका, ना जिवे मार प्यास।"[७७] अर्थात शिवाजी महाराज और बहलोल खाँ की इस 'उम्राणी' की लढाई में शिवाजी महाराज ने पहले तालाब के पानी पर अपना अधिकार जमाया। और शत्रु को पानी के लिए तरसाया। फिर उनके उपर अचानक हमला कर पराजित किया। अफलज खाँ अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित बारा हजार की सेना बारुद, तोप और पूरी रसद की तैयारी के साथ शिवाजी महाराज पर चढाई करने के लिए आया। शिवाजी महाराज ने अपनी संख्या में सीमित सेना को युध्द के लिए पहाडीयों में छुपने के लिए कहाँ था। अफजल खाँ वध के बाद उसकी सेना पर आक्रमण करने की पूरी तैयारी की थी। इस घटना को वर्णित करते हुए पं. राजनारायण शर्मा लिखते हैं कि, "शिवाजी की छिपी हुई सेना अफजल खाँ की सेना पर टूट पडी। खान की सेना में से प्राय: वे ही बच सके जिन्होंने आत्म-समर्पन किया।"[७८] अर्थात शिवाजी महाराज युध्दनीति में कुशल थे। दस हजार की सेना के सरदार और उसकी सेनाओं को पराजित किया। शिवाजी महाराज की युध्द नीति अत्यंत उदार थी। युध्द में आत्म-समर्पन शत्रु, सेना के उपर वह वार नहीं करते बल्कि उसे अभयदान देते हैं।

उन्होंने युध्द करते समय गरीब, बालक, प्रजा, स्त्री के उपर कभी शस्त्र नहीं उठाये। आदिलशाह और मुगल बादशाह के सरदारों को युध्द में कैद कर अभयदान दिया था।

हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज के निषा युध्द का विस्तृत वर्णन किया है। उन्होने अनेक युध्द अमावस के घनी अंधेरी रात में किए हैं। निषा युध्द से ही शाईस्ता पर छापा, कोंढाने किले पर विजय आदि अनेक किले को रात में ही जीत लिया था। सन १६७३ में शिवाजी महाराज के सेनापती कान्होंजी जेधे ने अंधेरी रात में कुल ६० सिपाहियों की सहायता से परनाला किले पर चढाई की थी। किले का किलेदार डरकर रात के अंधेरे में ही भाग गया। अतः यह किला शिवाजी महाराज ने जीत लिया। इसी रात के युध्द का वर्णन कवि भूषण करते है- "सलहेरि परनालो ते वै जीते जनु खेत हैं। सावन भादौ की भारी कुहू की अँध्यारी चढि, दुग्ग पर जात मावली दल सचेत हैं।"[७९] अर्थात सालहेरी युध्द में परनाले किले को बडी आसानी से जीत लिया है। सावन और भादों का महिना घोर अंधेरी रात, विभिन्न डरावनी आवाजों के बीच उँचे किले पर मावळी सेना चढकर सालहेरी और परनाला किले को जीत लेती है। शिवाजी महाराज रात के अंधेरे में अधिकांश युध्द की मुहिम रखते थे।

शिवाजी महाराज ने अत्याधिक शक्तिमान शत्रु को देखकर समय के अनुरुप उसके सामने युध्द संधि का प्रस्ताव रखते थे। उन्होंने मुगलों, बीजापूर, कुतुबशाह अन्य शत्रुओं के साथ बहुत बार संधि का प्रस्ताव रखा था। अपने सुविधा के अनुरुप युध्द संधि का प्रस्ताव स्वीकार किया था। शाईस्ता खाँ का पराजय, सुरत पर आक्रमण से औरंगजेब क्रोध में आकर मिर्जा राजा जयसिंह और दिलेर खाँ को दक्षिण में भेज दिया। राजा जयसिंह ने शिवाजी महाराज के सब शत्रुओं को संघटित कर स्वराज्य पर आक्रमण की तैयारी शुरु की थी। इस समय शिवाजी महाराज ने समय सुचकता को ध्यान में रखकर युध्द संधि कर ली

थी। शिवाजी महाराज ने समयानुरुप जीते हुए किल्लों को औरंगजेब को युध्द संधि में दे दिए। शिवाजी महाराज ने मुगलों का ३५ किले दिए और उनके साथ रहकर बीजापूर पर आक्रमण करने में सहाय्यता की। कुछ सालों बाद फिर बीजापुर से संधि की और मुगलों को दिये हुए किले वापस प्राप्त कर लिए।

शिवाजी महाराज अपने युध्दनीति को परिस्थितियों के अनुरुप बदलते रहें। निषायुध्द धर्म के अनुसार निषेध है, पर शिवाजी महाराज ने इस नई युध्दनीति को अपनाया। डॉ. वसंत मोरे लिखते हैं "शिवाजी ने युध्द क्षेत्र में सिर्फ परंपरागत नीति का अनुकरण नहीं किया बल्कि युध्द की अनेक नई विधियाँ और प्रणालियों का प्रयोग किया।"[८०] उन्होंने इस नयी युध्दनितियों में छापामारी, गनिमकावा, धावा मारना, निषा युध्द, युध्द संधि उन्हें हारने के लिए मजबूर करना आदि महत्वपूर्ण युध्द प्रणालीयों को अपनाया था। उन्होंने परंपरागत युध्द नीति से अधिक नई युध्द नीतियों का उपयोग किया।

इस प्रकार शिवाजी महाराज ने युध्दनीति के कारण ही अधिकांश शत्रुओं को पराजीत कर स्वराज्य का निर्माण कर सके। कम-से-कम सेना, साधनों के साथ कुशल युध्दनीति का उपयोग कर शक्तिशाली शत्रु पर विजय प्राप्त की हैं। अपनी युध्दनीतियों से शक्तिशाली शत्रुओं को युध्द में पराजित किया है।

२.२.१२ प्रजाहित दक्ष :

शिवाजी महाराज का राज्य 'रयत' अर्थात प्रजा का राज्य था। शिवाजी महाराज अपने प्रजा हित के लिए कार्यतत्पर रहते थे। प्रजा के हित में ही राज्य का हित मानते थे। अपने स्वहित, अहंकार, प्रतिष्ठा के लिए उन्होंने प्रजा को हानी नहीं पहँचाई। मिर्जा राजा जयसिंह के साथ संधि का प्रस्ताव रखना या जनता पर आत्याचार करनेवाले अफजल खाँ का वध करने के पिछे प्रजाहित प्रमुख उद्देश था। शिवाजी महाराज के शासन व्यवस्था में प्रजा का हित ही सर्वोपरी है। प्रजाहीत के बाद राजनीति, राज्य और उसके विस्तार की बात सोच

रखते है। वे निरंतर जनता की रक्षा, सुरक्षा और उनकी उन्नति के सतत प्रयासरत रहते थे। उनके स्वराज्य का शासन लोक कल्याकारी था। शिवाजी महाराज के शासन व्यवस्था के प्रमुख उद्‌देश के बारे में इतिहासकार श्री बा. हार्डिकर लिखते हैं कि "शिवाजी के शासन व्यवस्था के दो प्रमुख उद्‌देश थे। एक था देश की सुरक्षा की व्यवस्था करना तथा दूसरा जनता को सुखी तथा प्रसन्न रखना।"[८१] शिवाजी महाराज दोनों उद्‌देशों का बडी निष्ठा से पालन करते थे। इन दो प्रमुख उद्‌देशों के प्रति वे हमेशा सजग रहते थे।

जो राज्य प्रजा के हित में होता है, उसे जनता अपना राज्य मानती है। राजा और राज्य के लिए प्रजा अपनी जान तक न्यौछावर करती हैं। शिवाजी महाराज का स्वराज्य जनता को अपना राज्य लगता है। पं. हरिशंकर शर्मा लिखते हैं- "शिवाजी ने अपनी सऱ्हदयता द्वारा बहुत से मरहठे वीरों को मुट्ठी में कर लिया था। शिवाजी की लोकप्रियता यहाँ तक बढी की मावले जाति के लोग उनके लिये मरने मारने के लिए तैयार हो गये।"[८२] लोग राजा और राज्य के लिए उस समय समर्पन और बलिदान देते है, जब उनको राज्य और राजा अपना लगता है। प्रजा हित स्वराज्य का उद्‌देश होने से राजा के प्रति निष्ठा, प्रेम समर्पन होता हैं। प्रजा उसी को अपना मानती है, जो प्रजा के हितमें दु:ख, दर्द का निवारक हो। शिवाजी महाराज ने प्रजा के संवेदना को समझकर प्रजा हित की रक्षा की है। प्रजा मन के सभी दु:ख, दर्द, कष्ठ, पीड़ा वेदना की शिवाजी महाराज ने निकाल दिए है। प्रजाहित के स्वरुप का वर्णन करते हुए भूषण लिखते हैं कि, "कढि गई रैयति के मन की कसक सब। मिटि गई ठसक तमाम तुरुकाने की।"[८३] अर्थात 'रयत' (प्रजा) के मन को सब दु:खों का हरन हो गया। तुरकों की अकड निकल गई हैं। तुर्क और अन्य सब शत्रु से प्रजा का रक्षण हुआ है। शत्रु द्वारा होनेवाले अन्याय, अत्याचार, शोषण से प्रजा मुफ्त हो गयी है। शिवाजी महाराज ने समस्त दीन जन, गरीब प्रजा की दीनता को दूर कर पराधिनता को नष्ट किया है। शिवाजी महाराज दीन (गरीब) का निर्मूलन कर

पराधिनता को नष्ट करके भयंकर दारिद्र्य को मिटानेवाले राजा हैं। शिवाजी महाराज का आवतार संसार के पालन-पोषण के हेतु हुआ है। उन्होंने सभी प्रजाजनों को जीवन के प्रति आस्वस्थ कर दिया है। इसलिए प्रातः काल उठकर सभी सुखी प्रजा शिवाजी महाराज के भुजदंड (बाहुदंड) को आशिर्वाद देते है- "जग काजवारे निहचिंत करि डारे सब, भोर देत आसिस तिहरे भुजदण्ड को।"[८४] अर्थात शिवाजी महाराज सारे संसार (स्वराज्य के प्रजा) का लालन पालन करनेवाले राजा है। उनके कारण स्वराज्य की प्रजा सुखी और निश्चित है। स्वराज्य की प्रजा शिवाजी महाराज को हर दिन प्रातःकाल उठकर आशीर्वाद देती है। स्वराज्य का प्रमुख उद्देश्य ही प्रजा का हित था। इस प्रकार शिवाजी महाराज के राज्य में जनता सुखी, संपन्न थी। उनके स्वराज्य की प्रजा कभी भी भयभित नहीं होती हैं। प्रजा की निर्भयता से शासन व्यवस्था में स्थिरता आ जाती है। कवि भूषण के अतिरिक्त अन्य मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज की प्रजा हित दक्षता का वर्णन नहीं किया है। शिवाजी महाराज प्रजा के हित का रक्षक, प्रजापालक, दुःख निवारक, दीन, हीन, शोषितों की मदत करते थे। उनके स्वराज्य निर्माण का प्रमुख उद्‌देश प्रजा हित था।

२.२.१३. धर्माभिमानी :

मध्यकालीन भारत के सभी यवनों के राजाओं का अपने धर्म के प्रति स्वाभिमान तो था ही, परंतु कुछ राजा धर्मांद थे। दूसरे धर्म के लोगों को जबरन धर्मांतर करवाके अपने स्वधर्म को बढाना उनके प्रमुख कार्यों में से एक था। किसी को भी अपने धर्म के प्रति अभिमान होना स्वाभाविक है। परंतु दूसरों के भी धर्म का आदर करना चाहिए। शिवाजी महाराज की स्वधर्म के धार्मिक विधी, विचार-आचार, रुढी, परंपरा का पालन करते हैं। वे यह कार्य करते समय किसी भी अन्य धर्म के ग्रंथों या श्रध्दास्थानों की अवेहलना कभी नहीं करते थे। शिवाजी महाराज हिंदू के प्रति आस्था और श्रध्दा रखते थे। कुछ मुस्लिम राजाओं की

नीति धार्मिक कट्टरता होने से शिवाजी महाराज ने हिंदू धर्म की आचार-विचार, धर्मशास्त्र, पुराण, संस्कृति, परंपराओं का रक्षण और निर्वाहन किया। अपने व्यक्तिगत जीवन में स्वधर्म (हिंदू धर्म) के अचरण को महत्व देते थे। व्यक्तिगत जीवन में वे हिंदू धर्म के आचारण मार्ग का पालन करते थे। उनका सामाजिक जीवन इस से भिन्न था। अपने स्वधर्म के आचरणों को सभी लोगों के उपर थोपने का काम नही किया था। उनके धार्मिक आचार-विचार के संदर्भ में डॉ. वसंत मोरे स्पष्ट करते हैं कि, "शिवाजी सामाजिक जीवन में उदार धार्मिक नीति को अपनाते थे, मगर अपने व्यक्तिगत जीवन में हिंदू धर्म के आचारों का पूर्ण रुप से निर्वाह करते थे। दूसरे शब्दों में हम कह सकते है कि शिवाजी का व्यक्तिगत जीवन अत्यंत धर्मनिष्ठ था।"[८५] शिवाजी महाराज सामाजिक जीवन में उदात्य नीति रखते थे। व्यक्तिगत जीवन में धर्म के आचरण का पालन करते थे। वे भगवान शिवजी, भवानी देवी की भक्ति करते थे। 'भक्ति' हिंदू धर्म के आचरण पध्दति का अंग हैं। हिंदू धर्म का व्यक्ति 'नवधा भक्ति' से ईश्वर की प्रार्थना करता। नौ प्रकार की भक्ति हिंदू धर्म में बताई गयी हैं। शिवाजी महाराज अंधभक्त न होकर एक ज्ञानीभक्त थे। ईश्वर भक्ति में भवानी और शिव की आराधना करते थे। कवि भूषण ने शिवाजी महाराज को 'सिव सेवक' कहते हुए लिखते है- "सिव सेवक सिव गढपति।"[८६] अर्थात शिवाजी महाराज भगवान शिवजी के सेवक (भक्त) हैं। स्पष्ट है कि वे भगवान शिवजी की भक्ति करते हैं। यहाँ शिवाजी महाराज की 'सेवा भाव' की भक्ति दिखाई देती हैं। इसके अलावा हिंदू धर्म में माता-पिता की सेवा के लिए पितृभक्ति, मातृभक्ति शिवाजी महाराज ने की हैं। हिंदू धर्म में दान को अत्याधिक महत्व है; इसलिए शिवाजी महाराज यथासंभव हर प्रकार का दान करने के लिए तत्पर दिखाई देते है। ब्राह्मण को दान देते हुए उनके चेहरे पर आनंद आता है। जो हिंदू धर्म में ब्राह्मण को विशेषदान किया जाता है। इसका मतलब यह नहीं है कि, वह केवल ब्राह्मणों को ही दान देते है। शिवाजी महाराज दान देते समय जात, धर्म, अमीर गरीब को देखकर दान नहीं करते, तो उनका

दान भेदरहित था। वह प्रजा पालक थे। स्वधर्मभिमान होने के कारण ही उन्होंने अपने बाहुबल से धर्म के रुढी, परंपरा, संस्कृति का रक्षण और निर्वाहण किया था। अपने बल पर हिंदू राजाओं की मर्यादा का रक्षण कर मंदिरों में देवताओं की रक्षा की और हर घर में अपना स्वधर्म सुरक्षित रखा। कुछ कट्टर मुस्लिम शासकों के द्वारा हिंदू धर्म के मंदिरों को गीराना और मूर्तियो तो तोडने का काम किया था। शिवाजी महाराज ने अपने स्वराज्य में मंदिर और मूर्तियों की रक्षा की थी। शिवाजी महाराज केवल ब्राह्मण और गौ के रक्षक नहीं बल्कि, सभी प्रजा का पालन और रक्षण करते है।

इस प्रकार शिवाजी महाराज ने हिंदू धर्म में जो-जो पवित्र एवं श्रध्दापात्र और पूजनिय है उनका रक्षण और संवर्धन किया है। उसमें गाय, देवी देवताएँ, मंदिर, धर्मग्रंथ कुछ धार्मिक रुढी एवं परम्पराओं का पालन रक्षण और संवर्धन किया है। शिवाजी महाराज व्यक्तिगत जीवन में स्वधर्म के प्रति अभिमान रखते थे। उनका सामाजिक जीवन धार्मिक उदारता को अभिव्यक्त करता है।

२.२.१४. हिंदू धर्म रक्षक :

मध्यकालीन समय में भारत के अधिकांश छोटे-बडे राजे यवन सत्ता के अधिन रहते थे। उनका कोई स्वतंत्र अस्तित्व ही नहीं था। औरंगजेब के द्वारा देश में धार्मिक उदारता का तत्व नष्ट हो चुका था। हिंदू धर्म के लोगों पर अन्याय, अत्याचार और धार्मिक श्रध्दास्थानों की अवहेलना की जा रही थी। हिंदू धर्म के मंदिरों को तोडकर मस्जिद बनाये जा रही थी। हिंदू धर्म का परंपरा, श्रध्दा स्थानों का अनादर हो रहा था। मध्यकालीन भारत पर मस्लिम शासक की सत्ता प्रस्थापित हो चुकी थी। केवल औरंगजेब ही नहीं तो, उस समय पूरे भारत वर्ष पर मुसलमानों की सत्ता थी। कुछ मुस्लिम शासक धर्मांध होने के कारण दूसरे धर्म के प्रजा को असुरक्षित लगता था। देश के इस भयंकर वातावरण में शिवाजी महाराज ने हिंदू धर्म के रक्षण का भार अपने कंधो पर लिया। धर्मांध मुस्लिम

शासकों के विरुध्द में अपनी तलवार उठाकर हिंदूओं की मर्यादा का रक्षन किया। उन्होंने दिल्ली का कई बार घमंड चुर कर हिंदू धर्म की रक्षा की- "हद हिंदुवन की विहद तरवारि राखि, कैयो बार दिली के गुमान झारि डारे हैं।"[८७] अर्थात दिल्ली के बादशाह औरंगजेब को न डरते हुए उसका घमंड चुर करके हिंदूओं की मर्यादा परंपराओं का रक्षण किया हैं। शिवाजी महाराज हिंदू धर्म का कर्णधार है। कलयुग रुपी समुद्र ने समस्त पृथ्वी को घेर लिया हैं, अर्थात कलियुग रुपी समुद्र सारे संसार में फैल गया हैं। उस समंदर में हिंदू लोग पुण्य का सौदा खरीदने वाले बनिये हैं। शाहजी के पुत्र शिवाजी ही उनको पार उतरने वाले कर्णधार है।

शिवाजी महाराज का धर्म रक्षण कार्य हिंदू की संस्कृति की रक्षा से जुडा है। हिंदू धर्म की संस्कृति में माथे पर तिलक लगाया जाता है इसका धर्म में पुराण, स्मृति, वेद इन धर्म ग्रंथ को भी महत्व है। शिवाजी महाराज के हिंदू संस्कृति रक्षक रुप का वर्णन करते हुए भूषण लिखते है कि- "वेद राखे विदित पुराण राखे सारयुत, राम नाम राख्यो अति रसना गुघर में।"[८८] अर्थात शिवाजी महाराज ने वेद, माला, मंदिर आदि पवित्र सबकी पूरी रक्षा की है। मंदिरों में देवताओं के मूर्ति की रक्षा की है और घरों में नामस्मरण रखकर हिंदू धर्म की भक्ति परंपरा को सुरक्षित रखा हैं। मध्यकाल में कुछ कट्टर मुस्लिम शासकों द्वारा हिंदू संस्कृति और श्रध्दा स्थानों को अपवित्र कर मंदिर, मूर्तियों को तोडने का काम हुआ है। आदिलशाह, औरंगजेब जैसे शासकों के कुछ राजाओं ने हिंदूओं के धर्म-मार्गो को अपवित्र कर डाला। ऐसे अधिंकाश शत्रुओं को शिवाजी महाराज ने तुर्कों को समुद्र के पार था। स्वराज्य में धर्म के आचारों में पाबंदी नहीं है। स्वराज्य में सभी धर्म को आजादी मिली है।

"तापर हिंन्दुन की सब राह सु नौरंगसाह करी अति मैली।

साहितनै सिव के डर सों तुरकौ गहि बारीधि की गति पैली।

बेद पुरानन की चरचा अरचा द्विज-देवन की फिर फैली।"[८९]

अर्थात औरंगजेब बादशाह ने सभी हिंदू धर्म के धर्म मार्ग को अपवित्र किया हैं। अब शिवाजी महाराज के डर से सभी तुर्क (मुस्लिम) शासक समुद्र पार भाग गये हैं। फिर से शिवाजी महाराज के कारण वेद, पुरानों की कथा और देवी देवताओं की पुजा शुरु हुई हैं। शिवाजी महाराज ने हिंदू धर्म की, रक्षा की परंतु अन्य धर्मों का उन्होंने कभी भी अनादर नहीं किया। इतिहास या साहित्य में भी कोई प्रमाण ऐसा नहीं की शिवाजी महाराज ने किसी मस्जित गीरीजा घर या विहारों को गीरा दिया हो। उन्होंने तो बस हिंदू धर्म पर होनेवाले अन्याय का विरोध कर 'हिंदवी स्वराज्य' स्थापन किया है। उन्होंने हिंदू की रक्षा करते समय अन्य धर्म के लोगों को धार्मिक स्वतंत्रता दी थी। इस संदर्भ में इतिहासकार गो.स. सरदेसाई लिखते हैं- "शिवाजी का मुख्य उध्देश धार्मिक स्वतंत्रता प्राप्त करना था, प्रदेश प्राप्त करना नहीं। संपूर्ण भारत से हिंदू धर्म के रक्षार्थ निःसंदेह अग्रगण्य थे।"[९०] उनके स्वराज्य में धार्मिक स्वतंत्रता थी। उन्होंने हिंदू धर्म के रुढि, परंपरा श्रध्दा स्थान, संस्कृति का रक्षण और संवर्धन किया है। शिवाजी महाराज ने सभी धर्मों को समान माना हैं। वे सार्वजनिक जीवन में धर्मनिरपेक्षता का पालन करते थे।

इस प्रकार शिवाजी महाराज को हिंदू धर्म के प्रति आस्था थी, इसलिए अपने स्वधर्माभिमान के लिए हिंदूओं को प्रेरित किया। हिंदू का संघटन कर धर्म और संस्कृति की रक्षा की हैं। हिंदू धर्म की संस्कृति, वेद, पुराण, शास्त्र, मंदिर, पुजा-आर्चा, आदि करने की धार्मिक स्वतंत्रता के लिए हमेश कार्यरत रहे। हिंदू धर्म की रक्षा करते समय अन्य धर्मों पर आत्याचार, अन्याय नहीं होने दिया। दूसरों धर्मों का वे द्वेष नहीं बल्कि उनका भी आदर करते थे। हिंदी के मध्यकालीन साहित्य में कवि ने शिवाजी महाराज के हिंदू धर्मरक्षक रुप का वर्णन नहीं किया हैं।

२.२.१५. वीर योध्दा :

मनुष्य में वीरता यह सबसे श्रेष्ठ गुण हैं। इसी गुण के कारण मनुष्य श्रेष्ठ कार्य करता हैं। जिस व्यक्ति में वीरता का गुण विद्यमान है, वह व्यक्ति साहसी और पराक्रमी होता है। यही वीरता का गुण शिवाजी महाराज में दिखाई देता हैं। शिवाजी महाराज की युध्द वीरता का वर्णन कवियों ने ऐतिहासिक घटनाओं के आधार पर किया है। वीरता मुख्यत: चार प्रकार की होती है- १. युध्दवीर २. धर्मवीर ३. दयावीर ४. दानवीर शिवाजी महाराज में वीरता के चारों प्रकारों का समन्वय दिखाई देता है। इसलिए अन्य राजाओं की तुलना में शिवाजी महाराज सर्व श्रेष्ठ राजा प्रतीत होते हैं। युध्द वीरता शिवाजी महाराज के रणक्षेत्र से हिम्मत, साहस, पराक्रम से स्पष्ट होती है। शिवाजी महाराज की युध्द वीरता अकथनीय हैं। कविभूषण शिवाजी महाराज की युध्दवीरता को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि, "कत्ता की कराकनी चकता को कटक काटि कीन्हीं सिवराज वीर अकह कहानियाँ।"[९१] उपर्युक्त छंद में 'चकता' का अर्थ 'चंगेज खाँ' जो मुगल वंश के पूर्वज है जो औरंगजेब इन्हीं पूर्वजो के वंश है। अत : इसी चंगेज खाँ के वंश में औरंगजेब है। 'कत्ता' एक प्रकार का तलवार के जैसा शस्त्र हैं। 'कराकनि (चोटो से) कटक' (सेना) है। अर्थात शिवाजी के महाराज अपने कत्ता के प्रहार से औरंगजेब की सेनाओं को काट रहे हैं। उनकी वीरता की कहानियाँ अकथनिय है जिसे शब्दों में वर्णित करना संभव नहीं है। शिवाजी महाराज की वीरता के कारण औरंगजेब परेशान हो चुका है। शिवाजी महाराज ने औरंगजेब को अपनी वीरता से उनके मन में धाक (भय) तैयार किया था। औरंगजेब जैसे शक्तिशाली बादशाह के उपर शिवाजी महाराज ने अपना अधिकार चलाया है। औरंगजेब कोई कमजोर बादशाह नही था। उस शक्तिशाली बादशाह को हराने के लिए एक वीर यौध्दा ही होना चाहिए। शिवाजी महाराज जैसे वीर योध्दा ही यह अद्भूत कार्य कर सकते हैं। उनकी वीरता के बारे में डॉ. रमा नवले कहती हैं- "वह वीर ही क्या जो कमजोर पर विजय पाये। वीर की वीरता तब स्पष्ट होगी

जब किसी पराक्रमी पर वह विजय प्राप्त करेगा। राम का महत्व इसलिए हैं कि उन्होने रावन जैसे अत्यंत पराक्रमी योध्दा को पराजित किया। शिवाजी वीर इसी अर्थ में है कि, उन्होंने औरंगजेब जैसे पराक्रमी राजा की रात की नींद और दिन का चैन हराम कर दिया था। परिणाम स्वरुप बादशाहों का बादशाह औरंगजेब भी शिवाजी से डरता था।"[९२] शक्तिशाली शत्रु औरंगजेब बादशाह भी शिवाजी महाराज की वीरता से भयभित हो चुका था।

शिवाजी महाराज ने अपने जीवन काल में अनेक शक्तिशाली राजाओं के विरुध्द अपनी वीरता दिखाई है। उन्होंने मुगल बादशाह की निंद उडा दी तो आदिलशाह हताश हुआ था। कुतुबशाह तथा अन्य शासक उनसे संधि कर लेने में भलाई झमझते है। एक वीर यौध्दा का लक्षण है कि, वह युध्द में कभी दुश्मनों से डरकर भागे बल्कि दुश्मनों का निर्भयता से सामना करें। शिवाजी के पैर युध्द भूमि में ठीक उसी प्रकार चलायमान है, जिस प्रकार (रावन की सभा में) अंगत का पैर था। शिवाजी महाराज विपरित परिस्थितियों में भी युध्द करते समय पिछें नहीं हटते बल्कि वे आगे बढने की सोंच रखते है। जब शत्रु के तोप, बाण की गोलियाँ चलने पर मोरचे की आड से बचना कठिन हो रहा था, उस समय में महाराज ने अपने साथियों को जोर से हल्ला करने के लिए आज्ञा देते हैं। वे स्वयं रणभूमि में वीर सैनिकों की हिंमत बढाते है- "छुटत कमात और तीर गोली बानन के, मुसकिल होति मुरचान हू की ओट में। ताही समै सिवराज हाँक मारि हल्ला कियों।"[९३] अर्थात शत्रुओं के द्वारा युध्द भूमि में बाण से गोली और तोफे चलाये जा रहे थे। ऐसे समय में स्वयं को बचाना मुश्किल हो रहा था। इस विपरित परिस्थितियों में भी वीरता दिखाकर अपने सेनाओं को शिवाजी महाराज आगे बढकर जोर से हल्ला करने की आज्ञा देते है। उनकी युध्दवीरता को देखकर अरब तथा विदेशी राज्य थर-थर काँपने लगे है। इतना ही नही काबूल और कंधार के वीर भी डरते हैं। इनकी वीरता के कारण ही सभी शत्रु उनसे भयभित होते हैं। युध्द में उनकी कोई अन्य बराबरी नहीं करता है।

एक वीर योध्दा यहीं होता है, जो शत्रु शरण में आए तो उसे दया का दान दिखए। औरंगजेब अगर शिवाजी महाराज से युध्द में सामना करने के लिए आता तो रण छोडकर भाग जाता। औरंगजेब के द्वारा भेजे गये वजीर, सरदारों को पकडकर वे प्रजा की भाँति उन्हें छोड देता हैं। भूषण कवि ने शिवाजी महाराज की तुलना श्रेष्ठ वीरों के साथ जैसे राम, कृष्ण, विष्णु, इंद्र, भगवान शंकर भीम, अर्जुन के साथ है। पौराणिक वीर पुरुषों के साथ शिवाजी महाराज की तुलना की है। शिवाजी महाराज संसार भर के हिंदूओं के उध्दार के लिए और तुर्कों के नाश के लिए इनका खुन खौल उठता था। बादशाह से युध्द करने की बात चलने पर वीर केसरी शिवाजी के नेत्रों में उत्साह उमड आता है। एक वीर यौध्दा युध्द करने के लिए हमेशा उत्साही रहता हैं। भूषण शिवाजी महाराज को युध्द भूमि में उत्साही वीर कहते हुए लिखते हैं कि, "तुरकान मारिबे को बीर बलकत है। साहिन सों लरिबे कौ चरचा चलत आनि सरजा दृगन के उछाह छलकत है।"[९४] अर्थात तुर्क शत्रुओं को नष्ट करने के लिए वीर शिवाजी का खुन खौल उठता है। बादशाह के साथ युध्द की बात चलने पर शिवाजी महाराज के नेत्रों में उत्साह झलकता है। एक वीर युध्द करने के लिए कभी नही डरता और न ही निराश होता है। वीर व्यक्ति युध्द के लिए हमेशा उत्साही रहते है। शिवाजी महाराज भी युध्द करने के लिए हमेशा उत्साही रहते है। शिवाजी महाराज की वीरता व्यक्तिगत रुप से प्रशंसनीय है। उनकी वीरता के पीछे सामाजिक और धार्मिक आदर्श था। उन्होंने भारतीय संस्कृति की रक्षा करके हिंदवी स्वराज्य की स्थापना की थी। उनका हिंदूओं पर होनेवाले अन्याय, अत्याचार और संस्कृति की रक्षा करना भी उनका उद्देश रहा था।

इस प्रकार शिवाजी महाराज एक वीर यौध्दा है। वीरता की जो विशेषताएँ है वह सब इन निहित हैं। वे साहसी वीर है, जो युध्द में विपरित परिस्थितियों में प्राणों की परवाह न करते हुए शत्रुओं पर जोर से हल्ला करते है। वे हमेशा युध्द करने में उत्साही रहते हैं। धर्म की रक्षा करना वीरता का लक्षण है, जो शिवाजी

महाराज में भी दिखाई देता है। हमेशा युध्द में पूरी तैयारी के साथ उतरता है। इनकी वीरता की तुलना पौराणिक वीर योध्दाओं के साथ की हैं। अतः वे एक श्रेष्ठ योध्दा है।

२.२.१६. पराक्रमी राजा :

शिवाजी महाराज का इतिहास भी पढेंगें तो हमे उनके अद्‌भूत पराक्रम के उदाहरण मिल जाऐंगें। अन्य राजाओं के इतिहास को पढने में उतनी रोचकता नहीं जितनी शिवाजी महाराज के ऐतिहासिक पराक्रमी घटनाओं को पढने में हैं। उन्होंने असंभव कार्य को अपनी शक्ति, युक्ति से संभव कर दिखलाया हैं। शिवाजी महाराज के पराक्रम को विभिन्न युध्दों की घटनाओं से जोडकर वर्णन किया गया है। शिवाजी महाराज ने असामान्य साहस, वीरता और शौर्य दिखाकर शत्रुओं को पराजीत किया हैं। ऐसी विभिन्न घटनाओं में अफजल वध, शाईस्ताखाँ पर हमला, सुरत पर आक्रमण, आगरा कैद से रिहाई, औरंगजेब के द्वारा दक्षिण सरदारों को बदलना, साल्हेर युध्द, बीजापुर की सत्ता की रक्षा करना ऐसी प्रमुख घटनाएँ है।

बीजापुर और शिवाजी महाराज में युध्द का प्रारंभ हो गया था। बीजापुर के सुलतान ने शिवाजी का अंत करने के लिए सन १६५९ में अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित बारह हजार सेना की फौज बारुद, तोफे और रसद के साथ साहित अफजल खाँ को शिवाजी महाराज पर चढाई करने के लिए भेजी। शिवाजी महाराज ने धैर्य और साहस के साथ अफजल का वध कर अपने पराक्रम का परिचय दिया। इस घटना का वर्णन करते हुए भूषण लिखते है कि, "बिछु के धाम गिरे अफजल्लहि ऊपर ही सिवराज निहारयो। दाबि यों बैठो नरिन्द अरिन्दहि मानो मयन्द गयन्द पछारयो।"[९५] अर्थात शिवाजी महाराज के द्वारा बिच्छु के वार से अफजल खाँ जमीन पर गीर गया मानों सिंह रुपी शिवाजी महाराज ने गजेंद्र रुपी बडे हाथी को पछाड दिया हो। कवि भूषण ने शिवाजी महाराज को

सिंह और अफजल खाँ को शक्तिशाली गजेंद्र हाथी की उपमा दी है। इस छंद में 'मयन्द' का अर्थ सिंह, गयन्द' का गजेंद्र (हाथि) है। अफजल खाँ जैसे बडे पराक्रमी, वीर, शक्तिसंपन्न सरदार को मिट्टी में मिला दिया। अंत इस पराक्रम से चारों ओर शिवाजी का गुणोंगान होने लगा।

पुना के उस महल के पास लगभग दस हजार सेना लेकर राजा जसवंतसिंह डेरा डाले था। एक रात शिवाजी महाराज ने शाईस्ता खाँ को पराक्रम दिखाया। उस रात दो हजार सेना जसवंतसिंह के डेरे की चारों ओर लगाकर स्वयं दो सौ सैनिकों को साथ में लेकर शाईस्ताखाँ के एक लाख सैनिकों के सरदार को अपने पराक्रम का परिचय दिया। उन्होंने महल में महाभारत (युध्द) रचनाकर शाईस्ता को पुना से भगाया था। भूषण लिखते है,

"तो सो को सिवाजी जेहि दो सौ आदमी सौं,

जीत्यों जंग सरदार सौ हजार असवार को।"[९६]

अर्थात एक लाख की सेना साथ में लेकर शाईस्ता पुना के महल में था। उनके साथ रहने वाले मनसबादर और चोकिदारों को मारकर पुना के महल में महाभारत की तरह युध्द किया। दो सौ सैनिकों को साथ लेकर शिवाजी महाराज ने सौ हजार (एक लाख) की सेनाओं के सरदार को युध्द में हराया था। इस युध्द में अपने हाथों की तीन उँगलीयों के साथ-साथ अपना बेटा भी शाईस्ता खाँ ने गवाँ दिया था।

शिवाजी महाराज ने राज्य की आर्थिक स्थिति कमजोर होने पर मुगलों के सुरत शहर पर आक्रमण किया। मुगल बादशाह के शहरों पर आक्रमण करना और धन संपत्तियों को लेकर वापस स्वराज्य जाना यह कोई साधारण कार्य नहीं था। शिवाजी महाराज ने इस सुरत शहर पर दो बार आक्रमण कर अत्याधिक धन प्राप्त किया था। सुरत यह शहर मुगलों का प्रमुख व्यापार का केंद्र था। वहाँ लोगों के पास बहुत सारा धन था। दिल्ली की सेना को दबाकर शिवाजी महाराज

ने निर्भय होकर डंका बजाकर सुरत शहर पर आक्रमण किया। गुजरात के सुरत शहर के रुप (सौंदर्य) घमंड को नष्ट कर दिया। रस वैभव को चुसकर उसे खोकला कर दिया। कवि भूषण मुगलों के व्यापारी केंद्र सुरत शहर पर आक्रमण के बाद का वर्णन करते हुए लिखते है कि, "रुप गुमान हरयो गुजरात को सुरत को रस चूँसि के नाख्यों।"[९७] अर्थात गुजरात के सुरत शहर के वैभव संपन्नता के घंमड को शिवाजी महाराज ने आक्रमण कर अत्याधिक धन प्राप्त किया था। शाईस्ता खाँ का पराजय और सुरत की लुट के बाद औरंगजेब को क्रोध आया। उसने मिर्जा राजा जयसिंह को बडी फौजे के साथ शिवाजी महाराज पर आक्रमण करने भेज दिया। राजा जयसिंह के स्वराज्य में आने पर शिवाजी महाराज ने संधि कर ली। शिवाजी महाराज को आगरा में बुलाकर औरंगजेब ने उनका अपमान किया था। शिवाजी महाराज ने उसका विरोध करने पर उन्हें कैद कर लिया। औरंगजेब के कैद से छूटना मुश्किल नहीं नामुमकिन काम था। शिवाजी महाराज ने बिमारी का बहाना बनाकर मिठाई के पीठारे लोगों को भिजवाए और एक दिन उसी पीठारे में बैठकर कैद से निकल गये। शिवाजी महाराज ने पाँच पांडवों से भी अधिक पराक्रम दिखाया। क्योंकि महाभारत में दुर्योधन के बनाए हुए सुने लाख के घर से पाँच पांडव रात में निकलकर अपना बचाव कर सके। परंतु शिवाजी महाराज ने उससे भी बडा पराक्रम कर आगरे के कैद से दिन दहाडे लाखों पहरेदारों के बीच में से निकल गए। इस ऐतिहासिक पराक्रमी घटना का अंकन करते हुए भूषण लिखते हैं- "पाँच पांडवनहू ते पुरुषारथ सु बढ़ि कै। सूने लाखभौन तें कढ़े वे पाँच राति मैं जु द्योस लाख चौकी ते अकेलो आयो कढ़ि कै।"[९८]

अर्थात शिवाजी महाराज ने पाँच पांडवों से भी बढकर अपना पुरुषार्थ (पराक्रम) दिखाया था। दुर्योधन के द्वारा बनाये गयें लाख भौन से पाँच पांडव रात में निकल गये। इससे भी बडा पराक्रम दिखाते हुए अकेले शिवाजी महाराज ने लाखों की सेनाओं का कडा पहारा भेदकर सभी स्थल मार्ग और चौकियों पर

सिपाहीयों की फौज होते हुए भी दिन दहाडे कैद से निकल गये। वे किसी को नजर तक नहीं आये। औरंगजेब के कैद से निकलने का पराक्रम शिवाजी महाराज ने किया। शिवाजी महाराज के पराक्रम से औरंगजेब दक्षिण के सूबेदारों को बदलता रहता हैं। शाइस्ताखाँ, दाउदखाँ अभिमानी दिलेर खाँ भी हार गया। सालहेरी के युध्द में महावत खाँ के असफलता से बहादुरखाँ को सूबेदार बनाया। यह देखकर जान पडता है कि, दक्षिण के सुबेदार को पान की तरह बदलता है। जैसे गर्मी में सुखते हुए पान उपर नीचे कर देते है।

सलहेरि युध्द में शिवाजी महाराज ने बडा पराक्रम दिखाया। इस युध्द में दिलेर खाँ बलहिन हो गया और बहादूर खाँ व्यर्थ सिध्द हुआ। शिवाजी महाराज ने घनघोर लडाई की शत्रुओं को पकड पकड कर काट डाला। वहाँ उनके मुंड लुढकने लगे। इतिहास में मराठों और मुगलों के बीच पहला आमने-सामने घनघोर युध्द हुआ था। इस सलहेरि के युध्द को जीतकर शिवाजी महाराजने अपना अद्वितीय पराक्रम दिखाया था। इस युध्द में दोनों पक्षों की भयंकर हानी हो गयी थी। अंतः मराठों ने यह युध्द जीत लिया था। कवि भूषण इस का चित्रण प्रकट करते हुए लिखते हैं, "जीत्यो सिवराज सलहेरि को समर। सुनि असुरन के सुसीने घरकत है।"[९९] अर्थात शिवाजी महाराज ने सलहरी युध्द जीत लिया था। जीत की खबर सुनकर शत्रु सीने (कलेजे) धडकने लगते हैं। वे शिवाजी महाराज से थरथर काँप रहे थे। इस युध्द में स्वयं शिवाजी महाराज युध्द भूमि में सेना के साथ थे। उसके बाद मुगल सरदार दिलेर खाँ ने चालीस हजार सेना को लेकर तुर्की पठान बीजापुर पर आक्रमण किया। अब बीजापुर के आदिलशाही सत्ता का अंत निश्चित था। बीजापुर के नए प्रधानमंत्री ने शिवाजी महाराज से रक्षण करने के लिए सहायता माँगी। शिवाजी महाराज ने आदिलशाही के बीजापुर की रक्षा की। मुगलों के विरुध्द बीजापुर के आदिलशाही का रक्षण अपने बाहुबल से किया था। शिवाजी महाराज ने इतने पराक्रम किए है कि, लोंग अब इंद्र को भी भुल

गए है (जो उनके पराक्रम की गाथाएँ भूल जाते है) इतने पराक्रम राजा शिवाजी महाराज के हैं।

शिवाजी महाराज के पराक्रम पर डॉ. वसंत मोरे लिखते है- "शिवाजी औरंगजेब युध्दों में शिवाजी ने हमेशा औरंगजेब को पराजित किया। औरंगजेब का खजाना खाली हो गया। जजीया कर लगाकर शासन चलाना पडा। श्रेष्ठ वीर नष्ठ हो गए। शिवाजी पर खुद आक्रमण करने की हिम्मत औरंगजेब में न रहीं। शिवाजी के जीवित होते हुए औरंगजेब ने दक्षिण पर आक्रमण नहीं किया यह ऐतिहासिक सत्य हैं।"[१००] शिवाजी महाराज ने मुगलों के अनेक सरदारों को मार दिया था। औरंगजेब का शिवाजी महाराज से युध्द न करने की ठान ली थी। शिवाजी महाराज के बाहू-बल के (पराक्रम) के कारण औरंगजेब रेवा (नर्मदा) नदी के तट के उस ओर ही रुक जाता था। शिवाजी महाराज के राज्य में आने की हिम्मत नहीं करता। इसी ओर संकेत करते हुए सर यदुनाथ सरकार ने भी कहाँ है कि, "शिवाजी के समय में नर्मदा उत्तर और दक्षिण की सीमा रेखा थी।"[१०१] इस प्रकार स्वराज्य की सीमा नर्मदा तक थी। उत्तर से आनेवाले शत्रु नर्मदा के आगे नहीं आते थे। शिवाजी महाराज के पराक्रम से सभी शत्रु परिचीत थे। अत: वे सभी शत्रु शिवाजी महाराज से युध्द न करने का प्रयत्न करते हैं।

इस प्रकार शिवाजी महाराज एक पराक्रमी राजा थे। मध्यकालीन भारत पर मुगल सत्ता का वर्चस्व था। उनका विरोध शिवाजी महाराज के द्वारा हुआ है। बीजापुर, गोलकुंडा, दिल्ली के शक्तिशाली राजाओं को अपने पराक्रम से पराजित किया। अफजल खाँ, शाईस्ता खाँ, आगरा से पलायन, सालहेरी युध्द, में अपना पराक्रम दिखाया हैं। अंत अदिलशाही को मुगलों से बचाया (रक्षण) करने का कार्य भी किया हैं। इनके पराक्रमों से शत्रु भयभीत होते थे।

२.२.१७. पराक्रमी सेना नायक :

पराक्रमी राजा अपनी सेना में नयी शक्ति का निर्माण करता है। शिवाजी महाराज स्वयं पराक्रमी थे। मावल प्रदेश के मराठा सेनाओं में शिवाजी महाराज के प्रति समर्पन की भावना थी। जिस प्रकार एक राजा में स्वदेश, स्वधर्म और मातृभूमि के प्रति पूर्ण समर्थण का भाव है, उसी प्रकार उनके सैनिकों में भी इस भावना का होना जरुरी है। बिना सेना के अकेला राज कुछ नहीं कर सकता। युध्द में सेना की जीत राजा की जीत होती है और सेना की हार राजा की हार मान ली जाती है। इसलिए राजा कितना भी पराक्रमी हो पर, सेना अगर पराक्रमी नहीं है, तो अकेला राजा क्या करेगा? शिवाजी महाराज पराक्रमी सेना के नायक थे। 'मराहट्टा' अर्थात मर जाँएगें पर हटेंगें नहीं। मावले लोग जो शिवाजी महाराज की सेना में थे। वह मातृभूमि, स्वदेश, स्वधर्म के साथ 'स्वराज' के लिए जान ले भी सकते थे और विपरीत समय पर जान दे भी सकते थे। शिवाजी महाराज की सेना मुगलों की सेना की तरह किराये की सेना नहीं थी। अनेक सरदारों ने अपने पराक्रम से शिवाजी महाराज और स्वराज्य के लिए बलिदान स्वयं को समर्पन किया हैं। शिवाजी महाराज की चतुरंगी सेना थी। उनके पास हाथी दल, घोडा दल, पैदल और नौसेना इन चार प्रकार की सेना थी। समय परिस्थिति के अनुरुप इन सेनाओं को युध्द के लिए आदेशित किया जाता था। उनकी चतुरंगी सेना युध्द जीत कर हमेशा आगे बढती है। कवि भूषण चतुरंगी सेना का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि, "साजि चतुरंग वीर रंग में तुरंग चढि, सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है।"[१०२]

अर्थात शिवाजी महाराज की चतुरंगी सेना (हाथी, घोडे, रथ और पैदल) पूरी तैयारी (युध्द के लिए सजा कर) कर युध्द में बहादूरी के साथ आगे बढती है। शिवाजी राजा युध्द में जीत प्राप्त कर आगे बढ रहे हैं। शत्रुओं के साथ

चतुरंगी सेना कभी पराजित नहीं होती थी। शिवाजी महाराज की सेना संख्या में कम लेकिन उन में अत्याधिक समर्पण का भाव था।

शिवाजी महाराज की सेना केवल दिन में ही नहीं बल्कि, रात के घने अंधेरे में पराक्रम करती है। रात के अंधेरे में जिन किलों की उँचाई देखने में सर की पगडी गिर जाती है, इतने उँचे किलों पर मराठा सेना चढ जाते है। जो दिन में ही सीधी राह से साहसी व्यक्ति ही जा सकता है। शिवाजी महाराज की आज्ञा से किले पर चढ जाते। शिवाजी महाराज की आज्ञा पाकर रात के अंधेरे में सेना के सालहेरी और परना ले किले के पराक्रम का वर्णन करते हुए भूषण लिखते हैं- "सिवाजी हुकुम तेरो पाय पैदलन, सलहेरी परनालो ते वै जीते जनु खेत हैं। सावन भादौ की भारी कुहु की अँध्यारी चढि, दुग्ग पर जात मावली दल सचेत हैं।"[१०३] अर्थात शिवाजी महाराज (सेना नायक) के आदेश से मराठा सेना पैदल ही सावन और भादों की आमावस कि घोर अंधेरी रात में उन सलहेरि और परनाले के किलों पर चढ जाती है। अंधेरी रात में भी शिवाजी महाराज की सेना ने परनाले किले को जीतने का पराक्रम किया। शिवाजी महाराज के हाठी मराठों की सेना ने अपने प्रदेश में किसी अन्य शत्रु का किल्ला नहीं रहने दिया। सब किलों पर अपना अधिकार जमा लिया।

शिवाजी महाराज की मराठा सेनाओं के साथ औरंगेजब को युध्द नहीं करना चाहिए था। क्योंकि नायक और सेना दोनों पराक्रमी थे। शिवाजी महाराज और उनकी सेना से युध्द करेंगे तो औरंगजेब की हार निश्चित हैं। कवि भूषण औरंगजेब से सलाह देते हुए कहते हैं कि, "दक्षिण के नाथ के सिपाहिन सों बैर करि, अवरंग साहिजू कहाइए न बावरे।"[१०४] अर्थात हे औरंगजेब तुम दक्षिण के नाथ (शिवाजी) के साथ शत्रुता मत करो। वीर शिवाजी के सिपाही के साथ शत्रुता कर तुम पागल न कहलाओं। शिवाजी महाराज के सैन्य, सरदारों से कोई भी जीत नहीं सकता। उनके वीर सेना और पराक्रमी सरदारों से कोई भी अमीर,

उमराव अभी तक बच कर नहीं गया है। औरंगजेब के जो भी अमीर उमराव दक्षिण में सूबेदारी अथवा युध्द करने के लिए गये, वे सभी हारे या युध्द में मारे गए थे। केवल शिवाजी महाराज की शत्रु पर धाक नहीं बल्कि, उनके मराठा सेना की भी धाक सर्वत्र है। आपकी सेना के चलने की बात सुनकर बडे-बडे बादशाहों की चतुरंगी सेना केभी पैर उखड जाते है।

शिवाजी महाराज पराक्रमी सेना के पराक्रमी नायक हैं। राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने हेतु फ्रांसीसी, अंग्रेज, हबशी, फिरंगी आदि शत्रु भारत में अपना व्यापार और सत्ता स्थापन कर रहे थे। उन्होंने समुद्र के प्रदेश पर अपना अधिकार जमाना शुरु किया था। शिवाजी महाराज के नेतृत्व में मराठा सेना ने उन सभी शत्रुओं को पराजित किया था। कवि भूषण लिखते हैं कि, "भूषन भनत फरॉसीस अँगरेज मारि हबसी फिरंगी मारे उलटि जहाज हैं।"[१०५] अर्थात भूषण कहते हैं, कि मराठा सेनाओं ने अंग्रेज, फ्रान्स, हबशी, फिरंगी आदि शत्रुओं के जहाजों की पलट दिया था। शिवाजी महाराज ने अपना नौदल स्थानिक लोगों द्वारा तैयार करके इन सेनाओं ने प्रसिध्द सागरवीरों के जहाजों का डूबोकर उन्हें पराजित किया। समुद्र शासकों को पराजित करते समय उन्होंने पैदल और घोडदल के बजाय नौसेना के दल का उपयोग किया था।

शिवाजी महाराज के नौसेना के पराक्रम के बारे में डॉ. भगवानदास तिवारी लिखते है- "शिवाजी ने पैदल और घुड सवारों के द्वारा ही शत्रुओं का सामना नहीं किया बल्कि अपने जहाजी बेडे से फान्सीसियों अंग्रेज, पुर्तुगीज, डच, हबसी तथा और फिरंगियों को मार-मारकर उनके युध्दपोतों को युध्द क्षेत्र से पराङ्मुख कर दिया।"[१०६] शिवाजी महाराज ने समुद्र पर सत्ता प्राप्त करने के लिए स्वतंत्र नौसेना का निर्माण किया था। उन्होंने युध्द के लिए अरमार और जहाजों का उपयोग किया था। समुद्र के तटवर्ती विदेशी शत्रुओं नौसेना दल ने पराजित किया है।

इस प्रकार हम कह सकते है कि, शिवाजी महाराज की सेना का पराक्रम अदभूत था। तानाजी मालुसरे, बाजीप्रभु देशपांडे, जीवा महाल, सुर्याजी, सयाजी, सिवा काशीद, प्रतापराव आदि सरदारों ने अपनी जान की बाजी लगाकर स्वराज के लिए योगदान दिया। इनके पराक्रम से ही स्वराज्य का निर्माण हुआ। उनके पास चार प्रकार की सेनाओं का दल था। सेनाओं ने सालहेरी युध्द में असामान्य पराक्रम दिखाया था। सेनाओं ने रात के अंधेरे में अपना पराक्रम दिखाकर मुगलों के किल्ले पर विजय प्राप्त की मध्यकालीन हिंदी के कवि भूषण ने सेना के पराक्रम का वर्णन स्वच्छंद रुप से किया है। शिवाजी महाराज के सेना के पराक्रम का एक सुंदर और प्रभावी चित्र कवि भूषण ने पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है।

२.२.१८. शत्रु पक्ष पर धाक :

शिवाजी महाराज की वीरता और पराक्रम के कारण शत्रु पक्ष के मन में आतंक (डर) का माहोल हमेशा रहता था। बीजापुर का आदिलशाह, दिल्ली की बादशाही, कुतुबशाही, सब राजा और उनके सरदार शिवाजी महाराज से और उनकी सेना से डरते थे। विदेशी, पोर्तुगीज, अंग्रेज, हब्शी, फिरंगी भी डर के मारे शिवाजी महाराज से शत्रुता नहीं करते। आदिलशाह की बेगमें बार-बार कहती है कि, जिस शिवाजी ने चंद्रराव मोरे को नष्ट किया। हमारे नगरों पर कब्जा कर लिया। अफलजखाँ का वध कर दिया ऐसी शिवाजी रुपी सिंह को जगाकर आप कैसे सुखपूर्वक सो रहे है। शिवाजी महाराज ने बीजापूर को पराजीत किया तब आदिलशाह ने शिवाजी महाराज से डरकर संधि कर लिया था। मुगल बादशाह औरंगजेब भी शिवाजी महाराजा से डरता है। शिवाजी महाराज आगरा आते समय रास्ते में हर घटनाओं की जानकारी औरंगजेब आपने सरदारों से लेता है। औरंगजेब डर के मारे शिवाजी महाराज को दरबार में निहत्थे बुलाता है और आपने आस-पास हजारों वीर सैनिक रखता है। स्वामीभक्त जोधपूर राजा

जसवंतसिंह को अपने निकट बुलाकर रखता है। इस आगरा दरबारके घटन को वर्णित करते हुए कवि भूषण लिखते हैं कि, "राजा जसवंत को बुलाय के निकट राखे। तेऊ लखै नीरे जिन्है लाज स्वामि-काज की।। हटकि हत्थार फड बॉधि उमरावन को, कीन्हीं तब नौरंग ने भेंट सिवराज की।"[१०७] अर्थात शिवाजी महाराज से भेट होते समय औरंगजेब अपने ही दरबार में अत्याधिक डरा हुआ था। उन्होंने स्वामीनिष्ठ राजा जसवंत सिंह को बुलाकर अपने पास रखा। अपने आसपास शस्त्रधारी सरदारों को खडा कर शिवाजी महाराज को निहत्थे बीना हाथियार से बुलाया गया। औरंगजेब ने डरकर से ही देख लिया था।

शिवाजी महाराज को आगरा दरबार से कैद कर लिया था। उसके बाद शिवाजी महाराज कैद से पलायन कर अपने स्वराज्य में आ गये थे। इस तरह कैद से पलायन करने से औरंगजेब बहुत डरा हुआ दिखाई देता है। औरंगजेब इस घटना पर आश्चर्यचकित होकर बार-बार डर के मारे चौंककर उठता है। पूरे दिल्ली के निवासी भयभीत है। उनका मन सदा शिवाजी के समाचारों की ओर लगा रहता था। दिल्ली के बादशाह के साथ-साथ प्रजा भी भयभित हो रही है कि, कही शिवाजी महाराज कही आक्रमण न करें। बादशाह औरंगजेब और दिल्ली के प्रजा के भय का वर्णन कवि भूषण करते हैं, "चकित चकत्ता चोंकि चोंकि उठै बार बार, दिल्ली दहसति चितै चाह करषति है।"[१०८] अर्थात औरंगजेब रात के सपने में चौककर बार-बार शिवाजी महाराज के डर से उठता हैं। दिल्ली के सब निवासी भयभित हो चुके थे। जब जंगल में औरंगजेब शिकार करेन को निकला था। शिकार करने समय एक ओर से लोगों ने आवाज दी। सँभलिए सरजा (सिंह) आता है। औरंगजेब शिवाजी महाराज के आतंक से 'सरजा' (सिंह) को शिवाजी समझकर मुर्च्छित हो गया। तब शिकारियों ने शीघ्रता से निकट जाकर 'शिवाजी' नही अपितू सिंह है, यह कहकर मुर्च्छित पडे हूए औरंगजेब को उठाया है। इस प्रकार डर को भ्रम औरंगजेब के मन में शिवाजी महाराज के प्रति बैठ गया था। भूषण इस प्रसंग को लिखते हैं कि, "आवत है सरजा सम्हारौ,"

यक ओर ते लोगन बोल जनाए। भूषण भो भ्रम औरंग के सिव भौंसिला भूप की धाक बुकाए।"[१०९] अर्थात शिकार पर जंगल में जाने के बाद एक व्यक्ति ने आवाज दी सरजा आया संभालो। औरंगजेब को शिवाजी आने का भ्रम होता है और वह मुर्च्छित होता है। शिवाजी महाराज से कोई उमराव, सरदार लडना नहीं चाहता। सभी सरदार कायरता से औरंगजेब को बहाना बनाकर सरदार दक्षिण में शिवाजी महाराज के साथ लडने से डरते थे। सरदार के उपर शिवाजी महाराज के भय का वर्णन भूषण इस प्रकार करते हैं, "चीन सिलहट तरि जलधि जहाज पै।। सब उमराव की हठ कूरताई देखो, कहैं नवरंगजेब साहि सिरताज पै। भीख माँगि खैहैं बिन मनसब रैहै पै न, जैहैं हजरत महाबली सिवराज पै।।"[११०] अर्थात शिवाजी महाराज के साथ युध्द से डरकर औरंगजेब से उनके सरदार कहते हैं कि, समुंदर पार चीन की सिलहट पर जहाज में चढकर विजय प्राप्त करेंगें। हम भिक्षा माँगकर खाएँगे, बिना पद के रहेगें, पर शक्तिशाली शिवाजी पर चढाई नहीं करेंगे। इतनी धाक शिवाजी महाराज की औरंगजेब के सरदारों पर थी की वह भिख माँगकर खाने के लिए तैयार थे। किसी भी स्थिति में शिवाजी महाराज से युध्द नहीं करना चाहते थे। औरंगजेब वजीर लोग विनय करते है, कि हम पुरब, पश्चिम, उत्तर के सब बादशाहों के किले छिन लेंगें। पुर्तूगाल विजय करने हेतु समुद्र को भी पार करेंगे, परंतु क्या करे आप हमें शिवाजी पर चढाई करने भेजते हैं। हुजूर मरने से नहीं डरते हम तो आपके सेवक है, अतः कोई विद्रोह भी नहीं कर सकते। वे केवल शिवाजी महाराज से डरकर औरंगजेब की सेवा करने का बहाना बनाते हैं।

इससे स्पष्ट है कि औरंगजेब उसके सैनिक, सरदार, वजीर छोटे राजा शिवाजी महाराज का सामना करने से डरते थे। शिवाजी महाराज की धाक से बडे-बडे वीर दुर्गपति का धैर्य भी छुट जाता है। डर के कारण बीजापूर, गोलकुंडा, आगरा, दिल्ली के किले के दरवाजे किसी-किसी दिन ही खुलते हैं। वह हर रोज दरवाजे नहीं खोलते क्योंकि कहीं से शिवाजी अंदर न आ जाऐ।

बादशाह के किल्लेदारों के उपर भी धाक थी। शिवाजी महाराज ने बहुत सारे मुगलों और आदिलशाह के किले रात के अंधेरे में जीत लिए थे। उनके भय से रात में किले नहीं खुले पर दिन में कभी-कभी दरवाजा खोलते है।

बीजापुर, गोलकुडा, आगरा और दिल्ली के किले के दरवाजे कभी-कभी दिन में ही खोलते है। शिवाजी महाराज का आतंक (धाक) देश के चारों दिशाओं में फैल चुका था। सब शत्रुओं पर शिवाजी महाराज की धाक मानों इस प्रकार से हुई की जैसे नाग के समुह पर गरुड का और हाथियों के झुंड पर सिंह का आतंक होता है। उसी प्रकार शिवाजी महाराज का आतंक (धाक) भी सभी शत्रुओं के मन पर छाया हुआ था। भूषण इस आतंक को स्पष्ट करते हुए कहते है, "गरुड को दावा सदा नाग के समूह पर, दावा नाग जूह पर सिंह सिरताज को। पूरब पछाँह देस दच्छिन ते उत्तर लों, जहँ पातसाही तहाँ दावा सिवराज को।"[१११] अर्थात नाग का समुह क्यों न हो उस पर गरुड का आतंक (भय) हमेशा रहता हैं। इस छंद में 'नाग जूह' का अर्थ 'हाथी का समुह' है। जैसे हाथी के समुह पर सिंह का आतंक होता है। विष से भरे नाग समुह हो या शक्तिशाली हाथियों का झुंड हो पर नागों पर गरुड और हाथियों पर सिंह का डर हमेशा रहता है। उसी प्रकार पुरब, पश्चिम, दक्षिण, उत्तर, चारों दिशाओं में शिवाजी महाराज के शक्ति का भय और अपना अधिकार कर चुके हैं।

फिरंगियों और हब्शीयों की तो चिंता का ठिकाना ही नहीं रहा। उन्हें डर के कारण रात को निंद तक नहीं आती हैं। बीजापूर की विपत्ति का हाल सुनकर सब भाग गए है। दिल्ली के दरबार में भी हलचल मची है। इतना ही नहीं बलखबुखारा, कश्मीर, रुस, सर्वत्र अद्भूत आतंक की धुम मची हुई है। राजाओं के धाक के साथ-साथ कवि भूषण ने शत्रु स्त्री के डर का वर्णन भी किया है। जहाँ वीर, राजा, सरदार सेना, विदेशी, सब भय (धाक) का वर्णन किया। उसी प्रकार अरिनारी (शत्रु स्त्री) पर भी धाक शिवाजी महाराज ने बनाई थी। शत्रु नारी

भिलनियों जो आदिवासी नारी है उसे कहती है- "अरितिया भिल्लिनि सों कहैं, घन बन जाय इकन्त। सिव सरजा सों बैर नहिं, सुखी तिहारे कन्त।"[११२] अर्थात शत्रु स्त्रियाँ एकांत और गहन बन में जाकर भीलनियों से कहती है कि तुम्हारे स्वामी ही आनंद में है, क्योंकि उनकी शत्रुता सरजा राजा शिवाजी से नही हैं। हमारे पतियों का शिवाजी से बैर (शत्रुता) है, इसलिए हम सुखी नहीं हैं। यहाँ कवि भूषण ने शत्रु स्त्री का डरना उनके पति की शत्रुता का कारण बताया है। जिस स्त्री का पति सुरक्षित नही हैं, वह स्त्री कैसे सुरक्षित रहेंगी। पति ही पत्नी का रक्षक होता है। यह धारणा मध्यकालीन समाज में व्याप्त थी। इसलिए भयभित स्त्री को पति की मृत्यु के भय के कारण वह अत्याधिक भयभित हो चुकी थी। डरी हुई शत्रु स्त्री अपने पति से कह रही हैं कि, यह बादलों की गर्जना नगाडों का बजना, मेघों की घटा जैसे हाथियों के झुंड और कवचों से सुसज्जित हो कर शिवाजी महाराज की सेना आने की कल्पना कर रही हैं। वह स्त्री अपने पति को डरकर भाग जाने की बात कहती हैं। कवि भूषण ने शत्रु स्त्री के धाक, आतंक के वर्णन में अतिशयोक्तियों का प्रयोग किया हैं। यह वर्णन पुर्णता काल्पनिक है। शत्रु पक्ष या स्त्री पर बिल्कुल धाक ही नही था। यह भी नहीं कह सकते। इतिहास इसका साक्षी हैं की शिवाजी महाराज ने स्त्री पर कभी भी हाथियार नहीं उठाये। शिवाजी महाराज का भय सभी शत्रु पक्ष पर था। स्त्री तो केवल उनके पति के कारण वह भी डरी हुई थी।

कवि भूषण ने बडे विस्तृत रुप से शत्रु स्त्री के भय का वर्णन किया है। शिवकुमार शर्मा लिखते है कि, "भूषण ने परोक्ष रुप में मुगलों के ऐश्वर्य का चित्र प्रस्तुत किया है। साथ-साथ शत्रु नारियाँ की वेशभूषा, खानपान, रहन-सहन उनकी कोमलता, सुंदरता आदि का भी वर्णन किया है। ये अरि-नारियाँ शिवाजी के पराक्रम के कारण इतनी अधिक भयभीत हो गई है कि पावरु के साज को देखकर भी उनको ऐसा लगता है कि शिवाजी की सेना आ रही हैं।"[११३] इस प्रकार के वर्णन से ऐतिहासिक चरित्र की हानी हो सकती हैं। परंतु शत्रुओं के

डर की दाहकता को दिखाने के लिए भूषण कवि ने स्त्री को अत्याधिक भयभित दिखाया हैं।

इस प्रकार कवि भूषण ने बडे ही विस्तृत रुप से धाक का वर्णन किया है। शिवाजी महाराज की धाक (भय) शत्रु पक्ष पर थी। इसमें स्त्री के धाक वर्णन में कल्पना का सहारा लिया है। शत्रु स्त्री है इसलिए उनके अंतरमन में जरुर भय (डर) रहना स्वाभाविक हैं। इस वर्णन के पूर्णरुप से काल्पनिक कहना भी उचित नहीं होगा। इसलिए कवि भूषण ने औरंगजेब, आदिलशाह, कुतुबशाह, अन्य देशी, विदेशी राजाओं, किलेदार, सरदार, बजीरों, अरिनारी पर शिवाजी महाराज के अत्याधिक धाक वर्णन किया हैं।

२.२.१९. दयावीर :

सच्चा पराक्रमी, वीर वहीं होता है, जो दयावान हो। धर्म पर चलने वाले वीर सदैव दयालू और दानी होते हैं। मानव धर्म बिना दया एवं दान के भाव के बिना संभव नहीं। दया का भाव दिखाना शुरों और बलवानों की पहचान है। निर्दयी राजा के राज्य की प्रजा अंदर से भयभीत रहती हैं। दयावान राजा की कीर्ति शत्रु के राज्यों में अपने आप फैल जाती हैं। शिवाजी महाराज दयावीर थे। शिवाजी महाराज शरण में आनेवाले शत्रुओं को मृत्यु नहीं देते, उस पर दया दिखलाकर उसे जीवन दान देते हैं। दया उन्हीं को शोभा देती है, जो वीर बलवान हो। कमजोर किसी पर दया नहीं करता क्योंकि, वह स्वंय दया का पात्र होता हैं। दया के पात्र व्यक्तियों का संरक्षण करनेवाला स्वयं भी सक्षम, सामर्थवान और संपन्न होना चाहिए। शिवाजी महाराज में शक्ति, सामर्थ्य और वैभव सम्पंन्नता थी।

कुछ मुस्लिम शासकों के अत्याचार से पीडित प्रजा सरदार, राजा लोगों को वे अपने शरण में रखते है। इसलिए शरणार्थी लोग शिवाजी महाराज से अटल प्रीति जोडते हैं। आपकी कीर्ति के समान अन्य राजाओं के यश का वर्णन

स्वीकार नहीं किया जा सकता। जो दु:खी लोग आपके बाहुबल का आश्रय पाकर अपनी राय निश्चित करते हैं। आश्रय में आनेवाले लोगों के सिर पर आप पगडी बांधते है, तो मानों निर्भय होकर रहने के लिए स्वयं के किले ही बना दिये। शिवाजी महाराज शत्रुओं से युध्द करके विजय प्राप्त करते हैं। अनेक शत्रुओं के किलेदारों को दंडित किया। कितने ही किलेदारों के धर्म के नाम पर भिक्षूओं के भाँति दया का भाव दिखाकर छोड दिया। शिवाजी महाराज के अभयदान को स्पष्ट करते हुए भूषण लिखते है, "छाँडे केते धरम दुवार दै भिखारी से।"[११४] अनेक किलेदारों को धर्म के नाम पर एक भिक्षक की याचना करने पर दया दिखाकर छोड देते है। उसी प्रकार उन्होंने अनेक सरदारों, किलेदारों को छोड दिया है। औरंगजेब के सेनापतियों तथा वजीरों को जीत कर उन्हें अपनी दीन प्रजा समझकर छोड देते है। उनके उपर दया का भाव दिखाकर उन्हें मुक्त कर देते हैं। जैसे- "रावरे वजीर छोरि देत करि प्रजा।"[११५] अर्थात बादशाह के वजीर सेनापती, सरदारों को युध्द में जीत कर शरण आये तो, उनके उपर सामान्य प्रजा के भाँति दया दिखाकर छोड देते है। शिवाजी महाराज कितने भी बडे क्रोध में क्यों न हो शत्रुओं ने अगर होठ में तिनका धारण कर लीया हो। (ऐठ में तिनका दीनता का चिन्ह है) उस समय उनका अग्नि रुपी क्रोध पानी हो जाता है। शिवाजी महाराज ने शरण में आनेवाले अत्याधिक शत्रुओं को छोड दिया था। शिवाजी महाराज ने 'सलहेरि' युध्द में मुगलों को पराजित किया। इस युध्द में अमरसिंह चंदावत मारा गया। उसका लडका मोहकम सिंह तथा इखलास खाँ को मराठों ने बंदी बनाया था। शिवाजी महाराज ने उन पर दया दिखाकर उन्हें छोड दिया था। शिवाजी महाराज की इस दया भाव के बारे में भूषण लिखते हैं कि,"अमर सुजान, मोहकम, बहलोलखान, खाँडे, छाँडे, डाँडे उमराव दिलीसुर के।"[११६] अर्थात सालहेरी युध्द शिवाजी महाराज ने मुगलों के मोहकमसिंह को छोड दिया था। बहलोल खाँ को दंडित कर अभयदान दिया था। शिवाजी महाराज दया के सागर हैं। दयावीरता उन्हें सुशोभित करती है।

इस प्रकार हिंदी के मध्यकालीन साहित्य में कवि भूषण ने शिवाजी महाराज के दया रुप का वर्णन किया है। शिवाजी महाराज ने मुगल बादशाह के सरदार, उमरान पर दया दिखाई हैं। शिवाजी महाराज बलवान पराक्रमी है। परंतु अपनी शक्ति का प्रयोग उन्होंने शरण में आए हुए लोगों पर नहीं किया। बल्कि ऐसे लोगों को संरक्षण देकर उन्हें निर्भय बनाया हैं। दया की याचना करने वाले आदिलशाही का उन्होंने मुगलों से रक्षण किया था। उनके उदात्यभाव का चित्रण कवि भूषण के द्वारा किया है। हिंदी में शिवाजी महाराज की दयावीरता वर्णन का रुप ऐतिहासिकता को भी प्रकट करता है। मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज के दयावीर का वर्णन भूषण को छोडकर अन्य कवि के साहित्य में उपलब्ध नहीं हुआ।

२.२.२०. दानवीर :

राजा के द्वारा दान देना मानवता धर्म को उजागर करता है। स्वार्थ मन मे रखकर किया हुआ दान श्रेष्ठ नहीं होता। निस्वार्थ दान ही श्रेष्ठ दान होता है। शिवाजी महाराज ने निस्वार्थ होकर दान किया हैं। उनका दान भेदभाव और अहंकार रहित शिवाजी महाराज का दानवीर रुप इतिहास सम्मत हैं। शिवाजी महाराज ने अपने के राज्यभिषक के प्रसंग पर उन्होंने अत्याधिक दान दिया था। शिवाजी महाराज के दरबार में प्रतिक्षण दान के नगाडे बजते रहते हैं। अन्य कोई भी राजा शिवाजी महाराज के समान दानशुर नहीं हैं। भूषण शिवाजी महाराज के दानी रुप का वर्णन करते हुए लिखते हैं,

"साहि तनै सरजा तव द्वार प्रतिच्छन दान की दुन्दुभि बाजै।

x x x x x x x x

आजु गरीबनेवाज मही पर तो सो तुही सिवराज बिराजै।।"[११७]

अर्थात शिवाजी महाराज के द्वार पर हर समय दान के नगाडे बजते हैं। आपके द्वार पर राजाभोज के दरबार से भी अधिक दान पाकर भिक्षुक अत्याधिक आनंदित होते हैं। अन्य राजा और बादशाह आपके सम्मुख कुछ भी नहीं है। गरीबों पर कृपा करने वाले केवल आप ही हो। द्वार पर गरीब, भिक्षुक की हमेशा भीड रहती है। शिवाजी महाराज के दरबार में अलग-अलग भाषाओं के राजाश्रीत कवि थे। उनमें से एक हिंदी भाषा के कवि भूषण, संस्कृत के परमानंद कवि, मराठी भाषा के शाहिर अज्ञानदास, तुळसीदास आदि प्रमुख थे। इन सभी कवियों को स्वयं शिवाजी महाराज अपने हाथों से दान दिया था। भूषण कवि भी कवियों को दान देने का वर्णन करते हैं, "साहितनै सिवराज ऐसे देत गजराज, जिन्हैं पाय होत कविराज बेफिकिरि है।"[११८] अर्थात कवियों की कविता सुनकर शाहजी के पुत्र शिवाजी महाराज उनको हाथीयों का दान देते हैं। इस दान को पा कर कविराज निश्चित हो जाते हैं। शिवाजी महाराज ने हिंदी, संस्कृत, मराठी तीनों भाषाओं के कवि को दान दिया था। स्वयं तीनों भाषाओं के कवियों ने अपनी रचना में इसका वर्णन भी किया हैं।

शिवाजी महाराज शत्रुओं का अभिमान चुर-चुर कर सभी प्रजा की रक्षा कर उन्हें भोजन दान देते हैं। शिवाजी महाराज प्रजा के अन्नदाता है, यह एक ऐतिहासिक सत्य हैं। वह प्रजा को अन्नदान देकर दान भोजन खिलाते थे। स्वराज्य में अकाल आने पर सभी को मुफ्त में भोजन खिलाते। किले के अंदर रखे अनाज की बोरीयों को गरीबों में बाँट देते थे।

शिवाजी महाराज को कवि लोग इच्छित फल देनेवाले कामधेनु और कल्पवृक्ष के समान मानते हैं। शिवाजी महाराज महादानी है। अपेक्षित धन न मिलने से याचक नाराज हो जाता है। शिवाजी के दरबार में याचक चाँदी प्राप्त करने की इच्छा लेकर आता है, तो उन्हें सुवर्ण मिलता हैं। यदि याचक घोडे मिलने की इच्छा से आता है, तो उसे हाथी मिलता है। इसका मतलब याचक की

इच्छा से अधिक धन (दान) उनको मिल जाता था। शिवाजी महाराज के इस महादानीरुप का वर्णन करते हुए भूषण लिखते है कि, "रजत की हौंस किये हेम पाइयतु जासों, हयन की हौंस किये हाथी पाइयतु है।।"[११९] अर्थात शिवाजी महाराज पूरे संसार में महादानी हैं। उनके दान की महिमा कवि के द्वार इस प्रकार गयी जाती है कि, चाँदी की इच्छा करने वालो को दान में सुवर्ण मिलता था। घोडो की अपेक्षा रखनेवालों को दान में हाथी मिलता था। अपेक्षा से बढकर दान याचक को मिलता था। शिवाजी महाराज अन्य राजाओं से श्रेष्ठ दान देते हैं। शिवाजी महाराज की दान रुप की कीर्ति सुनकर लोग भगवान विष्णु से हि ऐसा वरदान माँगते हैं कि, हमें आप न तो जहाज का व्यापारी बनाइएँ और न किसी बडे भारी राज्य के राजा वे तो केवल शिवाजी महाराज के दरबार में भिक्षुक बनाने की इच्छा व्यक्त करते हैं। शिवाजी महाराज के दान को प्राप्त करने के बाद अन्य राजाओं के दरबार में दान माँगने की कोई आवश्यकता भी नहीं होती हैं।

शिवाजी महाराज के दानी रुप की विशेषता यह है कि, उनका दान भेदभाव रहित दान है। दान देते समय वे कभी भी अपना-पराया का भेद नहीं करते थे। दान लेनेवाला अगर दान के लिए योग्य है, तो उसकी धर्म, जाति या अन्य किसी कारण से उसका दान रोकते नहीं थे। हिंदू के अधिकांशतः सगुण पंथी परमात्मा के उपासक थे और मुस्लिम निर्गुण पंथी उपासक थे। सगुण-निर्गुण, दोनों को समान रुप से उदात्यभाव रखकर दान देते थे। ज्ञानी पुरुष का स्वभाव होता है कि, वह दोनों विचारधाराओं को समान माने। वह कभी भी दोनों विचारों और धर्मों में अंतर नहीं करता। शिवाजी महाराज बुध्दिमान राजा थे। उन्होंने दोनों के भेदभाव रहित और समान दान दिया था। इस संदर्भ में कवि भूषण कहते है कि, "प्रकट करत निर्गुण सगुन, सिवा निवाजै दान।"[१२०] अर्थात शिवाजी महाराज निर्गुण और सगुण पंथीयों की समान दान देते हैं। एक ज्ञानी व्यक्ति की पहचान होती हैं कि, वह दोनों सगुण और निर्गुण को समान रुप में

चाहें। इसी प्रकार शिवाजी महाराज भी दोनों को समान रुप से दान दिया हैं। उनकी दान वीरता के कारण लोग पौराणिक राजाभोज (दानी राजा) और विक्रमादित्य (प्रतापी राजा) का नाम भूल गए है। शिवाजी महाराज के सामने बलि तथा वेणु जैसे महादानी राजाओं का यश फिका पड गया है। इस प्रकार का अतिश्योक्तिपूर्ण वर्णन कवियों ने किया हैं।

दान शुरता के वर्णन में यहाँ कवि भूषण ने केवल अतिरंजकता और काल्पनिकता से शिवाजी महाराज के दानी रुप का वर्णन नहीं किया है। कई ऐसी ऐतिहासिक सत्य घटनाएँ भी है, जहाँ पर शिवाजी महाराज के दानी रुप का चित्रण दिखाई देता है। उनके ऐतिहासिक दानी रुप का प्रमाण दिते हुए डॉ. तिवारी लिखते है, "शिवाजी की दानवीरता का जो वर्णन भूषण ने किया है, उसके समर्थन के लिए अंग्रेजी रिकार्ड एक सबल प्रमाण है, अतः भूषण के वर्णन को चाटुकारिता या झूठी तारीफ नहीं कहा जा सकता।"[१२१] अंतः शिवाजी महाराज की दानशुरता इतिहास प्रसिध्द हैं। लेकिन भूषण के वर्णन में कहीं-कहीं कल्पनिकता और अतिश्योक्ति जरुर हुई हैं, परंतु पूर्ण रुप से काल्पनिक या झुठी प्रसंशा नहीं की है।

इस प्रकार शिवाजी महाराज के दानी रुप का वर्णन कवि भूषण ने करते समय गरीब, पीडितों, ब्राह्मणों और श्रेष्ठ कवियों को दान देते हैं ऐसा कहा है। दान योग्य व्यक्ति को ही देना चाहिए अयोग्य व्यक्ति को दिए दान से दान का हेतु असफल होता है। इसका ध्यान रखकर दान में निस्वार्थ भाव शिवाजी महाराज ने रखा था। उन्होंने सगुण, निर्गुण का भेद न कर समान भाव रखते हुए, समान दान दिया हैं। उन्होंने गरीब, पीड़ीत, शोषित, ब्राह्मण, पंडित, कवि, गुणीयों को दान दिया हैं। अपने सरदार, सेना उनके पराक्रम पर उन्हें दान भी दिया था। मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज के दानी रुप का वर्णन किया है।

२.२.२१. वैभव संपन्न राजा :

शासक का लक्ष प्रजा को सुखी संपन्न और आनंदी रखना होता है। राजा की वैभव संपन्नता उनकी प्रजा की वैभव संपन्नता पर निर्भर होनी चाहिए। उनके प्रदेश की जनता वैभवसंपन्न हो तो, वह राजा और राज्य वैभव संपन्न माना जाता है। अगर प्रदेश की जनता गरीब, भुखी, दीनता से जीवन जी रही है तो राजा का वैभव किसी भी काम का नहीं हैं। वहीं श्रेष्ठ राजा जिसके स्वराज्य, जनता सुखी और संपन्न हो। शिवाजी महाराज के स्वराज्य में सभी प्रजा सुखी संपन्न है। संसार में प्रसिध्द है कि, शिवाजी महाराज पास रहनेवाले नोकर भी कुबेर के समान वैभव संपन्न हैं। इस वैभव संपन्नता को वर्णित करते हुए भूषण लिखते हैं, "जाहिर जहान जाके धनद समान, पाखियतु पासवान यों खुमान चित चाय हैं।"[१२२] अर्थात शिवाजी महाराज वैभव संपन्न है। पूरे संसार में प्रसिध्द हैं कि कुबेर के समान शिवाजी महाराज और उनके पास रहने वाले सरदार, नोकर, धनसंपन्न हैं। शिवाजी महाराज की वैभव संपन्नता को देखकर कुबेर भी लज्जित होता है। शिवाजी महाराज अत्याधिक वैभवसंपन्न राजा थे। भगवान कुबेर भी उनकी वैभवता की बराबरी नहीं कर सकता है। भूषण कवि के अनुसार शिवाजी महाराज के सामने कुबेर स्वयं को लज्जित महसुस करता हैं। शिवाजी महाराज के स्वराज्य की राजधानी किले रायगड की वैभव संपन्नता के बारे में भूषण लिखते है कि,

जा पर साहि तनै सिवराज सुरेस कि ऐसी सभा सुभ साजै।

x x x x x x x x

वारि पताल सी माची मही अमरावति की छवि ऊपर छाजै।"[१२३]

अर्थात शाहजी के पुत्र शिवाजी के किलें रायगढ पर अपनी सुंदर सभा प्रति इंद्र की सभा के समान तैयार करते हैं। उनके वैभव को देखकर कुबेर भी शर्माता है। कुबेर राजा की राजधानी अलकापुरी में भी रायगढ़ जैसी वैभव संपन्नता नहीं हैं। तीनों लोंको की छवि को धारण करनेवाला ऐसा बडा सुंदर

रायगढ सुशोभित है। इसकी खाई पाताल के समान है। कुर्सी (सिंहासन) पृथ्वी के समान हैं। रायगढ का उपरी भाग अमरावती (इंद्रपूरी) के समान शोभायमान है। किले रायगढ के प्राकृतिक दृश्य को कवि भूषण ने उपमानों के आधार पर वर्णन किया हैं। इसी प्रकार कवि भूषण किल्ले रायगढ के महलों का भी वर्णन करते हैं। किले रायगढ़ के महलों पर मोतियों की झालरे, मणिमालाओं से महल ऐसे शोभायमान है जिन्हें देखकर यक्ष, किन्नर, गंधर्व, सुर, असुर वहाँ जाकर रहने की इच्छा व्यक्त करते हैं कि देव भी अपना निवासस्थान इसे ही बनाना चाहते थे। शिवाजी महाराज की संपत्ती देवराज इंद्र के समान बढ गई है। शिवाजी महाराज को अपने वैभव सपन्नता का जरा सा भी घमंड नहीं है। अपनी वैभव संपन्नता का उन्हें लेशमात्र अहंकार नहीं हैं। कवि भूषण वैभव संपन्नता का वर्णन करते हैं- "दौलति इंद्र समान बढी पै खुमान के नेक गुमान न आओ।"[१२४] अर्थात शिवाजी महाराज की दौडत (संपत्ति) भगवान इंद्र के समान बढी फिर भी राजा को थोडा सा भी घंमड नहीं हैं। तीनों लोकों में प्रसिध्द इंद्र है, पर उनके पास केवल एक हाथी (ऐरावत) और एक घोडा (उच्चेश्रवा) है। शाहजी के पुत्र शिवाजी के साथ लाखों हाथी और घोडे चलते हैं। फिर भला इंद्र शिवाजी महाराज की समता कैसे कर सकते है? इंद्र से भी ज्यादा राजवैभव शिवाजी महाराज का है। देवराज इंद्र और शिवाजी महाराज के वैभव संपन्नता की तलना करते हुए भूषण लिखते हैं- "सिवराज साहि सुव सत्थ नित, हय जग लक्खन संचरइ। यक्कइ गयन्द यक्कइ तुरंग किमि सुरपति सरवरि करइ।"[१२५] अर्थात शिवाजी महाराज के साथ लाखों घोडे, हाथी चलते हैं। तो सुरपति (देवराज इंद्र) के साथ तो केवल एक हाथी और एक घोडा ही हैं। फिर भला शिवाजी महाराज की बराबरी इंद्र कैसे कर सकता हैं? शिवाजी महाराज के पास लाखों सेनाओं की फौज, घोडे, हाथी थे। इस ऐतिहासिक सत्य को भूषण ने दर्शाया है। शिवाजी महाराज की सैन्य की वैभव संपन्नता की ओर निर्देश कवि ने किया है।

शिवाजी महाराज के अधिकतर किले पडाडियों पर और जमिनी स्थल से बहुत उँचे रहते हैं। उन्होंने बहुत सारे किलों का निर्माण किया था। पुराने किलों को पुनरनिर्माण भी किया था। उनके किले की चोटियाँ माने गगन को छु रही है ऐसी प्रतीत होता है। उनके सभी किले स्वराज्य का वैभव थे। शिवाजी महाराज जानते थे कि, किले भी स्वराज्य सुरक्षा की शक्ति है। स्वराज्य की जान किलों में होती है। शिवाजी महाराज के किलों की वैभव संपन्नता का वर्णन करते हुए भूषण लिखते हैं कि,

"भूषण भनत जाके एक एक सिखर तें

चारों ओर नदिन की पाँति उतरति है।

x x x x x x

ऐसे उँचौ दुरग महाबली है जामें नखतावली

सों बहस दीपावली धरति हैं।"[१२६]

अर्थात शिवाजी के किले इतने उँचे-उँचे है कि, जिस किले के पहाड की प्रत्येक चोटी से कितने ही नदी नाले को प्रवाहीत है। उनके किले के महलों में जडे हुए हिरों और मणियों के प्रकाश से मानों चाँदनी की हाँसी प्रतीत होती हैं। उनकी चमक से गुफाओं का भी अंधेरा नष्ट हो जाता है। शिवाजी महाराज के किले इतने उँचे है कि, मानो उसकी दीपावली (प्रकाश) तारों की पंक्तियों से बहस करती है। शत्रुओं से उनके किले जीतना हमेशा मुश्किल रहा था। उनके किले आज भी उनके पराक्रम और सरदार, सेनाओं के बलिदान के प्रतिक के रुप में भारतीय इतिहास को प्रेरित करते हैं।

इस प्रकार मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज के वैभव संपन्नता के वर्णन में कल्पना, अतिशयोक्ति के साथ-साथ ऐतिहासिकता को भी ध्यान में रखा हैं। साहित्य में पूरी ऐतिहासिकता नहीं होती ना ही कोरी कल्पना

होती है। दोनों का समन्वित रुप साहित्य में होता हैं। कवि भूषण ने भी इस कल्पना और ऐतिहासिकता का समन्वय किया है। कवि भूषण ने शिवाजी महाराज के सरदार, नोकर, प्रजा, रायगढ, महलों, किलों के वर्णन के साथ, घोडे, सैन्य वैभव का वर्णन किया है। शिवाजी महाराज के वैभव को पौराणिक इंद्र के वैभव संपन्नता से तुलना की हैं। वैभव संपन्नता होने के बावजूद उनमें लेश मात्र भी घमंड अहंकार नहीं है। शिवाजी महाराज की वैभवसंपन्नता इतिहास में प्रसिध्द हैं। इसी वैभव संपन्नता को मध्यकालीन हिंदी साहित्य में वर्णन किया हैं।

२.२.२२. अवतारी पुरुष :

मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज के साहस, पराक्रम, वीरता की प्रशंसा करते समय अपने नायक को श्रेष्ठ साबित करने के लिए कवियों ने उन्हें अवतार के रुप में चित्रित किया है। क्योंकि तत्कालीन समय में राजा ईश्वर का ही अंश होता और यही समाज की धारणा कवियों में भी थी। इसलिए साहित्यकारों ने भी शिवाजी महाराज को अवतारी पुरुष माना हैं। इसी दृष्टि से शिवाजी महाराज में विष्णु भगवान का मनुष्यत्व का रुप रुपायित मिलता है। वह धरती पर विष्णु भगवान के ही सभी काम करते है। कलियुग में शिवाजी महाराज मनुष्य का रुप लेकर कलियुगी आत्याचार को मिटाने आये हैं। इस संदर्भ में कवि भूषण कहते हैं, "या कलि मैं अवतार लियो उत तेई सुभाव सिवाजी बली के। आय धरयो हरि तें नर रुप पै काज करै सिगरै हरि ही के।"[१२७] अर्थात शक्तिशाली (बलवान) शिवाजी महाराज घोर कलियुग में अवतार धारण किया है। इस धरती पर विष्णु भगवान से नर रुप (मानवरुप) धारण कर लिया हैं। इसी प्रकार उनका कार्य स्वभाव भगवान विष्णु की तरह पहाडी प्रदेशों की शत्रुओं से रक्षा करना रहा है। हिंदू धर्म में कहाँ जाता है कि, ब्रह्मा पृथ्वी की रचना करता है, विष्णु भगवान उसका पालन करता है और महादेव सृष्टि का संहार करता हैं। शिवाजी महाराज तो विष्णु के अवतार है। उन्होंने भगवान विष्णु के सभी काम पूरे किये हैं। भूषण

कवि भगवान ब्राह्म,विष्णु, महेश (शंकर भगवान) के कार्यों में से विष्णु भगवान के कार्यों को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं- "ब्रह्म रचै पुरुषोतम पोसत, संकर सृष्टि सँहारन हारे। तु हरि को अवतार सिवा नृप काज सँवारे सबै हरि वारे।"[१२८]

अर्थात ब्रह्मदेव पृथ्वी का निर्माण करता है। भगवान शंकर सृष्टि का संहारक हैं। भगवान विष्णु पृथ्वी का पालन करने वाले हैं। शिवाजी महाराज विष्णु भगवान का अवतार लेकर पृथ्वी का रक्षण कर रहे है। विष्णु भगवान के सभी कार्य राजा शिवाजी कर रहे हैं। जिस प्रकार राम राक्षसों का मर्दन करते है, उसी प्रकार शिवाजी महाराज म्लेच्छो (मनुष्यरुपी) शत्रुओं का मर्दन करनेवाले राम के ही अवतार है। वे पृथ्वी को निरम्लेच्छ करने के लिए अवतरित हुए है। भूषण भी राम के अवतार के रुप में शिवाजी महाराज का वर्णन करते हुए कहते है, "तेगहि कै भेंटै जौन राकस मरद जानै, सरजा सिवाजी राम ही को अवतारु है।"[१२९] अर्थात शिवाजी महाराज राक्षसों की भेट होने पर उनका मर्दन (वध) करना अच्छी तरह जानते हैं। भगवान राम ने कितने ही बाधाओं को पार करके शत्रु को नष्ट किया है, उसी राम के अवतार शिवाजी महाराज है। जिस प्रकार रावन को मारने के लिए राम का अवतार हुआ था। कंस के कुटिल एवं बलवान वंश को नष्ट करने के लिए वासुदेव के बेटे श्रीकृष्ण का अवतार हुआ। इसी प्रकार पृथ्वी पर इंद्र रुपी शाहजी के सुपुत्र शिवाजी महाराज म्लेच्छों का नाश करने के लिए उनका आवतार हुआ है।

शिवाजी महाराज के अलग-अलग रुप, कार्य और पराक्रम को देखकर कवि उनके अलग-अलग अवतार का वर्णन करते है। शिवाजी महाराज को उनके दानी रुप के कारण कर्ण का अवतार मानते हैं। धनुष्यधारी शिवाजी महाराज जो शत्रुओं के ऱ्हदय में घाव करता है, उसे अर्जुन कहते है। पृथ्वी पालक है, जिसने अन्य राजाओं के अहंकार को नष्ट कर दिया है। अत: राजा लोगों के द्वारा उन्हें पृथ्वी को धारण करने वाला शेषनाग कहते हैं। जिस अवतारों की उपमा शिवाजी

महाराज को दी है, वे सभी विष्णु भगवान की तरह पृथ्वी रक्षक हैं। शिवाजी महाराज भी विष्णु के आवतार हैं। उनकी राजकाज की गुढता को देख आदिलशाह, कुतुबशाह और अहमदनगर को जीतनेवाले दिल्ली के मुगल बादशाह देव कहते है।

इस प्रकार मध्यकालीन भारतीय समाज अपनी नियती को दोष देता था। धर्म रक्षक के रुप में किसी महापुरुष को अवतारी रुप में देखना चाहता था। इसी कारण शिवाजी महाराज के असामान्य कार्य और पराक्रम के कारण उन्हें अवतारी पुरुष माना गया। भारतीय समाज मन की यही धारणा होती है कि, अद्भूत कार्य किसी के द्वारा किया जाए तो उसे दैवी रुप में प्रस्थापित किया जाता हैं। कवि लोग समाज का ही अंग होते है। अत: कवियों ने भी उसी धारणा को प्रकट किया है।

२.२.२३. कीर्ति एवं यशवंत राजा :

कभी-कभी काम के लिए नाम ही काफी होता है। शत्रु उनके नाम और उनकी कीर्ति के कारण अपने बढते कदमों को रोक देते थे। शिवाजी महाराज के पराक्रम के कारण उनकी कीर्ति देश-विदेशों के चारों दिशाओं में फैल गई हैं। 'हिंदवी स्वराज्य की स्थापना करके अपनी कीर्ति विश्व में बढाई थी। उनके असामान्य और अदभूत पराक्रम से सारे संसार में उनकी कीर्ति हो चुकी है। भूषण कहते है कि, चंद्रमा ने अंधकार के समुह कर चारों ओर सुंदर चाँदनी फैलाई है। उसी प्रकार से शिवाजी महाराज ने अफजल खां को मारकर पृथ्वी पर अपनी कीर्ति फैलाई थी। कवि ने कीर्ति का वर्णन करते हुए लिखा है, "यों तम तोमहि चाबि कै चंद चहुँ दिसी चाँदनि चारु पसारी। ज्यों अफजल्लहि मारि मही पर कीरति श्री सिवराज बगारी।"[१३०] अर्थात चंद्रमा ने अंधकार के समुह को मिटाकर चारों ओर सुंदर चांदनी फैलाई है। उसी प्रकार से अफजल खाँ को मारकर सारे पृथ्वी पर शिवाजी महाराज ने अपनी कीर्ति फैलाई हैं। अफजल खाँ

के वध के बाद पूरे देश में शिवाजी महाराज की कीर्ति फैल गयी थी। क्षत्रियत्व का पालन किया और पृथ्वी पर धर्म तथा गुणीयों के गुणों की रक्षा की है। मराठों ने अन्य राजाओं की राज्य की सिमा पर अपना अधिकार जमा कर कीर्ति प्राप्त कर ली है। मराठा सेनाओं की कीर्ति अंकित करते हुए भूषण लिखते हैं- "'भूषन' सुकवि जीति हद मरहट्टन की, देस देस कीरति बखानी तब सुनी मैं।"[१३१] अर्थात भूषण कहते है कि, शिवाजी महाराज के मराठों ने अन्य दूसरे देश के राजाओं पर भी अपना अधिकार निर्माण किया है। उनके इस कीर्ति की सभी लोग चर्चा कर रहे हैं। शिवाजी महाराज की कीर्ति उज्वल चाँदनी के घमंड (चारों ओर संसार में फैली) को भी तोड देती हैं। उनकी कीर्ति चांदनी के उज्वलता की बराबरी करती है। शिवाजी महाराज के कीर्ति की छबी सुंदर, शुभ्र और निर्मल कांति रुपी छटा से पृथ्वी रुपी आँगन और आकाश रुपी दीवारों को मानों छु रही है। शिवाजी महाराज के पराक्रम और वीरता के कारण उनकी कीर्ति चारों तरफ फैल चुकी है। शिवाजी महाराज के सामने राजभोज विक्रमादित्य, बली और वेगु जैसे महादानी राजाओं की कीर्ति फिकी पड गयी हैं। शिवाजी महाराज के 'यश' की उज्वलता का वर्णन किया है। शिवाजी महाराज यशवंत राजा थे।

शाईस्ताखाँ पुने के महल में रहने लगा था। शिवाजी महाराज ने दो सौ सैनिकों को साथ लेकर महल में घुसकर उन पर आक्रमण किया। भूषण कहते है हिंदूओं के स्तंभ स्वरुप, किलों के स्वामी, सेनाओं का संचलन करने वाले, प्रजा के रक्षक महाराज शिवाजी ने मुसाहिब तथा चौकीदारों को नष्ट करके यश प्राप्त किया है। उनके यश का वर्णन करते हुए भूषण कवि लिखते हैं-

"हिंदुवान-खंभ गढपति दल-थम्मा भनि।
भूषन भरैया कियो सुजस अपार को।।"[१३२]

अर्थात हिंदूओं के स्तंभ स्वरुप किलों के स्वामी बडी सेना के दल का संचालन करनेवाले, प्रजा पालक (रक्षण) कर आपने यश को संसार में फैलाया हैं।

शिवाजी महाराज के यश की श्रेष्ठता का प्रतिपादन करते समय यश की शुभ्रता का विस्तार से वर्णन किया है। सफेद रंग बिना किसी दाग या मीलावट का होता है। भूषण कहते है कि अन्य राजा लोग साधारण सा भी काम नहीं कर पाते। किंतु शाहजी के पुत्र शिवाजी महाराज ने तो कठिन से कठिन कार्य में भी यश प्राप्त किया हैं।

शिवाजी महाराज के यश की तुलना अन्य पौराणिक राजाओं के साथ की है। उनके यश में शुध्दता, शुभ्रता और पवित्रता है। उनका यश मानस के सरोवर का हंस, चंदन में घिसा हुआ कर्पूर, नारद और सरस्वती की हँसी, गंगा का श्वेत कमल और ऐरावत इन में से कोई भी शिवाजी के यश की समानता नहीं कर सकता। कैलास के स्वामी महादेव, उन महादेव के सीर पर रहनेवाला वह निशानाथ चंद्रमा भी पृथ्वीपति शिवाजी महाराज के यश की बराबरी नहीं कर सकता है। इस प्रकार का शिवाजी महाराज का यश निष्कलंक है। आपकी यश की समानता, पवित्रता और निर्दोष यश की बराबरी कोई अन्य नहीं कर सकता। भूषण कवि ने कहा है कि, चंदन में साँप लिपटे रहता, ऐरावत हाथी मदमस्त होता है। शेषनाग में विष होता है। प्रभात ठहरती नहीं, कपुर उड जाता है, शिवजी का कंठ भी नीला है और कमलों में भी भौंरे रहते हैं। क्षीरसागर में कीचड, चंदमा में कलंक है, इसलिए यह सभी उनके यश के रुप की समानता में रत्ती भर भी बराबरी नहीं कर सकते। शिवाजी महाराज के उस हाथ का वर्णन नहीं किया जा सकता, जिसमें रहनेवाला यश त्रैलोक्य में भी नहीं समाता। आज तक विश्व में शिवाजी महाराज के यश का गुणगान किया जा रहा हैं। आगे भी हजारों लाखों सालों तक वे समाज, देश के लिए यशस्वी राजा के रुप में प्रेरित करेंगे।

इस प्रकार हिंदी साहित्य के मध्यकाल में शिवाजी महाराज की कीर्ति और यश का वर्णन कवि भूषण ने किया हैं। शिवाजी महाराज का पराक्रम और वीरता

उनके शिवशौर्य से उनकी कीर्ति पूरे संसार में फैल गयी हैं। उनके यश की तुलना नहीं की जा सकती। उन्होंने श्रेष्ठ, निष्कलंक, यश को प्राप्त किया है। उनका यश त्रिलोक में भी न समानेवाला व्यापक और बडा हैं। जब तक संसार हैं, तब तक शिवाजी महाराज के यश का गान होगा। यश और कीर्ति समाज, देश और विश्व में फैल चुकी हैं। उनकी कीर्ति और यश निरंतर नयी पीढियों के लिए प्रेरित करता रहेगा।

२.२.२४. दूरदर्शिता :

मध्यकालीन भारत के अधिकतर राजा वर्तमान समय की ही स्वार्थ प्रेरित सीमित सोच रखते है। पूरे राष्ट्र और समाज के भविष्य के बारे में वह सोचने की शक्ति खों बैठे थें। वह सभी औरंगजेब के अधिन रहकर अपना जीवन सुरक्षित करना चाहते थे। इसी प्रकार की सामान्य लोग सोच होती थी। राजा में दूरदर्शिता हो तो वह समाज और राज्य या देश का भविष्य बदल सकता है। दुरदर्शि व्यापकता विचार करनेवाला राजा ही देश को नई उँचाईयों पर लेकर जा सकता हैं।

मध्यकालीन भारत के राजा शिवाजी महाराज में दूरदर्शिता का गुण विद्यमान था। युध्द पराक्रम, वीरता, बुध्दीचातुर्य और रणनीति से जीता प्राप्त करते थे। परंतु युध्द के बाद उसके स्वराज्य पर पडनेवाले दुरगामी परिणामों को भी सोचते थे। शिवाजी महाराज दुरदर्शि विचारों से युध्द या संधि का निर्णय करते थे। उन्होंने जितनी बार शत्रु पक्ष के साथ संधि का प्रस्ताव रखा या संधी की वह सब दूरदर्शिता (भविष्य) के परिणाम को देखकर की हैं। सामने वाले शत्रु की सोंच क्या है? यह वे तुरंत पहचान लेते हैं। अफजलखाँ को मिलने के समय उन्होंने अपने दुरदर्शिता का परिचय दिया था। अफजल खाँ के बारे में जैसा उन्होंने सोचा था, बिल्कुल वही हुआ था। अफजल खाँ ने भेट करते समय दगा किया। शिवाजी महाराज को अलिंगन देने के बहाने उनकी गर्दन दबाने लगा तभी

शिवाजी महाराज ने अपने बाघनखों के घाव से उसे नीचे गीरा दिया था। अफजलखाँ के अंतर्मन को शिवाजी महाराज ने पहले से ही पहचान लिया था।

शिवाजी महाराज औरंगजेब बादशाह को मिलने के लिए जब आगरा के दरबार गए तो उन्हें अनुचित स्थान पर खडा किया गया। किंतु शिवाजी महाराज के दुरदर्शि सोच होने के कारण बादशाह के इस अनुचित व्यवहार भाव को समझ लिया था। शिवकालीन संस्कृत के कवि जयराम पिडें ने शिवाजी महाराज के द्वारा खवासखाँ के आकृमण की घटना में दूरदर्शित के रुप में वर्णित करते हैं-

"चरितं वर्वरीत्येतत् स्वस्थ राज्यस्थ मज्जकम्।

यदा यदिलशाहेन स्वपदे स्थापितः सुत।"[१३३]

अर्थात शिवाजी महाराज के समकालीन संस्कृत कवि जयराम पिंडे लिखते है कि, बीजापुर का बादशाह छोटा और अज्ञानी था। खवासखाँ के हाथ में बीजापुर के आदिलशाही की सत्ता थी। उस ने शिवाजी महाराज के विरोध में कार्य करना शुरु किया था। इसलिए वह भविष्य में स्वराज्य के लिए खतरनाक साबीत हो सकता है इसलिए उसके खिलाफ कडा रुख अपनाते हैं। खावासखाँ के आक्रमण करने से पहले ही स्वयं उस के उपर आक्रमण कर उसे पराजित करते हैं।

मुगल सरदार बहलोल खान ने शिवाजी महाराज के विरुध्द युध्द की तैयारी की थी। शिवाजी महाराज दुरदर्शि निर्णय लेकर तुरंत प्रतापराव गुर्जर सेनापति को उसके उपर आक्रमण करने के लिए भेजकर उसे पराजित करते हैं।

बीजापुर के आदिलशाह ने जब शिवाजी महाराज के पिता शाहजी राजे को बाजी घोरपडे के द्वारा बंदी बनाया गया। शिवाजी महाराज ने अपनी दुरदर्शिता से आदिलशाही के मनसुबे को समझ लिया था। अपनी दूरदृष्टी से बीजापुर न जाकर मुगलों से आदिलशाह पर दबाव डाला। इस कारण उनके पिता शाहजी

महाराज को आदिलशाह ने रिहा किया। इस संदर्भ में राजनारायण शर्मा कहते हैं, "यदि वे बीजापुर के विरुध्द युध्द करते, तो यह निश्चित था कि बीजापुर का सुल्तान उनके पिता का वध कर देता। यदि वे युध्द बंद कर स्वयं बीजापुर जाते तो उनका अंत निश्चित था। इसलिए शिवाजी ने मुगल बादशाह शाहजहाँ से संधिवार्ता आरंभ की। शहाजहाँ ने बीजापूर दरबार को शहाजी को छोडने के लिए लिखा।"[१३४] बीना कोई युध्द किये अपने दूरदर्शिता से पिता को आसानी से कैद से मुक्त किया। इसी दुरदर्शिता के कारण शिवाजी महाराज को भी कुछ हानी नहीं हुई और धोका भी नहीं उठाना पडा। शिवाजी महाराज ने दूरद्रष्टि से किलों का पुननिर्माण किया था। उन्हें पता था की जिस शासक के अधिकार में किलें हो उसे उस राज्य की रक्षा, सुरक्षा करना आसान हो सकता हैं। किलों के उपर से लडनेवाला एक सैनिक सौ सैनिक के बराबर होता हैं। विदेशी समुद्री सत्ताओं को हराने के लिए उन्होंने पहाडी चोटियों पर किले और समुद्र भागों पर दुर्ग का निर्माण किया था। शिवाजी महाराज भारतीय नौसेना के प्रवृर्तक माने जाते हैं। इस नौ सेनाओं ने अंग्रेज, डच, पोर्तूगीज, फ्रेंच, हब्शियों आदि शत्रु को हराया था। इस समुद्र शत्रु के खतरे को समझकर युध्द के लिए उन्होंने जहाजों और आरमारों की व्यवस्था की थी। वतनदारी, जमिनदारी से सामान्य प्रजा का शोषण होते देखकर उसे बंद कर दिया था। इस व्यवस्था से प्रजा का असंतोष स्वराज्य के लिए घातक होगा इस दूरदर्शि विचारों से इस प्रथा को बंद कर दिया। जयसिंह और दिलेर खान को मुगल बादशाह ने बडी फौज के साथ दक्षिण में भेजा था। तब शिवाजी महाराज ने दूरदर्शिता संधि का प्रस्ताव इसलिए रखा की स्वराज्य और रयत को अतयाधिक हानी सहन करनी पडेगी। प्रजा का भारी नुकसान न हो, इसलिए दूरदर्शि निर्णय लेकर संधि का प्रस्ताव रखा था। शिवाजी महाराज के दुरदर्शि निर्णय स्वराज्य के हित में रहे थे। उन्होंने स्वराज्य की सुरक्षा के लिए दुर्ग, किले, नौसेना, आरमार, जहाजों का निर्माण किया है। युध्द में शत्रु के सेनापति की चाल को समझते थे। कोई भी निर्णय अपने दुरदृष्टि

विचारों से लेते थे। पहले निर्णय के दुरगामी परिणाम को समझ लेते थे। इस प्रकार मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज की दुरदर्शिता के रुप का चित्रण किया है।

२.२.२५. उदारमतवादी :

मध्ययुगीन भारत की समाजव्यवस्था धर्म पर आधारित थी। शिवाजी महाराज को भी अपने धर्म के प्रति स्वाभिमान था। इसका मतलब यह नहीं की दूसरे धर्म के प्रति उनके मन में अनादर की भावना थी। जो धार्मिक कट्टरता की भावना औरंगजेब और अन्य कुछ मुस्लिम शासकों में थी, वह भावना शिवाजी महाराज में नहीं थी। उन्होंने किसी धर्म, धर्म ग्रंथ, श्रध्दा का कभी अनादर नहीं किया। यह ऐतिहासिक सत्य भी है, जो साहित्य में साहित्यकारों ने भी स्पष्ट किया हैं। स्वराज्य निर्माण के लिए विभिन्न १८ प्रकार की जातियों और अनेक धर्म के लोगों का बलिदान रहा है। स्वराज्य की सेना में मुस्लीम अधिकारी भी उँचे पद पर थे। उनकी सेना में गुप्तचर सचिव हैदर अली, नौसेना का प्रमुख सिध्दी संबल, तोफखाना प्रमुख इब्राहिम गार्दी उनका व्यक्तिगत सेवक मदारी मेहतर, न्यायाधिश काजी हैदर आदि मुस्लिम धर्म के कूल एकतिहाई सैनिक थे। शिवाजी महाराज के उदरता के गुणों स्पष्ट करते हुए भूषण लिखते हैं, "सोहत उदारता औ सीलता खुमान मैं सो,"[१३५] अर्थात शिवाजी महाराज में उदारता और सुशिलता उन्हे और भी ज्यादा सुशोभित करती हैं। एक श्रेष्ठ राजा में उदारता का गुण होता ही है। शिवाजी महाराज उदारमतवादी राजा थे। शिवाजी महाराज ने शत्रु शरण आने पर उन्हें अभयदान (जीवनदान) दिया है। उन्हे कवि लोग उदार या 'दरियादिली' कहते हैं। बडे उदात्य भाव से शत्रुओं की रणभूमि में जीवनदान दिया हैं। मुगल सरदार दिलेर खाँ, बहलोल खाँ, मुहकमसिंह, युध्द में पकडे जाने पर उन्हें बडे उदात्य भाव से छोड दिया था। इसी घटना की ओर संकेत करते हुए कवि भूषण कहते हैं, "'दिल दरियाव' क्यों न कहे कविराव तो हि, तो मैं

ठहरात आनि पानिप जहान को।"[१३६] अर्थात समस्त कवि आपकों दरियादिल (उदारचेता) क्यों न कहें? जब कि, समस्त संसार का जल भी समुद्र रुपी शिवाजी महाराज में आकर बस जाता हैं। शिवाजी महाराज के शत्रु जब शरण में आता है, तो उनकी रक्षा की हैं। उन्होंने अनेक शत्रु राजाओं के अनुरोध पर उदात्य भाव से उनकी सत्ता को बचाने का काम किया है। पिता शाहजी महाराज को कैद करनेवाले बीजापूर के आदिलशाही का अंत निश्चित होने वाला था। शिवाजी महाराज ने ही शत्रुता को भूल कर उदात्य भाव से उसकी रक्षा की है। बीजापुर की रक्षा का वर्णन करते हुए भूषण लिखते हैं, "साहि के सपूत सिवराज बीर तैने तब, बाहु-बल राखी पातसाही बीजापूर की।"[१३७] अर्थात शाहजी के पुत्र वीर शिवाजी महाराज ने मुगलों के द्वारा बीजापुर पर आक्रमण करने से रोका ही नही बल्कि अपने बाहुबल से मुगलों को पराजित भी किया था। शिवाजी महाराज ने राजनीति और धर्म को पृथक रखा था। उन्होंने धर्म विरोधियों से नहीं बल्कि स्वराज्य विरोधियों से युध्द किया था। अगर धर्म विरोधी होता तो हिंदू धर्म के बाजी घोरपडे, खंडोजी खोपडे, सांवत, चंद्रराव मोरे के साथ युध्द नहीं करते। वे "चाहत निर्गुण सगुण को, ज्ञानवंत की बान। प्रकट करत निर्गुण सगुण, सिवा निवाजै दान।"[१३८] अर्थात शिवाजी महाराज दान देते समय उदारता का रुप दिखाते हैं। भूषण कहते है, चाहे कोई निर्गुण हो या सगुण सब तरह के व्यक्तियों को दान देते हैं। ईश्वर के दोनों रुपों को माननेवाले व्यक्तियों के आदरभाव से उदात्य होकर दान देते है। वे सामाजिक जीवन में अत्यंत उदार थे। उन्होंने कभी-भी धर्म, जात, पंथ और भिन्न विचारधारा के लोगों में भेद नही किया। अधिकांश हिंदू ईश्वर के सगुण रुप मुस्लीम धर्म के लोग निर्गुण रुप को मानते हैं।

वह धर्म को कभी भी राजनीति का अधार नहीं बनाते। शिवाजी महाराज ने स्वराज्य में किसी धर्म को बडा या छोटा नहीं माना। शिवाजी महाराज का सभी धर्मों जातियों के सैनिकों के उपर विश्वास था। उनकी समाज, धर्म, राजनीति

अत्यंत उदार थी। इस संदर्भ में डॉ. शिवकुमार शर्मा लिखते है कि, "शिवाजी की नीति अत्यंत उदार थी। उनके दरबार में मुसलमान उच्च पदों पर नियुक्त थे। शिवाजी का आदेश था कि किसी मुसलमान स्त्री उनके धर्म ग्रंथ और मस्जिद आदि को हानी न पहुँचे। सच तो यह है कि शिवाजी को उस महत्ती राष्ट्रिय क्रांति में जो आशातीत सफलता मिली उसका श्रेय हिंदू और मुसलमान दोनों को हैं।"[१३९] शिवाजी महाराज उदारमतवादी होने के कारण उनकी सेनाओं में हिंदू मुस्लिम दोनों धर्म के लोग थे। उन्होंने मुस्लिम स्त्री, मस्जिद, श्रध्दा स्थानों को हानी नहीं पहुचाई थी। उनके स्वराज्य में हिंदू और मुस्लिम दोनों बराबर के भागीदार हैं। कवि भूषण ने भी औरंगजेब की निंदा धर्म के आधार पर नहीं की है। औरंगजेब की धार्मिक नीति अनुदार थी। औरंगजेब के पूर्वजों की उदारनीति की प्रशंसा स्वयं भूषण ने भी की हैं।

इस प्रकार मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज के उदात्य विचारों के स्वरुप का वर्णन किया है। शिवाजी महाराज को उदारता सुशोभित करती हैं। उनका मन और विचार आचारण उदारमतवादी हैं। सभी राजा को अपने समुद्र रुपी मन में समाहित करते हैं। उदार अंतकरण से सभी को दान देते हैं। वे हिंदू-मुस्लिम दोनों धर्म को समान मानते हैं। इस दोनों विचारों का आदर करते है। शिवाजी महाराज के स्वराज्य में उदारता दिखाई देती है। दान, धर्म, संरक्षण, शत्रु से भी उदारता से क्षमा करते है। अत: उनका मन, विचार और अचरण उदात्य है।

२.२.२६. न्यायप्रिय राजा :

मध्ययुग में न्यायदान का कार्य राजा को ही करना पडता था। जहाँ राजा न्यायी हो, वहाँ की प्रजा सुखी रहती थी। उस राज्य में न्यायपूर्ण शासन भी रहता था। शिवाजी महाराज के स्वराज्य में प्रजा सुखी थी। किसी के उपर अन्याय या अत्याचार नहीं होता था। गुन्हेगार को दंडित करते समय जात, धर्म के आधार

पर भेदभाव नहीं करते थे। उन्होंने न्याय नीति में कभी भेद नहीं किया। उनकी न्यायनीति आदर्श, पारदर्शक और समताधिष्ठित थी। शिवाजी महाराज के न्यायशील शासन में केवल गुणी पुरुष ही अपने गुणों से दूसरों के चित्तों को चुराने वाले है। उनके राज्य में कोई मनुष्य चोर दिखाई नहीं देता। जनता में केवल शिवाजी महाराज की प्रेम-रुपी रस्सी का बंधन है। जल की बुँदे केवल बादलों में है, किसी मनुष्य या स्त्री नेत्रों में नहीं। शिवाजी महाराज की न्यायशिल शासन व्यवस्था है। उनकी न्याय व्यवस्था समता के मूल्य पर आधारित थी। शिवाजी महाराज के न्यायप्रिय राज्य में किसी का पतन नहीं था। केवल बादशाहों की बादशाही सत्ता का पतन था। शिवाजी महाराज का स्वराज्य पूरे विश्व में न्यायपूर्ण राज्य हैं। उनके राज्य की न्याय व्यवस्था अन्य किसी राजा के राज्य में नहीं है। भूषण लिखते है कि, "भूषन भनत पातसाही पातसाहन मैं। तेरे सिवराज राज अदल जहान मैं।।"[१४०] अर्थात भूषण कहते है कि, शिवाजी महाराज के शासन में जो न्यायशिलता है उस प्रकार की न्यायशिलता पूरे संसार में कहीं पर भी नहीं हैं। शिवाजी महाराज गुंहेगार को दंडित करते समय भेदभाव नहीं करते। जो गुन्हेगार दंड के पात्र है, उसे ही दंडित किया जाता हैं। गुन्हेगार के अन्याय और अत्याचार की तीव्रता के अनुसार उसे दंड दिया जाता है। अन्याय करनेवाला चाहे गाँव का मुखिया, खानदानी मुसलमान, बडे-बडे राजा, सरदार को भी बनियों की भाँति और पठान पटवारियों के समान पकडकर दंडित किया गया सभी को समान न्याय मिलता था। भूषण लिखते है कि, "महता से मुगुल महाजन से महाराज। डाँडि लीन्हे पकरि पठान पटवारी से।"[१४१] अर्थात गाँव के मुखियाँ हो या मुगलों के अधिन राजा, महाराजा, सेठ साहुकार ने अगर गुनाह किया है, तो उसे दंडित किया जाता है। न्याय दान में छोटा-बडा, पद, पैसा, सत्ता का आधार नहीं हैं। गुन्हेगारों को पकडकर उन्होंने सामान्य बनियों, पठान, पटवारी के समान दंडित किया था। शिवाजी महाराज ने क्षमा दंड और वरदान देने का अधिकार अपने हाथ में रखा। शिवाजी महाराज न्यायशील राजा थे। वे स्वयं न्यायदान का

काम करते थे। उन्होंने न्याय करते समय भेदभाव नहीं किया था। न्याय देने का अधिकार आपने ही हाथ में रखा था। शिवाजी महाराज के न्याय को वर्णित करते हुए भूषण लिखते हैं, "मीडि राखे मुगुल मरोडि राखे पातसाह, बैरी पीसि राखे वरदान राख्यो कर मे।"[१४२] अर्थात मुगलों को नष्ट कर बादशाहों को मरोड दिया हैं। शत्रुओं को पीसकर अपने हाथों में मनोवाच्छित दंड या वरदान देने का अधिकार प्राप्त किया था। शिवाजी महाराज की न्यायप्रियता राज्य के संदर्भ में डॉ. वसंत मोरे लिखते है, "शिवाजी एक व्यक्ति न होकर एक नया विचार है, युग निर्माता है। शिवाजी ने अत्याचार का विरोध कर न्यायाधिष्ठी राज्य का निर्माण किया।"[१४३] शिवाजी महाराज ने स्वराज्य का निर्माण ही अन्याय, अत्याचारों के विरुध्द में किया था। वे न्याय के क्षेत्र में हमेशा सतर्क रहते थे। वे एक न्यायाधिश के रुप में आदर्श थे। उनका राज्य न्यायिक समता के आधार पर था। शिवाजी महाराज के राज्य व्यवस्था में न्यायदान करते समय गरीब या अमीर भेद नहीं होता था। उनका न्यायदान भेदभाव रहित, आदर्श, पारदर्शक और समता पर आधारित था। उन्होंने न्यायदान का कार्य अपने हाथों में लिया था। वे गुन्हेगारों को उनके गुनाह की तीव्रता को देखकर दंडित करते है। उनके राज्य में गरीब, स्त्री, बालक के उपर कभी भी अन्याय नहीं हुआ था।

इस प्रकार शिवाजी महाराज के राज्य में जनता सुखी और संपन्न थी। प्रजा के उपर किसी प्रकार का कोई अन्याय अत्याचार नहीं होता हैं। उनके राज्य में गुन्हेगार को दंड और गुणिजन को उचित सम्मान मिलता था। अंत में शिवाजी महाराज के स्वराज्य में एक आदर्श न्याय-व्यवस्था थी।

२.२.२७. बहुजन प्रतिपालक :

शिवाजी महाराज को बहुजनों का उध्दार करने के लिए भगवान विष्णु का अवतार रुपमाना है। म्लेच्छे को मारकर दीन दलित, पीड़ित, शोषितो की रक्षा करते हैं। संपूर्ण स्वराज्य के प्रजा पालक हैं। उनका उद्‌देश (प्रतिज्ञा) प्रण समस्त

प्राणियों के समुह को सुखी सुरक्षित और संपन्न रखना है। उन्होंने अपने तलवार से यह कार्य पापीयों का (म्लेच्छे) नाश करके सभी को सुपथ पर चलने के लिए संरक्षण देने के लिए किया है। भूषण लिखते हैं। "पापी घाल धरम सुपथ चालें मारतण्ड। करतार प्रन पालैं प्रानिन के चंड को।"[१४४] अर्थात शिवाजी महाराज की प्रतिज्ञा (प्रण) तलवार में दिखायी देती है। तलवार ने प्रण किया है कि, जो अधर्म के रास्तों पर जा रहे है उन पापियों का नाश करना हैं। उस अन्याय अत्याचारियों को मारकर सभी प्रजा को धर्म के सुपथ मार्ग पर लाने का प्रण करती हैं। वे अपनी प्रतिज्ञा का पालन पूरी निष्ठा से करती है। यहाँ कवि भूषण ने 'तलवार' को मानविकरण किया हैं। वस्तु: इस प्रकार की प्रतिज्ञा तलवार की न होकर शिवाजी महाराज की थी। साहित्यकारों ने शिवाजी महाराज के पराक्रम, वीरता को तलवार के साथ जोड दिया है जो पुर्णत: अनऐतिहासिक हैं। मध्यकालीन भारतीय समाज में बादशाह, वतनदार जागीरदारों के द्वारा समाज का शोषण होता था। उस काल में सामन्तवाद पूर्ण रुप से प्रतिष्ठित था। मध्यकालीन शोषित की समाज व्यवस्था के बारे में डॉ. नगेंद्र कहते है,"सामाजिक व्यवस्था का केंद्र बिंदू बादशाह था और उसके अधिन थे मनसबदार अथवा अमीर, उमराव। इनके बाद ओहदों के अनुसार दूसरे कर्मचारी आते थे और सबका कर्तव्य (कर्म) अपने से उपरवाले को प्रसन्न करना था, नीचेवाले को ये मात्र अपनी संपत्ति समझते थे, उनका अस्तित्व केवल अपने लिए मानते थे।"[१४५] समाज के इस शोषित और अत्याचारी व्यवस्था को सभी प्रजा का हित देखकर अपने स्वराज्य में इसे बंद कर दिया। बहुजन का शोषण करनेवाले पदाधिकारीयों के अधिकार पर पाबंदी ला दी थी।

समाज को शोषण से मुक्त करने का काम शिवाजी महाराज ने किया हैं। सभी प्रजा के पालनहार के रुप उन्होंने कार्य किया हैं। कवि भूषण ने पृथ्वी को स्त्री के रुप में वर्णित कर उसकी रक्षा और पालनकर्ता के रुप में शिवाजी महाराज को प्रस्तुत किया है। शिवाजी महाराज ही प्रजा की रक्षा, सुरक्षा करते है

और वही बहुजनों के पालक है। शिवाजी महाराज भगवान विष्णु के अवतार होने के कारण हिंदू धर्म में भगवान विष्णु का कार्य जगत का पालन-पोषण करना हैं। इसलिए शत्रु स्त्रियों कहती है कि, कोई शिवाजी से विनती करके कहें कि तुम तो सबका पालन पोषण करनेवाले हो। शत्रु स्त्री अपने पति को क्षमा करने की अराधना करती है। अपने पति को क्षमा करने के लिए वह कहती हैं, "तु सबको प्रति पालनहार बिचारे भतारु न मारु हमारे।"[१४६] अर्थात शत्रु स्त्री कहती है कि, शिवाजी महाराज आप सभी बहुजनों का प्रतिपालन करनेवाले है। कृपा करके आप हमारे पतियों को न मारे। शिवाजी महाराज समाज के सभी वर्गो के व्यक्तियों का पालन करते हैं। स्वराज्य के बहुजनों की शत्रुओं से रक्षा करते हैं। उन्होंने प्रजापालन के लिए ही नररुप धारण किया है। शिवाजी महाराज को बहुजन और पृथ्वी के उध्दारकर्ता का वर्णन करते हुए भूषण लिखते हैं, "दीनदयाल दुनि प्रतिपालक जे करता निरम्लेच्छ मही के। भूषण भूधर उध्दरिबो सुने और जिते गुन ते सिवजी के।"[१४७] अर्थात कवि भूषण कहते है कि, शिवाजी महाराज दीन, दुःखी, प्रजा पर दयालू भाव रखते है और वे समस्त संसार के पालक है। पृथ्वी को म्लेच्छों अत्याचारियों से मुक्त करनेवाले राजा है। पहाड (पहाडी प्रदेश) का उध्दार करने के लिए उनका अवतार हुआ है। विष्णु भगवान के जितने भी गुण है, वे सब शिवाजी महाराज में निहित में है। हिंदू धर्म के अनुसार सारे पृथ्वी का पालन-पोषण भगवान विष्णु करते हैं। अब कलयुग में सभी प्रजाओं का पालक शिवाजी महाराज बन गये है।

इस प्रकार बहुजन प्रतिपालक कार्य का वर्णन करते हुए कवियों ने उन्हे विष्णु का अवतार मानकर पृथ्वी पर दीन, गरीब, प्राणि मात्रा की रक्षा के रुप प्रस्तुत किया हैं। वे बहुजनों का पालक बनकर सभी प्रजा की रक्षा करते है। इस प्रकार शिवाजी महाराज का बहुजन प्रतिपालक रुप मध्यकालीन हिंदी साहित्य में परिलक्षित होता है।

२.२.२८. स्त्री के प्रति आदर भाव :

मध्यकालीन अधिकांश राजा जीवन संघर्ष को छोडकर भोग विलास में जीवन व्यतित करते थे। प्राचीन काल से लेकर मध्यकाल तक राजा के युध्द का मुख्य कारण कोई सुंदर स्त्री या काव्य की नायिका होती थी। पौराणिक, प्राचीन एवं मध्यकालीन अधिकांश युध्दों का में स्त्रियाँ या नायिका मुख्य कारण रही हैं। मध्यकालीन भारत के कुछ राजा तो राजदरबार के विलासी जीवन में ही मदमस्त रहते थे। राज्य के सामान्य लोगों की उनको कोई चिंता नहीं थी। राजदरबारों में मनोरंजन के लिए राजनर्तकी रखी जाती थी। पराजित शत्रु की स्त्रियों के उपर अत्याचार कर उनको अपनी दासी बनाते। शिवाजी महाराज के राज्य में स्त्री को पवित्र और पूजनिय स्थान था। उनके दरबार में कोई नर्तकीस्त्री मनोरंजन के लिए नहीं रखी थी। नारी के प्रति उनके विचार पुज्यभाव के थे। उनकी माता जीजाबाई से उन्हे नैतिकता का पाठ और संस्कार मिला था। किसी भी मध्यकालीन हिंदी साहित्यकार ने भी शिवाजी महाराज के द्वारा स्त्री के उपर अन्याय और अत्याचार का वर्णन नहीं किया। परंतु एक बात सच है कि, शत्रुओं के उपर शिवाजी महाराज की धाक का वर्णन कवि करते समय शत्रु स्त्री (पत्नी) के भय और डर का चित्रण किया है। इस वर्णन में अत्याधिक अतिश्योक्ति और कल्पना का सहारा लिया है। यह ऐतिहासिक सत्य है कि, महाराज का स्त्री के प्रति आदर युक्त दृष्टिकोन रहा है। शत्रु स्त्री की मनोदशा का वर्णन करते हुए भूषण लिखते हैं-

"अरितिय भिल्लिनि सों कहैं, घन बन जाय इकांत।
सिव सरजा सों बैर नहीं, सुखी तिहारे कन्त।"[१४८]

अर्थात शत्रु स्त्रियाँ एकांत गहन वन में जाकर भीलनियों (आदिवासी महिला) से कहती है कि, 'तुम बहुत सुखी हो क्योंकि तुम्हारे स्वामी (पति) के साथ शिवाजी महाराज की शत्रुता नहीं हैं।' हम इसलिए दु:खी है कि हमारे पति

के साथ शिवाजी महाराज की शत्रुता हैं। शिवाजी महाराज से नहीं बल्कि उनके पति से वैर होने से शत्रु स्त्री दुःखी हैं। अगर शिवाजी महाराज शत्रु के बदले मित्र रहते तो उनके पति सुखी रहते। यहाँ स्पष्ट है कि, सभी शत्रु शिवाजी महाराज से डरते थे। मध्यकालीन सामाजिक धारणा यह है कि, पति ही पत्नी की रक्षा करता है। लेकिन शत्रु स्त्री का पति होने से शत्रु की पत्नीयाँ डरती हुई दिखायी है। इससे स्पष्ट होता है की मित्र पक्ष और 'स्वराज्य' की स्त्रियाँ अत्यंत सुरक्षित हैं। भिलनियों का आनंद में रहना इससे स्पष्ट होजाता हैं कि, स्वराज्य में सभी स्त्रियाँ सुरक्षित है। इसलिए उनके पति सुखी है कि शिवाजी महाराज उनके पत्नीयों के मित्र हैं। कवि ने इस वर्णन में शत्रु स्त्री के डर में शिवाजी महाराज की धाक की अत्याधिक तिवृता को दिखाने का प्रयास किया है। स्वराज्य की सभी धर्मो की स्त्रियाँ वह हिंदू हो या मुस्लिम सुरक्षित और सुखी हैं। मध्यकालीन समाज में स्त्री का पति अगर सुरक्षित है, तो वे घर में सुरक्षित रहती हैं। उन स्त्री के लिए पति ही उनका प्रथम रक्षक था। किसी भी वैवाहिक स्त्री का पति अगर सुरक्षित नहीं है, तो भला उसकी पत्नी स्वयं को सुरक्षित कैसे महसुस करेगी। अगर सुरक्षित है भी तो अपने पति को असुरक्षित देखकर उनके मन में भय उत्पन्न होना स्वाभाविक है। भूषण कवि ने इस स्वभाविक अंतर्मन के भाव को अतिश्योक्ति और कल्पना जोडकर शिवाजी महाराज के धाक का वर्णन किया हैं। वस्तुतः यह ऐतिहासिक सत्य है कि, शिवाजी महाराज के मन में नारी के प्रति आदरयुक्त भावना थी। शिवाजी महाराज शत्रु स्त्री का भी अत्याधिक सम्मान करते थे। अपने सेना और सेनापतियों को भी स्त्री का अनादर करने वाले को दंडित किया है। युध्द में मराठा सेना के साथ नारी, दासी को रखना वर्जित था।

इस प्रकार मध्यकालीन युग भोगविलासीता का होने के बावजूद शिवाजी महाराज ने अपने स्वराज्य विस्तार की ओर ध्यान दिया। स्वराज्य में सभी स्त्रियों को सम्मान दिया। उन्होंने स्त्री के प्रति एक नया आदर्श समाज के सामने प्रस्तुत किया हैं। उन्होंने अपने स्वराज्य में स्त्रियों की रक्षा, सुरक्षा, सम्मान और

आदरयुक्त दृष्टिकोन रखा है। इतिहास भी इसी सत्य की ओर संकेत करता हैं। अतः हम यह कह सकते है कि, साहित्यकारों ने शिवाजी महाराज के धाक (भय) का वर्णन करने के लिए शत्रु स्त्री को भयभित या असुरक्षित दिखाने का प्रयास किया हैं। इस प्रकार के वर्णन में पूर्णतः सत्यता नहीं बल्कि अतिशयोक्ति और कल्पनाप्रधान वर्णन हैं।

२.२.२९. आदर्श शासक :

एक आदर्श शासक वहीं होता है, जो अपने स्वराज्य या देश में प्रजा को सुखी, संपन्न और सुरक्षित रखें। शासक का प्रधान कार्य जनकल्याण का होना चाहिए। इस दृष्टि से शिवाजी महाराज के स्वराज्य में जनता सुखी संपन्न, सुरक्षित है। स्वराज्य की प्रजा के दुःख का निवारण शिवाजी महाराज ने किया है। भूषण स्वराज्य की सुखी प्रजा का वर्णन करते हुए लिखा हैं, "कढि गई रैयति के मन की कसक सब।"[१४९] अर्थात शिवाजी महाराज ने रयत (प्रजा) के मन की सब दुःखों का हरण कर दिया हैं। उनके स्वराज्य में चोरी डकैती न के बराबर है। स्वराज्य में गुणी पुरुष ही अपने गुणों से दूसरों के चित्तों को चुरानेवाले हैं और कोई मनुष्य चोर नहीं हैं। राज्य की प्रजा बंधनों से मुक्त है। केवल शिवाजी महाराज का प्रेमरुपी रस्सी का बंधन हैं। स्वराज्य में राजा का प्रजा के प्रति और प्रजा का राजा के प्रति प्रेम बंधन है अन्य सभी बंधनों से मुक्त है। स्वराज्य में सभी को मुक्त रुप से जीवन जीने के लिए स्वतंत्रता दी गयी है। शिवाजी महाराज के स्वराज्य में सुव्यवस्था थी। स्वराज्य की प्रजा के स्वतंत्रता और समानता का वर्णन कवि भूषण करते हैं, "गुनिगन चोर जहाँ एक चित ही के, लोक बँधे जहाँ एक सरजा की गुन प्रीति है।"[१५०] अर्थात गुणीजन केवल गुणों से ही दूसरों का (चित) अपने ओर आकर्षित करते है। गुणी व्यक्तियों को सम्मानित किया जाता है। सभी गुणों के आधार पर ही व्यक्ति पदों की नियुक्ति होती है। लोग बंधन मुक्त जीवन जी रहे है। शिवाजी महाराज के जैसा आदर्श राजा चार

युगों में अभी तक नहीं हुआ है। सत्य, द्वापार, त्रेता और कलियुग में शिवाजी महाराज एक आदर्श राजा हुए है। उनके आदर्श राजा के स्वरुप का वर्णन करते हुए भूषण कहते है, "सतयुग द्वापर औ त्रेता कलियुग मधि आदि भयो नाहिं भूप घरी।"[१५१] अर्थात शिवाजी महाराज के जैसा राजा चार युगों में पृथ्वी पर नहीं हुआ है। वे एक आदर्श राजा और शासक बन चुके हैं। उनके जैसा राजा सत्य युग, द्वापारयुग, त्रेता युग और कलीयुग (वर्तमान) युग में भी नहीं हुआ हैं।

शिवाजी महाराज आदर्श शासक है, जो आज भी वर्तमान समय में उनके दूरदर्शि विचार और निर्णय की प्रासंगिकता से स्पष्ट होता है। डॉ. भगवान दास तिवारी कवि भूषण के साहित्यिक महत्व के संदर्भ में अपने मंतव्य को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं- "भूषण का महत्व उनके काव्य के चरित नायकों को है, जो अपने युग के ही नहीं युग-युग के लिए भारत के आदर्श लोकनायक हैं।"[१५२] सोये हुए भारतीय समाज मन को शिवाजी महाराज ने जगा दिया था। उन सभी में अन्याय-अत्याचार के विरोध में चेतना जगाने का काम किया हैं। इस कारण स्वाभिमानी कवि भूषण ने एक स्वाभिमान आदर्श राजा के गुणों का गान किया हैं। स्वराज्य शासन को चलाने के लिए अलग-अलग आठ विभाग तैयार किये थे। शिवजी महाराज की शासन व्यवस्था में अष्टप्रधान मंडल की स्थापना थी। शासन की सुव्यवस्था के लिए उन्होंने आठ मंत्रियों का मंडल तैयार किया। इसमें शासन प्रबंध में महारथी हासिल हो उन्हीं को अष्ट प्रधान पदों पर नियुक्त किया। अष्टप्रधान के संदर्भ में आ. विश्वनाथ प्रसाद लिखते है; "इनके अष्टप्रधान नाम की सभा थी, जिसमें ८ सदस्य पेशवा, पंत, अमात्य, पंत-सचिव, मंत्री, सेनापति, सुमंत, न्यायाधीश और पंडितराव थे। प्रत्येक सदस्य के अधिन एक विभाग था। शासन-प्रबंध के अतिरिक्त शिवाजी का सैनिक-प्रबंध भी प्रशंसनीय था। युध्द के लिए इनके पास जल तथा स्थल दोनों प्रकार की सेनाएँ थीं। सरकारी कर्मचारीयों को वेतन राज्य के कोष से मिलता था।"[१५३] शिवाजी महाराज ने आठ लोगों को राज्य की अलग-अलग विभाग की जिम्मेदारी दी थी। इन अष्टप्रधान में शासन

प्रबंध और सेनाप्रबंध का कार्य प्रशांसनीय रहा था। शिवाजी महाराज ने भूदल के साथ-साथ नौदल का भी निर्माण किया था। वे भारत के प्रथम नैसेना के प्रवर्तक माने जाते है।

शिवाज महाराज के इस प्रकार की शासन व्यवस्था को देखकर पता चलता है कि, उनमें लोकतांत्रिक मूल्य समाहित है। उनके राज्य में प्रजा स्वतंत्र रुप से बंधनों से मुक्त जीवन यापन करती है। वे स्वातंत्र्य, समता, बंधुता, न्याय और धर्म निरपेक्षता का पुरस्कार करनेवाले आदर्श राजा थे। उनकी स्वतंत्र सार्वभौम एक आदर्श शासन व्यवस्था थी। इस शासन व्यवस्था में लोकतांत्रिक मूल्य स्वातंत्र्य, समता, बंधुता और समान न्याय का पालन किया जाता था। शिवाजी महाराज एक आदर्श शासन व्यवस्था के एक आदर्श शासक थे।

निष्कर्ष :

मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज के बहिरंग और अंतरंग स्वरुप का वर्णन साहित्यकारों ने किया हैं। शिवाजी महाराज का राजवंश उत्तर भारत के क्षत्रिय राजपुत के श्रेष्ठ 'सूर्यवंशी' कूल में जन्म हुआ है। उनके जन्मतिथि, जन्मस्थान और माता जीजाबाई के नाम भी मध्यकालीन हिंदी साहित्य में उपलब्ध नहीं हैं। शिवाजी महाराज के शारीरिक सुंदरता के कारण उनका नामकरण शिवाजी किया हैं। उनकी शक्तिशाली भुजाएँ, चेहरे पर मुँछों के साथ तेज झलकता है। उनकी वेशभूषा घटना, प्रसंगों के अनुसार बदलती है। निश्चित वेशभूषा का वर्णन साहित्य में उपलब्ध नहीं हैं। शत्रु के द्वारा अनुचित व्यवहार करने पर उसे तुरंत प्रतिक्रिया देते हैं। स्वराज्य की राजधानी किले रायगढ़ की प्राकृतिक और भौतिक सुंदरता का चित्रण हुआ हैं। किले रायगढ़ के वर्णन में कहीं-कही अतिशयोक्ति दिखाई देती है। शिवाजी महाराज के नगाडों की आवाजों से युध्द की तैयारी और युध्द विजय का संकेत मीलता हैं। परंतु इस नगाडों की आवाजों के कारण शत्रु और शत्रु स्त्री भयभित है। इस अंतरिक भय के वर्णन में

अतिशयोक्ति दिखाई हैं। शिवाजी महाराज की तलवार को अवतारी रुप देकर उसका काल्पनिक और अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन हिंदी साहित्य में हुआ हैं। शिवाजी महाराज के राज्याभिषक और मृत्यु संबंधी जानकारी मध्यकालीन हिंदी साहित्य में उपलब्ध नहीं हैं।

शिवाजी महाराज बचपन से ही पराक्रमी थे। उनके शिक्षा को लेकर मध्यकालीन हिंदी साहित्य में कोई वर्णन उपलब्ध नहीं है। लेकिन इतिहास में उनके पिता शाहजी राजा ने कुछ विशेषज्ञ लोगों को उनके शिक्षा हेतू नियुक्त किया था। उनकी माता जीजाबाई ने भी स्वयं उन्हें शिक्षा दी थी। शिवाजी महाराज प्रतिभा संपन्न राजा है। पाँच पाडवों के पाँच गुणों का संचय एक शिवाजी महाराज में है। पृथ्वी को निरम्लेच्छ (अत्याचारी) से मुक्त करने की प्रतिज्ञा ली और उस प्रतिज्ञा पर अटल रहे हैं। विपरित परिस्थितियों में बडे-से बडे शक्तिशाली शत्रु के सामने भी अपने स्वाभिमान को जागृत रखा था। शिवाजी महाराज भवानी देवी, भगवान शिवजी, पिता शाहजी, स्वधर्म और बडों के प्रति श्रध्दा रखते थे। हिंदी साहित्य में उनकी माता जीजाबाई का श्रध्दा के रुप में वर्णन उपलब्ध नहीं हैं। निर्भय व्यक्ति में ही साहस होता है। शिवाजी महाराज निर्भयी और साहसी राजा थे। वे स्वराज्य के प्रति दिन-रात कार्यक्षम रहते हैं। अन्याय, अत्याचार के विरोध में प्रजा, सरदार, विभिन्न प्रदेश के राजाओं को संघटित किया हैं। उनकी साम, दाम, दंड, भेद की राजनीतिक गुढता को शत्रु आदिल, मुगल, अंग्रेज, फ्रेंच, डच, पोर्तूगिज, कुतुबशाह, हब्शि कभी नहीं समझ सके। परंपरागत युध्दनीति के साथ-साथ गनिम कावा, छापामारी, निषायुध्द के तंत्र का उपयोग भी किया है। उनके स्वराज्य का प्रधान उद्‌देश प्रजा का हित था। वे प्रजा हित के प्रति हमेशा सतर्क रहते थे। उन्हें स्व-धर्म के प्रति अभिमान था। उन्होंने हिंदू धर्म के रुढी, प्रथा, परंपराओं का निर्वाहन किया। परंतु कभी भी अनिष्ठ प्रथा का पालन नहीं किया। हिंदू धर्मग्रंथ, पवित्र स्थान, संस्कृति और धर्म की आचरण का रक्षण किया हैं।

शिवाजी महाराज वीर योद्धा और पराक्रमी राजा थे। उन्होंने शक्तिशाली आदिलशाह, मुगलशाही को और अन्य शत्रुओं को पराजित किया हैं। उनकी चतुरंगी सेना भी अत्यंत पराक्रमी थी। शिवाजी महाराज और उनकी सेनाओं का शत्रु पक्ष पर अत्याधिक धाक था। वे हमेशा प्रजा और शत्रुओं के प्रति दया का भाव दिखाते हैं। शिवाजी महाराज महादानी राजा के रुप में सर्वश्रेष्ठ हैं। वे सभी को भेदभाव रहित समान दान देते हैं। उनकी वैभव संपन्नता को हाथी घोडे, जहाज, अरमार, किले, हिरे, जवाहरात की तुलना पौराणिक भगवान कुबेर, और देवराज इंद्र से की हैं। साहित्य के वर्णन में शिवाजी महाराज वे भगवान विष्णु का अवतार लेकर पृथ्वी पर अवतारी पुरुष के रुप में अत्याचारियों का विनाश करने का कार्य किया हैं। उनकी यश और कीर्ति देश विदेशों के चारों ओर पहुँच चुकी हैं। उदारता उनके व्यक्तित्व को और भी सुशोभित करती हैं। शिवाजी महाराज के स्वराज्य की न्याय व्यवस्था संपूर्ण विश्व में प्रसिध्द हैं। वे स्वराज्य के बहुजनों का पालन और रक्षण करते हैं। स्त्री के प्रति उनका दृष्टिकोण पूजनिय रहा है। स्वराज्य की सभी स्त्रियाँ सुखी और सुरक्षित हैं। हिंदी साहित्य में शत्रु स्त्री के प्रति शिवाजी महाराज के दृष्टिकोण वर्णन में अत्याधिक काल्पनिकता दिखाई देती है। शिवाजी महाराज एक आदर्श लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना और पालन करनेवाले शासक थे।

अतः शिवाजी महाराज के मध्यकालीन हिंदी साहित्य के स्वरुप वर्णन में अनेक स्थानों पर ऐतिहासिक घटनाओं की पुष्टि भी होती हैं। कहीं-कहीं शिवाजी महाराज के स्वरुप का अतिशयोक्तिपूर्ण और काल्पनिक चित्रण भी हिंदी साहित्य में हुआ हैं। मध्यकालीन हिंदी साहित्य ने शिवाजी महाराज के ऐतिहासिक घटनाओं का भी ऐतिहासिक वर्णन साहित्य के माध्यम से साहित्यकारों ने वर्णित किया है।

संदर्भसूची :

१. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराजभूषण, पृ.सं. १५१

२. वही, पृ. सं. ०४

३. वही, पृ. सं. ०४

४. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराजभूषण, भूमिका से पृ. सं. १६

५. आ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, भूषण ग्रंथावली, पृ. सं. १२९

६. सं. पं. राजनारायण शर्मा, भूषण ग्रंथावली, पृ. सं. ०६

७. सं. प. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, पृ. सं. ०६

८. वही, पृ. सं. ९५

९. वही, पृ. सं. ०७

१०. सं. पुरुषोत्तम शास्त्री रानडे और वासुदेव शास्त्री मराठे, शिवभारत, पृ.सं. १७

११. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, पृ. सं. २०२

१२. वही, पृ. सं. ०८

१३. वही, पृ. सं. ३८

१४. वही, पृ. सं. ४०

१५. डॉ. भगवानदास तीवारी, भूषण : साहित्यिक एवं ऐतिहासिक अनुशीलन, पृ. सं. २९८

१६. सं. सर जदुनाथ सरकार और रघुवीर सिंह, शिवाजीस् विजिदस औरंगजेब अैट आग्रा, पृ. सं. ३५

१७. सं. पं. हरिशंकर शर्मा, शिवा बावनी, पृ. सं. ६७

१८. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, पृ. सं. १८२

१९. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, पृ. सं. ०८

२०. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, पृ. सं. १०

२१. वही, पृ. सं. १०

२२. वही, पृ. सं. १२

२३. वही, पृ. सं. १३

२४. सं. पं. राजनारायण शर्मा, भूषण ग्रंथावली, भाग (ख) पृ. सं. ०२

२५. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, पृ. सं. ११४

२६. हरिशंकर शर्मा, शिवा बावनी, पृ. सं. ९२

२७. वही, पृ. सं. ५०

२८. सं. पं. हरिशंकर शर्मा कविरन्त, शिवा बावनी, पृ. सं. १०१

२९. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, पृ. सं. ४१

३०. वही, पृ. सं. १३८

३१. सं. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, भूषण ग्रंथावली, पृ.सं. २००

३२. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, पृ. सं. ०८

३३. डॉ. वसंत मोरे, शिवाजी की साहित्यिक प्रतिमा, पृ. सं. २७४

३४. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, भूमिका से पृ. सं. २३

३५. सं. आ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, भूषण ग्रंथावली, पृ. सं. २००

३६. सं. पं. राजनारायण शर्मा, भूषण ग्रंथावली, पृ. सं. ११०

३७. सं. आ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, भूषण ग्रंथावली, पृ. सं. २००

३८. सं. स.म. दिवेकर, पर्णालपर्वत गृहणाख्यान, पृ. सं. ४२

३९. सं. पं. राजनारायण शर्मा, भूषण ग्रंथावली, पृ. सं. १७१

४०. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, पृ. सं. ८५

४१. सं. पं. राजनारायण शर्मा, भूषण ग्रंथावली, पृ. सं. १०५

४२. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, पृ. सं. १६२

४३. सं. पं. राजनारायण शर्मा, भूषण ग्रंथावली, पृ. सं. १७५

४४. सं. पं. हरिशंकर शर्मा, शिवा बावनी, पृ. सं. १०२

४५. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, पृ. सं. १६३

४६. वही, पृ. सं. ७९

४७. सं. श्यामसुंदरदास बा.ए. और कृष्ण बल्देव वर्मा, लाल कवि रचित छत्रप्रकाश, पृ. सं. ७८

४८. सं. पं. हरिशंकर शर्मा, शिवा बावनी, पृ. सं. ६६-६७

४९. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, पृ. सं. ११२

५०. वही, पृ. सं. १८२

५१. सं. आ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, भूषण ग्रंथावली, पृ. सं. १०४

५२. सं. श्यामसुंदरदास बा. ए. और कृष्ण बल्देव वर्मा, लाल कवि रचित छत्रप्रकाश, पृ. सं. ७९

५३. डॉ. उदयनारायण तिवारी, वीरकाव्य, पृ. सं. ३१७

५४. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, पृ. सं. ०८

५५. वही, पृ. सं. १९१

५६. सं. पं. हरिशंकर शर्मा, शिवा बावनी, पृ. सं. ८७

५७. वही, प्रस्तावना से, पृ. सं. ३३

५८. सं. पं. हरिशकंर शर्मा, शिवा बावनी, पृ. सं. ७४

५९. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, पृ. सं. ८८

६०. वही, पृ. सं. ११२

६१. वही, पृ. सं. ११८

६२. वही, पृ. सं. ०८

६३. सं. पं. राजनारायण शर्मा, भूषण ग्रंथावली, पृ. सं. १०४

६४. वही, पृ. सं. १४०

६५. डॉ. भगवानदास तिवारी, भूषण : साहित्यिक एवं ऐतिहासिक अनुशील, पृ. सं. २९८

६६. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, पृ. सं. १०६

६७. संपा. नगेंद्रनाथ वसु, हिंदी विश्व कोष, पृ. सं. १०७

६८. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, पृ. सं. ११८

६९. सं. पं. हरिशंकर शर्मा, शिवा बावनी, प्रस्तावना से पृ.सं. २६

७०. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, पृ. सं. ६३

७१. गो. स. सरदेसाईर, मराठो का नवीन इतिहास (प्रथम खंड), पृ. सं. २६१

७२. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, पृ. सं. ४०

७३. वही, भूमिका से, पृ. सं. १८

७४. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, पृ. सं. १२६

७५. सं. पं. राजनारायण शर्मा, भूषण ग्रंथावली, भाग (ख) फुटकर, पृ. सं. १४

७६. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, पृ. सं. ११८

७७. सं. देवी सिंग चौहान, तारिखे इश्कंदरी, पृ. सं. ४१,४२

७८. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, (भूमिका से), पृ. सं. २१

७९. वही, पृ. सं. ६२

८०. डॉ. वसंत मोरे, छ. शिवाजी की साहित्यिक प्रतिमा, पृ. सं. ३०१

८१. सी. बा. हार्डिकर, मराठा राज्य की स्थापना अथवा छत्रपती शिवाजी, पृ. सं. २५०,२५१

८२. सं. पं. हरिनारायण शर्मा, शिवा बावनी, प्रस्तावना से, पृं. सं. २५,२६

८३. सं. पं. हरिशंकर शर्मा, शिवा बावनी, पृ. सं. ९८

८४. वही, पृ. सं. १०३

८५. डॉ. वसंत मोरे, छ. शिवाजी की साहित्यिक प्रमिमा,पृ. सं. १२१

८६. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, पृ. सं. ०८

८७. सं. पं. हरिशंकर शर्मा, शिवाबावनी, पृ. सं. ७५

८८. वही, पृ. सं. १०२

८९. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, पृ. सं. १७३

९०. गो. स. सरदेसाई, मराठों का नवीन इतिहास प्रथम खंड पृ. सं. २६५

९१. सं. पं. हरिशंकर शर्मा, शिवा बावनी, पृ. सं. ५६

९२. प्रो. रमा नवले, भूषण का प्रशस्ति काव्य, पृ. सं. ६६

९३. सं. पं. हरिशंकर शर्मा, शिवा बावनी, पृ. ७४
९४. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज राजभूषण, पृ. सं. १९१
९५. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, पृ. सं. ५६
९६. वही, पृ. सं. ११४
९७. सं. पं. हरिनारायण शर्मा, शिवा बावनी, पृ. सं. ७७
९८. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, पृ. सं. ८६
९९. सं. पं. हरिशंकर शर्मा, शिवा बावनी, पृ. सं. ७६
१००. डॉ. वसंत मोरे, छ. शिवाजी की साहित्यिक प्रतिमा, पृ. सं. १४१
१०१. डॉ. भगवानदास तिवारी, भूषण साहित्यिक एवं ऐतिहासिक अनुशीलन, पृ. सं. ४१९
१०२. सं. पं. हरिशंकर शर्मा, शिवा बावनी, पृ. सं. ५०
१०३. सं. पं. राजनारायण शर्मा, भूषण ग्रंथावली, पृ. सं. ७८
१०४. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, पृ. सं. १५६
१०५. सं. आ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, भूषण ग्रंथावली, पृ. सं. २१३
१०६. डॉ. भगवानदास तिवारी, भूषण : साहित्यिक एवं ऐतिहासिक अनुशीलन, पृ. सं. २५९
१०७. सं. पं. हरिशंकर शर्मा, शिवा बावनी, पृ. सं. ६६
१०८. वही, पृ. सं. ९३
१०९. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, पृ. सं. ५२
११०. सं. पं. हरिशंकर शर्मा, शिवा बावनी, पृ. सं. ७९
१११. वही, पृ. सं. ८५
११२. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, पृ. सं. १०२
११३. डॉ. शिवकुमार शर्मा, हिंदी साहित्य : युग और प्रवत्तियाँ, पृ. सं. ४०४
११४. सं. पं. हरिशंकर शर्मा, शिवा बावनी, पृ. सं. ८७
११५. वही, पृ. सं. ९१

११६. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, पृ. सं. १४२

११७. वही, पृ. सं. २१

११८. वही, पृ. सं. २००

११९. वही, पृ. सं. १२८

१२०. वही, पृ. सं. ८४

१२१. डॉ. भगवानदास तिवारी, भूषण : साहित्यिक एवं एतिहासिक अनुशीलन, पृ. सं. २९६

१२२. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, पृ. सं. ९५

१२३. वही, पृ. सं. ०९

१२४. वही, पृ. सं. ११७

१२५. वही, पृ. सं. ८५

१२६. आ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, भूषण ग्रंथावली, पृ. सं. १३७

१२७. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, पृ. सं. १७४

१२८. वही, पृ. सं. १३६

१२९. वही, पृ. सं. ९७

१३०. वही, पृ. सं. २२

१३१. सं. पं. हरिशंकर शर्मा, शिवा बावनी, पृ. सं. १०१

१३२. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, पृ. सं. ११४

१३३. सं. सं. म. दिवेकर, पर्णाल पर्वत गृहणाख्यान, पृ. सं. १७

१३४. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, भूमिका से, पृ. सं. १८

१३५. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, पृ. सं. ८२

१३६. वही, पृ. सं. २०३

१३७. सं. पं. राजनारायण शर्मा, भूषण ग्रंथावली, भाग (ख) फुटकर, पृ. सं. १०४

१३८. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, पृ. सं. ८४

१३९. डॉ. शिवकुमा शर्मा, हिंदी साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ, पृ. सं. ४०४

१४०. सं. पं. राजनारायण शर्मा, भूषण ग्रंथावली, भाग (ख) फुटकर, पृ. सं. १०७

१४१. सं. पं. हरिशंकर शर्मा, शिवा बावनी, पृ. सं. ८७

१४२. वही, पृ. सं. १०२

१४३. डॉ. वसंत मोरे, छ. शिवाजी की साहित्यिक प्रतिमा, पृ. सं. ६७९

१४४. सं. पं. हरिशंकर शर्मा, शिवा बावनी, पृ. सं. १०२

१४५. डॉ. नगेंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. सं. २८३

१४६. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, पृ. सं. १३६

१४७. वही, पृ. सं. १७४

१४८. वही, पृ. सं. १०२

१४९. सं. पं. हरिशंकर शर्मा, शिवा बावनी, पृ. सं. ९८

१५०. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, पृ.सं. १४६

१५१. सं. पं. विश्वनाथ प्रसाद मिश्रा, भूषण ग्रंथावली, पृ. सं. २२१

१५२. डॉ. भगवानदास तिवारी, भूषण साहित्यिक एवं ऐतिहासिक अनुशीलन, पृ. सं. ४७०

१५३. आ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, भूषण ग्रंथावली पृ. सं. १०५

तृतीय अध्याय

मध्यकालीन मराठी साहित्य में वर्णित छत्रपति शिवाजी महाराज का स्वरुप

तृतीय अध्याय

मध्यकालीन मराठी साहित्य में वर्णित छत्रपति शिवाजी महाराज का स्वरुप

३.०) प्रस्तावना

३.१) मध्यकालीन मराठी साहित्य में वर्णित शिवाजी महाराज का बहिरंग स्वरुप :

३.१.१. शिवाजी महाराज के राजवंश का वर्णन

३.१.२. जन्म और नामकरण

३.१.३. आकृति और वेशभूषा

३.१.४. क्रिया-प्रतिक्रिया का चित्रण

३.१.५. किले रायगढ का वर्णन

३.१.६. शिवाजी महाराज के नगाडों का वर्णन

३.१.७. शिवाजी महाराज की तलवार का वर्णन

३.१.८. राज्याभिषक का वर्णन

३.१.९. छत्रपति शिवाजी महाराज की मृत्यु

३.२) मध्यकालीन मराठी साहित्य में वर्णित शिवाजी महाराज का अंतरंग स्वरुप :

३.२.१. बचपन और शिक्षा

३.२.२. नम्रता

२.२.३. बुध्दि चातुर्यता

२.२.४. दृढ प्रतिज्ञा

३.२.५. स्वाभिमान

३.२.६. श्रध्दावान

३.२.७. साहसी और निर्भयता

३.२.८. कार्यक्षमता

३.२.९. कुशल संघटक

३.२.१०. कुशल राजनीतिज्ञ

३.२.११. कुशल युध्दनीतिज्ञ

५.२.१२. प्रजाहित दक्ष

३.२.१३. स्वधर्माभिमान

३.२.१४. हिंदू धर्म रक्षक

३.२.१५. वीर योध्दा

३.२.१६. पराक्रमी राजा

३.२.१७. पराक्रमी सेना नायक

३.२.१८. शत्रुपक्ष पर धाक

३.२.१९. दयावीर

३.२.२०. दानवीर

३.२.२१. वैभव संपन्न राजा

३.२.२२. अवतारी पुरुष

३.२.२३. कीर्ति और यशवंत राजा

३.२.२४. दुरदर्शिता

३.२.२५. उदारमतवादी

३.२.२६. न्यायप्रिय राजा

३.२.२७. बहुजन प्रतिपालक

३.२.२८. स्त्री के प्रति आदरभाव

३.२.२९. आदर्श शासक

तृतीय अध्याय

मध्यकालीन मराठी साहित्य में वर्णित छत्रपति शिवाजी महाराज का स्वरुप

३.०) प्रस्तावना :

मध्यकालीन मराठी भाषा साहित्य में किसी महापुरुषों के गुणगान या उनके यश और कीर्ति का गान करने के लिए 'शाहिर' पोवाडे की रचना करते थे। मराठी साहित्यकार तथा भाषा के विद्वान इसे 'वीरकाव्य' कहते है। यह काव्य गेय के रुप में लोगों को मातृभूमि के प्रति प्रेम आत्म बलिदान और समर्पण की भावना को जगाता था। इन पोवाडा गान करनेवाले कवियों को मराठी में 'शाहिर' कहाँ जाता हैं। इसी काल में मराठी साहित्य में राजा और उनके पूर्वजों के यश का गान किया हुआ दिखायी देता है। राजा अपने दरबारी विद्वान को जो कि व्यक्ति घटना प्रसंग का जानकारी रखता हो, उन्हें यशगान का आदेश देते थे। उस विद्वान या जानकार व्यक्ति राजा और उनके पूर्वजों के यश, पराक्रम, वीरता आदि प्रमुख घटनाओं को अपने स्मृति का आधार लेकर साहित्य में वर्णन प्रस्तुत करता हैं। इस प्रकार का राजदरबारी साहित्य प्रमुख रुप से गद्यात्मक होता है। इस साहित्य को मराठी में 'बखर' (जीवनी) कहाँ जाता हैं। किसी व्यक्ति के चरित्र को स्मृति पर आधारित या कुछ दस्तावेजों के आधार बनाकर प्रस्तुत किया जाता हैं। साहित्यकार जब किसी महान व्यक्ति के बारे में उनके घटना, प्रसंग का वर्णन करता है उसे 'बखर' कहाँ जाता हैं। 'बखर' यह शब्द 'खबर' शब्द से बना हुआ हैं। 'खबर' का अर्थ 'घटित घटनाओं का वर्णन' होता हैं।

संक्षेप में अगर कहाँ जाये तो मध्यकालीन मराठी साहित्य में महापुरुष तथा किसी वीर, पराक्रमी राजाओं का वर्णन शाहिरों 'काव्य' में पोवाडा के माध्यम से किया हैं। यही वर्णन 'गद्य साहित्य' में लेखक 'बखर' के माध्यम से साहित्य में वर्णन करते थे। 'बखर' साहित्य को हिंदी में 'जीवनी साहित्य' कहाँ जाता हैं।

मध्यकालीन भारत का कुछ प्रदेश छोडकर भारत के सभी भागों पर विदेशी शासकों की सत्ता स्थापित हो चुकी थी। सभी देशी राजा एक-एक करके मुस्लिम सत्ता के अधिनता को स्वीकार कर रहे थें। ऐसे विपरित समय में दक्षिण भारत (महाराष्ट्र) के सह्याद्रि के शिखरों में स्वराज्य का नारा घूमने लगा था। लोगों में मातृभूमि के प्रति प्रेम, स्वाभिमान, आत्म सम्मान स्वदेश की रक्षा के लिए और अन्याय, अत्याचार का विरोध करने के लिए लोगों में चेतना जागृत करनेवाले छत्रपति शिवाजी महाराज का जन्म हो चुका था। उन्होंने स्वदेशी स्वतंत्र सार्वभौम स्वराज्य का निर्माण किया था। मध्यकालीन मराठी साहित्यकारों ने इस महान, पराक्रमी, वीर राजा के यश और कीर्ति का गुणगान किया हैं। उनका वर्णन करने के लिए शाहिरों ने 'पवाडा', तो चरित्रात्मक लेखकों ने उनके उपर जीवनीयों की रचना की हैं।

छत्रपति शिवाजी महाराज का जन्म महाराष्ट्र में तो हुआ, लेकिन उनका कार्य महाराष्ट्र तक सीमित नहीं रहा बल्कि पुरा राष्ट्र व्यापी बन गया हैं। इसलिए आज वे राष्ट्र निर्माता (नायक) के रुप में दिखाई देते हैं। भारत के अधिकांश भाषाओं में उनके 'शिवचरित्र' को लेखक और कवियों ने पहुँचाने का काम किया है। मुख्य रुप से मध्यकाल में संस्कृत, हिंदी के साथ-साथ मराठी भाषा में भी उनके उपर साहित्य लिखा गया है। मध्यकालीन मराठी साहित्यकारों ने भी अपने साहित्य के माध्यम से शिवाजी महाराज के स्वरुप को चित्रित करने का प्रयास किया हैं। उनके पराक्रम, यश, कीर्ति, वीरता का वर्णन शिवकालीन शाहिर अज्ञ ाानदास ने अफजल खाँ वध के बाद राजमाता जीजाबाई के सामने 'अफजल खान-वध' का पोवाडा प्रस्तुत किया था। शाहिर तुलसीदास ने शिवाजी महाराज के सामने सरदार तानाजी मालुसरे के पराक्रम पर 'तानाजीचा पोवाडा' लिखा हैं। इसके अतिरिक्त समकालीन संत तुकाराम महाराज और रामदास स्वामी के कुछ अभंग में उनके गुणों का वर्णन मिलता हैं।

मध्यकालीन गद्य बखर (जीवनी) साहित्य में छ. शिवाजी महाराज के मृत्यु पश्चात उनके छोटे पुत्र 'राजाराम' के आदेश पर कृष्णाजी अनंद सभासद ने सन १६९७ में 'सभासद बखर' नामक जीवनी की रचना की थीं। इसमें छ. शिवाजी महाराज के यश पराक्रम, वीरता, कीर्ति, युध्दनीति, राजनीति, प्रशासन, प्रजापालन, आदि स्वरुप के गुणों का चित्रण किया हैं। उनके बाद 'एक्यानव कलमी बखर' सन १७०७ में दत्ताजी त्रिंबक वाकनवीस ने लिखी हैं। सन १७६५ में रघुनाथ यादव ने 'चित्रगुप्त बखर' १८११ में मल्हार रामराव चिटणिस ने 'सप्तप्रकरणात्मक बखर' लिखी हैं। सन् १८१८ में 'शिवदिग्विजय' बखर भी लिखी गयी लेकिन इसका लेखक अज्ञात है। इस जीवनी का संपादन दांडकरजी ने किया हैं। कृष्णाजी अनंद सभासद शिवाजी महाराज के समकालीन राजदरबार में विद्वान और विश्वासपात्र थे। 'सभासद बखर' सभी जीवनीयों में ऐतिहासिक साहित्य और ऐतिहासिक वर्णन में अत्याधिक महत्त्वपूर्ण मानी जाती हैं। उनके द्वारा किया गया शिवाजी महाराज का वर्णन अधिकांश ऐतिहासिक सत्यता से मेल खाता हैं। अन्य जीवनियों के घटना वर्णन में काल्पनिकता, मनोरंजकता और कहीं-कहीं घटनाओं के विपरित प्रसंगों को दर्शाया हैं। ऐसा वर्णन एतिहासिक साहित्य और इतिहास को भी हानी पहुँचाता हैं। इस प्रकार के वर्णन में जीवनीकारों की अपनी कल्पकता, विचारधारा, सुनी सुनाई बतों का काल्पनिक चित्रण का वर्णन अपने बुध्दि के आधार पर प्रस्तुत किया हैं। शोधप्रबंध के इस अध्याय में मध्यकालीन मराठी साहित्य के वर्णित शिवाजी महाराज के स्वरुप का वर्णन ऐतिहासिक साहित्य और इतिहास के दृष्टि को देखकर किया गया है।

मध्यकालीन मराठी साहित्य में वर्णित शिवाजी महाराज का स्वरुप :

शोध प्रबंध के इस अध्याय में शिवाजी महाराज के स्वरुप का विस्तृत अध्ययन किया हैं। अध्ययन की सुविधा के लिए इस अध्याय को मैंने दो चरणों में विभक्त किया हैं। १. मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के स्वरुप

का बहिरंग चित्रण २. मध्यकालीन राठी साहित्य में वर्णित शिवाजी महाराज के का अंतरंग चित्रण किया है। अध्याय के प्रथम चरण के अंतर्गत बहिरंग स्वरुप के शिवाजी महाराज के राजवंश का वर्णन, जन्म और नामकरण आकृति और वेशभूषा, क्रिया प्रतिक्रिया का वर्णन, किलें रायगढ का वर्णन, नगाडों का वर्णन, तलवार का वर्णन, राज्यभिषक वर्णन और अंत में उनकी मृत्यु का वर्णन किया हैं।

इस अध्याय के दूसरे चरण में शिवाजी महाराज के अंतर्गत स्वरुप के वर्णन में २९ मद्दों के द्वारा विस्तृत अध्ययन किया हैं। मध्यकालीन मराठी साहित्य में छ. शिवाजी महाराज के समग्र स्वरुप का अध्ययन निम्न मुद्दों के आधार पर करेंगे।

३.१) मध्यकालीन मराठी साहित्य में वर्णित शिवाजी महाराज का बहिरंग स्वरुप :

३.१.१. शिवाजी महाराज के राजवंश का वर्णन :

मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के राजवंश कूल का वर्णन किया हैं। उनके कूल को 'सूर्यवंशी' मानते है। इसी सूर्यवंशी कूल में एक 'बली' नामक राजा ने अपना सिर भगवान शिव को अर्पन किया इसलिए उन्हें सिसोदे कूल का माना जाता हैं। यही सिसोदे उदयपूर और नेपाल के प्रदेश राज्याधिकारी थें। यह क्षत्रिय राजपुत होने के कारण धर्म का रक्षण और पालन करते थे। सिसोदे नरेश (राजा) उदयपुर के राणाजी शिवाजी महाराज के पूर्वज हैं। इसी राणाजी के वंशजों में 'सज्जनसिंह' उदयपुर छोडकर सांधवाडा में आकर रहने लगे। उसके बाद 'देवराजजी' नामक एक पुरुष दक्षिण में आकर अपनी सत्ता का विस्तार कर यही स्थायी हो गया। शिवाजी महाराज ने 'हिंदवी स्वराज्य' का निर्माण किया था। इस राज्य को समाज, धर्म और राज मान्यता के लिए काशी से गागाभट्ट को राज्यभिषक करने हेतु अमंत्रित किया था। 'राज्यभिषक' के लिए उनके कूल और राजवंश की जानकारी के लिए पंडित और

विद्वानों के द्वारा खोज शुरु हो गयी थी। इससे स्पष्ट हो जाता है कि उनके कूल का सम्बध उत्तर भारत के 'क्षत्रिय' राजपुत सिसोदे कूल से है जो 'सूर्यवंशी' थे। वे उत्तर से दक्षिण में आकर बस गये थे। शिवाजी महाराज के पूर्वज, कूल और मराठा के नाम का संम्बध जोडते हुए 'सप्तप्रकरणात्मक चरित्र' जीवनी में लिखा हैं, "हे उदापूरचे राणाजींचे घरांतील वंश, सिसोदे कुळपरंपरा पुरुष, पिढ्या लाऊन या प्रांती हिंदुस्थानातून आले. रजपूत राजवंश महाराष्ट्र देशी 'म्हराठे' म्हणवितात."[१]

अर्थात शिवाजी महाराज का राजवंश उदयपुर के राजा राणाजी के वंश से सम्बध रखता हैं। उनके घराने के वंश सिसोदे कुल के एक पुरुष उत्तर से दक्षिण हिंदुस्तान (भारत) में आकर यही स्थायी रुप से रहने लगे। वे राजपूत होने के कारण शिवाजी महाराज भी राजपूत राजवंश से हैं। आज इन्हीं को महाराष्ट्र में 'मराठा' कहाँ जाता है। शिवाजी महाराज उत्तर भारत के राजपुत राजवंश के थे। उनके पूर्वज उत्तर भारत में उदयपुर के राज्याधिकारी थे। 'सभासद' जीवनी में भी उनके राजवंश को उत्तर भारत के उदयपुर के राज्य के राजा 'राणाजी' के वंशजों से संम्बध जोडा गया है। शिवाजी महाराज के दादाजी (पीतामह) मालोजी राजे निजामशाह के सरदार थें। मालोजी राजे के पुत्र शहाजी राजे जो निजामशाही और आदिलशाही में सरदार थे। यही शहाजी राजे शिवाजी महाराज के पिता हैं। शिवाजी महाराज की माता का नाम जीजाबाई था।

इस प्रकार मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के पूर्वजों का संबंध उत्तर भारत के राजपूत राजवंश से था। उनके पूर्वज दक्षिण में आकर बस गये और यही राज्याधिकारी बन गये थे। उनका 'सूर्यवंशी कूल' था जो सर्वश्रेष्ठ कूल माना जाता हैं। इसी कूल में राम, कृष्ण आदि पौराणिक राजाओं का जन्म हुआ हैं। इसी राजवंश में उनका जन्म हुआ है।

३.१.२. जन्म एवं नामकरण :

शिवाजी महाराज के जन्म के समय और जन्म के कुछ वर्षो तक उनके पिता शहाजी राजे के जीवन में राजनीतिक अस्थिरता का काल रहा हैं। उन्होंने अहमदनगर की निजामशाही की रक्षा करने का हर संभव प्रयास किया था। लेकिन निजामशाह स्वंय मुगलों के शरण में जा चुका था। १६३६ में शहाजी राजे आदिलशाह से जाकर मिल गये थे। आदिलशाह ने उन्हें कर्नाटक के बंगलूरु प्रांत में भेज दिया। निजामशाही के प्रसिध्द सरदार लखुजी जाधव की पुत्री और शहाजी राजे की पत्नी जीजाबाई को सुरक्षित शिवनेरी किले पर शहाजी राजे ने रखा था। शिवनेरी किले पर जीजाबाई ने शिवाजी महाराज को जन्म दिया था। शिवकालीन सभासद जीवनी' में शिवाजी महाराज के जन्म तिथि का वर्णन नहीं किया हैं। जीजाबाई ने शिवनेरी किले पर शिवाजी राजे को जन्म देने का वर्णन हैं। इस जीवनी में केवल एक जगह बताया हैं कि, शिवाजी अपनी माता जीजाबाई के साथ पिता शहाजी महाराज को मिलने के लिए बंगलूरु गये थे। तब उनकी उम्र १२ साल की होने का संकेत मिलता है। सभासद ने निश्चित जन्मतिथि का वर्णन नही किया हैं।

इतिहास और साहित्य में भी शिवाजी महाराज के भी जन्म तिथि संदर्भ में मतभिन्नता हैं। 'सप्तप्रकरणात्मक चरित्र', 'शिवदिग्विजय', 'मराठा साम्राज्य' की बखर आदि में शके १५४९ अर्थात सन १६२७ को शिवाजी महाराज का जन्म मानते हैं। 'सप्तप्रकरणात्म चरित्र' जीवनी में लिखा हैं कि, "शके १५४९ पंधराशे एकुणपन्नास प्रभवनाम संवत्सरे वैशाख शु।। गुरुवारीं पुत्र जाला. शुभ चिन्हें जाली."[२] अर्थात इ.सन. ६ अप्रैल १६२७ को गुरुवार के दिन शिवाजी महाराज का जन्म हुआ है। प्रश्न यह हैं कि, अगर यह तिथि अंग्रेजी केलेंडर में तब्दिल करें तो जन्म दिन का नाम गलत आ रहा है। उस साल में बैसाख शुध्द द्वितिया को गुरुवार नहीं बल्कि शनिचर का दिन होना चाहिए। 'सप्तप्रकरणात्मक चरित्र'

जीवनी में की रचना १९ वी शताब्दी के शुरुवात में १८११ यह जीवनी के आसपास की है। जबकि शिवाजी महाराज का जन्म १७ वी शती में हुआ था। यह जीवनी लगभग २०० साल बाद लिखने के कारण इसी जन्म तिथि प्रमाण मानना गलत होगा। समकालीन संस्कृत कवि परमानंद शिवाजी महाराज के राजदरबार में थे। हिंदी के भूषण कवि भी राज दरबार में थे। इन दोनों भाषाओं के कवि ने अपने शिवचरित्र या साहित्य में जन्मतिथि का कोई उल्लेख नहीं किया है। कवि परमानंद ने 'शिवभारत' में तिथि तो दी नही पर जेधे शकावली के इ.सन. का समर्थन किया है।

सन १९१६ के बाद शिवाजी महाराज के चरित्र का अध्ययन करते समय कुछ पुराने दस्तावेज सामने आये है। जिस कारण उनकी जन्म तिथि १९ फरवरी १६३० मानी गयी हैं। इसमें से कुछ समकालीन दस्तावेज निम्न प्रकार से जो उनका जन्म शके १५५१ अर्थात सन् १६३० का मानते है।

१.'जेधे शकावली' में भारत के प्रमुख घटनाओं का वर्णन किया हैं। इसमें शके १५४० से लेकर १६१९ शके तक अर्थात सन १६१८ से १६९७ तक के महत्त्वपूर्ण घटनाओं का उल्लेख हैं। इनके अनुसार शिवाजी महाराज का जन्म शके १५५१ मे अर्थात १६३० इ. सन को माना हैं।

२. 'राज्यभिषक शकावली' यह शिवाजी महाराज के राज्यभिषक का वर्णन करती है। इसमें भी जन्म शके १५५१ अर्थात १६३० इ.सन माना हैं।

३. गुजराती दस्तावेजों के संपादक एके फोर्ब्स भी जन्म वर्ष शके १५५१ मानते हैं।

४. तंजौर के शिलालेख में शके १५५१ माना गया है। इस प्रमाणों के अलाव जोधपूर में मिले दस्तावेजों (मारवाडी भाषा) में छ. शिवाजी महाराज की कुंडली मिली है। इस कुंडली में भी शके १५५१ अर्थात इ.सन १६३० का जन्म माना हैं। महाराष्ट्र सरकार ने जन्मतिथि वाद-विवाद को बंद करने के लिए ऐतिहास के विद्वावानों की समिति १९६६ में गठित की हैं। 'छत्रपति शिवाजी महाराज

जन्मतिथि निर्णय समिति' में सात सदस्यों में से पाँच सदस्यों ने छ. शिवाजी महाराज का जन्म सप्रमाण १६३० को सिध्द किया है। वर्तमान में सन् १९ फरवरी १९३० को अत्याधिक लोगों के द्वारा शिवाजी महाराज का जन्मोत्सव मनाया जा रहा हैं।

शिवाजी महाराज का 'शिवाजी' यह नाम क्यों रखा गया? इस बारे में साहित्य में मतभिन्नता हैं। इस नाम का सम्बध कोई भगवान शिवजी, शिवाई देवी, किला शिवनेरी, से जोडते हैं। 'सप्तप्रकरणात्मक चरित्र' जीवनी में मल्हार चिटणिस शिवाजी का सम्बध शिवनेरी दुर्ग पर स्थित शिवाई देवी से जोडते हुए कहते हैं कि, "इकडे जिजाबाईसाहेब गुरुदर म्हणोन शिवनेरी येथे ठेविले होती. त्यास (पुत्र जाला) शिवनेरी येथे शिवाई देवी बहुत जागृत आहे. तिजला बाई साहेबांनी नवस केला जे. पुत्र झाला म्हणजे तुझें नाव ठेवीन"[3] अर्थात जीजाबाई की सुरक्षा और स्वास्थ्य को ध्यान में रखकर शहाजी राजे ने उन्हें शिवनेरी किले पर रखा था। गर्भावस्था में पुत्र प्राप्ति के लिए शिवनेरी किले पर स्थित शिवाई देवी से मन्नत माँगी थी। वे कहती है कि अगर लडका होगा तो आपका नाम रखुँगी। इस प्रकार शिवाजी महाराज का नाम शिवाई देवी से हुआ है। कुछ साहित्यकार भगवान 'शिवजी' के उनके पूर्वज भक्त थे, इसलिए 'शिवाजी' नामकरण का वर्णन करते हैं। शिवाजी महाराज के समकालीन संत तुकाराम महाराज 'शिवाजी' नाम रखने की बात स्पष्ट करते हुए वे लिखते हैं- 'शिवनाम तुझे ठेविले पवित्र' अर्थात शिव (शिवाजी) यह नाम पवित्रता के कारण रखा गया है।

मध्यकालीन मराठी साहित्य में जन्म तिथि और नामकरण के बारे में साहित्यकारों ने भिन्न-भिन्न मतों को व्यक्त किया हैं। नये ऐतिहासिक अनुसंधान के आधार पर शिवाजी महाराज का जन्म १९ फरवरी १६३० को शिवनेरी किले पर हुआ। उनकी माता जीजाबाई और पिता शहाजी राजे थे। नामकरण में भगवान

शिवजी, शिवाई देवी, शिवनेरी किल्ले के साथ नामकरण का सम्बध जोड दिया हैं। संत तुकाराम महाराज ने उनके नाम को पवित्रता का कारण बताया हैं।

३.१.३. आकृति और वेशभूषा :

किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को हम दो प्रकार से समझते हैं। व्यक्ति के बाह्य स्वरुप में उसका रुप, रंग, शरिर रचना, आकृति और वेशभूषा पर ही हमारा प्रथम दर्शि ध्यान जाता हैं। उसके बाद उसके अंतरिक (स्वरुप) गुणों के बारे में जानने लगते हैं। उसके पश्चात उस व्यक्ति के पूर्ण व्यक्तित्व को समझ सकते हैं। शिवाजी महाराज की आकृति उनकी शरीर रचना, रुप रंग के बारे में मध्यकालीन मराठी साहित्यकारों ने वर्णित किया हैं। बचपन में शिवाजी महाराज एक बार आदिलशाह के दरबार में गये थे। उस दरबार के प्रसंग में उनके आकृति का वर्णन 'सप्तप्रकरणात्मक चरित्र' में मल्हार रामराव चिटणिस करते हुए कहते हैं कि, "स्वरुपे करुन सुंदर शारीर-पाटव्य, फार चांगले सदृढ, विशाल नेत्र आजानबाहु, वये अल्प असोन प्रौढीने चालतात."[४] अर्थात बचपन में शिवाजी महाराज और उनके पिता शाहजी आदिलशाह के बुलाने पर उनके दरबार गये थे। उस समय का वर्णन करते हुए चिटणिस लिखते है कि उनका स्वरुप अत्याधिक सुंदर था। वे सुदृढ शरिरवाले, परिश्रमी, जिज्ञासू, बडी-बडी आखें, आजान बाहु, उम्र कम होते हुए भी अदबपूर्ण (प्रौढ व्यक्ति की तरह) चलते हैं।

शिवाजी महाराज की वेशभूषा घटना प्रसंग के अनुरुप बदलती हैं। अफजल खां को मिलने जाते समय उनकी वेशभूषा का वर्णन किया हैं। इस प्रसंग की वेशभूषा का वर्णन शिवकालीन शाहिर अज्ञानदास करते हुए कहते है कि,

"भगवंताची झील ज्याला-आंतून (तो)। बारीक झगा त्याला।।

मुसेजरीच्या सुरवारा। सरजा (जे) बंद सोडून दिला।

डावे हाती बिचवा त्याला (ल्याला) । वाघनख सरज्याला पंजाला।।"[५]

स्पष्ट है कि शिवाजी महाराज खान से भेट के लिए जाते समय उनकी पहनी हुई वेशभूषा का वर्णन शाहिर अज्ञानदास करते हैं। उन्होंने ईश्वरीय कृपा से वस्त्रों (चिलखत) को पहन लिया हैं। उस के उपर महान वस्त्रों की कमिज पहनी है। मुसेजरी नामक कपडे की सलवार पहनी हैं। अपने बाए हाथ में बिचवा धारण कर लिया हैं। बाघ-नख (शेर के नाखुन जैसा शस्त्र) हाथ के पंजों में रखे थे। इस प्रकार की वेशभूषा में अफजल खां को मिलने के लिए गये थे।

आगरा के दरबार से उन्हें बादशाह औरंगजेब द्वारा कैद कर लिया था। वे एक दिन वेषांतर कर उनके कैद से निकल जाते हैं। वेषांतर करने में शिवाजी महाराज माहीर थे। उन्होंने कैद से निकलने के बाद अपने शरीर को विभूती (भस्म) लगाकर फकिरी वेश पहनकर औरंगजेब, सरदार और सेनाओं को बडी आसानी से चकमा देकर सही सलामत स्वराज्य में पहुँच गये थे। औरंगजेब ने दो लाख, साठ हजार सेनाओं से शिवाजी महाराज को ढुंढने का आदेश देते समय कहाँ था कि "शिवाजी हुन्नरवंत आहे. एकादा वेश धरुन जात असेल. तरि तुम्ही जंगम, जोगी, सन्यासी, फकिर, ब्राह्मण, कंगाल, ब्रह्मचारी, परमहंसी, वेडी नाना परींची सोंगे शोध करुन, राजा ओळखुन कैद करुन आणणे. अशी इशारति सागोन रवाना केले."[६] अर्थात शिवाजी महाराज औरंगजेब की कैद से सब की आंखों के सामने होते हुए भी उन्हें चकमा देकर बाहर निकल गये। औरंगजेब ने सरदारों और सेनाओं को आज्ञा दी कि शिवाजी बडा चतुर है। वह कोई भी वेशभूषा धारण कर (पहनकर) हमें गुमराह कर सकता हैं। हमारे राज्य के जंगम, येगी, संन्यासी, तपस्वी, वैरागी, नानकपंथी, गोरखपंथी, फकिर, ब्राह्मण, भिकारी, पागल, बह्मचारी परमहंसी सभी पंथ के लोगों की अच्छी तरह से तलाशी शुरु करों। अगर थोडा भी संदेह हुआ तो उन्हें कैद कर लो। इससे स्पष्ट हो जाता है कि शिवाजी महाराज किसी भी प्रकार की वेशभूषा प्रसंग और घटना के अनुरुप

बदलते रहते थे। शिवाजी महाराज राज्यभिषक के दिन की उनकी वेशभूषा का वर्णन भी साहित्यकारों ने किया है।

अंत: मध्यकालीन मराठी साहित्यकारों ने शिवाजी महाराज के आकृति और वेशभूषा का ऐतिहासिकता के साथ वर्णन किया हैं। उनकी वेशभूषा समयानुरुप बदलती है। शत्रु पक्ष भी उनकी बदलते वेषांतर से उन्हें पहचान नहीं पाते थे। बडी आसानी से उन्हें चकमा देकर निकल जाते थे।

३.१.४. क्रिया-प्रतिक्रिया का चित्रण :

किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व की पहचान केवल आकृति और वेशभूषा से लगाना कठिन होता हैं। किसी व्यक्ति की विशेष स्थिति और परिस्थितियों में उसकी क्रिया पर प्रतिक्रिया क्या है? उस व्यक्ति के चेहरे पर हावभाव का सुक्ष्म अध्ययन करने से भी व्यक्तित्व के स्वरुप का पता चलता है। व्यक्ति के अनुकूल परिस्थितियों में और विपरित परिस्थितियों में क्रिया प्रतिक्रियाओं का सुक्ष्म अध्ययन करने से उसके बाह्य स्वरुप की पहचान होती हैं।

शिवाजी महाराज के द्वारा अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों में क्रिया-प्रतिक्रियाओं के सुक्ष्म अध्ययन कर उनके स्वरुप का पता चलता हैं। अफजल खाँ के साथ उनकी भेंट के समय शिवाजी महाराज को अपमानित करने का प्रयास किया जाता हैं। हालांकि परिस्थितियाँ बिल्कूल शिवाजी महाराज के विपरित थी। लेकिन खाँ के अपमानजनक शब्दों को उसी रुप में उन्होंने जवाब दिया हैं। उस संवाद को शिवकालीन शाहिर अज्ञानदास लिखते है,

"तुम्ही जातीचे कोण आम्ही जाणतों तुम्हाला।।

तू तरी भटारनीका छोरा। शिवाजी सरजा पर लाया तोरा।"[७]

अर्थात अफजल खाँ के द्वारा अपमानित शब्द का प्रयोग किया गया था। तब छ. शिवाजी महाराज के चेहरे पर गुस्सा आया था। वह क्रौध में अफजल खाँ

को कहते है कि आप भी किस जाति के हैं हम भी अच्छी तरह जानते है। तु तो भटरीनका (पाकशाला) का पुत्र हैं। इस प्रकार शक्तिशाली शत्रु से भी बिना डरे प्रतिक्रिया देते है। आगरा के दरबार में शिवाजी महाराज को जान बुझकर अपमानीत करने के लिए उन्हें गलत स्थान पर खडे किया जाता हैं। औरंगजेब के इस प्रकार कि क्रिया को देखकर वे भी अपनी प्रतिक्रिया क्रौधित होकर देते हुए उनको सलाम (मुजरा) भी नहीं करते हैं। बादशाह के द्वारा दी गई खिल्लत को अपमानित करते है। क्रौध में लाल हो चुके शिवाजी महाराज बादशाह के दरबार के सभी नियमों को तोडकर बाहर निकला जाते हैं। युध्द में शत्रु पक्ष के द्वारा संधि या मित्रता की भावना को दर्शाया है तो प्रतिक्रिया में उसके प्रति प्रेम भी दिखाया हैं। कुतुबशाह, आदिलशाह, मुगल, हबशी, सिध्दी उनकी क्रिया जीस प्रकार दिखाते थे, उसे देखकर अपनी प्रतिक्रिया महाराज देते थे। वे अगर अपमानित करते हैं तो उन्हें भी शिवाजी महाराज अपमानित करते हैं।

इस प्रकार मध्यकालीन मराठी साहित्यकारों ने शिवाजी महाराज के प्रतिक्रिया के वर्णन में घटित घटनाओं पर प्रतिक्रिया देने का प्रयास किया जाता हैं। अफजल खाँ के द्वारा धोखा देकर उन्हें मारने का प्रयास किया जाता है। इसके प्रतिक्रिया स्वरुप उन्होंने भी अपने हाथियार उठाकर उनका वध ही कर दिया था। इस प्रकार शिवाजी महाराज शत्रु के क्रिया के अनुरुप अपनी प्रतिक्रिया वह देते थे। वह चाहे शब्दों से हो या शस्त्रों से हो। अफजल खाँ मिलन का प्रसंग, आगरा का दरबार की हो घटना दोनों जगहों पर क्रिया पर अपनी प्रतिक्रिया स्पष्ट रुप से देते हैं।

३.१.५. किले रायगढ का वर्णन :

शिवाजी महाराज ने 'हिंदवी स्वराज्य' की स्थापना की थी। स्वराज्य की राजधानी रायगढ किले को बनाया था। प्रारंभ में सत्ता का राजनीतिक केंद्र राजगड' था। यह 'राजगड' किल्ला असानी से शत्रुपक्ष के दृष्टि में आ सकता

था। शत्रु के आक्रमण की संभावना भी अत्याधिक दिखाई दे रही थी। राजगड किल्ला सुरक्षा की दृष्टि से कमजोर था। आसानी से शत्रु का इस पर हमला करने की संभावना कम थी। इस कारण अपने स्वराज्य की राजधानी किल्ले 'रायगढ' को बनाया था। 'रायगढ' किला पहले रायरी (रैरी) नाम से जाना जाता था। इस किले के पुनरर्निमाण का काम महाराज ने अत्यंत विश्वासू सेवक हिरोजी इंदूलकर को दिया था। किल्ले के पुनर्निर्माण के बाद इसे 'रायगढ' नाम दिया गया। यह किल्ला सुरक्षा की दृष्टि से अत्यंत सुरक्षित था। किले निर्माण के कारण और सुरक्षा के संदर्भ में रामचंद्र अमात्य अपने 'आज्ञापत्र' में लिखते हैं कि, "राजगड ही राजधानी संरक्षणाच्या दृष्टिने सुरक्षित न वाटल्याने राजानी शत्रुच्या दृष्टीपथात सहसा येणार नाही अशी 'रायगढ' ही नवी राजधानी आगग्राहुन सुटून आल्यानंतर बांधली"[८] अर्थात शिवाजी महाराज को 'राजगढ' यह किल्ला राजधानी की सुरक्षा के दृष्टि से भी असुरक्षित था। शत्रु के नजरों में आक्रमण के लिए कठिन हो ऐसे 'रायगढ' किले को आगरा में आने के बाद स्वराज्य की राजधानी बनाया गया था। इसी 'रायगढ' किले का वर्णन मराठी के साहित्यकारों ने किया हैं। इस किल्ले के उपर, लोगों के रहने को व्यवस्था, सुविधा, स्वतंत्र विभाग, महल, कारखानों, की व्यवस्था का सुक्ष्म वर्णन मल्हार चिटणीस करते हुए कहते हैं, "आत राजमंदिर, दौलत बंक, प्रगट सभा व मंत्र सभा, धर्मसभा व चित्रसभा व आदर्श (मंदिर) ऐशीं नावे ठेवून त्याप्रमाणे जागे बहूत तरतुदीचे व माहाल राण्यांचे निराळे निराळे याप्रमाणें खासगत राहण्याची करविली. तशीच पागा घोडियांस राहण्याची चिरेबंदी लादणीचे घरें. गजशाला, पाकशाला कोठी वगैरे आठरा कारखाने, बारा महल यांची स्थळे करविलीं बाजार दुरस्ता चिरेबंदी जोती घालून करविले. मातबर सरकारकून सरदार व कारकून लोक यांस घरे सरकारच्या इमारती करुन ठेविले. ज्यांची जशी योग्यता तशी (घरे) करुन दिली."[९]

स्पष्ट है कि, रायगढ किले के अंदर राजा का निवासस्थान कक्ष, दौलत महाद्वार, (चौकी) हैं। प्रकट सभा, मंत्री सभा, धर्मसभा, चित्रसभा, आदर्श मंदिर इस प्रकार के अलग-अलग स्थान हैं। राणियों को रहने के लिए व्यक्तिगत रानी महल था। इस प्रकार गजशाला, पाकशाला, आठराह कारखाने बारा महल और पशुओं को रहने के लिए कोठीयाँ बनायी थी। बाजार में बैठनवाले को पत्थरों के चबुतरे थें। मातब्बर व्यक्तियों जैसे सरदार, सरकारकुन, कारकुन को रहने के लिए सरकारी इमारत बनायी गयी थी। इस गड पर केवल राजा ही नहीं अपितु अन्य लोगों को रहने के लिए स्वतंत्र व्यवस्था की थी। राणीयों के महल, अलग-अलग सभा स्थान, पशु शाला, बाजार की व्यवस्था जिसे इतिहास में 'शिवपेठ' कहाँ जाता हैं। यथा योग्ये पद के अनुसार रहने की व्यवस्था की गयी थी। इस प्रकार के रायगड का वर्णन में ऐतिहासिक सत्य को भी प्रस्तुत किया हैं। वर्तमान समय में भी किल्ले पर कुछ जिर्ण वस्तुएँ साक्ष के रुप में दिखाई देती हैं। किल्ले 'रायगढ' के राज सिंहासन का वर्णन भी किया गया है। शिवकालीन शाहिर अज्ञानदास ने लिखा हैं कि, "तीन पायऱ्या सोन्याच्या तक्ता।"[१०] अर्थात शिवाजी महाराज के स्वराज्य की राजधानी 'रायगड' के उपर स्थित सिंहासन तक्त को तीन सिढियाँ सोने की हैं। यह वर्णन ऐतिहासिक भी है क्योंकि शिवाजी महाराज का सिंहासन ३२ मन सोने से बनाया गया था। मराठी जीवनियों में इसी सिंहासन का वर्णन राज्यभिषक के समय में किया है। इस संदर्भ में सभासद लिखते हैं कि, "तक्त सुवर्णाचे, बत्तीस मणांचे, सिध्द करविले. नवरत्ने अमोलिक जितकी कोशांत होतीं. त्यामध्यें शोध करुन मोठी रत्ने तक्तास जडाव केली. जडित सिंहासन सिध्द केले."[११]

अर्थात शिवाजी महाराज का राज्याभिषक 'रायगढ' किल्ले पर ही हुआ था। उनका सिंहासन ३२ मन सोने से बनाया गया था। उस सिंहासन को अमूल्य नवरत्नों से सजाया था। उनका राजसिंहासन सोने और अमूल्य रत्नों से जडित

था। रायगढ किल्ले के उपर आज भी जिर्ण अवस्था में उस ऐतिहास का साक्ष दे रहा हैं। अंग्रेजों ने रायगड की वैभवता को नष्ट कर दिया हैं।

इस प्रकार मध्यकालीन मराठी साहित्यकारों ने स्वराज्य की राजधानी 'रायगढ' किले का वर्णन ऐतिहासिक रुप में किया हैं। रायगड किले के महल, सभा, राजमहल, राणिमहल, पशुशाला, पद के अनुसार सरकारी इमारते, कारखाने, बाजार के लिए शिवपेठ की व्यवस्था का वर्णन हैं। इसी किल्ले के उपर नवरत्नों और सोने से बनाएँ गये राज सिंहासन का वर्णन किया है।

३.१.६. शिवाजी महाराज के नगाडों का वर्णन :

मध्यकालीन मराठी साहित्य में नगाडों का वर्णन भी है। युध्द के विजयोत्सव में युध्दों की तैयारी की सुचनाओं के लिए, संकेत रुप में नगाडों का बजाना, बर्तन बजाना, तोफा चलाते थे। शिवाजी महाराज जब अफजल खाँ को मिलने के लिए जा रहे हैं तो दूसरी और सतर्कता से युध्द की तैयारी भी कर रहे है। जब वे प्रतापगड किले से निचे उतर रहे थे, तो इसकी जानकारी और सचेत रहने का संकेत देने के लिए 'करणा' (वाद्ययंत्र) की आवाज देने का आदेश दिया था। इस संदर्भ में सप्तप्रकरणात्मक चरित्र जीवनी में लिखा हैं- "आम्ही किल्यावरुन उतरोण काही करना वाजला म्हणजे आप आपले जमावांनी पुढे चालत यावे आणि बाहेरुन टपयात उभे राहावे. त्या प्रमाण सावध असावे।"[१२] अर्थात शिवाजी महाराज प्रतापगड किले से उतरते समय सभी सेनाओं को सतर्क रहने के लिए कर्ना (सिंग के आकार का वाद्य यंत्र) बजाने को कहते हैं। इस कर्ने की आवाज सुनकर अपनी सेनाओं की तकडी अपने-अपने जगह से सामने युध्द के लिए आकर तैयार रहें। इस प्रकार का आदेश दिया जाता था।

पुरंदर किले पर दिलेर खाँ के द्वारा आक्रमण किया जाता हैं। किले पर मुरार बाजी सेनाओं के साथ प्रतिकार कर रहा था। इस प्रसंग पर उन्होंने बडा पराक्रम दिखाया था। अंत तक किले की रक्षा करने का प्रयास किया। किले की

सुरक्षा और किला सुरक्षित हैं इसका संकेत देने के लिए नगाडे और कर्ने को बजाने का वर्णन 'सप्तप्रकरणात्मक' चरित्र में किया है। इस संदर्भ में मल्हार चिटणिस लिखते हैं कि, "नगारे करणे वाजूं लागले (की) किल्ला हुशार आहे. तोफा चालू लागल्या।"[१३] अर्थात पुरंदर किले की सुरक्षितता का संकेत देने के लिए नगाडे और कर्ने बजाए जा रहें थे। तोफा भी चलाई जाती थी। अंत में दिलेर खाँ को किल्ला बडी मश्किल से मिला था। जब तक युध्द जारी रहा किल्ला सुरक्षित था। इसके लिए नगाडें, कर्ने, तोफे की इशारत की गयी थी।

मध्यकाल में युध्द क्षेत्र और किसी सुचनाओं का गुप्त संकेत देने के लिए नगाडे, कर्ना, तोफे, बर्तन बजाने की पध्दति थी। युध्द भूमि में तैयारी और सतर्कता के लिए प्राचीन काल से राजा, महाराज इसका उपयोग करते थे। पौराणिक ग्रंथों में भी जैसे- रामायण, महाभारत, भागवत पुराण आदि में नगाडों का वर्णन किया है।

इस प्रकार मध्यकालीन मराठी साहित्य में नगाडों का वर्णन विस्तृत रुप से नहीं बल्कि कुछ घटनाओं में इसका प्रयोग होता रहा हैं। युध्द की तैयारी, युध्द विजय की प्राप्ति में नगाडे वाद्ययंत्र का उपयोग शिवाजी महाराज करते थे।

३.१.७. शिवाजी महाराज की तलवार का वर्णन :

शिवाजी महाराज के युध्द के प्रमुख शस्त्रों में से एक तलवार है। अपनी तलवार से उन्होंने अनेक शत्रुओं को पराजित किया हैं। युध्द के लिए शस्त्र लेकर तैयार होते हैं तो उपने कमर पर तलवार धारण करते हुए दिखाई देते हैं। उनके पास 'भवानी, जगदम्बा' और 'तुळजा' यह तीन तलवारे थीं। इनमें से 'भवानी' और 'तुळजा' नामक तलवार २०० साल से लुप्त हैं। भवानी तलवार का वर्णन इतिहास और साहित्य में भी अत्याधिक काल्पनिक हैं। भवानी तलवार का वजन ६६ किलो माना जाता हैं, जो संभव नही हैं। कुछ विद्वान तो १२३ किलों वजन और १३ फिट लंबी मानते है। भवानी तलवार के बारे में यह किंवदंती मानी

जा सकती हैं। क्योंकि शिवाजी महाराज का वजन ही ७२ किलों का था। कुछ इतिहासकार इस तलवार का वजन १२०० ग्राम मानते है जो १.२० किलों की है। उस तलवार की लंबाई ४.५ फिट थी। इस भवानी तलवार की लंबाई अन्य तलवारों से अधिक जहर थी। इसलिए इसे बनाने का काम स्पेन के एक राजा को दिया था। स्पेन के राजा ने खुश होकर अमूल्य रत्नों से जडित 'जगदम्बा' नामक तलवार भेंट रुप में दी थीं। 'तुलजा' यह तलवार जेजुरी से भेंट में मिली थी। 'जगदम्बा' तलवार वर्तमान समय में इंग्लैड के म्युजियम में हैं। इन तीनों तलवारों में से सर्वाधिक चर्चा 'भवानी' तलवार की होती हैं। जब शिवाजी महाराज के पराक्रम को याद करते है तो उनकी तलवार हमें याद आती है। भवानी तलवार भारत के इतिहास का गौरव हैं। भवानी देवी ने प्रसन्न होकर शिवाजी महाराज को शत्रुओं का नाश करने के लिए भवानी तलवार दी थी, इस प्रकार की भी एक किवदंती हैं। कुछ इतिहासकार उनकी माता जीजाबाई ने पोर्तुगज से यह तलवार बनवाकर शिवाजी महाराज को भेंट देने का वर्णन करते हैं। जो भी हो पर शिवाजी महाराज का पराक्रम तलवार के साथ जोडने का प्रयास किया हैं।

मध्यकालीन मराठी साहित्य में भी भवानी तलवार का वर्णन किया गया हैं। शिवाजी महाराज अफजल खाँ भेंट की तैयारी कर रहे थे। साथ में जो शस्त्र थे उनमें से एक भवानी तलवार भी थी। इसका प्रसंग का वर्णन मल्हार चिटणिस करते हैं कि, "उजवे हातीं भवानी तरवार घेऊन व विचवा डावे हातीं, वाघनखें पाठीढाल, याच प्रमाणे सिध्द झाले।"[१४] अर्थात शिवाजी महाराज अफजल खाँ को मिलने के लिए जा रहे थे, उस समय अपने दाहीने हाथ में 'भवानी' नामक तलवार, बायें हाथ में बिचवा और वाघनखें पीठ पर ढाल लेकर तैयार हो गये थे। कुछ इतिहासकारों ने भवानी तलवार का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया है जो अत्याधिक काल्पनिक हैं। शिवाजी महाराज के पराक्रम को उनके तलवार के साथ जोडना ठिक है, पर तलवार के पराक्रम या तलवार के कारण शिवाजी महाराज

ने पराक्रम किया यह पुर्णतः काल्पनिक हैं। उन के जो अन्य युध्द के शस्त्र हैं उन्हीं में एक भवानी तलवार हैं। शिवकालीन शाहिर अज्ञानदास ने 'अफजल खान-वध' पोवाडे में खाँ का तलवार से वध करने का वर्णन किया हैं। उनके पेट में तलवार से वार नहीं बल्कि बाघनखों और बीचणे का उपयोग किया था।

शाईस्ता खाँ पुणे के महल में आकर डेरा डालकर बैठा था। उनके साथ एक लाख की फौज थी। एक रात पुना के उस महल में कुछ साथियों को साथ लेकर घुस गये थे। शाईस्ताखाँ के डेरे (शयन कक्ष) में जाकर शिवाजी महाराज उसके उपर तलवार से वार किया था। शाईस्ता खाँ अंधेरे के कारण बच गया पर उसकी तीन उँगलीयाँ तलवार से कट गयी थीं।

इस प्रकार मध्यकालीन मराठी साहित्यकारों ने 'भवानी' नामक तलवार का वर्णन किया है। यह तलवार शत्रुओं को मृत्यु के घाट उतारती हैं। तलवार उनके युध्द का प्रमुख शस्त्र हैं। युध्द के लिए तैयार होते समय हमेशा वह तलवार का प्रमुख शस्त्रों के रुप में उपयोग करते है। उनके पास तीन तलवारे थी। उनके तलवारों में से केवल 'जगदम्बा' तलवार वर्तमान समय में इंग्लैड के म्युजियम में रखी है।

३.१.८. राज्याभिषक का वर्णन :

मध्यकाल में कोई भी भारतीय राजा सार्वभौम नहीं था। केवल शिवाजी महाराज ने स्वतंत्र सार्वभौम राज्य की स्थापना की थी। अन्य सभी राजा मुगल, आदिलशाही, निजामशाही के अधिन रहकर राज्य करते थें। महाराष्ट में शिर्के मोरे, निंबालकर, घोरपडे, सावंत, यह छोटे-मोठे राजा विदेशी मुगल और आदिलशाह के अधिन थे। मिर्जा राजा जयसिंह, जसवंत सिंह भी मुगलों के अधिन थे। शिवाजी महाराज का 'हिंदवी स्वराज्य' सार्वभौम था। अपने सार्वभौम स्वतंत्र राज्य के लिए शिवाजी महाराज ने ६ जुन १६७४ में राज्यभिषक कर भारत के इतिहास में सार्वभौम राजा बन गये। राज्यभिषक करने का मुख्य कारण यही

था कि आदिलशाह, मुगल बादशाह, पोर्तुगीज, हब्शी, अंग्रेज शिवाजी महाराज को शहाजी का विद्रोही पुत्र और लुटेरा मानते थे। महाराष्ट्र के शिर्के, मोरे, सावंत, घोरपडे भी उन्हें राजा मानने के लिए तैयार नहीं थे। अपने पराक्रम और परिश्रम से इतने विस्तृत स्वराज्य को धार्मिक और राजनैतिक अधिष्ठान प्राप्ति के लिए राज्याभिषक करवाया था। जिस प्रकार भारतीय समाज में विवाह के बिना गृहस्थी व्यर्थ मानी जाती हैं, उसी प्रकार राज्यभिषक के बिना स्वराज्य व्यर्थ सिध्द हो रहा था। धर्मसत्ता राज्यसत्ता पर हावी न हो इसलिए राज्यभिषक समारोह संपन्न किया हैं।

शिवाजी महाराज के राज्याभिषक की तैयारी हो रही थी। सभी देशी, विदेशी राजा, सरदारों और अन्य महनीय व्यक्तियों को अमंत्रित किया गया था। उनके रहने और खाने की संपूर्ण व्यवस्था की गयी थी। किसी भी प्रकार का उन्हें कष्ट न हो इसलिए अपने प्रमुख व्यक्तियों को देखभाल भी जिम्म्ेदारी दी थी। सभी उपस्थित राजा, सरदारों, लोगों को भोजन की भी व्यवस्था थी। इस राज्याभिषक के व्यवस्था के संदर्भ में सप्तप्रकरराणात्मक चरित्र में लिखा हैं,

"तेथें सिंहासन सभा करविली, ज्या सभेंत सहस्त्रावधी मनुष्यें बसावी, त्यांसी शीतोष्ण बाधा न व्हावी, चित्र विचित्र स्तंभ व अष्टप्रधानाची स्थाने व भिंती वगैरे परम रमणीय ऐसे करवून त्यांस उल्लोच व वितानें म्हणजे चांदवे, चांदण्या सवर्णमय वस्त्रे किनखाप, बादली ऐशी करविली."[१५]

अर्थात शिवाजी महाराज के सिंहासन की सभा तैयार की गयी थी। सभा में हजारों लोगों की बैठने की व्यवस्था की गयी थी। उन लोगों के बैठने के बाद धूप में गर्मियों के कारण उन्हें कोई कष्ट न हो इसलिए उसकी व्यवस्था की गयी थी। भिन्न-भिन्न प्रकार के स्तम्भ और अष्टप्रधानों की निश्चित जगह तैयार की गयी थी। उनके दिवारों को अत्याधिक आकर्षक और मोहक बनाया गया था और उसके उपर छत डाला गया। सवर्णमयी वस्त्रों को सजाकर उनके स्थानों को

तैयार किया गया था। किले रायगढ़ को रोशनाई से सजाया गया था। सभी आमंत्रित व्यक्तियों को दान दिया गया। तीनों प्रहर भोजन में नाना प्रकार के व्यंजन बनाये गये। बहोत दिनों तक भोजन की व्यवस्था रहीं।

शिवाजी महाराज ने ६ जुन १६६४ के दिन काशी के गागाभट्ट को आमंत्रित किया गया था उन्हीं के हाथों से हजारों लोगों की उपस्थिति में किले रायगढ पर राज्यभिषक समारोह संपन्न हुआ था। 'सप्तप्रकरण चरित्र' में मल्हार चिटणीस राज्यभिषक तिथि को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि, "या प्रमाणे महाराज शालिवाहन शके १५९६ मंधराशे शाहांणव आनंद नाम संवत्सरे, जेब्ठ शु।। त्रयोदशी मंदवासरे सुमुहूर्ते छत्रसिंहासनाधीश्वर जाले।"[१६] अर्थात शिवाजी महाराज का राज्यभिषक शके १५९६ जेष्ठ त्रयोदशी अर्थात ६ जुन १६७४ को सिंहासन का छत्र धारण कर लिया हैं। छत्रपति शिवाजी महाराज राज्यभिषक के बाद राज सिंहासन पर विराजित हो गये थे।

मध्यकाल में एक भारतीय राजा अपने आपको स्वतंत्र सार्वभौम राजा घोषित कर धर्म और राजसत्ता की मान्यता प्राप्त करना यह कोई साधारण काम नही था। शिवाजी महाराज ने स्वतंत्र राज्य का निर्माण कर उसका विस्तार करते हुए उसे सार्वभौम बनाया। उस काल की दो बडी राजसत्ता के विरुध्द यह कार्य करना बडी आश्चर्य की बात हैं। सभासद भी इस असामान्य घटना का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि, "येणे-प्रमाणे राजे सिंहासनारुढ जाले. या युगी सर्व पृथ्वीवर म्लेच्छ बादशाह जाले. मऱ्हाटा पातशाहा येवढा छत्रपती जाला. ही गोष्ट काही सामान्य जाली नाही."[१७] अर्थात शिवाजी महाराज राज्याभिषक के बाद सिंहासनाधिश हो गये। इस युग (काल) में सभी भारत पर म्लेच्छ बादशाह की सत्ता थी। इस युग में मराठा राजा छत्रपती हो गया यह घटना कोई सामान्य नहीं हैं। भारत के इतिहास में यह घटना गौरवपूर्ण अद्दितिय रही हैं। पुरे भारत वर्ष पर मुगलों का शासन शुरु हो गया था। शिवाजी महाराज ने स्वयं को और अपने

राज्य को स्वतंत्र और सार्वभौम घोषित किया था। उनके राज्याभिषक के बाद कुछ ही दिनों में माता जीजाबाई का निधन हुआ। रायगड पर छोटीसी आग भी लग गयी थी। ऐसी दो प्रमुख अप्रिय घटनाओं के कारण अपशकुन माना गया। लोगों का मन रखने के लिए शिवाजी महाराज ने निश्चलपुरी गोसाई से दूसरा राज्याभिषक करवाया था। प्रथम राज्याभिषक के समय उन्होंने काल गणना के लिए अपने 'शक' की शुरुवात की थी। इसलिए उन्हें 'शककर्ता' कहाँ जाता हैं। भाषा शुध्दिकरण के लिए 'राज भाषा व्यवहार कोष' तैयार करने का आदेश दिया था।

इस प्रकार मध्यकालीन मराठी साहित्य में छ. शिवाजी महाराज के राज्याभिषक समारोह की व्यवस्था, सिंहासन वर्णन, राज्याभिषक दिन आदि का वर्णन किया हैं। संपूर्ण भारत वर्ष में मुगलों की सत्ता विस्तृत हो रही थी। ऐसे समय में स्वतंत्र राज्य घोषित कर सार्वभौम राजा छ. शिवाजी महाराज बन गये थे। मराठी साहित्य में राज्याभिषक का वर्णन ऐतिहासिक वर्णन से सम्बध रखता हैं। भारतीय इतिहास में यह घटना असामान्य रही हैं। ६ जुन राज्यभिषक दिन महाराष्ट्र में ही नहीं बल्कि पुरे देश और विश्व में मनाया जाता है। यह दिन राष्ट्रीय इतिहास में स्वाभिमान और गौरव का दिन है। नयी पिढ़ी को यह दिन हमेशा अन्याय, अत्याचार को विरोध कर स्वतंत्र, समता, बंधुता, न्याय के लिए प्रेरित करता रहेगा।

३.१.९. छत्रपति शिवाजी महाराज की मृत्यु :

शिवाजी महाराज ने अपने मनोबल, बाहुबल, आत्मबल से एक विशाल मराठा साम्राज्य स्थापित किया हैं। अपने संपुर्ण जीवन में निरंतर संघर्षरत रहे, स्वंय युध्द में उतरकर अनेक पराक्रम कर विजय प्राप्त की थी। उन्होंने समकालीन समाज और देश को नयी दिशा देने का काम किया हैं। अन्याय, अत्याचार का प्रतिकार करने वाले मानवता के पक्षधर, सर्वधर्म समभाव तथा धर्म

निरपेक्ष, बहुजन प्रतिपालक, आदर्श शासक, युग प्रवर्तक, रयत का राजा छ. शिवाजी महाराज का निधन ३ अप्रैल १६८० शनीचर के दिन दोपहर के समय हुआ था। मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के मृत्यु के दो कारण बताय गये है। इसमें पहला कारण यह हैं कि उनकी मृत्यु रोग से गृस्त होने से हुई हैं। मृत्यु के कारणों का वर्णन सभासद जीवनी और 'सत्पप्रकरणात्मक चरित्र' में किया हैं। सभासद लिखते है कि, "मग कांही दिवसांनी राजास व्यथा ज्वराची जाहाली."[१८] अर्थात शिवपुत्र राजाराम की शादी होने के कुछ दिनों बाद शिवाजी राजा को 'ज्वर' नामक रोग उत्पन्न हो गया था। शिवाजी महाराज रोग से ग्रसित होकर उनकी मृत्यु हो गयी हैं। सप्तप्रकरणात्मक चरित्र में लिखा है कि "शके १५९६ पासून राज्यभिषक जालियावरि शके १६०२ पर्यंत या प्रमाणे चरित्र करुन असतां कांही दिवशीं ज्वराची व्यथा जाली।"[१९] अर्थात शिवाजी महाराज का राज्याभिषक ६ जून १६७४ से १६८० तक निरंतर अपना कार्य करते रहें। कुछ दिन उनको 'ज्वर' नामक रोग हो गया था। इसी ज्वर नामक रोग के कारण उनकी मृत्यु हो गयी थी। अंग्रेजो के अनुसार, उनकी मृत्यु रक्ताभिसरण से हुई थी। पारसी कागजाद के अनुसार घोडे से उतरने के बाद अतिउष्णता में उनको खुन की दो उल्टीयाँ हुई और मृत्यु को कारण मानते हैं। कुछ साहित्यकार और इतिहासकार ने खुन की उल्टियों को विष (जहर) देकर उनका खुन होने का तर्क भी लगाया। मध्यकालीन मराठी साहित्य में जहर देने का वर्णन शिवदिग्वजय में आया हैं। शिवाजी महाराज की पत्नी सोयराबाई ने अपने पुत्र राजाराम को राजगदी पर बिठाने की बात शिवाजी महाराज के सामने रखी थी। वे जेष्ठ पुत्र संभाजी राजा को राजगद्दी पर बिठाने के पक्ष में थे। इसलिए सोयराबाई द्वारा शिवाजी महाराज को जहर देने का अन ऐतिहासिक वर्णन हैं। इस प्रकार के वर्णन से ऐतिहासिक चरित्र का हनन साहित्य में किया हैं। सोयराबाई द्वारा अपने पति शिवाजी महाराज को खुन करने का वर्णन शिव दिग्विजय जीवनी में दिया है। यह जीवनी १९ वीं शती में लिखी गयी है। शिवकालीन सभासद जी वनी में

इस प्रकार का अनऐतिहासिक वर्णन नहीं हैं। सोयराबाई के ऐतिहासिक चरित्र का हनन मध्यकालीन मराठी के कुछ जीवनीकारों ने किया हैं। सोयराबाई के इस प्रकार के विष प्रयोग का खंडन करते हुए अविनाश जाधव ने अपने एक ब्लॉग में लिखा हैं कि, "सत्ता प्राप्तीसाठी शिवरायांचे कुटूंबात कोणत्याही प्रकारचा संघर्ष नव्हता. सोयराबाईनी संभाजी राजांना शेवटपर्यंत स्व:पुत्राप्रमाणे सांभाळले तर संभाजीराजे सोयराबाईना नेहमी "निर्मल मनाची आई" असे म्हणत.।"[२०] अर्थात सत्ता संघर्ष के लिए शिवपुत्र राजाराम और संभाजी राजा में किसी भी प्रकार का पारिवारिक संघर्ष नहीं था। राजाराम की माता सोयराबाई ने संभाजी राजा को अंत तक स्वयं के पुत्र की तरह संभाला था। संभाजी महाराज भी सोयराबाई को हमेशा 'शुध्द मन की माता' कहते थे।

संभाजी राजा के मन में सौतेली माता सोयराबाई के प्रति अटुट श्रध्दा थी। उन्होंने अपनी माता सोयराबाई का बहुत बार गौरव किया हैं। मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज की मृत्यु सम्बध में दोनों कारणों में से किसी एक का भी इतिहास में अधिकृत प्रमाण नहीं मिलता हैं। इतिहास और साहित्य दोनों भी शिवाजी महाराज की मुत्यु के कारणों को सप्रमाण सिध्द नहीं कर पाया हैं। शिवाजी महाराज की मृत्यु सन ३ अप्रैल १६८० में हो गयी थी।

शिवाजी महाराज अत्याचारियों के संहारक थे। वे मरकर भी अपने विचार, आचार और कार्य, पराक्रम को अमरता प्रदान कर चुके है। उनका कार्य आज भी हमारे देश और विश्व को प्रेरित करता हैं। आगे भी कई सदियों तक प्रेरित करता रहेगा। उनके विचार युगों-युगों तक चिरस्थायी रुप से अमर रहेगे।

३.२) मध्यकालीन मराठी साहित्य में वर्णित शिवाजी महाराज का अंतरंग स्वरुप

किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व के स्वरुप का चित्रण करने के लिए दो पहेलुओं का अध्ययन करना जरुरी होता है। १. व्यक्ति का बहिरंग स्वरुप २. व्यक्ति का अंतरंग स्वरुप। शिवाजी महाराज का मराठी साहित्य में बहिरंग स्वरुप

का अध्ययन किया गया हैं। शिवाजी महाराज के अंतरंग स्वरुप में उनके अंतरिक गुणों का अध्ययन निम्नांकित विभिन्न मुद्दों के द्वारा स्पष्ट करेंगे।

३.२.१. बचपन और शिक्षा :

मध्यकालीन भारत में तीन बडे शासकों में राजनीतिक सत्ताओं में संघर्ष चल रहा था। निजामशाह, आदिलशाह, मुगल सत्ता संघर्ष के कारण शहाजी महाराज का जीवन भी राजनीतिक अस्थिरता के कारण प्रभावित हुआ था। उन्होंने अपने पुत्र शिवाजी और पत्नी जीजाबाई की सुरक्षा के लिए उन्हें शिवनेरी दूर्ग पर रखा था। बचपन से ही शिवाजी महाराज समझदार और कुशाग्र बुध्दि के थे। उनका बचपन मावल प्रदेश में आम दोस्तों के बीच खेलते हुए बीता हैं। वे बचपन से ही मिट्ठी के किले बनाकर दोस्तों के साथ खेलते थे। उनका बचपन और सामान्य शिक्षा माता जीजाबाई के आश्रय में हुई थी। किशोर अवस्था में उन्होंने आदिलशाह के किले जीतना शुरु किया था। मावल प्रदेश के लोगों को संघटित कर 'तोरणा' किले से स्वराज्य की शुरुवात की थी।

उनकी शिक्षा की व्यवस्था के लिए विशेषज्ञ और विद्वानों की जरुरत थी। उनके पिता शहाजी राजे ने विशेषज्ञ और विद्वान लोगों को बंगलुरु से शिवाजी महाराज की शिक्षा के लिए शिवनेरी पर भेजा था। शिवाजी महाराज ने सात वर्ष में ही प्राथमिक शिक्षा पुरी की थी। इस संदर्भ में 'सत्पप्रकरणात्मक चरित्र' में लिखा है कि, "सात वर्षात सर्व विद्याभ्यास केला. बहुत स्वरुपे करुन सुंदर, गुणवान, लिहणे घोड्यावर बसणें, हत्तीवर बसणे, तालिम खाना, शस्त्रविद्या, तिरंदाजी करणे बंदुका मारणे व शास्त्र-अभ्यास यासही प्रारंभ केला. बोलणे व कल्पना चातुर्थ बहुत ऐसे गुण श्रवण करुन (महाराज) बहुत उत्कंठित होते.।"[२१] अर्थात शिवाजी महाराज ने केवल सात वर्ष में ही प्राथमिक शिक्षा पुरी की थी। विशेष विषय विद्वानों के मार्गदर्शन में पढना, लिखना, घोडे पर बैठना हत्ती पर बैठना, तालीम खाना, शस्त्र विद्या, निशानेबाजी, बंदुक चलाना, शस्त्र के अभ्यास

के साथ-साथ शास्त्र की भी शिक्षा दी गयी थी। वे बोलने का ढंग, मनन, चिंतन और श्रवण आदि गुण प्राप्त कर चुके थे। अत: शहाजी महाराज ने अपने पुत्र शिवाजी को शिक्षित और प्रशिक्षित किया था।

प्रत्येक बच्चे का पहला गुरु उनकी माँ होती है। बचपन से ही माँ अपने बच्चों को बोलना, चलना, उठना, बैठना, अच्छे बुरे का अंतर बताना और बच्चों को संस्कारित करने का काम करती हैं। जीजाबाई भी राजघराने से होने के कारण वह भी शिक्षित थी। शस्त्र, शास्त्र की भी उन्हें प्राथमिक जानकारी थी। उन्होंने शिवाजी महाराज को अपना शिक्षा और संस्कार रुपी दुध पिलाया था। अपने बच्चे को जीजाबाई ने भी रामायण, महाभारत जैसे वीर कथाओं को सुनाया था। इस कथाओं को सुनकर वे निडर, स्वाभिमानी, साहसी बन गये थे। माता जीजाबाई ने उन्हें अन्याय, अत्याचार, पीड़ित, शोषितों और अपने स्वदेश, स्वधर्म, स्वातंत्र्य के लिए लडने का उपदेश दिया था। इसलिए शिवाजी महाराज ने यौनावस्था में आते ही केवल १५ साल की उम्र में ही स्वराज्य की शपथ ली थी। शिवाजी महाराज के लिए माता जीजाबाई पिता, गुरु, मार्गदर्शक, सलाहकार, प्रेरणाशक्ति, के रुप में कार्यरत रही थी। कुछ ऐतिहासिक विद्वान या मध्यकालीन जीवनीकारों का कहना हैं कि दादोजी को शिवाजी महाराज के गुरु के रुप में मानते हैं, परंतु मध्यकालीन सभी जीवनियों में सबसे प्रामाणिक और यथार्थ सभासद की लिखित जीवनी मानी जाती हैं। इस जीवनी में दादोजी कोंडदेव का कहीं नाममात्र भी उल्लेख नहीं है। आधुनिक ऐतिहासिक विद्वान आदिलशाह का निष्ठावान सेवक के रुप में दादोजी कोंडदेव को मानते हैं। दादोजी कोंडदेव उनका काम स्वराज्य के विरोधी होने का प्रमाण भी देते हैं। उन्नीसवीं शताब्दी के कुछ जीवनीकारों ने रामदास स्वामी को गुरु के रुप में प्रस्थापित करने का वर्णन किया है। शिवकालीन पत्रों से यह स्पष्ट हो चुका है कि रामदास स्वामी १६७२ तक स्वराज्य में नहीं बल्कि आदिलशाह के 'सज्जनगड' पर रहते थे। स्वयं रामदास स्वामी ने एक पत्र के माध्यम से सन् १६७१ में स्वराज्य में आने की

शिवाजी महाराज को अनुमति माँगी थी। इस संदर्भ में इतिहासकार चंद्रशेखर लिखते हैं कि, "कई ऐतिहासिक दस्तावेजों से स्पष्ट दिखाई देता हैं कि शिवाजी और रामदास की भेट ही नहीं हुई। रामदास ने शिवाजी को अप्रैल १६७२ को सिर्फ एक खत लिखा था।"[२२] अर्थात आधुनिक काल के कुछ ऐतिहासिक विद्वानों ने यह सम्प्रमाण सिध्द किया हैं कि रामदास स्वामी ने स्वयं शिवाजी महाराज के राज्य में आने के लिए १६७२ में एक पत्र लिखा था। उसके पहले वे स्वराज्य में नहीं थे। बल्कि आदिलशाह के शासन में 'सज्जनगड' पर रहते थे। रामदास फिर राज्यभिषक के समय भी उपस्थित नहीं थे। शिवाजी महाराज के गुरु के रुप में रामदास स्वामी को रखना केवल दंत कथा मानी जा सकती हैं। यह दंतकथा शिवाजी महाराज के मृत्यु पश्चात २०० साल बाद गुरु के रुप में रामदास स्वामी का वर्णन आया हैं।

इस प्रकार शिवाजी महाराज बचपन से ही कुशाग्र बुध्दि के चतुर और जिज्ञासू वृत्ति के थे। उनके शिक्षा का प्रबंध पिता शहाजी के द्वारा किया गया था। उनके गुरु के रुप में माता जीजाबाई रही जिन्होंने शिक्षित और संस्कारित किया था। कुछ जीवनियों में दादोजी कोंडदेव, रामदास स्वामी को गुरु स्थान देने का अनऐतिहासिक वर्णन किया गया हैं। उनके स्वराज्य निर्माण की प्रेरणा, शक्ति, सलाहकार, मार्गदर्शक उनकी माता जीजाबाई थी।

३.२.२. नम्रता :

एक राजा में कठोरता, तटस्थता के साथ-साथ नम्रता का भी गुण होना चाहिए। शिवाजी महाराज गुणी, विद्वान, संत के साथ नम्रता या विनम्रता का भाव रखते थे। शिवाजी महाराज अपने माता-पिता के साथ-साथ संत, विद्वान, कवियों का अत्याधिक आदर करते थे। उनकी इस नम्रता के कारण महाराष्ट्र के समकालीन संत तुकाराम महाराज, रामदास स्वामी ने उनके गुणों का गान भी किया है। माता जीजाबाई ने उनके उपर बडों के प्रति नम्रता के गुणों का

बीजारोपन किया था। शिवाजी महाराज उम्रदराज शत्रुओं के साथ बातचित में भी बडी विनम्रता दिखाते थे। अफजल खाँ जैसे स्वराज्य को नष्ट करने की शपथ लेकर आदिलशाही दरबार से आता हैं। बडे नम्रता से उनके वकिल से कहते हैं कि, "खान वडिल आहेत. मेहेरबानी करुन जावलीस येऊन भेट देतात. तरि आपन भेटिस येतो."[२३] अर्थात शिवाजी महाराज खां के वकिल के पास संदेश भेजते हैं कि खान हमेशा बहुत बडे हैं। वे हमारे उपर कृपाकर जावली प्रदेश में आकर मुझे मिलने का अवसर दे। 'मैं जावळी प्रदेश में स्वयं वहाँ आ जाता हुँ'। मुगल बादशाह औरंगजेब के द्वारा भेजा गया मिर्जाराजा जयसिंह को बडी आदरता के साथ बातचित करते थे। स्वंय उनके सामने संधि का प्रस्ताव रखते हैं। कर्नाटक प्रांत की ओर जाते समय भागानगर के कुतुबशाह के सामने भी बडी नम्रता दिखाते है। स्वय को छोटा भाई मानकर उन्हें बडे भाई के समान मानते हुए उनसे मिलने जाते हैं। उन्हें न आने की कसम देकर शिवाजी महाराज कहते है कि, "तुम्ही न येणे. आपण वडील भाऊ मी धकटा भाऊ. आपन पुढे न यावें."[२४] अर्थात भागानगर का कुतुबशाह शिवाजी महाराज से उम्र से बडे थे। कुतुबशाह शिवाजी महाराज को स्वयं मिलने के लिए आ रहे थे। शिवाजी महाराज ने बडी नम्रतापूर्वक उन्हें अपना बडा भाई समझकर कहाँ की आप हमसे मिलने के लिए मत आईये। आप मेरे बडे भाई के समान है। मैं आपका छोटा भाई हूँ। आप चलकर मुझे मिलने न आये मैं आपकों मिलने आ जाता हूँ। इस प्रकार की नम्रता का भाव वे रखते है। वे पिता शहाजी राजे और माता जीजाबाई के प्रति अत्यंत नम्रता का भाव रखते हैं। पिता शहाजी राजे कई वर्षों के बाद जीजाबाई और शिवाजी महाराज को मिलने आते है। शिवाजी महाराज ने अपने पिता का विनम्रता से बडा आदर सत्कार किया था। सौतेला भाई व्यंकोजी राजे को अपने सरदारों द्वारा युध्द में परास्त करने के बाद भी बडी विनम्रता से उनके जीते हूए प्रदेश वापस कर देते हैं। वे अपने सरदारों और सेनाओं को कभी अपमानित नहीं करते हैं। उनके प्रति भी विनम्रता का भाव दिखाते हैं। तानाजी मालुसरे स्वराज्य

के लिए जब शाहिद होता है तो स्वयंम उसके घर जाते हैं। तानाजी के पुत्र रायबा को हमदर्दी जताते हुए बडी विनम्रता दिखाते है। इस घटना का वर्णन शिवकालीन शाहिर तुळसीदास अपने 'तानाजीचा पोवाडा' में लिखते हैं कि,

"भिऊ नको माझे बेटा। शिवाजी महाराज तो गेला,

तान्हाजी सुभेदार आहे तूला"[२५]

अर्थात शिवाजी महाराज तानाजी मालुसरे के बेटे 'रायबा' को अपनी छाती से लगाकर बडी विनम्रता से उसे कहते है कि 'तु डरना मत मेरे बेटे' जो मरा वह शिवाजी था। मैं तुम्हारे सामने तानाजी मालुसरा बनकर ही खडा हूँ। मैं तुम्हारे पिता के जैसा ही हूँ। इस प्रकार सरदार के दुर्भाग्य पूर्ण मृत्यु होने पर वे उनके घर जाकर उनके प्रति विनम्रता का भाव हमेशा रखते थे। सरदार तानाजी के लिए उन्होंने १२ दिनों का शोक भी मनाया था।

इस प्रकार शिवाजी महाराज के नम्रता के गुणों का वर्णन मध्यकालीन मराठी साहित्य में किया गया हैं। वे बचपन से ही विनम्र स्वभाव के रहे थे। माता-पिता, संत, बडों का आदर अतिथ्य करते थे। अपनी उम्र से बडे शत्रुओं को भी वे विनम्र होकर बात करते थे। सेना या सरदार की दुर्भाग्यवश मृत्यु पर वे गहरा शोक मनाते हुए उनके घरों में जाकर विनम्रता से हमदर्दी दिखाते हैं। इस विनम्रता के भाव को साहित्यकारों ने प्रकट किया है।

२.२.३. बुध्दि चातुर्यता :

शिवाजी महाराज जन्मजात प्रतिभासंपन्न राजा थे। वे कुशाग्र बुध्दिमत्ता के धनी थे। वे जटिल विषय या समस्या को बुध्दि चातुर्य से बडी आसानी से हल करना जानते थे। उन्हें बचपन से ही माता जीजाबाई ने बौध्दिक चातुर्य का पाठ पढाया था। बुध्दिमानी व्यक्ति हर निर्णय सोच समझकर लेता है। वह भावनाओं के आवेश में कभी बहता नहीं है। शिवाजी महाराज ने निर्णय सोच-समझकर लिए

हैं। भावनाओं के आवेश में कभी राजे ने निर्णय नहीं लिया हैं। बीजापुर के आदिलशाह ने उनके पिता शहाजी राजे को जिजिं में मुस्तफा खाँ की सहायता से कैद कर लिया था। यह समाचार सुनकर शिवाजी महाराज दुविधा में पड गये थे। उन्होंने सोंचा की पिता शहाजी को छुडाने गये तो स्वंय उसके हाथ में आ जाएगे पिता को छुडाने न जाए तो उनकी आदिलशाही के द्वारा यातना या मृत्यु दंड भी दिया जा सकता था। इस समस्या का बुध्दिचातुर्य से हल निकालते हुए उन्होंने शाहजहाँ के पुत्र सुभेदार मुराद द्वारा शहाजंहाँ को पत्र लिखवाया था। शहाँजहाँ ने आदिलशाही को धमकी भरा पत्र लिखने पर आदिलशाह ने शहाजी राजा को मुक्त कर दिया था। शिवाजी महाराज ने यह निर्णय बुध्दि चातुर्य के आधार पर लिया था। शत्रु के साथ संधि करते समय सोच-विचार करके ही निर्णय लेते थे। अपनी कम सेना होने पर भी बुध्दि चातुर्यता से लाखों की फौज लेकर आनेवाले सरदारों को परास्त किया हैं। शाईस्ताखाँ, अफजल खाँ, को बुध्दि चातुर्य से ही परास्त किया था।

औरंगजेब द्वारा आगरा के दरबार में शिवाजी महाराज को कैद कर लिया जाता है। औरंगजेब के द्वारा उन्हें छोडने का कोई इरादा न देखकर वे अपनी बुध्दि चातुर्य से शत्रु के कैद से निकल जाते है। उन्होंने कैद से निकलने के लिए बीमारी का बहाना बनाया था। स्वास्थ्य ज्यादा बिघडने का बहाना बनाकर लोगों की दुवा लेने के लिए मिठाई को बडे-बडे लकडियों के पिठारे में भेजने की अनुमति माँगी थी। बादशाह ने अनुमति देते ही बडी चतुरता से एक पीटारे में अपने पुत्र संभाजी को भेज दिया। उसके पश्चात अपनी वेशभूषा को अपने सेवक हिरोजी फर्जद के पहनाकर उसे पलंग पर सुलाया था। इस प्रसंग के बारे सभासद लिखते है कि, "साज सर्व उतरुन हिरोजी फरजंद यास घालून, आपले पलंगावरि निजविला. हात मात्र त्याचा उघडा बाहेर दिसूं दिला आणि शेला पांघरुन निजविला आणि एक पोरगा रगडावयास ठेविला."[२६]

अर्थात शिवाजी महाराज ने बुध्दि चातुर्य अपनी वेशभूषा को हिरोजी फर्जद को पहनाया था। हिरोजी को अपने पलंग पर सुलाया था। किसी को पता न चले इसलिए अपनी तरह ही फर्जद कें एक हाथ बाहेर-देखने वालों की दृष्टि में रखा। अपने फर्जद के उपर शाल डालकर एक लडका उसे सहलाने के लिए रखा दिया गया। देखने वालों को लग रहा था कि हर रोज की तरह शिवाजी महाराज शाल लपेटकर सो रहे है और एक बच्चा उनके बदन को सहला रहा हैं। किसी को कानोंकान खबर नहीं मिली थी कि शिवाजी महाराज कैद से निकल गये थे। एक-एक करके सभी साथी निकल गये थे। इतनी कडी सुरक्षा के बावजुद शिवाजी महाराज बुध्दि चातुर्य से निकलने में सफल रहे थे। औरंगजेब के तो होश ही उड गये थे। सभी लोग आश्चर्य चकित थे। इनकी बुध्दि चातुर्य को देखकर शिवकालीन संत भी उनके बुध्दिचातुर्य का वर्णन करते है। संत तुकाराम महाराज कहते है कि,

"सांगणे न लगे सर्वज्ञ तू राजा"[२७]

शिवाजी महाराज को लिखे पत्र में तुकाराम महाराज कहते हैं कि आप सर्वज्ञ (बुध्दिमान) हैं। आपको हमे उपदेश देनी की अवश्यकता नहीं हैं। आप स्वय बध्दिमान राजा हैं। शिवाजी महाराज संतों का आदर करते थे। संत तुकाराम महाराज का किर्तन सुनने के लिए शिवाजी महाराज जाने का ऐतिहासिक प्रमाण भी मिलता है।

इस प्रकार मध्यकालीन मराठी साहित्यकारों और संतों ने शिवाजी की बुध्दि चातुर्य की प्रशंसा की हैं। वे अपने बुध्दिचातुर्य से सभी निर्णय लेते है। युध्दनीति में बुध्दि चातुर्य का उपयोग करते हैं। उन्होंने बौध्दिक कुशलता से अपने पिता शहाजी को आदिलशाह की कैद से छुडवाया था। वे कभी भावना के आवेश में गलत कदम नहीं उठाते है। अतः एक बुध्दिमानी राजा थे। वह जन्मजात प्रतिभाशाली थे।

२.२.४. दृढ प्रतिज्ञा :

व्यक्ति अपने उद्देश की पूर्ति के लिए प्रतिज्ञा करता हैं। उस निश्चित उद्देश को सफल बनाने के लिए निश्चित दिशा में योजनाबध्द कार्य करता हैं। प्रतिज्ञा करनेवाले व्यक्ति अपने उध्देश को स्पष्ट रुप से जाहीर करते हैं। महान कार्य की सफलता उनके द्वारा किये गए महान प्रतिज्ञा में होती हैं। शिवाजी महाराज का कार्य महान और महत्वकांक्षी था। 'हिंदवी' स्वराज्य के महान कार्य के लिए महान प्रतिज्ञा ली थी। अपने जीवन के उद्देश्य को सफल बनाने के लिए उन्होंने हिंदवी स्वराज्य की दृढ प्रतिज्ञा ली थी। स्वयं ली हुई प्रतिज्ञ को पूरी दृढता से पूरा करना यह एक महान व्यक्ति की पहचान होती है। उन्होंने हिंदवी स्वराज्य' की महान प्रतिज्ञा लेकर उस प्रतिज्ञा को पूरा करके अपने महानता का परिचय है। छ. शिवाजी महाराज ने अपने १५ साल के किशोरावस्था में ही 'हिंदवी स्वराज्य। की प्रतिज्ञा ली थी। उनके लक्ष्य की ओर संकेत करनेवाला ऐतिहासिक पत्र जो १७ अप्रैल १६४५ ई. को शिवाजी महाराज ने दादाजी नरसप्रभु देशपांडे को पत्र लिखते हुए कहते है कि, "उसने रोहिरेश्वर हमें यश दिया और आगे वह सब मनोकामना हिंदवी स्वराज्य (निर्माण) करके पुर्ण करनेवाला हैं।"[२८]

स्पष्ट है कि, शिवाजी महाराज ने १५ साल के उम्र मे ही रोहिडेश्वर मंदिर में अपने कुछ मावळ साथियों के साथ मिलकर 'हिंदवी स्वराज्य' निर्माण की प्रतिज्ञा ली थी। इस प्रतिज्ञा की पूर्ति के लिए उन्होंने अपना सारा जीवन व्यतित किया हैं। उनकी दृढ प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए उनकी दृढ इच्छाशक्ति थी। उन्हें आत्मविश्वास था, कि वह प्रजा के अन्याय अत्याचारों का निवारण कर सकते हैं। विदेशी शासकों के द्वारा किया जा रहा जनता का शोषण और अत्याचार को नष्ट कर एक नये स्वतंत्र स्वराज्य का निर्माण करने का निर्णय लिया था। उन्होंने स्वातंत्र्य, समता, बंधुता और सामान न्याय पर आधारित हिंदवी स्वराज्य स्थापन किया हैं। हिंदवी का तात्पर्य हिंदू धर्म नहीं बल्कि सभी हिंदुस्तान

में रहनेवाले लोगों से हैं। उन्होंने सभी को साथ लेकर नया स्वतंत्र और सार्वभौम राज्य का निर्माण किया था। वे अपने हिंदवी स्वराज्य की दृढ प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए हमेशा अटल रहे थे। अपने लक्ष्य से वे कभी विचलित नहीं हुए उनके इस स्वराज्य निर्माण के अटल प्रतिज्ञा के बारे में रामदास स्वामी लिखते हैं कि, "निश्चयाचा महामेरु। बहुत जनांसि आधारु।

अखंड स्थितीचा निर्धारु"[२९] अर्थात शिवाजी महाराज निश्चय (प्रतिज्ञा) महामेरु (बडे पर्वत) के समान हैं। वे एक पर्वत की तरह अपने निश्चय पर अटल रहते हैं। वे अनेक लोगों का आधार बन चुके हैं। उन्होंने प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपनी प्रतिज्ञा के निर्धार का निर्वाहन किया हैं। उन्होनें अपने जीवन के उद्देश्य को सफल बनाने के लिए दृढ निश्चय कर सफलता प्राप्त की हैं। उनको माता-पिता और स्वराज्य के अपनी जान की बाजी लगाने वाले उनके साथी 'मावळे' लोगों का सहयोग रहा हैं।

अत: मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के १५ साल की उम्र से स्वराज्य की प्रतिज्ञा लेकर उसके प्रति समर्पन भावना का वर्णन किया हैं। उनकी दृढ प्रतिज्ञा के कारण हिंदवी स्वराज्य का निर्माण हुआ है। वे अपनी प्रतिज्ञा के प्रति अटल रहे थे। रामदास स्वामीने भी उनके 'निश्चय' प्रतिज्ञा को पर्वत की उपमा दी थी। स्वराज्य की प्रतिज्ञा राहिरेश्वर के मंदिर में अपने साथियों के साथ ली थी। शिवाजी महाराज ने हिंदवी स्वराज्य को निर्माण कर अपनी प्रतिज्ञा को पूरा किया हैं।

३.२.५. स्वाभिमान :

श्रेष्ठ पुरुषों में स्वाभिमान का गुण होता है। निर्बल, कमजोर आत्मबलहीन व्यक्ति में स्वाभिमान नहीं होता। पुरुषार्थ से संपन्न व्यक्तियों में स्वाभिमान होता हैं। स्वाभिमानी व्यक्ति विपरित परिस्थितियों में भी धैर्य के साथ खडा होता हैं। कुछ लोग समय और परिस्थितियाँ अनूकुल होती है तो अपने स्वाभिमान का झुठा

दिखावा करते हैं। विपरित परिस्थितियों में अपने स्वाभिमान को किसी के पैरों पर रखकर उसको समर्पित होते हैं। सच्चा स्वाभिमानी वही होता हैं जो अपनी जान की बाजी लगाकर भी विपरित परिस्थितियों में अपने भीतर के स्वाभिमान को जगाये रखता हैं। शिवाजी महाराज विपरित परिस्थितियों में भी अपने स्वाभिमान को हमेशा जगाए रखा है। स्वाभिमान का गुण उनके अंदर बचपन से ही माँ जीजाबाई के द्वारा संस्कारित किया गया था। एक बार बचपन में पिता शहाजी के कहने पर वे आदिलशाह का दरबार देखने के लिए जाते हैं। पंताजी पंत के साथ दरबार में शिवाजी महाराज पहुँचते हैं, उस बाल शिवबा के स्वाभिमान का चित्रण मल्हार चिटणिस 'सप्तप्रकरणालाक चरित्र' में करते हुए लिखते है कि, "एके दिवशी आग्रह करुन बादशाहचे भेटीसही नेले असतां त्यांनी त्यास मुजरा करणे अथवा आदब (बजावणें) ते न करितां जाऊन बसले।"[३०]

अर्थात एक दिन शिवाजी महाराज को आदिलशाह का दरबार दिखाने के लिए पिता शहाजी के आग्रह पर पंताजी पंत लेकर गये थे। आदिलशाह के दरबार में जाने के बाद उन्होंने दरबारी नियमों के अनुसार उन्हें आदिलशाह को मुजरा या कुर्निसात करना पडता था। लेकिन शिवाजी महाराज आदिलशाह के सामने मुजरा या आदब नहीं किया। अपने स्वाभिमान को दर्शाते हुए सीदा अपनी जगह पर जाकर बैठ गये। बचपन से ही उन्हें अन्याय अत्याचारियों के सामने न झुकने की शिक्षा उनके माता के द्वारा दी गयी थी। जब किशोरावस्थाओं, युवा, तारुण्य तक आये तो उनकी स्वाभिमान उनके व्यक्तित्व की पहचान बन गयी।

जब वे बडे हुए तो अफजलखों आदिलशाही सरदार था। वह शिवाजी महाराज को मिलते समय अपमानीत शब्दों का प्रयोग कर रहा था। शिवाजी महाराज ने भी उन्हें 'पाकशाला का पुत्र' कहकर उसी प्रकार अपमानित किया था। आगरा के दरबार में शिवाजी महाराज को अपमानित करने का काम मुगल बादशाह औरंजेब के द्वारा होता हैं। इस अनुचित व्यवहार को देखकर उनके

स्वाभिमान को ठेस पहुँचती हैं। मुगल सम्राट के दरबारी नियमों की उन्होंने धज्जियाँ उडाते हुए वह किसी भी नियमों का पालन नहीं करते हैं। हालांकि रामसिंह के द्वारा सभी दरबारी नियमों को समझाया था। यवनों के सामने झुकना उन्हें सलाम (आदब) करना पसंद नहीं। उन्हें मालुम था कि औरंगजेब दरबार के नियमों को तोडने पर उन्हें दंडित किया जाएगा। पर उन्होंने अपने स्वाभिमान को इस विपरित परिस्थितियों में भी नहीं छोडा। इस प्रसंग का वर्णन मल्हार चिटणिस करते हुए कहते हैं कि, "भेटीस गेलियावरि यवनास भुईस हात लाऊन सलाम करणें हे काय? हे इर्षा मनांत येऊन बावरेपणे रामसिंगांनी सांगितंला मार्ग सोडिलां, आणि कुर्नीस केली नही."[३१] अर्थात आगरा के दरबार में जाने पर उन्हें बादशाह को सलाम करना उन्हें पसंद नहीं हैं। औरंगजेब जैसे विदेशियों के सामने वे कभी झुकना नहीं चाहते थे। वे स्वाभिमानी होने से सोचने लगे की यवनों को हम सलाम करे यह क्या है? उनके मन में स्वाभिमान (ईर्षा) जागृत हुआ और अचानक से रामसिंह के द्वारा बताये गये सभी नियमों को छोडकर कुर्निसात भी नहीं की थी। शिवाजी महाराज शत्रुओं के द्वारा अपमानित होने पर अपने अस्तित्व की पहचान को बनाये रखने के लिए वे स्वाभिमान कभी नहीं छोडते। चाहें परिस्थितियाँ विपरित हो या अनुकूल हो।

इस प्रकार मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के स्वाभिमान का वर्णन किया हैं। सच्चा वीर, वही होता हैं जो अपने स्वाभिमान को विपरित परिस्थितियों में भी बनाये रखता हैं। शिवाजी महाराज वीर राजा थे। बचपन से जीवन के अंत तक उन्होंने स्वाभिमान का निर्वाहन किया था। वे चाहे आदिलशाह दरबार हो, खान को मिलते समय का प्रसंग हो, या आगरा का मुगल दरबार के प्रसंगों पर बिना डर अपने स्वाभिमान को सचेत रखा था।

३.२.६. श्रध्दावान :

कोई भी मनुष्य किसी व्यक्ति, स्थान, ईश्वर पर श्रध्दा इसलिए रखता है कि उन्हें हमेशा शक्ति, आत्मविश्वास और निरंतर प्रेरणा प्रदान करें उन से निरंतर प्रेरणा मिलती रहें। कठिन प्रसंग, समस्याओं में व्यक्ति श्रध्दा स्थान, प्रेरणास्थान या ईश्वर को याद करता हैं। वह केवल शक्ति, स्फुर्ति, उर्जा, उत्तेजना, प्रेरणा, आत्मविश्वास के लिए श्रध्दा रखते थे।

भवानी देवी पर शिवाजी महाराज की श्रध्दा थी। उनकी भवानी देवी के उपर श्रध्दा होने के कारण 'प्रतापगड' किले पर भवानी देवी के मंदिर की प्रतिष्ठापना की हैं। वे भवानी के मंदिर में दर्शन लेने के लिए जाते थे। व्यक्तिगत रुप में वे धर्म के उपर श्रध्दा रखनेवाले राजा थे। भवानी देवी के बारे में एक किवंदती बताई जाती हैं कि उन्हें देवी प्रसन्न थी। भवानी ने तलवारा प्रसंन्न होकर भेट रुप में देने की भी किंवदंती हैं। इस प्रकार का वर्णन शिवाजी महाराज के पराक्रम और वीरता के चरित्र का हनन करता हैं। इस प्रकार के वर्णनों से ऐतिहासिक साहित्य का भी हनन हो जाता हैं। वे भवानी देवी की भक्ति केवल श्रध्दा, स्फूति, प्रेरणा और आत्मविश्वास के लिए करते थे। शिवाजी महाराज ज्ञानीभक्त थे, अंधभक्त नहीं।

महादेव :

भौसले घराने के कूल दैवत भगवान शिवजी थे। उनके पूर्वज भगवान महादेव की भक्ति करते थे। पूर्वजों के कारण ही शिवजी की भक्ति उनके घर में आयी थी। शिवाजी महाराज ने हिंदवी स्वराज्य की शपथ भी 'रोहिडेश्वर' जो भगवान शिवजी के मंदिर में ली थी। शिवाजी महाराज ज्ञानी भक्त थे। अपने मावळी (सेना) जब शत्रु पर हल्ला करते समय उनमें नई शक्ति, उर्जा, आत्मविश्वास, एकता की भावना जगाने के लिए 'हर-हर महादेव' की गर्जना

करते थे। इस नारों (जयघोष) के कारण एकजुट, एकता, आत्मविश्वास और एक बडी मानवीय शक्ति का संचार हो जाता था।

माता-पिता :

शिवाजी महाराज मातृ-पितृ भक्त थे। माता जीजाबाई ने उन्हें शिक्षित, संस्कारित किया था। पिता शहाजी महाराज ने उनकी शिक्षा हेतु विशेष विषय के ज्ञानी लोगों को शिवनेरी किले पर भेज दिया था। उन्हें पिता का मार्गदर्शन और सलाह मिलती थी। माता जीजाबाई के सानिध्य में बचपन से ही रहे थे। पिता शहाजी बंगलूरु में रहते थे, इसलिए उनसे मिलना संभव नहीं था। शिवाजी महाराज की अपनी माता जीजाबाई पर अटुट श्रध्दा थी। उनके लिए जीजा माता मार्गदर्शक, प्रेरक और सलाहकार थी। अफजल खाँ को मिलने के लिए जब वे निकलते हैं तो अपनी माँ का आशीर्वाद लेते है। इस प्रसंग का वर्णन करते हुए शिवकालीन शाहिर अज्ञानदास लिखते हैं कि,

"शिवबास्मरे महादेवाला। गळा घातली मिठी।
मातेच्या चरणासी लागला।"[३२]

अर्थात आदिलशाह के द्वारा उनके सरदार अफजल खाँ को शिवाजी महाराज को 'जिंदाया मुर्दा' पकडने और लाने के लिए भेजा गया था। उसको प्रतापगड के नीचे मिलने के लिए जाते समय उन्होंने अपने श्रध्दास्थान कूल दैवत भगवान शिवजी का स्मरण किया था। अपनी माता जीजाबाई के गले मिलकर उनके चरणस्पर्श कर आशीर्वाद लेकर आत्मविश्वास और नयी उर्जा के साथ किले के बाहर निकल पडे थे।

शिवाजी महाराज की अपने पिता के उपर भी बडी श्रध्दा थी। हालांकि वे बचपन से ही पिता शहांजी के छत्रछाया से दूर रहें थे। लेकिन उनकी अपने पिता के प्रति श्रध्दा कम नहीं हुई थी। वे पिता की सलाह को हमेशा मानते थे। पिता

शहाजी की आज्ञा को वे ईश्वर आज्ञा के रुप में देखते है। वे पितृभक्त थे इस कारण ही उन्होंने आदिलशाह के कैद से अपने पिता को छुडवाया था। शहाजी महाराज स्वराज्य में पहली बार शिवाजी महाराज को मिलने आये थे, तो उनका बडा आदर सत्कार किया था। अपने पिता शहाजी राजे को सभी विजित प्रदेश दिखाया था। उनके मार्गदर्शन और सुझाव को आदेश समझकर पालन किया था। पिता और पुत्र के बीच निरंतर पत्रों के माध्यम से वार्तालाप होता था। पिता शहाजी की मृत्यु १६६४ में हुई तो शिवाजी महाराज ने अत्याधिक दु:खा प्रकट किया था। अन्य श्रध्दास्थानों में वे संतों का आदर करते थे। संत तुकाराम महाराज, बाबा याकूत और मौनी बाबा के उपर भी उनकी श्रध्दा रही हैं। इन संतो का भी मार्गदर्शन वे लेते थे। कुछ जीवनीयों में शिवाजी महाराज के गुरु और श्रध्दा के रुप में रामदास स्वामी का नाम जोडा गया हैं। मध्यकालीन सभी जीवनियों में महत्त्वपूर्ण और ऐतिहासिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण मानी जानेवाली 'सभासद बखर' में उनका नाम भी दिखाई नहीं देता है। रामदास स्वामी का सन् १६७१-७२ के तक स्वराज्य से कोई सम्बध नहीं था। यह ऐतिहासिक दस्तावेज और प्राप्त पत्रों के आधारपर सिध्द हो चुका हैं।

इस तरह शिवाजी महाराज एक श्रध्दावान राजा थे। वे भवानी देवी, महादेव, माता-पिता, संतों पर श्रध्दा रखते थे। यह सभी उनके श्रध्दास्थान थे। उनके जीवन में श्रध्दा स्थान का कठीन कार्यों में आत्मविश्वास, शक्ति, उर्जा, स्फूर्ति, प्रेरणा देने के लिए सहाय्यक होते थे। उनके श्रध्दावान स्वरुप का वर्णन मध्यकालीन मराठी साहित्यकारों ने किया है।

३.२.७. साहसी और निर्भयता :

साहस और निर्भयता यह पराक्रमी वीर पुरुष के मुख्य लक्षण हैं। व्यक्ति के प्रतिकुल परिस्थितियों में हम इस लक्षण को देख सकते हैं। शिवाजी महाराज ने प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपने साहस को कभी ढलने नहीं दिया था।

उन्होंने बडे संकटों और कठिन समस्याओं का भी साहस और निर्भयता के साथ सामना किया हैं। वे कभी बडे संकटो को देखकर लडखडाएँ नहीं बल्कि उसका निर्भयता के साथ सामना किया हैं। निर्भय व्यक्ति में ही साहस दिखाई देता हैं। शिवाजी महाराज बडे साहसी राजा थे। आदिलशाह का सरदार अफजल खां बडा ही शक्तिशाली था। उनके नाम से ही शत्रु से डरकर अधिनता को स्वीकार करते थे। अफजल खाँ १२ हजार सेना की फौज को लेकर स्वराज्य में दाखिल हुआ था। उनके साथ शत्रुता का तात्पर्य मौत को गले लगाने के जैसा है। शिवाजी महाराज में साहस था, इसलिए खाँ से न डरते हुए उनसे मिलने जाने का निर्णय किया था। इतना ही नहीं बल्कि खाँ की निर्भिक होकर स्वाभिमान के साथ वार्तालाप भी किया था। वे निडर होकर खडे रहे। खाँ के द्वारा डराने का प्रयास रहा बल्कि शिवाजी महाराज बडे निर्भिकता के साथ उसके भी गले भी मीले थे। बीना निर्भय से खाँ का वध भी कर दिया था।

मुगल सरदार शाईस्ता खाँ एक लाख की फौज लेकर पुजा के महल में डेरा डालकर बैठा था। शाईस्ता खाँ को भी अपनी हिम्मत, साहस और निर्भयता का परिचय दिया था। एक रात अपने कुछ साथियों को लेकर पुणे के महल में प्रवेश किया था। लाखों की फौज के सुरक्षा में रहनेवाला शाईस्ता खाँ के शयन कक्ष में जाकर तलवार से वार किया। इस घटना में खाँ तीन उँगलियाँ काटी थी। लाखों सेना के फौज की सुरक्षा से वे नही डरे पूणा के महल में जाने का साहस उन्होंने जुटाया था। इस प्रसंग के बाद लाखों की फौज का सरदार शाईस्ता खां शिवाजी राजा से डर गया था। शिवाजी महाराज किसी भी शत्रु से नही डरते थे, बल्कि शत्रु उनसे डरते थे।

मिर्जाराजे जससिंह के साथ शिवाजी महाराज संधि कर औरंगजेब बादशाह के आगरा दरबार में जाने के लिए निकलते हैं। शत्रु मुगल बादशाह औरंगजेब को मिलने जाने का साहस उनमें था। वहाँ जाना खतरे से खाली नहीं था फिर भी वे

वह जाने के लिए अपने साथ अपने पुत्र संभाजी को भी लेकर निकलते थे। औरंगजेब भी अपने मामा शाईस्ता खाँ की उँगलियाँ काटनेवाले शिवाजी महाराज को मिलना चाहता था। औरंगजेब बडा विश्वसघाती और क्रूर था। जिन्होंने अपने पिता और भाईयों को तो नहीं छोडा था। उन्हीं के दरबार में शिवाजी महाराज जाते समय रास्ते में एक व्यक्ति से उनका वार्तालाप होता है। वह व्यक्ति के संवाद 'सप्तप्रकरणात्मक चरित्र' में चिटणिस लिखते हैं कि, "तरि दिल्लीश्वर केवळ रावण ऐसाच क्रूर होय! त्याच्या भेटीस तुम्ही मोठा प्रताप करुन, त्यांचे राज्य घेउन थोडके फौजेनिशीं जातां, आणि पुत्रही समागमें नेतां, कोण विचार केलात?"[३३] अर्थात वह रास्ते में मीला हुआ व्यक्ति शिवाजी महाराज से संवाद करता हुआ कहता है कि 'औरंगजेब बादशाह मानों रावन जैसा क्रुर हैं'। उनसे मिलने के लिए आप जा रहे हैं। आपने बडे पराक्रम से उसके राज्य के प्रदेशों को जीता हैं। आप फिर भी बहुत कम सेना साथ लेकर जा रहे हैं और साथ में अपने पुत्र को भी लेकर जा रहें हैं। आपने क्या सोंचा है यह आपकों ही पता है? इस व्यक्ति की सोच और विचार व्यक्ति की न होकर संपूर्ण स्वराज्य के लोगों की भावना थी। इतने बडे शत्रु को मिलने जाते समय कम सेना लेकर जाना और अपने पुत्र को साथ लेकर जाना यह बडे साहस और निर्भयता का काम था। लेकिन डर के कारण जो शत्रु को डरे वे शिवाजी कैसे कहलायेंगे। वहाँ दरबार में जाकर भी उन्होंने अपने निर्भयता और साहस का परिचय देते हुए उनके साथ किये गये अनुचित व्यवहार पर दरबारी में ही निर्भयता के साथ प्रतिक्रिया दी। दरबारी नियमों को तोडकर क्रोधित होकर औरंगजेब के विरोध में कुछ शब्द भी बोल दिये थे। बादशाह औरंगजेब भी उनसे कुछ क्षण के लिए डर गया था।

इस प्रकार मध्यकालीन मराठी साहित्यकारों ने शिवाजी महाराज के साहस और निर्भयता के स्वरुप का वर्णन किया है। वह अफजल खाँ, शाईस्ता खाँ, आगरा दरबार, में अपने शत्रुओं को साहस और निर्भयता का परिचय देते हैं। वे शत्रुओं से नहीं बल्कि शत्रु उनसे भयभित रहते थे। शिवाजी महाराज के कारण

शत्रुओं का साहस टुटा जाता था। शिवाजी महाराज में अदम्य साहस निर्भयता दिखाई देती हैं।

३.२.८. कार्यक्षमता :

असाधारण कार्य की सफलता के लिए अपने लक्ष्य के प्रति हमेशा कार्य तत्पर होना आवश्यक हैं। कार्यक्षम व्यक्ति ही सफलता के हकदार होते है। छ. शिवाजी महाराज अपने हिंदवी स्वराज्य के महान कार्य के लिए हमेशा कार्यक्षम रहते थें। वे अत्यंत परिश्रम और कार्यक्षम व्यक्ति थे। उनकी कार्यक्षमता को देखकर राजा और बादशाह सभी शत्रु आश्चर्य चकित होते थे। वे बचपन से ही कार्यक्षम थे। जब उनकी उम्र १२ साल की थी उस समय पिता शहाजी के द्वारा पुने की जागीर उनको मील गयी थी। उन्होंने पंधरा साल के उम्र में स्वराज्य की प्रतिज्ञा ली थी। प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए कार्य तत्पर होकर आदिलशाही का प्रदेश जीतना शुरु किया था। स्वराज्य के लिए दिन-रात वे कार्यक्षम रहते हैं। उनके मावळे (सेना) भी अपनी कार्यक्षमता से पूरी शक्ति झोंक देते थे। उनके रात-दिन के सफलता से मुगल, आदिलशाह दोनों परेशान हो चुके थें। मुगल बादशाह औरंगजेब ने शाईस्ता खाँ को लाखों की सेना देकर दक्षिण में भेजा था। शाईस्ता खाँ को अपनी कार्य तत्परता का अनुभव कराया। स्वयं रात के अंधेरे में पुने के महल में जाकर शाईस्ता खाँ के तीन उँगलियाँ काटी थी। इसके पश्चात शिवाजी महाराज की इस प्रकार की कार्यक्षमता को देखकर औरंगजेब बादशाह आश्चर्य चकित हो जाते है। इनकी कार्यक्षमता को देखकर मुगल इन्हें राक्षस, देवदूत, जादुगार आदि विशेषण देते हैं। शाईस्ता खाँ को पराजित करने के पश्चात स्वयं बादशाह औरंगजेब कहता हैं कि, "शिवाजी बडा सैतान पैदा हुवा, जो कोण्हीं आजपर्यत कर्म न केलें, तेंच करितो. आपले सुभे बुडविले. खान गेले त्यांची गती अशी केली."[३४] अर्थात मुगल बादशाह औरंगजेब शिवाजी महाराज असामान्य कार्यक्षमता को देखकर कहता हैं कि शिवाजी मनुष्य नहीं हैं, वह तो

राक्षस हैं। इस प्रकार की कार्यक्षमता मनुष्यों में होना संभव नहीं हैं। किसी ने भी आज तक ऐसा कार्य नहीं किया हैं। ऐसा असामान्य कार्य वह करते जा रहा हैं। हमारे अधिकार के गाँव को छिन प्रदेश को जीत रहा है। शाईस्ता खाँ को सेना की फौज देकर भेजा तो रात में उसके शयन कक्ष में जाकर उस कें उपर हमला कर दिया। इस हमले में शाईस्ताखाँ की तीन उँगलियाँ काटी। इस प्रकार की कार्यक्षमता मनुष्य में नहीं हो सकती हैं। उसने मनुष्य के रुप में राक्षस (सैतान) ने ही जन्म लिया हैं।

शिवाजी महाराज की सेना और सरदार स्वराज्य के लिए पूरी ताकत से अपनी कार्यक्षमता सिध्द करने का प्रयास करते थे। तानाजी मालुसरा ने रात में कोंढाना किल्ले पर चढाई की थी। शिवाजी महाराज अकार्यक्षम व्यक्तियों को पद से हटा देते थे। एक बार पन्हाळा दुर्ग पर शिवाजी महाराज थे। आदिलशाह सरदार सिद्दी जोहर ने किले को घेरा था। सरनोबत नेताजी पालकर को पत्र लिखकर पूरी सेना के साथ सिद्दी जोहर पर आक्रमण करने का आदेश दिया था। सर नोबत नेताजी पालकर सही समय पर नहीं पहुँच सके। उनकी अकार्यक्षमता देखकर सरनोबत पद से हटाकर प्रतापराव को सरनोबत बना दिया था।

शिवाजी महाराज की तरह उनकी सेना, सरदार भी कार्यक्षम थे। सभी दिन-रात एक करके स्वराज्य का निर्माण और विस्तार करते थे। अफजल खाँ वध के बाद वे निश्चित नहीं हुए बल्कि तुरंत आदिलशाही प्रदेश पर आक्रमण किया था। खाँ की मृत्यु होने के खबर से पूरी आदिलशाही भयभित हो चुकी थी। सभी सरदार निराश हताश देखकर फायदा उठाकर उन्होंने आदिलशाही प्रदेशों को जीतना शुरु किया था। औरंगजेब ने शिवाजी महाराज को कैद किया था। कैद से पलायन के बाद अपने राज्य में सुरक्षित पहुँचे। पुरंदर संधि में दिये गये २६ किल्लो को केवल चार महिनों के समयावधि में वापस प्राप्त कर लिये थे। इस संदर्भ में सभासद लिखते हैं कि, "पुढे मोरोपंत पेशवे यांणी व निळोपंती व

अंणाजीपंती व मावळे यांणी सव्वीस गड ऐसेच ख्यात करुन चौ महिन्यांनी घेतले."[३५] अर्थात शिवाजी महाराज औरंगजेब के दरबार से अपने स्वराज्य में आने के पश्चात उन्होंने पुरंदर संधि में दिये गये २६ किल्लों के वापस लेने का आदेश दिया था। आदेश मिलते ही मोरोपंत पेशवे, निळोपंत, अणाजी दत्तो और सभी मावळे (सेना) ने दिन-रात एक करके २६ किल्लो को केवल चार महिनों में अपने पराक्रम से प्राप्त कर लिये थे। मावळों की इस कार्यक्षमता पर मुगल बादशाह आश्चर्य व्यक्त कर रहा था। शिवाजी महाराज की तरह उनकी सेना सरदार सभी स्वराज्य के लिए हमेशा कार्यतत्पर रहते थे। उन्होंने अपनी असामान्य कार्यक्षमताओं का प्रदर्शन कर शत्रुओं को परास्त किया है।

इस प्रकार मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज हिंदवी स्वराज्य के लिए निरंतर कार्यतत्पर रहे। उन्होंने अपनी कार्यक्षमता को सिध्द किया हैं। अफजल खाँ जैसे शक्तिशाली शत्रु का वध करना हो या शाईस्ता खाँ को महल में जाकर उँगलियाँ काटना, औरंगजेब दरबार से पलायन करना या स्वराज्य में आने पर चार महिनों में पुरंदर संधि के दिए हुए सभी किल्लों को पुनः प्राप्त करना हो। यह सभी घटनाएँ स्वराज्य के प्रति समर्पित होकर असामान्य कार्यक्षमता को स्पष्ट करती है।

३.२.९. कुशल संघटक :

संघटन शक्ति के बिना महान कार्य या लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकते। हिंदवी स्वराज्य के महान कार्य के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए शिवाजी महाराज ने लोगों को संघटित किया। अन्याय, अत्याचार, शोषण के विरुध्द लोगों में चेतना जगाकर उन्हें संघटित किया। बचपन से ही उन्हें साथियों के साथ खेलने का और अपने साथियों में मील जुलकर रहने के लिए माता जीजाबाई ने उन्हें खुली छुट दी थी। मराठों की आपसी फुट के कारण विदेशी शासक प्रस्थापित हो चुका था। पहले मराठा शक्ति को उन्होंने संघटित कर स्वतंत्र स्वराज्य की चेतना

जगाने का प्रयास किया। मावळ प्रदेश के लोग शिवाजी महाराज और स्वराज्य के लिए लढने, मारने और समय आने पर मरने के लिए भी तैयार हो चुके थे। उनका राज्य सभी को अपना राज्य लगता था। उन्होंने यह अपनेपन की भावना प्रजा, सेना, सरदारों में जगायी था। उनकी सेना में सभी जाती, धर्म के लोग थे। सभी के मन में जाती, धर्म से बढकर उनके लिए स्वराज्य था। अफजल खाँ स्वराज्य पर आक्रमण करने के लिए आया था। शिवाजी महाराज अपने सेनाओं और सरदार से इस बडे संकट के प्रति चिंता प्रकट कर रहे थे उस समय सेना के स्वराज्य समर्पण भावों को व्यक्त करते हुए मल्हार चिटणिस लिखते है कि, "महाराज आज्ञा करितील ते प्राणपरती कस्त करुं आणि शेवटास लाऊँ हेंच सर्वाचे लक्ष।"[३६] अर्थात शिवाजी महाराज अफजल खाँ के साथ युध्द करने के लिए दुविधा मन:स्थिति में थे। अपनी सेनाओं से चर्चा कर रहे थे। सेना के द्वारा कहाँ गया की महाराज जो आज्ञा हमें देते है उसे मरतें दम तक पूरा करने प्रयास करेंगे। आपकी आज्ञा को पूरा करना ही हमारा अंतिम लक्ष्य रहेगा। इस प्रकार की सेनाओं में एक संघटित भावना शिवाजी महाराज ने निर्माण की थी। सेना और सरदारों को उन्होंने संघटीत किया हैं। इस प्रकार का संघटन तभी संभव होता है जब संकट के समय में नेता सबसे आगे होता हैं। तभी उसकी सेना, सरदार पूरी शक्ति और निष्ठा से प्रोत्साहित होकर लडती हैं। अन्य राजा और शिवाजी महाराज में यही एक अंतर है कि दूसरे राजा राज महल में बैठकर आदेश देते थे। शिवाजी महाराज स्वयं युध्द का हिस्सा बनकर या सभी के साथ युध्द भूमि में दिखाई देते हैं।

कोढांना किल्ला जीतने के लिए सरदार तानाजी मालूसरा जाता हैं। तानाजी मालुसरा युध्द में शाहिद होता हैं। उनके बेटे 'रायबा' के घर जाते है। उसके बेटे को हमदर्दी जताकर उनकी शादी भी कराते हैं। शादी में उसके पिता का कर्तव्य निभाते हैं। इस तरह की सरदारों के पति सन्हदयता से सेना, सरदारों में स्वराज्य के प्रति गहरी निष्ठा तैयार होती थी। शिवाजी महाराज ने राजाओं को

स्वतंत्र स्वराज्य के लिए प्रेरित कर उनका संघटन किया था। बुंदेला के राजा छत्रसाल को अपना मित्र बनाया था। उन्हें स्वतंत्र्य राज्य के लिए उपदेश भी दिया था। राजा छत्रसाल ने मुगलों का विरोध कर स्वतंत्र राज्य की स्थापना भी की थी। मिर्जाराजे जयसिंह के पुत्र रामसिंह को अपना मित्र बनाया था। भागानगर का कुतुबशाह उनका मित्र बन गया था। शिवाजी महाराज का संघटन बहुत मजबूत था। औरंगजेब के भाई शाह आलम को भी उन्होंने अपना दोस्त बनाया था। समय के अनुरुप शाहअलम के साथ दोस्ती की थी। औरंगजेब इससे इर्षा करने लगा था। एक समय मुगलों से संधि कर अपने सरदार निराजी पंत और प्रतापराव को कुछ सेनाओं के साथ शहाआलम के पास भेजा था। दो साल तक अपनी सेना शहाआलम के पास रखकर एक विश्वासपात्र दोस्त बनाया था। सभासद लिखते हैं कि, "दोन वर्ष लष्कराचे पोट भरले. आणि शाहाजादा मित्र जोडला."[३७] अर्थात दो सालों तक अपने दो सरदार और सेनाओं को शाहाआलम के पास भेज दिया था। दो साल तक सेनाओं का सभी खर्चा शहजादा की ओर से दिया गया। मुगलों के साथ मित्रता बनाकर आदिलशाह और कुतुबशाह के प्रदेश को जीतना शुरु किया था। एक सत्ता के विरुध्द दूसरी सत्ताओं को संघटित करने का प्रयास उन्होंने किया हैं।

इस प्रकार मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज को एक कुशल संघटक के स्वरुप का वर्णन किया हैं। उन्होंने प्रजाओं, सेनाओं को संघटित किया। छोटे-छोटे राजाओं को संघटित कर उनके मन में स्वाभिमान, स्वातंत्रता, स्वदेश, की भावनाओं का जगाया था। मुगल बादशाह औरंगजेब के भाई शहाआलम, कुतुबशाह और अंत में आदिलशाह को भी अपने पक्ष में कर उनका रक्षण किया था।

३.२.१०. कुशल राजनीतिज्ञ :

एक शासक की नीति उस राज्य या देश को उत्कर्ष या अपकर्ष की ओर ले जाती हैं। नीति अच्छि हो तो देश का विकास होगा अगर नीतियाँ गलत हो तो देश का विनाश होगा। किसी देश का राजा हो या नेता उनकी राज्य के सत्ता का विस्तार करने के लिए एक राजनीति होती हैं। अपने पडोसी देश या राज्य के साथ विशिष्ट उध्देश के लिए संम्बध प्रस्तापित किया जाता है। कुशल राजनीति से तात्पर्य है कि राजा या नेता उचित समय और स्थान पर उचित निर्णय लेने की कलाओं को 'कुशल राजनीतिज्ञ' कहते हैं। शिवाजी महाराज कुशल राजनीतिज्ञ थे। उन्होंने उचित समय और स्थान पर भविष्य के हितकारी परिणामों को ध्यान में रखकर उचित निर्णय लिये है। कोई भी युध्द केवल सेना शक्ति, युध्दनीति से नहीं जीता जाता। बल्कि एक कुशल राज नेता अपनी राजनीति की चाल चलाकर भी युध्द न करते हुए भी अपना उद्देश्य सफल कर सकता है। शिवाजी महाराज ने भी अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए केवल युध्द नहीं किये बल्कि युध्द न करते हुए संधि कर अपने उद्‌देश सफल बनाया था।

शिवाजी महाराज की राजनीति यही रही है कि, शक्तिशाली शत्रु के युध्द में अपनी सेना शक्ति और स्वराज्य की हानी हो रही हो तो उनके साथ संधि करते थे। शिवाजी महाराज की राजनीति शत्रु के समझ से बाहर थी। उनकी राजनीति अनुभवी, चतुर, राजनीतिज्ञ, राजा, सरदारों के समझना कठिन था। उनके राजनीति को अफजल खाँ, मिर्जाराजे जयसिंह, आदिलशाह, कुतुबशाह, पोर्तुगीज, स्वयं मुगल बादशाह औरंगजेब तक नहीं समझ सका था। एक समय बादशाह शहाजहाँ से पत्र लिखवाकर अपने पिता शहाजी राजे को आदिलशाही के कैद से छुडाते हैं। फिर उसी मुगलों का प्रदेश को जीतना शुरु करते हैं। आदिलशाह उनसे संधि कर लेता हैं। अंत में आदिलशाही का रक्षण करते हैं। उनकी राजनीति निर्णय समयानुरुप स्वराज्य के हित के लिए थी।

उन्होंने अपने राजनीति में साम, दाम, दंड, भेद का उपयोग किया था। इस प्रकार की राजनीति करते समय वर्तमान और भविष्य के परिणामों के बारे में सोचते थें। उनके राजनीतिक विचारों के बारे 'सत्पप्रकारणात्मक चरित्र' जीवनी में लिखा हैं, "देश, काल, वर्तमान पाहून कोठें काय करावयास चार उपाय-साम, दान, दंड, भेद, साम म्हणजे (शत्रूशी) समानत्वे चालणे. दान म्हणजे काहीं देऊन चालणें, भेद म्हणजे त्यांचे राज्यांत फितूर करणें, दंड म्हणजे त्याजवर निग्रहच करने, हे पाहून (करिते जाले.)"[३८] अर्थात शिवाजी महाराज राजनीति में स्थान, समय, परिस्थिति और वर्तमान को ध्यान में रखते हुए राजनीतिक निर्णय लेते थे। राजनीतिक निर्णय लेते समय उन्होंने चार महत्वपूर्ण उपाय बताये हैं। साम, दाम, दंड, भेद का अर्थ बताते हुए वे कहते हैं कि 'साम' से तात्पर्य है कि शत्रु के साथ समानत्व का व्यवहार करें। (दान) से तात्पर्य है कि शत्रु को कुछ रिश्वत देकर उसे अपने वश में कर लेना। 'भेद' से तात्पर्य है कि शत्रु के राज्य के अंदर भेद निर्माण करना (उनके लोगों में फूट डालना) और दंड से तात्पर्य है कि शत्रु साम, दाम, भेद से नहीं पराजित नहीं होता तो उसके उपर पूरी शक्ति के साथ आक्रमण करके उसे नष्ट कर अपने राज्य में शामिल करना। इस प्रकार की राजनीति करते समय बड़ा सतर्क रहना चाहिए। इस प्रकार की राजनीति वर्तमान समय में भारत के राजनीतिक दलों के द्वारा की जा रही हैं। इनकी राजनीति धर्म से प्रेरित नहीं थी। मिर्जा राजे जयसिंह के विरुध्द उन्होंने समयसुचका दिखाते हुए 'साम' समन्वयता के साथ राजनीति की थी। शिवाजी महाराज के इस 'साम' (संधि) को मिर्जा राजे भी नहीं समझ सके थे। संधि में जो किल्ले दिए गये उस किल्लों पर किलेदार और सेना शिवाजी महाराज की ही थी। पुरा रसद और सेना का खर्चा मुगल बादशाह का था। कुछ सालों बाद संधि में दिये हुए किले केवल चार महिने में वापस लिए थे। मुगल बादशाह के सरदारों को भी उन्होंने 'दान' अभूषण, अलंकार, पैसे देकर राज्य पर आक्रमण न करने के लिए शांत कर दिया था।

बादशाह औरंगजेब ने बहादुर खाँ और दिलेर खाँ को स्वराज्य पर आक्रमण करने के लिए बडी सेनाओं के साथ भेजा था। उस समय शिवाजी महाराज स्वराज्य पर अक्रमण न करने के लिए मुगल सरदार बहादुर खां को बहुत सारा धन (दाम) देते है। बहादुर खाँ को रिश्वत देकर उनके साथी दिलेरखान को पराजित करते है। उनके इस राजनीति के संदर्भ में रामचंद्र आमात्य ने अपने अज्ञापत्र में लिखा है कि, "बहादुरखानास 'कित्येक दृव्य अलंकार भूषणे रत्नखचित देउन राज्यास उपद्रव न करण्यास' शिवाजी ने निरोप दिला. संभाजी दिलेर खानास मिळाला. त्यास आपल्याकडे पाठवावे असे औरंगजेबाने सांगितले. हे वर्तमान बहादुरखानाने शिवाजीस कळविले आणि संभाजी परत आला. बहादूर खान वे दिलेरखान ह्यांमधील वितुष्टात हंबीररावाकडून दिलेरखानाचा पराभव केला."[३९]

अर्थात शिवाजी महाराज ने औरंगजेब के द्वारा स्वराज्य पर आक्रमण के लिए भेजे गये बहादर खान को दृव्य, अलंकर, अमुल्यरत्नों को देकर उसके आक्रमण को रोका था। दिलेर खान के पास अपने पुत्र संभाजी को स्वंय भेज दिया था। कुछ दिन बाद औरंगजेब संभाजी महाराज को दिल्ली बुलाने के लिए पत्र लिखता हैं। इस समाचार को बहादुर खान शिवाजी महाराज तक पहुँचाता है। संभाजी महाराज को फिर स्वराज्य में लाया जाता हैं। इसी कारणों से दिलेरखान और बहादूर खान में इन्हीं के बीच झगडा होता हैं। इसका फायदा उठाकर शिवाजी महाराज अपने सेनापति हंब्बीरराव को दिलेरखान पर आक्रमण कर उसे पराजित करते है। स्पष्ट होता है कि, इस प्रसंग में शत्रु पर साम, दाम, भेद की राजनीति की गयी हैं। बहादुर खान और दिलेरखान इन दो सरदारों में भेद किया जाता हैं। अंत में दिलेर खान के उपर पूरी शक्ति के साथ आक्रमण कर उसे हरा दिया जाता है। इस प्रकार की राजनीति औरंगजेब भी नहीं समझ पाता हैं। शिवाजी महाराज की गुढ राजनीति थी।

इस प्रकार मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज की गुढ राजनीति को कोई नहीं समझता था। वे समय, स्थान, परिस्थिति को ध्यान में रखकर साम, दाम, दंड, भेद, की राजनीति करते हैं। राजनीति में किसी को भी सर्वकालिक मित्र या शत्रु नहीं बनाया। जो स्वराज्य के हित में हो उसके साथ मित्रता रखी थी। आदिलशाही का रक्षण जीवन के अंतिम सालों में किया था। इसे देखकर सब आश्चर्य चकित थे। क्योंकि उनके पिता शहाजी को इसी आदिलशाही ने कैद किया था। शिवाजी महाराज की राजनीति जात, धर्म से प्रेरित नहीं थी। शहाआलम औरंगजेब का जेष्ठ पुत्र उनके साथ उन्होंने राजनीतिक संबंध समय के अनुरुप मजबूत किये थे। इसलिए शिवाजी महाराज एक कुशल राजनीतिज्ञ थे। वर्तमान समय में भारत के राजनीतिक दल उनके राजनीतिक विचारों का अध्ययन कर उसी प्रकार की राजनीति करने का प्रयास कर रहे हैं। शिवाजी महाराज एक कुशल और आदर्श राजनीतिज्ञ हैं।

३.२.११. कुशल युध्दनीतिज्ञ :

कुशल यौध्दा वहीं होता है जो प्रत्यक्ष रुप से युध्द में सेना, सरदारों के साथ युध्दभूमि में रहें। समय पर अपना युध्द चातुर्य प्रकट करें। शिवाजी महाराज कुशल यौध्दा थे। युध्द के प्रसंग में एक कुशल यौध्दा अपनी युध्दनीति पहले से ही तैयार रखता हैं। शत्रु पक्ष की शक्ति और कमजोरियों का बडी कुशलता से पता लगाता हैं। युध्दभूमि में शत्रु के उसी कमजोरियों पर वार करता हैं। उन्होंने परंपरागत युध्दनीतियों के साथ-साथ स्वयं की एक स्वतंत्र युध्दनीतियों का निर्माण किया हैं। उनके इस युध्दनीति को 'शिवनीति' कहाँ जाता हैं। इस युध्द नीति में गनिमा कावा, छापामारी, निषा युध्द आदि शामिल हैं। युध्दनीति में 'गुप्तचर विभाग' से गुप्त जानकारी प्राप्त कर अपनी युध्दनीतियों को समयानुरुप उपयोग में लाते थे। शिवाजी महाराज का गुप्तचर विभाग बडा ही सशक्त था। इस विभाग के प्रमुख बहिर्जी नाईक थे। यह विभाग शत्रु पक्ष की हर चाल को, उसके

दरबारी हलचाल की सुचनाएँ बडी तेजी से शिवाजी महाराज को दी जाती थी। शत्रु की नीति और शक्ति का उन्हें पता चलने पर अपनी युध्दनीति को तैयार करते हैं। उनके गुप्तहेरी विभाग के बारें में 'सभासद' लिखते हैं कि, "पुढे जितकी शहरें मोंगलाईत होती ते जागां चार पांच माणसें वेषधारी करुन पाळतीस ठेविलीं पाळती होऊन दोघे खबर सांगावयास यावे. दोघांनी तेथें हुशार राहावें."[४०] अर्थात मुगल प्रदेश के सभी शहरों में शिवाजी महाराज चार, पाँच वेषधारी गुप्तचर रहते ही थे। उनके गुप्तचर ने वेशभूषा बदलकर शत्रु पर नजर रखते थे। उन शहरों में रखे हुए वेषधारी गुप्तचरों में से दो गुप्तचर गुप्त सुचना की जानकारी देने के लिए शिवाजी महाराज के पास आते थे। दो गुप्तचर बडी सतर्कता और होशियारी से शत्रु के हलचाल के उपर नजर रखते है। गुप्तचरों से मिली जानकारी के अनुसार युध्दनीतियों के तंत्र को अपनाया जाता था।

शिवाजी महाराज युध्द के मुहिम में बडी सावधानी करते थे। शत्रु के सावधान होने से पहले ही उनके उपर हल्ला कर वापस भाग जाते थे। उनके इस युध्द तंत्र को छापामारी कहाँ जाता हैं। शत्रु सावध होने से पहले आक्रमण कर उनकी सेना वापस अपने जगह निकल जाती थी। इनके इस तंत्र के कारण शत्रु बहुत भयभित रहते थे। शिवाजी महाराज को 'गनिम कावा' युध्दनीतियों के जनक माना जाता हैं। 'गनिम' का अर्थ 'शत्रु' और कावा का अर्थ 'हमला' हैं। मराठी में इसे 'गनिमी कावा' कहते हैं। बलशाली शत्रु को हराने के लिए गुप्त रुप से शत्रु पर हमला करने के तंत्र को 'गनिम कावा' कहते हैं। पुने के महल में लाखों शक्तिशाली सेना की फौज के बीच लेकर शाईस्ता खाँ डेरा डालकर बैठा था। एक रात महल में घुसकर छापा मारकर शाईस्ता की तीन उँगलियाँ काटी थी। जब तक शत्रु की सेना सावधान हो जाए तब तक वे अपने स्थान पर पहुँच गये थे। वे शत्रु को किसी प्रकार की भी अफवाएँ फैलाकर भयभित कराते थे। अपनी ही सेना के लोग विरोधी सेना के खेमें में जाकर कुछ अफवाहें फैलाते थे। इस कारण शत्रु और उसकी सेना डर जाती हैं।

शिवाजी महाराज ने युध्द की पुरानी परंपरागत मान्यताओं को तोडकर अपनी नयी युध्दनीति को अपनाया था। उसमें से एक निषा युध्द हैं। परंपरागत युध्द में नीति में निषा युध्द का निषेध किया था। शिवाजी महाराज के सरदार, सेना और स्वयं शिवाजी महाराज ने निषा युध्द रात में किये हैं। उनके सरदार तानाजी मालुसरे ने कोंढाना किल्ले पर रात के अंधेरे में चढाई की थी। उस किल्लों पर आक्रमण कर किल्ला मुगलों से जीत लिया था। निषा युध्द का वर्णन करते हुए शिवकालीन शाहिर तुळसीदास लिखते हैं कि,

"पहिला दरवाजा मारिला।

गेला दुसऱ्या दरवाजाला काळोखी रात्र पार।

रात्रीचा अम्मल झाला।"[४१]

अर्थात सरदार तानाजी मालुसरे ने रात में किल्ले कोंढाना के उपर चढकर सेनाओं के लिए पहले दरवाजा खोला था। उसके बाद दूसरे दरवाजे पर जाता है। रात बहुत घनी थी और रात के अंधेरे में ही इस मुहिम की शुरुवात की थी। सुबह होने तक किला शिवाजी महाराज के अधिकार में आ गया था। शिवाजी महाराज के अनेक युध्दों की मुहिम रात के अंधेरे में ही होती थी। खास करके अमावस की रात में चाँद का भी प्रकाश पृथ्वी पर न हो उस समय उन्होंने युध्द किये थे। हालांकि अमावस के दिन लोगों में भूत, प्रेत का डर रहता है, लेकिन शिवाजी महाराज अंधविश्वास को कभी भी नहीं मानते थे। शत्रु अगर शतिक्तशाली है। चतुर है, उसके विरुध्द युध्द करने से अपने सेना, स्वराज्य का अत्याधिक नुकसान ही होने वाला है, तो शत्रु पक्ष के साथ संधि कर लेते थे। यह संधि केवल कुछ समय तक वर्तमान में युध्द को टालने के लिए और युध्द सामग्री जुटाने के लिए एक प्रकार का हथियार था। केवल युध्द करके ही शत्रु को जीता नहीं जाता बल्कि बीना युध्द किये संधि कर बुध्दिमानी से शत्रु को परास्त किया जा सकता है। उन्होंने एक ओर मुगलों से संधि कर मिर्जा राजे के साथ

आदिलशाही का प्रदेश जीता लिया था। उन किलों पर अपने सरदार और सेनाओं को रखा था। वे शत्रु पक्ष के साथ कुछ समय के लिए संधि करते थे। उन्होंने मुगल, आदिल, कुतुब, सिध्दी के साथ समय अनुरुप संधि कर ली थी। इसी समय में वे राज्य के हित और अंतर्गत व्यवस्था के युध्द सामग्री को जोडते थे।

इस प्रकार मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज को युध्द कुशल और युध्द नीतिज्ञ राजा के रुप में वर्णित किया हैं। उन्होंने परंपरागत युध्द नीतियों के साथ नयी आधुनिक युध्दनीतियों का उपयोग किया हैं। अपनी एक स्वतंत्र शिवनीति (युध्दनीति) का निर्माण किया हैं। युध्द के लिए सहाय्यक सशक्त गुप्तचर विभाग का निर्माण किया था। उनका 'गनिमकावा' नीति इतिहास में भी प्रसिध्द है। स्थान, काल, समय के अनुसार छापामार, गनिमकावा, निषायुध्द कुटनीति, अफवाहे फैलाना, संधि करना आदि युध्दतंत्र का उपयोग किया था।

५.२.१२. प्रजाहित दक्ष :

किसी भी राजा और राज्य की सबसे बडी शक्ति उसकी प्रजा होती हैं। राजा का कर्तव्य होता हैं कि, वह अपने प्रजा का हित देखकर अपना निर्णय लें। प्रजा का हित ही राजा के लिए सर्वोपरी होना चाहिए। अपने अंहकार और अभिमान से दुर रहकर प्रजा हित के बारे में सोच समझकर निर्णय लेना चाहिए। शिवाजी महाराज प्रजाहित दक्ष राजा थे। वे हमेशा भी निर्णय लेते समय प्रजा का हित महत्वपूर्ण मानते हैं। स्वराज्य का प्रमख उध्देश प्रजा हीत का रक्षण करना था। उन्होंने दीन, दुःखी, पीड़ित, शोषित, अन्याय, अत्याचार से प्रजा को मुक्त कर दिया था। शिवाजी महाराज के स्वराज्य को 'रयत' का राज्य और उन्हें 'रयतेचा राजा' कहा जाता हैं। 'रयत' से तात्पर्य 'जनता' या प्रजा है और वे जनता के राज्य का राजा थे। उन्होंने अपने राज्य में प्रजा को अन्याय, अत्याचार, शोषण से मुक्त किया था। शिवाजी महाराज का राज्य सभी प्रजा को अपना राज्य लगता था। उनका राज्य लोक कल्याणकारी राज्य था। शहाजी महाराज ने

शिवाजी महाराज को स्वतंत्र राजमुद्रा संस्कृत भाषा में तैयार करवाकर दी थी। इस राजमुद्रा में उनके राज्य का उद्देश्य स्पष्ट दिखाई देता है। उनके राजमुद्रा की अंतिम पक्तियाँ प्रजाहित दक्षता को स्पष्ट करती हैं। 'अज्ञापत्र' में लिखा है कि,

"शाहसूनोः शिवस्यैषा मुद्रा भद्रा भद्रास राजते।"[४२]

अर्थात संस्कृत भाषा के इस राजमुद्रा पर लिखा गया हैं कि शहाजी के पुत्र शिवाजी महाराज की यह मुद्रा लोककल्याण के लिए हमेशा कार्यरत (चमकती) रहेंगी। उनके स्वराज्य निर्माण का प्रमुख उद्देश ही लोगों का कल्याण था। प्रजा पर अन्याय, शोषण करनेवाले जहाँगीरदार, जमीनदार, वतनदार, देशमुख, देसाई, सरदेसाईयों , पाटील आदि के अधिकारों पर प्रजाहित के लिए पाबंदी लायी थी। यह लोग जनता शोषण कर रहे थे। उन्हें शिवाजी महाराज ने सरकारी वेतन देना शुरु किया था। इन लोगों को साधारण रयत के बराबर का माना गया। इन्हें सामान्य लोगों के बीच अपना घर बनाकर रहने का आदेश दिया था। किसानों को साधारण ब्याज पर कर्ज दिया जाता था। अकाल या अतिवृष्टी के कारण फसल का उत्पाद नहीं होता तो उन्हें कर्ज चकाने की (मुहलत) समयावधि दी जाती थी। कर्ज का ब्याज या कर्ज चुकाने की सुविधा के लिए कर्ज को चार-पाँच किश्तों में बाँटकर परिस्थितियों को देखकर कर्ज वसुल किया जाता था। स्वराज्य में नयी जनता आकर बस रही है तो उन्हें रहने, खाने और उनके योग्यता के अनुसार काम दिलाने की व्यवस्था की जाती थी। किसानों के लिए खेती के औजार मुफ्त में दिये जाते थे। खेती करने के लिए बैल और पशु पालन के लिए पशुओं की व्यवस्था की।

मिर्जा राजे जयसिंह के साथ पुरंदर संधि प्रजा हित को ध्यान में रखकर की थी। वैयक्तिक अहंकार के लिए राजा ने प्रजा को कभी हानी नहीं होने दी। संधि करने का प्रमुख कारण है कि जनता की रक्षा, सुरक्षा और उनका हित था।

स्वराज्य के प्रमुख उद्देश्य जनता को किसी प्रकार की हानी या शोषण न हो। शिवाजी महाराज के प्रजाहित के बारे में रामचंद्र अमात्य लिखते हैं कि, "रयतेस उपद्रव होऊ नये म्हणून केवढी जपवणूक? स्वराज्यांतील आंबे, फणस आदिकरुन हेही लांकडे आरमाराच्या प्रयोजनाचीं, परंतु त्यांस हात लावूं देऊ नये. काय म्हणोन की ही झाडें वर्षो दोन वर्षानी होतात असें नाहीं. रयतांनी ही झाडें लावून लेकरांसारखीं बहुतकाळ जतन करुन वाढविलीं व तें झाड तोडिल्यावर त्याचे दुःखास पारावार काय?.....बलत्कार सर्वथैव न करावा।"[४३] अर्थात शिवाजी महाराज सभी सरदार सेनाओं को आदेश देते हैं कि जनता को किसी प्रकार का कष्ट ना दें। समुद्र में युध्द सामग्री के लिए लकडीयों का उपयोग होता था। आरमार बनाने के लिए आम, फणस आदि फलयुक्त वृक्षों की कटाई न कि जाए। यह पेड एक दो साल में नहीं आते बल्कि कई साल उनको फल आने के लिए समय लगता है। ऐसे पेडों को कई सालों बाद फल लगने लगते हैं। इन वृक्षों को जनता अपने बच्चों की तरह देखभाल करती है। इस प्रकार के पेडों को अगर हम काटेंगे तो उनके दुःख की कोई सीमा नहीं होगी। इस प्रकार की जबरदस्ती कोई भी नहीं करेगा। शिवाजी महाराज ने अपने स्वराज्य के किसान को कभी दुःख नहीं दिया। अपने घोडें, हाती को चराने के लिए स्वतंत्र पशुशाला की व्यवस्था कराई थी। किसान की मीर्च के जड को भी हाथ न लगाने का आदेश दिया था। इस प्रकार का कार्य कोई करता हैं तो उसे दंडित करने का आदेश देते हैं। वे प्रजा के रक्षक और उनके हित के प्रति हमेशा तत्पर और सजग रहे हैं।

शिवाजी महाराज के स्वराज्य की जनता सुखी संपन्न थी। उनका सभी सेनाओं को आदेश ही था की प्रजा स्वराज्य की हो या मित्र और शत्रु के राज्य की हो उनके उपर कभी अन्याय अत्याचार न करें। अगर ऐसा कोई करता है तो उसे दंडित किया जाता था। वे कर्नाटक की स्वारी के लिए जाते समय रास्ते में भागानगर के राजा कुतुबशाह के प्रदेश में आगमन होते ही उन्होंने सेनाओं को

आदेशित किया की, "बहुतच कैद करुन दाणा, वैरण, लाकुड आदिकरुन सर्वांनी विकत घ्यावें, काडी मात्रास कोणीं ढका लावूं नयें, बेकैदी (कोणी) केली असतां त्याचीं हात बोटे तोडावीं. ऐसा बंदोबस्त करविला."[४४] अर्थात शिवाजी महाराज ने अपने सेनाओं को पहले से ही समझाया था कि अन्य (खाना) चारा, लकडी सबको अपने पैसे से खरिदकर लेना चाहिए। किसी की काडी की हानी न पहुँचाए जाए। अगर किसी ने नियमों को तोडा तो उसके हाथ और उँगलियों को तोड दिया जाए। इस प्रकार का सेना को आदेश दिया था। इससे स्पष्ट होता हैं कि राजा शत्रु और मित्र के प्रजा के हित के बारें में सोचता हैं वह अपने प्रजा का हित रक्षक होना स्वाभाविक है। यही आदेश सेनाओं को स्वराज्य में भी दिया गया था।

इस प्रकार मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज की प्रजा हित दक्ष राजा के स्वरुप का वर्णन किया हैं। उनके स्वराज्य का प्रमुख उध्देश ही प्रजा हित और उनके हितों का रक्षण करना था। उनके राममुद्रा के लोककल्याणकारी उद्देश्य से यह स्पष्ट हो जाता है वे प्रजा हितदक्ष थे। जनता के उपर अन्याय, अत्याचार, करनेवाले सत्ता अधिकारियों के अधिकारों पर पाबंदी कर दी उनको सामान्य जनता की तरह रहने का आदेश दिया था। प्रजा को कोई हानी न हो इसलिए उन्होंने शत्रुओं से संधि का प्रस्ताव रखा। किसान, स्वराज्य में आनेवाली नयी जनता को अपने बेटे की तरह पालन और रक्षण किया। अपने सेनाओं को शत्रु पक्ष के राज्य में भी प्रजा को किसी प्रकार की हानी न पहुॅंचाने का आदेश दिया था। आदेश का पालन न करनेवालों को दंड का प्रावधान रखा था। प्रजा हित शिवाजी महाराज के लिए सर्वोपरी रहा है।

३.२.१३. स्वधर्माभिमान :

मध्ययुग में भारत की समाज व्यवस्था धर्म पर आधारित थी। भारत के अधिकांश प्रदेशों में यवन का शासन था। यवनों के कुछ शासक स्वयं के धर्म का

गर्व करते थे। दूसरे धर्मों के जनता पर अन्याय, अत्याचार करते थे। कुछ मुस्लिम शासक धार्मिक कट्टरता के कारण हिंदू धर्म के श्रध्दा, भक्ति, आचरण, रुढी, परंपरा परंपरा को ठेंस पहुँचाने का काम करते थे। ऐसे युग में शिवाजी महाराज का जन्म हुआ। जब हिंदू जनता हताश और निराश हो चुकी थी। शिवाजी महाराज ने स्वधर्म और स्वराज्य के लिए हिंदू जनता में चेतना का संचार किया था। वे स्वधर्माभिमानी थे। इसका तात्पर्य यह नहीं के वे कुछ मुस्लिम शासकों के भाँति वे कट्टर धर्मवादी थे। वे अपने हिंदु धर्म के आचरण का पालन व्यक्तिगत जीवन में करते थे। सामाजिक जीवन में धार्मिक सहिष्णुता और उदारता का पालन करते थे। उन्हें स्वधर्म का गर्व, अहंकार और घमंड बिल्कूल न के बराबर था। वे सभी धर्म के रुढी परंपरा आचरण, श्रध्दा, स्थानों का आदर करते थे।

शिवाजी महाराज स्वदेशी और स्वधर्म की सत्ता का पुरस्कर करनेवाले थे। इसलिए लोगों में संघटन तैयार किया था। हिंदू धर्म में ईश्वरीय श्रध्दा को महत्त्वपूर्ण स्थान है। शिवाजी महाराज व्यक्तिगत जीवन में भवानी देवी, भगवान महादेव, के भक्त थे इन पर उनकी श्रध्दा थी। अफजल खाँ का वध करने के लिए निकलते समय उन्होंने भगवान महादेव का स्मरण करके माँ का आशीर्वाद प्राप्त कर निकले थे। अफजल खाँ का वध करने के पश्चात उन्होंने प्रतापगड पर 'भवानी देवी' के मंदिर में मुर्ति की स्थापना की थी। इस मुर्ति स्थापना के संदर्भ में सभासद लिखते है कि, "राजियाने गंडकी पाषाण नदीस द्रव्य गाडियावरि घालून, मंडकी पाषाण आणून, श्री भवानी सिध्द करुन, प्रतापगडा (वर) देवीची स्थापना केली. धर्मदान उदंड केला."[४५] अर्थात शिवाजी महाराज ने 'प्रतापगड' पर भवानी देवी की मूर्ति प्रतिष्ठापना के लिए नदी में मीलनेवाले शिलाओं के पत्थरों को बैलगाडी में भरकर लाने का आदेश दिया था। इसी शिलाओं के पत्थरों को आकार देकर भवानी देवी की मूर्ति बनाई गयी। मूर्ति के प्रतिष्ठापना के बाद उन्होंने दान धर्म भी किया था। हिंदूधर्म में दान देना पवित्र पुण्य और ईश्वरीय

भक्ति कार्य माना जाता हैं। शिवाजी महाराज के द्वारा भवानी की मूर्ति स्थापना और दानधर्म करना यह हिंदू धर्म के अचरण और श्रध्दा को दर्शाता हैं।

शिवाजी महाराज व्यक्तिगत रुप में हिंदू धर्म के उपासक थे। उन्होंने हिंदू धर्म के लिए पवित्र माने जानेवाले गाय, देवी देवताओं के मंदिर, धर्मग्रंथ कुछ धार्मिक रुढी परंपराओं का पालन और रक्षण भी किया हैं। शिवाजी महाराज ने हिंदवी स्वराज्य की शपथ भी रोहिडेश्वर मंदिर में ली थी। हिंदू धर्म में ईश्वरीय भक्ति को महत्व हैं। शिवाजी महाराज भवानी देवी और भगवान महादेव के भक्त थे परंतु अंधभक्त नहीं थे। ज्ञानी भक्त अपने कर्म को ही ईश्वर मानता है। शिवाजी महाराज ने हिंदवी स्वराज्य स्थापना की प्रतिज्ञा के लिए सारा जीवन व्यतित किया था। वे अंधभक्त कभी नहीं रहें। भक्ति उनके लिए प्रेरणा, विश्वास, शक्ति का संचार का साधन बनी है। वे अंधविश्वासू भक्त नहीं थे। उनके द्वितीय पुत्र राजाराम का जन्म माँ के पेट से 'उल्टा' हुआ तो सभी लोग अशुभ मानने लगे थे। शिवाजी महाराज ने उस समय अपने उस घटना को अशुभ न मानते हुए कहाँ की, "हा राजा परम भाग्यवान, पराक्रम बहुत करील, सर्व प्रजा वृध्दिंगत करुन पालन करील. दिल्लीची पातशाहात पालथी घालील."[४६] अर्थात शिवपुत्र राजाराम महाराज का माँ के पेट से जब पालथा (उल्टा) जन्म हुआ, तो शिवाजी महाराज ज्ञानी होने के कारण अंधविश्वास को नहीं मानते है। वे कहते हैं कि, यह बडा होने पर भाग्यवान और पराक्रमी राजा बनेगा। सर्व प्रजा को सुखी, संपन्न बनाकर उनका रक्षण करेगा। दिल्ली के बादशाह के तख्त को पलट देगा। शिवाजी महाराज ने कभी अंधविश्वासु नहीं किया। वे स्वधर्म का आदर करते है। पर वे अनिष्ठ रुढी परंपराओं में परिवर्तन या उसको नष्ट करना चाहते थे।

इस प्रकार शिवाजी महाराज के मराठी साहित्य में स्वधर्माभिमानी राजा के स्वरुप का वर्णन किया है। स्वधर्म के प्रति उन्हें अभिमान था। व्यक्तिगत जीवन में उन्होंने धर्म के आचरण का पालन किया था। स्वधर्म (हिंदू धर्म) के अनुसार श्रध्दा

और भक्ति के साथ दान के महान कार्य भी उन्होंने किया था। स्वधर्म के श्रध्दास्थानों की रक्षा, सुरक्षा की थी। ईश्वर पर उनकी श्रध्दा थी पर अंधविश्वास बिल्कुल नहीं था। वे एक ज्ञानी भक्त थे। स्वधर्माभिमान को रखते हुए दूसरों धर्म का अपमान कभी होने नहीं दिया था। सार्वजनिक जीवन में धार्मिक उदारता की विचारधारा का पालन करते थे।

३.२.१४. हिंदू धर्म रक्षक :

मध्यकालीन भारत में अपने राजसत्ता का आधार धर्म था। शासक या राजा का जो धर्म होता हैं वही राजधर्म घोषित करते हैं। तत्कालीन राजसत्ता पर धर्म सत्ता हावी हो चुकी थी। मध्यकालीन भारत पर अधिकांश मुस्लिम शासकों की सत्ता रहीं थी। मुस्लिम शासकों में कुछ शासक धार्मिक कट्टरता के कारण अपने धर्म को राजधर्म घोषित करते थे। अपने उसी धर्म के प्रचार, प्रसार, रक्षण का काम करते थे। अन्य धर्मो की जनता पर अन्याय, अत्याचार, शोषण कर बलात धर्मांतरण करने के लिए मजबूर किया जाता था। मध्यकाल में आदिलशाह, निजामशाह, मुगलशाह, कुतुबशाही ये सभी राजा मुस्लिम शासक थे। इनके कुछ कट्टर मुस्लिम शासक जो हिंदू धर्म के जनता के उपर अन्याय, अत्याचार कर हिंदू श्रध्दा स्थानों को, संस्कृति, रुढी, परंपरा पर आघात करते थे। मुगल बादशाह ने केवल हिंदू धर्म के जनता पर ही 'जिजिया' नामक कर लगाया था। शिवाजी महाराज ने इसका विरोध कर हिंदू धर्मा की संस्कृति, रुढी, परंपरा और पवित्र श्रध्दास्थानों की रक्षा की थी।

शिवाजी महाराज ने इस प्रकार का हिंदू धर्म के उपर होनेवाले अन्याय, अत्याचार को देखकर उनके मन में धर्म रक्षा की भावना जागृत हो गयी थी। बचपन में पिता शहाजी महाराज के कहने पर आदिलशाह के दरबार में जाते समय रास्तें में गाय को काटते हुए लोगों को देखकर उनके मन में क्रौंध आता हैं। वे इस घटना को देखकर बडे व्यतित होते हुए कहते है कि "आपन रस्त्यांनी

जातां गोवध होतो पाहताच त्याचा शिरछेद करावा औसे वाटते."[४७] अर्थात शिवाजी महाराज सोचते हैं कि इस प्रकार हिंदू धर्म में पवित्र पशु 'गाय' को बीच रास्तों में काटते देखा था। गाय को काटनेवाले व्यक्तियों का शिरच्छेद करने की भावना उनके मन में आती हैं। वे बडे होते है तो पवित्र पशु गौराओं (गाय) के पालन हेतु गोशालाओं का निर्माण करते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि वे हिंदूधर्म के पवित्र पशुओं का रक्षण करते है।

हिंदू धर्म के पवित्र धर्मस्थल मंदिरों को नष्ट करने काम कुछ मुस्लिम शासकों के द्वारा हो रहा था। इन अत्याचारी मुस्लिम शासकों से हिंदूधर्म की जनता और श्रध्दा स्थानों का रक्षण किया हैं। कुछ जीवनीकारों ने हिंदू धर्म स्थापना हेतु शिवाजी महाराज ने स्वराज्य का निर्माण करने का भी वर्णन भी किया है। लेकिन मुझे लगता हैं कि उन्होंने हिंदू धर्म स्थापना के लिए स्वराज्य स्थापित किया बल्कि अन्याय, अत्याचार से मुक्त मानवता धर्म और लोककल्याण के लिए स्वराज्य का निर्माण किया था। मध्यकालीन भारत में अधिकांश हिंदू और शासक मुस्लीम धर्म के थे। उन शासकों के अन्याय, अत्याचार के विरुध्द में स्वराज्य की स्थापना हुई थी। अब शोषित हिंदू समाज अधिक होने के कारण उनकी रक्षा स्वराज्य में होने लगी थी, तो इसलिए जीवनी कारों ने उनका हिंदू धर्म रक्षक के रुप में वर्णन किया था। जब मिर्जा राजे जयसिंह पुरंदर संधि पर शिवजी महाराज को पत्र लिखते है उस में कहते हैं कि, "आम्ही हिंदू जयपूरचे राजे, तुम्ही उदापूरचे घराण्यांतील सिसौदे थोर वंशे आहां. धर्म स्थापना हिंदू धर्म तुमचे कुल परंपरा चालत आला तोच करितां."[४८] अर्थात शिवाजी महाराज को लिखे पत्र में मिर्जा राजे जयसिंह कहते हैं कि हम और आप दोनों हिंदू है। हम जयपुर के राजा हैं, तो आप उदयपूर राजवंश के बडे महान घराने कुल परंपरा से हैं। आपके कुल परंपरा से हिंदू धर्म स्थापना और उसी रक्षा करने का कार्य आप भी कर रहे हैं। इस प्रकार के कुछ पत्र के अंश से स्पष्ट हो जाता हैं कि

शिवाजी महाराज के वंश परंपरा से ही हिंदू धर्म और उसकी रक्षा करने का कर्तव्य था। उसी परंपरा का निर्वाहन शिवाजी महाराज भी कर रहे हैं।

शिवाजी महाराज ने हिंदू धर्म संस्कृति को पूनर्जिवित किया हैं। हिंदू धर्म के लोगों को (जबरन) मुस्लिम बनाया जा रहा था। उन लोगों को पुन: हिंदू धर्म में लाने के लिए उन्होंने 'धर्म शुध्दिकरण' मार्ग खोल दिया था। इस धर्म शुध्दिकरण संस्कार से पुन: हिंदू धर्म में प्रवेश दिया जाने लगा था। शिवाजी महाराज के कुछ सेनापति और सरदारों को बलात मुस्लिम धर्म का स्वीकार करना पडा था। उन मुस्लिम बने सरदारों को 'धर्मशुध्दिकरण' संस्कार करके पुन: हिंदू धर्म में लिया गया था। बजाजी निंबालकर, नेताजी पालकर जैसे सरदारों को पुन: हिंदू धर्म में दीक्षित किया हैं। हिंदू धर्म में वापसी का अधिकार पहले नहीं था। हिंदू धर्म में वापसी का मार्ग शिवाजी महाराज ने खोल दिया था। उनके प्रगतिशील विचारधारा के कारण ही यह संभव हुआ था।

इस प्रकार शिवाजी महाराज एक हिंदू धर्म रक्षक, संस्कृति रक्षक और धर्म के उध्दार करने वाले राजा के रुप में दिखाई देते हैं। उन्होंने अपने धर्म की रक्षा के साथ-साथ सभी धर्मों की भी रक्षा की हैं। उन्होंने हिंदूधर्म और संस्कृति को पुनर्जिवित किया है। हिंदू धर्म शुध्दीकरण करके धर्म की रक्षा और उसका विस्तार करने का कार्य भी किया हैं।

३.२.१५. वीर योध्दा :

वीरता मनुष्य का जन्मजात गुण हैं। मनुष्य प्राचिनकाल से ही शक्तिशाली समुदाय दुर्बल और हारे हुए समुदाय पर आपना वर्चस्व रखता था। मनुष्य अपनी वीरता से अपने अस्तित्व और कार्य क्षमता सिध्द करता है। वीर के प्रमुख चार प्रकार हैं। १. धर्मवीर २. युध्दवीर ३. दयावीर ४. दानवीर

शिवाजी महाराज पराक्रमी वीर यौध्दा थे। इनकी वीरता को देख शत्रु पक्ष आश्चर्य व्यक्त करता हैं। उनकी वीरता के कारण शत्रु पक्ष में हमेशा भय का

वातावरण रहता था। वे एक आदर्श और साहसी वीर थे। उनमें वीर यौध्दा के सभी गुण विद्यमान थे। वीर यौध्दा वही होता हैं, जो रणभूमि में सेनाओं के साथ रहें। सेना नायक या राजा युध्द भूमि में साथ हो तो वह सेना अपनी पूरी शक्ति के साथ युध्द में अपनी वीरता को प्रकट करती हैं। शिवाजी महाराज स्वंय युध्द में उतरकर सेना का हिस्सा बन जाते थे। युध्द में समय आने पर वे सेना के भी आगे रहते है। सच्चा वीर शत्रु को देखकर युध्द भूमि से कभी नहीं भागता। शिवाजी महाराज युध्द छोडकर कायरता की तरह कभी नहीं भागे। वे श्रेष्ठ वीर हैं इसलिए पूरी तैयारी के साथ रणभूमि में उतरते थे। सच्चा वीर वहीं होता हैं, जो अपनी शक्ति और भुजाओं पर विश्वास करें न की दैवी शक्ति पर विश्वास रखें। वे युध्द में ईश्वरीय शक्ति नहीं बल्कि मानवीय शक्ति को महत्वपूर्ण मानते हैं।

शिवाजी महाराज ने युध्द के लिए जाते समय कभी होम, हवन, यज्ञ, महायज्ञ, अनुष्ठान नहीं किये। उन्होंने एक शक्तिशाली, आत्मविश्वासी, साहसी, वीर यौध्दा की तरह युध्द विजय को प्रयत्नों से प्राप्त किया हैं। इसी संदर्भ में सप्त प्रकरणात्मक चरित्र में लिखा हैं कि, "विजयप्रद मंत्र अनुष्ठानेंच करुन जय होत असावा ते घडत नहीं, यास्तव सैन्य, द्रव्य, अमात्य, मंत्रज्ञ, हे मुख्य साधन, तेव्हा प्रयत्न हाच सबल पक्ष होय."[४९] अर्थात युध्दों में मंत्रों और यज्ञों से विजय प्राप्त कभी होती ही नहीं हैं। बल्कि विजय प्राप्ति के लिए सेना, युध्दसामग्री अमात्य सलाहकार की जरुरत होती हैं। यही युध्द के प्रमुख साधन हैं। इसके लिए प्रयत्न यही एकमात्र सशक्त आधार हैं। शिवाजी महाराज को युध्द में हराने के लिए शत्रु पक्ष की ओर से राजा और उनके सरदार होम हवन, पुजापाठ, यज्ञ, महायज्ञ, अनुष्ठान करके ईश्वरीय शक्ति का आधार लेना चाहते थे। वीर यौध्दा अपनी शक्ति और सामर्थ्य पर विश्वास करते हैं। औरंगजेब के द्वारा मिर्जा राजा जयसिंह को दक्षिण के आक्रमण करने के लिए भेजा जाता है। राजा जयसिंहं भी शिवाजी महाराज की वीरता को अच्छी तरह जानते थे। इसलिए उन्होने भी

दक्षिण में आते समय शिवाजी महाराज पर विजय प्राप्त करने के लिए होम हवन, महायज्ञ, अनुष्ठान करना प्रारंभ कर दिया था। उन्हें शिवाजी महाराज पर विजय प्राप्त हो इसलिए उन्होंने आदेश दिया कि, "कोटचंडी करावी आणि अकरा कोट लिंगे करावीं. कामनार्थ बगळामुखी कालरात्री प्रीत्यर्थ जप करावा. असे अनुष्ठाने करावे."[५०] अर्थात मिर्जा राजे जयसिंह आदेश देते हैं कि चंडी देवी के एक कोटी अनुष्ठान करना शुरु कर दें। ग्यारह कोटी (शिवलींग) तैयार करें। विजयी कामना के लिए बगळामुखी (एक देवता) देवता का दिनरात जप करने की शुरुवात करें। मिर्जा राजा जयसिंह जो स्वयं इतने अनुभवी पराक्रमी, शुर, मुत्सदी वीर होने के बावजुद उनके मन में दक्षिण विजय के लिए अविश्वास था। शिवाजी महाराज वीर यौध्दा थे। उन्होंने युध्द में शत्रु पक्ष के शरणार्थीयों को जीवनदान दिया था। उन्होंने कभी निर्बल, स्त्रियों और सामान्य प्रजा पर कभी हाथियार नहीं उठाये। लाखों सेना की फौज लेकर शाईस्ता खान पुने के महल में रुका था। एक वीर शत्रु कितना भी शक्तिशाली हो उनसे नहीं डरते। शिवाजी महाराज ने लाखों की फौज से न डरते हुए पुने के महल में जाकर शाईस्ता खाँन के उपर छापा मारकर उसकी तीन उँगलियों को काटा था।

इस प्रकार शिवाजी महाराज को मध्यकालीन मराठी साहित्य में एक वीर यौध्दा के स्वरुप का वर्णन किया है। वे स्वयं रणभूमि में जाकर अपनी वीरता को सिध्द करते हैं। उनकी वीरता से शत्रु पक्ष के राजा सरदार भयभित होते हैं। उन्होंने अपना शस्त्र कभी गरीब, प्रजा, स्त्रियों के उपर नहीं उठायी थी। वे युध्द भूमि को छोडकर कभी भागे नहीं थे। अफजल खाँ, शाईस्ता खाँ को अपनी प्रत्यक्ष वीरता के दर्शन कराये थे। अफजल खां का वध किया तो शाईस्ता खां की तीन उँगलियाँ कांटी थी। वे एक श्रेष्ठ यौध्दा की तरह साहसी, आत्मविश्वासी थे। इसलिए भारतीय इतिहास में उन्हें श्रेष्ठ वीर यौध्दा के रुप में देखा जाता है।

३.२.१६. पराक्रमी राजा :

शिवाजी महाराज के इतिहास में जो रोचकता और जिज्ञासा हैं, उतनी अन्य राजाओं के इतिहास में नहीं है। इसका कारण यह हैं कि शिवाजी महाराज का आश्चर्य चकित करनेवाले पराक्रम। वे अत्यंत पराक्रमी राजा थे। उन्होंने असंभव कार्यों को बडी सरलता से संभव करके अनेक पराक्रम किये हैं। उन्होंने निर्भयता, साहस, वीरता, बुध्दिचातुर्य से अनेक पराक्रम प्रस्थापित किये है। आदिलशाह के शक्तिशाली सरदार अफजल खाँ बारा हजार की सेना लेकर स्वराज्य पर आक्रमण करने के लिए आया था। शिवाजी महाराज ने उस १२ हजार के आदिलशाही सरदार को 'प्रतापगड' के नीचे बुलाकर अपनी चतुराई से उनका वध कर दिया था। शिवाजी महाराज के उस पराक्रम का वर्णन शिवकालीन शाहिर अज्ञानदास करते हुए कहते है कि,

"सराईत शिवाजी । त्याने बिचव्याचा मारा केला।

उजव्या हाती बिचवा त्याला वाघनख सरजाच्या पंजाला।

उदरच फाडुनी खानाची चरबी आणिली द्वारा।"[५१]

अर्थात अफजल खाँ के गले मीलते समय खाँ के द्वारा धोखा करने पर शिवाजी महाराज तुरंत सतर्क होते है। फिर उन्होंने भी अपने दाहिने में रखें बिछवे से खान के उपर वार करते हैं। उसके पश्चात चपलता से 'वाघनख' खाँ के पेट में घुसाकर उसकी चर्बी बाहर निकालते हैं। इस प्रकार एक शक्तिशाली अफजल खाँ का वध करने से पूरा देश आश्चर्य चकित होकर उनके पराक्रम की चर्चा करता हैं। इतने बडे शक्तिशाली अफजल खाँ को शिवाजी महाराज मृत्यु के घाट उतार देते हैं।

मुगल सत्ता के बादशाह औरंगजेब द्वारा उसके मामा शाईस्ता खाँ को लाखों सेना की फौज और सरदारों के साथ दक्षिण स्वराज्य पर आक्रमण के लिए

रवाना किया। उनके साथ जसवंतसिंह जैसे राजाओं को भी भेजा गया। शाईस्ताखाँ लाखों की फौज लेकर पुने के महल में आकर ठहरा था। लाखों की फौज के बीच शाईस्ता खां बडे आराम से रहने लगा था। एक रात शिवाजी महाराज पुने के महल में अपने कुछ ही साथियों को लेकर घुस गये। महल पर कडा पहारा होने के बावजूद वे शाइस्ता खां के शयन कक्ष में गये खाँ को इसकी भनक लगते ही वह भाग कर अपने बिवियों के बीच जाकर बैठ गया। शिवाजी महाराज कुछ समय तक उसका इंतजार करते रहे शाईस्ता खाँ अपनी तलवार लेने के लिए जैसे ही जा रहा था। उसी समय खाँ के उपर अपनी तलवार से वार किया। इस प्रसंग को सभासद स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि, "इतक्यांत सवड पाहुन नवाब बायकातून एकीकडे होउन तरवारीस हात घालवयासि गेला. ती नदर राजियाने धरुन वार केला. खानाची बोटे तीन उडाली।"[५२]

अर्थात शाईस्ता खाँ को जब शयन कक्ष में किसी के आने की आहत होती है तो वह घबराकर अपने बीवीयों के शयन कक्ष में जाकर छुप जाता हैं। कुछ देर बाद अपनी तलवार लेने के लिए बीवीयों के कक्ष से बाहर निकल जाता हैं। तलवार को जैसे ही हात लगाने के लिए जाने वाले है यह शिवाजी महाराज ने देखकर उसके उपर वार किया था। इस हमले में शाईस्ता तो बच गया लेकिन उसकी तीन उँगलियाँ कट गयी थी। इस तरह लाखों की फौज साथ में लेकर आनेवाला शाईस्ता खाँ पर बीना युध्द किये वापस दिल्ली जाने की नौबत आ जाती है। शाईस्ता खाँ भयभित होकर दिल्ली भाग जाता है। दिल्ली का बादशाह औरंगजेब के कैद से निकलना किसी बडे पराक्रम से कम नहीं है। शिवाजी महाराज औरंगजेब बादशाह के बंदिखाने से सही सलामत स्वराज्य में आये थे। इस घटना के बाद पुरंदर संधि में दिये हुए सभी किले केवल चार महिने में वापस लिये थे। शिवाजी महाराज ने अपने समय के सभी शत्रुओं को पराजित किया था। उन्होंने अनेक पराक्रम कर हिंदवी स्वराज्य का विस्तृत प्रदेश निर्माण किया था।

इस प्रकार मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज ने बचपन से ही आश्चर्य चकित करनेवाले कार्य किये हैं। अफजल खाँ, शाईस्ता खां, आगरा से पलायन, सालहेरी युध्द में विजय आदि पराक्रम उन्होंने अपने सेना के सहयोग से किय है। उनके पराक्रम को देखकर मुगल आदिल, कुतुबशाह और विदेशी सत्ता भयभित हो चुकी थी।

३.२.१७. पराक्रमी सेना नायक :

किसी भी सेना की हार को राजा या उसके देश की हार मानी जाती है। सेना की जीत उस राजा या देश की जीत मानी जाती हैं। सेना की जीत या हार केवल सेना की नहीं बल्कि राजा या देश की जीत या हार होती हैं। युध्द में राजा ही सेना का प्रमुख होता हैं। चाहे वह प्रत्यक्ष रणभूमि में हो या नहीं हो। शिवाजी महाराज पराक्रमी राजा थे। उनकी सेनाओं ने भी अनेक पराक्रम किये है। अगर सेना का नायक ही पराक्रमी है, तो सरदार और सेना के अंदर नयी उर्जा या शक्ति का संचार होता हैं। पराक्रमी राजा की सेना भी पराक्रमी होती हैं। शिवाजी महाराज के पास चार प्रकार की सेना थी। घोडदल, भूदल, हत्तीदल और नौसेना दल था। इनके सेनाओं को 'मराठा सेना' कहाँ जाता था। उन्होंने अपने सेनाओं का स्थल, काल, समय, वातावरण के अनुसार युध्द में उनका उपयोग किया हैं। उनके सेना और सरदार मातृभूमि के लिए जान की बाजी लगाकर युध्द करते थे। इनके सेना के पराक्रमी सरदारों में तानाजी मालुसरा, यसाजी, सुर्याजी, बाजीप्रभू, शिवा काशिद, जीवा महाल, नेताजी पालकर आदि प्रमुख थे। सरदार तानाजी मालूसरा कोंढाना जीत कर अपना पराक्रम दिखाया था। उन्होंने एक रात कोंढाना के किले पर विजय के लिए केवल ५० मराठा सेनाओं का साथ लेकर १८०० पठान और उदयभान जैसे पराक्रमी शक्तिशाली मुगल सरदार पर आक्रमण किया था। सुबह तक यह किला मराठों ने जीत लिया था। रात के अंधेरे में कुछ ही सेनाओं को साथ लेकर सरदार तानाजी किले पर

चढकर युध्द में अद्भूत पराक्रम दिखाया था। इस युध्द का वर्णन शिवकालीन शाहिर तुळसीदास करते हुए कहते है कि,

"व्हाळ आसुदाचे वाहती। रक्त अंगाला लागले। खुन डोळ्याला चढला।।

कोण करिता खुदा खुदा। बुधा धरणीला पडला।।

कोण करितों अल्ला अल्ला। खालीं काला जो पडला।"[५३]

अर्थात सरदार तानाजी मालूसरा ने अपने ५० मराठा सेनाओं के साथ रात में किले पर आक्रमण किया। शत्रुओं पर अचानक आक्रमण कर उसके उपर तलवारे चलायी गयी। शत्रु रक्त से नाले बहने लगे। सभी साथियों के शरीर पर भी रक्त लगा हुआ था। इस हमले के कारण कोई अल्ला-अल्ला या कोई खुदा, खुदा इस प्रकार की आवाजें निकाल रहे थे। अंत में किलेदार उदयभान भी मारा जाता है। इस कोंढाना युध्द में मराठा सेना और सरदार तानाजी मालुसरा ने अपना अद्वितिय पराक्रम दिखाया था। इस युध्द में तानाजी मालुसरे भी शहिद हो जाता है। अंत : मराठों ने बडा शौर्य दिखाकर यह किला प्राप्त कर लिया था।

मराठा और मुगल बादशाह औरंगजेब की सेनाओं का आमने-सामने सबसे बडा 'सालहेरी' में युध्द हुआ था। इस युध्द में मराठा सेनाओं ने अपना पराक्रम दिखाकर मुगलों को हराया था। इस भयंकर युध्द के बाद युध्दभूमि का वर्णन सभासद करते है कि, "दुतर्फा दहा हजार माणूस मुर्दा जाहाले. घोडी उंट हत्ती (यास) गणना नाहीं रक्ताचे पूर वाहिले. रक्ताचे चिखल जाहाले. त्यामध्ये रुतों लागले. असा कर्दम जाहाला. मारतां मारतां घोडे जिवंत उरले नाहींत. जे जिवंत सापडले ते सहा हजार घोडे राजियाकडे गणतीस लागले."[५४] अर्थात मुगल और मराठों के सेनाओं के बीच भयंकर युध्द हुआ। इस युध्द में मराठा सेनाओं ने अपना पराक्रम दिखाते हुए विजय प्राप्त कर लिया था। युध्द के बाद दोनों की ओर से दस हजार सेनाओं की मृत्यु हो गयी थी। इस युध्द में घोडे, उंट, हत्ती, इनके मृत्यु की गनना भी नहीं की जा सकती हैं। रणस्थल में रक्त की मानों बाढ

आ गयी हो। रक्त से जमिन में चारों तरफ किचड हो गया। इस किचड में सेनाओं के पैर फंस रहे हैं। युध्द करते समय घोडे सब मारे गये थे। इस युध्द में जो घोडे जीवित रहें उसमें केवल शिवाजी महाराज के छह हजार घोडो की गीनती हो गयी थी। इस प्रकार के भयंकर युध्द में मराठा सेनाओं ने अपना पराक्रम दिखाया था। इस युध्द में शिवाजी महाराज स्वयं नेतृत्व कर रहे थे।

सुरत पर दूसरी बार आक्रमण कर मिली हुई संपत्ति को लेकर आते समय शिवाजी महाराज ने मोहबत खाँ और दाउद खाँ के साथ युध्द किया। सिध्दी जौहर और दर्यासारंग के द्वारा स्वराज्य के प्रदेश में आकर लुटपात हो रही थी। शिवाजी महाराज के नौसेना दल ने सिध्दी और दर्यासारंग को पराजित किया था। शिवाजी महाराज ने छोटे-छोटे बंदरों का निर्माण किया था। समुद्र युध्द के लिए ७०० जहाज खरीदकर समुद्र सत्ता के सिध्दी, दर्यासारंग और हब्शीयों को नौसेना दल ने हराया था। शिवाजी महाराज के सेनाओं के पराक्रम से शत्रु पक्ष की सेना भयभित हमेशा रहती थी।

इस प्रकार मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज की 'मराठा' सेनाओं ने कई युध्दों में अपना पराक्रम दिखाया हैं। वे स्वयं पराक्रमी तो थे ही परंतु उनकी सेना भी पराक्रमी थी। उनके सरदार, सेना मातृभूमि स्वाभिमान और स्वराज्य की अस्मिता के लिए लडते हुए शहिद हो जाते हैं। उनकी सेनाओं में स्वामित्व, साहस, निर्भयता, आत्मविश्वास था। उनमें स्वराज्य के लिए बलिदान देने की इच्छा थी। सेना नायक, सेना, सरदार के पराक्रम से स्वराज्य का निर्माण हुआ था।

३.२.१८. शत्रुपक्ष पर धाक :

शिवाजी महाराज की वीरता और उनके पराक्रमों से शत्रु पक्ष हमेशा भयभित रहता हैं। उनके जीतने भी शत्रु रहें, उन्होंने जिंदगी भर कभी राहत की सांस नहीं ली थी। हमेशा शिवाजी महाराज का डर उनके उपर रहा था। भारत

के सभी देशी, विदेशी शासक पर उनकी बडी धाक थी। शत्रु पक्ष की सेना, किलेदार, सरदार, सेनापति, राजा, महाराजा आदिलशाह, कुतूबशाह, अंग्रेज, हाब्शि यहाँ तक की मुगल बादशाह औरंगजेब भी शिवाजी महाराज से डरता था। उन्होंने सभी शत्रुओं पर आपनी धाक जमायी थी। आदिलशाह के सरदार अफजल खाँ का वध कर दिया था। इस घटना से भारत वर्ष में सभी पर शिवाजी महाराज की धाक तैयार हो गयी थी। उनके सभी शत्रु भयभित हो गये थे। आदिलशाह की बडी साहेबीन ने सब सरदारों को बुलाकर उनसे परामार्श लिया था। वह शिवाजी महाराज से डर कर उनके साथ संधि करने का निश्चिय करती हैं। आदिलशाही के उपर धाक का वर्णन 'मल्हार चिटणीस' के सत्पप्रकरणात्मक' चरित्र में लिखा है-"खान बुडविल्यावरुन सर्वासही दहशत ऐंसे जालें. यास उपाय काय करावा? याउपरि कांही ठीक दिसत नाहीं. सुमान-अल्ला कसे शेवटास नेईल? तह करुन आपले से करावे तरि या उपरि हातीं लागणार नाही."[५५]

अर्थात शिवाजी महाराज ने आदिलशाही के सबसे बडे शक्तिशाली सरदार अफजल खाँ का वध कर दिया था। इसमें आदिलशाह की बडी बेगम स्वयं सरदारों से चर्चा करती हैं। खान सरदार मारे गये थे। इस कारण सभी डर गये थे। इस पर उपाय क्या करना चाहिए? इस बारे में चर्चा करते हैं। शिवाजी महाराज से संधि करना ही ठिक रहेगा अन्य कोई मार्ग उन्हें सही नहीं दिखाई देता हैं। शिवाजी महाराज से संधि करके उनके साथ मित्रता बढाना चाहिए अगर हम मित्रता नहीं करते हैं तो हमारे हाथ और कुछ नहीं लगेगा। खुदा को क्या मंजुर है? इस प्रकार की बातें दरबार में होती हैं। आदिलशाही पूरी तरह से डरी हुई हैं। वे अपना राज्य को खुदा के भरोसे छोड देते हैं। आदिलशाही के कुछ किलों के किलेदार शिवाजी महाराज की धाक से ही अपने किलों के छोडकर भाग जाते हैं।

दिल्ली के मुगल बादशाह औरंगजेब भी शिवाजी महाराज से डरता था। दिल्ली के दरबार में भी उनकी बडी धाक थी। औरंगजेब द्वारा आगरा दरबार में उन्हें कैद कर लिया जाता हैं। कैद से मुक्ति के लिए जाफरखान को मिलना चाहते थे। उनके द्वारा यह बात औरंगजेब तक पहुँचाना चाहते थे। जाफरखान की पत्नी शाइस्ता खाँ की बहन थी। जाफरखाँ को उनकी पत्नी भी शिवाजी महाराज से दूर से बात करनी की सलाह देती हैं। बंदीखाने में कडा पहरा होने के बावजूद भी शिवाजी महाराज चुपके से पलायन करने में सफल हो जाते हैं। यह घटना जब औरंगजेब को पता चलती हैं, तो औरंगजेब डर के मारे पलंग के नीचे तक नहीं उतरता हैं। औरंगजेब बादशाह के मन में भय का वर्णन करते हुए सभासद लिखते हैं कि, "राजा शहरांत कोठे दडून राहिला असेल आणि रात्रीस आपणास दगा करील म्हणून तजवीज करुन, बहुत सावध चौकी पहारा ठेवून जागेच पलंगावर राहुन बैसले. लोक कंबरबस्ती करुन रात्रं दिवस जवळ ठेविले."[५६] अर्थात शिवाजी महाराज कैद से अचानक पलायन करने के बाद औरंगजेब को डर लगने लगा था। वह कहता है कि, शिवाजी राजा शहर में कहीं छुप कर बैठा होगा। रात के अंधेरे में आकर मेरे साथ भी धोखा कर सकता हैं। भय के कारण औरंगजेब ने सुरक्षा की पूरी व्यवस्था कर ली थी। सेनाओं को बहुत सतर्क रखकर दिन-रात पहरा देने के लिए कहाँ था। भय के कारण अपने पास भी कुछ लोगों को रखा था। खडे पहारों और सुरक्षा के बीच औरंगजेब पलंग के उपर ही बैठकर रहता था। शिवाजी महाराज स्वराज्य में पहुँचने की खबर सुनकर अपने जेष्ठ पुत्र शहाआलम को पत्र लिखकर शिवाजी महाराज से युध्द न करते हुए संधि करने की आदेश देता है।

आदिलशाह और मुगलशाह के छोटे-मोठे राजा सरदार, किलेदार पर भी शिवाजी महाराज की धाक थी । राजा जयसिंह, जसवंतसिंह, पर भी उनकी धाक थी। मिर्जा राजा जयसिंह दक्षिण विजय के लिए यज्ञ, महायज्ञ, अनुष्ठान करने लगा था। लाखों सेना की फौज लेकर आनेवाला शाईस्ता खाँ शिवाजी महाराज

के पुने के महल के उपर छापामारी के बाद भय के कारण वह वापस चला जाता हैं। कुतुबशाह भी शिवाजी महाराज से डर कर उन्हें सालाना कर (लगान) देता था। हब्शि, पोर्तुगज, अंग्रेज के उपर भी शिवाजी महाराज की धाक थी।

इस प्रकार मध्यकालीन मराठी साहित्यकारों ने शिवाजी महाराज का शत्रु के उपर डर का वर्णन किया हैं। उनकी शत्रु पक्ष के किलेदार, सरदार, छोटे-मोठे राजा पर धाक था। आदिलशाह, शाईस्ताखां, दिलेर खान, कुतुबशाह, मुगल बादशाह औरंगजेब तक उन से डरता था। शत्रु पक्ष के सभी सेना, सरदार, राजा, उनके डर से अपनी हार मान लेते हैं। विदेशी शासक और समुद्र की सत्ता के शत्रुओं के उपर भी अत्याधिक निर्माण की थी।

३.२.१९. दयावीर :

विद्या विनय के कारण शोभा पाती है। शौर्य या पराक्रम वीरता दया के भाव के कारण अधिक सुशोभित दिखाई देता हैं। किसी राजा में दूसरों के दुःख, दर्द, के प्रति संवेदना का भाव हो वही राजा श्रेष्ठ होता है। शिवाजी महाराज में दया का भाव था, इसलिए वे श्रेष्ठ राजा माने जाते हैं। वे प्रजा के दुःख, पीड़ा, वेदना, समस्याओं को वे भली भाँति जानते हैं। उनकी संवेदना प्रजा, सेना सरदारों के प्रति हमेशा रही हैं। तानाजी मालुसरा और उनके जैसे कई सरदार, सेना स्वराज्य के लिए शहिद हो गये थे। उनके प्रति शिवाजी महाराज में प्रेम, अपनापन, दया का भाव दिखाई देता था। तानाजी के बेटे 'रायबा' को अपने गले से लगाकर उसकी अपनेपन का एहसास दिखाया था। युध्द में शत्रु पक्ष के शरणार्थी सेनाओं पर वे दया का भाव प्रकट करते हैं। अफजल खाँ वध के बाद उसकी शरणार्थी सेना के साथ दया भाव दिखाया था। वे अपने सेनाओं से कहते है कि जो अपनी तलवार को म्यान में रखकर शरण आते हैं उनके उपर आप शस्त्र मत चलाना। इस प्रसंग को शिवकालीन शाहिर अज्ञानदास लिखते हैं कि,

"फिरंग ठेवी त्याला जाउद्या, त्याला। राखु नका तुम्ही उगारल्या पाइकाला"[५७]

अर्थात शिवाजी महाराज अफजलखाँ वध के बाद अपने सभी सेना और सरदारों को आदेश देते हैं कि, जो शरण आते हैं उन्हें जीवनदान दे। अगर कोई आपके उपर तलवार उठाकर आते है तो उसे छोंडना नहीं। वे शरणार्थी सैनिकों के उपर दया का भाव दिखाकर उसे अभय देते है। कर्नाटक मोहिम से सरनोबत हंबीरराव मोहिते वापस स्वराज्य में आते समय रास्तों में लोदी खान और हुसैन खान के साथ युध्द होता हैं। इस युध्द में लोदी और हुसैन खाँ पकडे जाते हैं। शिवाजी महाराज के सामने उन्हें लाकर खडा किया जाता है। शरण में आने पर उन दोनों पर दया दिखाकर उसे बडे सम्मान के साथ वापस भेज देते हैं। जाते समय उन्हें नये वस्त्रों के साथ खर्च के लिए पैसे और सुरक्षा के लिए अपने लोगों को भेज देते है। युध्द में पकडे गये और शरण आये हुए सरदारों सेनाओं और राजाओं के साथ क्रुरता न दिखाते हुए दया दिखाते हैं। इसलिए वे एक आदर्श और श्रेष्ठ राजा है। इस प्रकार की दया के लिए संवेदना की आवश्यकता होती हैं। सेना के और सरदारों के मृत्यु पर पूरी संवेदना दिखाकर वे भी दु:खी होकर शोक मनाते हैं। तानाजी के मृत्यु पर शिवाजी महाराज ने बारा दिन का शोक मनाया था। उनकी संवेदना दलित, पीड़ित, शोषित, किसान, स्त्री, पुरुष, बच्चों के उपर हमेशा रही हैं। शत्रु पक्ष के स्त्री और बच्चों के उपर उन्होंने कभी शस्त्र नहीं उठाया। वे उन पर दया दिखाते हुए उन्हें छोंड देते हैं।

इस प्रकार मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज की दया भाव का वर्णन किया हैं। शिवाजी महाराज सेना और सरदारों के मृत्यु पर शोक मनाते है और हमदर्दी दिखाते हैं। शत्रु के सेना और सरदारों को शरण में आने पर दया का भाव दिखाकर उदात्त मन से क्षमा कर देते हैं। प्रजा, स्त्री, बच्चों चाहे स्वराज्य के हो या शत्रु पक्ष के राज्य के उनके उपर कभी भी क्रुरता नहीं दिखाई हैं। शत्रु की सेना, सरदारों को अभयदान दिया था। वे एक श्रेष्ठ दयावीर हैं। शिवाजी महाराज में दया का भाव था। आदर्श वीर के लिए जो हिम्मत और साहस चाहिए वह शिवाजी महाराज में थी। वे एक श्रेष्ठ दयावीर है।

३.२.२०. दानवीर :

श्रेष्ठ दानी वहीं होता है, जो नि:स्वार्थ भाव से दान देता है। वह दान चल और अचल के रुप में होता हैं। दीन, हिन, पीडित, किसान, मजदूर, शोषित, दुर्बल को मदत करना मानवता का धर्म होता है। भारत के इतिहास में अनेक शुर पराक्रमी वीर राजा हुए हैं। इतिहास के कुछ ही दानशुर राजाओं में शिवाजी महाराज का भी नाम आता है। उनका दान जाती-पाँती, अपना, पराया इससे उपर उठकर भेदभाव रहित दान होता था। वे एक श्रेष्ठ दानी राजा थे। दान देते समय कर्म, दान की आवश्यकता और दान की उपयोगिता को ध्यान में रखते हैं। वे दान देते समय धर्म, जाति-पाँती, उँच-निच न मानकर सभी को समान दान देते हैं। किसानों को खेती जोतने के लिए जो आवश्यक औजार चाहिए वे दान में देते थे। सेना और सरदारों का युध्दों पराक्रम के अनुसार उनको दान देते थे। अफजल खाँ युध्द के विजय के बाद उन्होंने दानधर्म बहुत किया था। उस समय जो सैनिक घायल हुए उनके घाव की तीव्रता को देखकर उनकी हर संभव मदत की है। इन सैनिकों को किसी को दो सौं, सौं, पच्चास, पच्चीस, होन दान के रुप में दिया था। अफजल वध के बाद सेनाओं को दिये गए दान का वर्णन सप्तप्रकारणात्म चरित्र में मल्हार चिटणिस लिखते हैं, "दानधर्म बहुत करुन, समागमें होते, कामे केलीं, त्यास बक्षिसें, वस्त्रेभूषणे, तैनात वाढविणे, पालख्या, अबदागिरे सैन्याचीं कडी व द्रव्य देऊन तुम्ही सर्व होता म्हणोन राजे खैर होउन आले. ऐशी तारीफ गौरव देऊन मोठा आनंद करिती जाली."[५८]

अर्थात शिवाजी महाराज युध्द में विजय होने के बाद युध्द में जिन्होंने पराक्रम दिखाया उन्हें बुलाकर बक्षिस के रुप में दान दिया था। दान में महेंगें वस्त्र, पालखी, सोने का कंगन और अन्य सोने के वस्तुओं को दिया था। इतना ही नहीं उनको गौरवान्वित और अपने निस्वार्थ दान को दर्शात हुए उन्हें कहते हैं कि, 'आप सभी थे इसलिए मुझे कुछ नहीं हुआ'। यह निस्वार्थ प्रेम सेना के उपर

था इसलिए प्रजा सेना, सरदार भी शिवाजी महाराज से प्रेम करते हैं। शिवाजी महाराज ने विजयोत्सव और त्यौहारों पर अत्याधिक दानधर्म किया है। दिल्ली के बंदीखाने से छूटकर अपने शिवपुत्र संभाजी स्वराज्य में लानेवाले कृष्ण, काशी और विसाजी पंत को लक्ष होन दान में देते है। कृष्णाजी को 'विश्वासराव' पदवी दी जाती हैं।

कुछ मध्यकालीन जीवनीकारों ने शिवाजी महाराज को राज्यदान के रुप में वर्णित अनऐतिहासिक घटना का प्रस्तुत करने का प्रयास किया हैं। शिवाजी महाराज नें रामदास स्वामी को अपना राज्यदान करने का मनोदय व्यक्त था। इस प्रकार की एक किवंदती जीवनकारों ने तैयार की थी। मध्यकालीन ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण मानी जानेवाली 'सभासद' जीवनी में रामदास स्वामी के नाम तक का उल्लेख उपलब्ध नहीं हैं। ऐतिहासिक नये अनुसंधान के आधार पर शिवाजी महाराज के स्वराज्य में १६७१ तक रामदास स्वामी रहते ही नहीं थे। वे आदिलशाही सत्ता के सज्जनगड किले पर रहते थे।

शिवाजी महाराज ने अपने राजदरबार में कवि, विद्वान, पंडित, को बहुत सम्मान और दान दिया था। यह ऐतिहासिक सत्य है कि, उनके राजदरबार में संस्कृत, हिंदी, मराठी के रादरबारी कवियों में प्रमुख स्थान मिलता था। संस्कृत के कवि परमानंद, हिंदी के कवि भूषण, मराठी के शाहिर आज्ञानदास, तुळसीदास, आदि कवियों को उन्होंने दान दिया था। मराठी के शाहिर आज्ञानदास ने 'अफजल खान-वध' और शाहिर तुळसीदास को 'तानाजी मालुसरा' पवाडों पर स्वयं अपने हाथें से दान दिया था। अज्ञानदास स्वयं अपने पोवाडा प्राप्त दान का वर्णन करते हुए लिखते हैं-

"शिवाजी सरज्यानें। इनाम घोड बक्षिस दिला।।

शेरभर सोन्याचा। तोडा हातांत घातला।।"[५९]

अर्थात शुर शिवाजी राजा ने मुझे इनाम में दान रुप में एक घोडा और एक शेर सोने का तोडा (सोने से बना कंगन) दे दिया था। शिवाजी महाराज ने तानाजी मालुसरा के कोंढाना पराक्रम पर पोवाडा लिखने वाले 'शाहिर' तुळसीदास को भी स्वयं अपने हाथों से दान दिया था। शाहिर तुळसीदास को स्वयं अपने हाथों से शिवाजी महाराज ने एक हजार रुपये किमंत का तोडा (कंगन) दिया था। इस प्रकार मध्यकालीन मराठी दरबरी कवि हो या संस्कृत, हिंदी के कवि हो सभी को उन्होंने दान दिया हैं।

शिवाजी महाराज ने सर्वाधिक दान अपने 'राज्याभिषक' के समय किया था। शिवाजी महाराज ने इस समय कुल दान धर्म और समारोह का खर्चा सभासद के अनुसार एक करोड बेचालीस लक्ष किया था। इस समय आमंत्रित और उपस्थिति सभी को दान दिया गया था। इस प्रसंग के दानवीरता को स्पष्ट करते हुए सभासद लिखते हैं कि, "तपोनिधी व सत्पुरुष, सन्यासी, अतिथी, मानभाव, जटाधारी, जोगी, जंगम नाना जाती मिळाले. तितक्यास चार मास मिष्टान्न उलफे चालविले. निरोप देता पात्र पाहुन द्रव्य, अलंकार भूषणें वस्त्र अमर्याद दिधली. गागाभट मुख्य अध्वर्यू, त्यास अपरमित द्रव्य दिले. संपूर्ण खर्चाची संख्या एक कोड बेताळीस लक्ष होन जाले."[६०]

अर्थात राज्याभिषक के समय उपस्थित सभी अतिथियों तपस्वी, सत्पुरुष, संन्यासी, महानुभव पंथी, जटाधारी, योगी, जंगम, ऐसे अनेक विध जातीयों के लिए चार मास तक सुरुची भोजन की व्यवस्था की थी। उनको बिदा करते समय अमर्यादित द्रव्य, अलंकार, अभूषण, वस्त्रों का दान दिया था। राज्यभिषक विधि के लिए काशी से बुलाए गयें गागाभट्ट को अमर्यादित द्रव्यों का दान दिया गया था। इस समय शिवाजी महाराज ने कूल एक करोड बयालीस लाख हीन का खर्चा किया था। यहाँ यह भी स्पष्ट हो जाता है कि शिवाजी महाराज ने सभी जाती, धर्म, पंथ, सम्प्रदाय से परे जाकर दान दिया था। उनका दान भेदभाव रहित था।

अन्नदान जो सभी दानों में श्रेष्ठ माना जाता हैं वह शिवाजी महाराज ने अखंड रुप से चार महिनों तक किया था।

इस प्रकार शिवाजी महाराज के दानशुरता का वर्णन मराठी साहित्यकारों ने किया हैं। उनका दान भेदभाव रहित दान था। सेना, सरदार, प्रजा, गरीब शोषित पीड़ितों को उन्होंने दान दिया हैं। राज दरबारी कवियों विद्वानों, पंडितों को भी दान दिया हैं। 'राज्याभिषक' विधि समारोह के समय उन्होंने वस्त्र, आभूषण, अलंकर, अन्य वस्तुओं के साथ अन्नदान भी किया है। वे दानवीर राजा थे इसका प्रमाण इतिहास भी हमें देता हैं। उनके दानवीरता का वर्णन कवियों ने भी बडी उदारता के साथ किया है।

३.२.२१. वैभव संपन्न राजा :

शिवाजी महाराज वैभव संपन्न राजा थे। उन्होंने अपने मराठा सेना, सरदारों के साथ किये हुए पराक्रम से अपने स्वराज्य का वैभव निर्माण किया था। दानवीर वही हो सकता हैं, जिसके स्वराज्य में वैभव संपन्नता हो। शिवाजी महाराज के पास विपुल मात्रा में धन संपत्ति थी। उनके स्वराज्य की प्रजा, सेना, सेनापति सभी धन संपन्न थे। स्वराज्य में राजा और प्रजा दोनों संपन्न थे। शिवाजी महाराज की वैभव संपन्नता को देखकर आदिलशाह का सरदार अफजलखां भी हैरान हो जाता है। जब अफजल खाँ प्रतापगड के नीचे मिलने के लिए आता है। शिवाजी महाराज ने डाले गए शामियाने को देखकर वह सोचता हैं कि इस प्रकार की वैभव संपन्नता तो आदिलशाही की है और न मुगल बादशाह की थी। उस शामियाने को सोने, चाँदी, हिरे और मौल्यवान अभूषणों के चमचमित वस्त्रों से सजाया था। शिवाजी महाराज की इस वैभवता को देखकर खान सोचने लगता है कि, "ऐसी सदर नव्हती। आमच्या आली इदलशाला। खान दूसरे सदरे गेला। सदर देखुनि सुखी झाला। ऐशी सदर नव्हती नवरंगशा बाच्छायाला।"[६१] अर्थात अफजल खाँ और शिवाजी महाराज मिलने के लिए एक शामियाने का प्रबंध

शिवाजी महाराज ने किया था। उसे देखकर अफजल खाँ अपने मन में ही सोचता हैं कि, इस प्रकार की व्यवस्था हमारे राजा आदिलशाह को भी नहीं थी। शामियाने के दूसरे पर्दे में गया तो उसे लगा की इस प्रकार की व्यवस्था और वैभव संपन्नता तो औरंगजेब बादशाह के भी पास नहीं है। शिवाजी महाराज ने अपने कर्तृत्व से वैभव को बढाया था। शिवकालीन शाहिर तुळसीदास ने भी शिवाजी महाराज के वैभव संपन्नता का वर्णन किया हैं। वे तानाजी मालुसरा पोवाडा में शिवाजी महाराज के घर साडे तीनसौं भगवान पाणी भरने की बात कहते हैं। वर्णन में वास्तविकता नहीं भी हो पर कवि का (लक्षार्थ) शिवाजी महाराज की वैभव संपन्नता को दर्शाता हैं।

शिवाजी महाराज ने राज्यभिषक के समय में दान और खर्च किया है वह भी उनकी वैभव संपन्नता को दर्शाता हैं। व्यक्ति तभी दान धर्म करता है, जब उसके पास देने के लिए उपलब्ध हो। राज्यभिषक के समय उनका राजसिंहासन ३२ मन सोने से बनाया गया था। उस में अनेक प्रकार के हीरे अमूल्य मोती जडे हुये थे। उनकी तुलादान सोने से की गयी थी। उनके राजवैभव और राजसिंहासन की वैभव संपन्नता के बारे में डॉ. भिमसेन विद्यालंकर लिखते हैं कि, "सिंहासन की आसनपीठ सुवर्ण शलाकाओं से मढी गयी थी। आठों दिशाओं में खडे आठों स्तंभ हीरे जवाहरात से जडे हुए थे। इन आठों खंभों पर कीमती सुवर्ण चित्रकारी से अलंकृत चांदनी लहरा रही थी। चांदनी के सवर्ण चित्रकारी से हीरे-मोतियों की मालाएँ जगमगाते रत्नों की आभा से प्रदीप्त होकर चमचमा रही थी।"[६२] इस प्रकार शिवाजी महाराज के राजसिंहासन का आसन पीठ सवर्ण धातुओं से बनाया गया था। आठों दिशाओं के आठ स्तंभों में हिरे जवाहरात जडे थे। राजसिंहासन हिरो और मोतियों की मालाओं से चांदनी की तरह चमचमा रहा था।

शिवाजी महाराज के पास किले, दुर्ग की कुल संख्या कृष्णाजी सभासद ने २४० बताते हैं। चिटणिस बखर में उनके किलों की संख्या ३१७ बताई गयी है।

उनके घोडे की संख्या एक लाख ५० हजार थी। उनके पास आठरा कारखाने, बारा महल, सोने, नाणी, हिरे, मोति, नगद रुपये, जहाजे, अरमार थे। शिवाजी महाराज ने चिंजी प्रदेश जो तृणभद्र से कावेरी नदी के प्रदेश तक और तृगभद्रा से गोदावरी तक राज्य विस्तार किया था। इतने विस्तृत प्रदेश के राजा शिवाजी महाराज थे। उनके इसी वैभवता का वर्णन करते हुए शिवाजी महाराज को रामदास स्वामी संबोधित करते हुए कहते है कि, "नरपति हयपति, गजपति, गडपति, भूपति, जलपति, पुरंदर आणि शक्ति पृष्टभागी।"[६३] अर्थात शिवकालीन रामदास स्वामी लिखते हैं कि छत्रपती शिवाजी महाराज प्रजा के राजा हैं। उनके पास हत्ती, घोडों के अधिपती हैं। पृथ्वी के रक्षक (राजा) है। समुद्र के सत्ता के प्रमुख हैं। उनके पास हत्ती, घोडे, दुर्ग, किले, पैदल नौसेना दल से समुद्र सत्ता के पति (प्रमुख) हैं। रामदास स्वामी ने शिवाजी महाराज के वैभव संपन्नता का ऐतिहास वर्णन किया है। समाज के वैरागिन संन्यासी, संत, लोग किसी की झुठी या काल्पनिक प्रशंसा नहीं करते।

इस प्रकार मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के वैभव संपन्नता का वर्णन किया गया हैं। शिवाजी महाराज अत्यांधिक वैभवसंघन्न राजा हैं। इस वैभव संपन्नता को देख अफजल खाँ अचंभित होता हैं। उनके पास दुर्ग, किले, खजिना, अलंकार, अभूषण के साथ-साथ वस्त्रों के भंडार थे। सेना, सरदार, घोडे, हाथी, जहाज, अरमार विपुल मात्रा में थे। उनका सिंहासन बत्तीस मन सोनें से सुसज्जित था। उनकी वैभव संपन्नता आदिल और मुगलों से भी बढकर थी। अपने कर्तृत्व पर उन्होंने विस्तृत स्वराज्य का निर्माण किया था। समकालीन साहित्यकारों ने उनके वैभव संपन्नता को अंकिता स्पष्ट किया हैं।

३.२.२२. अवतारी पुरुष :

भारतीय समाज में प्राचीन काल से ही यही धारणा हैं कि, राजा ईश्वर का अंश या अवतार होता हैं। उनकी आज्ञा, आदेश, नियम को ईश्वर आदेश या

इच्छा माना जाता हैं। शिवाजी महाराज की वीरता, पराक्रम के कारण उन्हें ईश्वरीय अवतार माना गया है। उन्होंने अनेक असंभव कार्य को संभव कर दिखाया है। भारतीय समाज की यही धारणा है कि असंभव (असामान्य) कार्य को पूरा करनेवाला ईश्वर का रुप होता है। समाज की इसी धारणा को साहित्यकारों ने भी वर्णित अभिव्यक्त करते हुए शिवाजी महाराज को ईश्वरीय आवतार माना है। शिवकालीन शाहिर अज्ञानदास लिखते हैं कि, "धन्य जिजाऊँची कुशी। राजा अवतार जन्मला।"[६४] अर्थात जीजाबाई धन्य हो गयी, जो उनकी कोख से शिवाजी महाराज के रुप में अवतारी राजा का जन्म हुआ है। शिवाजी महाराज का पृथ्वी पर अवतार माना गया हैं। उन्होंने अवतार लेकर हिंदवी स्वराज्य की स्थापना की थी। उन्हें अवतारी पुरुष मानने का कारण यही है कि, उन्होंने अमानवीय असंभव कार्य को संभव कर दिखाया है। उन्हें भगवान शिवजी का अवतार माना गया है। शिवजी जीस प्रकार से राक्षसों का संहार करते हैं, उसी प्रकार का कार्य शिवाजी महाराज ने शत्रुओं को दंडित किया है। मध्यकालीन मराठी के सभासद अपने जीवनी में अवतारी पुरुष को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि,"जिजाई आऊ तिचे पोटीं राजश्री शिवाजी राजें पुत्र होतांच श्री शंभु महादेव जागृती येऊन स्वप्न जालें की 'आपणच अवतरलों आहे. पुढे ख्यात करणे आहे."[६५] अर्थात माँ जीजाबाई के पेट से शिवाजी महाराज का जनम होते ही जीजाबाई के सपने में भगवान शंभु (महादेव) प्रसन्न होते हैं। वे कहते है कि, 'आपके पेट से मैंने स्वयं जन्म लिया है। मुझे जीवन में बहुत से पराक्रम करना हैं।' शिवाजी महाराज के आश्चर्य चकित करनेवाले पराक्रमों को देखकर 'सभासद' भी उन्हें भगवान महादेव (शिवजी) और शक्तिशाली भीम का अवतार मानते हैं। प्राचीन काल के साहित्य में भी यही धारणा रही हैं कि धर्म की स्थापना करने के लिए या धर्म रक्षा के लिए ईश्वरीय अवतार होता हैं। श्रीमत भागवत में भी यही बात कहीं है कि जब-जब धर्म की हानी होती हैं तब-तब धर्म संकट को दूर करने या उसकी रक्षा करने के लिए ईश्वर का मनुष्य रुप में अवतार होता हैं। इसी विचारधारा का मध्यकालीन

साहित्य पर था। इसी कारण मध्यकालीन जीवनी या अन्य शाहिरों ने शिवाजी महाराज को अवतारी राजा के रुप में चित्रित किया हैं। अन्याय, अत्याचार करनेवाले धर्म के शत्रु हैं, इसलिए उन्होंने शत्रुओं को नष्ट कर (सत्य) धर्म की स्थापना की हैं।

शिवाजी महाराज को शक्तिशाली, पराक्रमी होने के कारण उन्हें 'भीम' का अवतार माना हैं। दुष्ट दुर्योधन रुपी अफजल खाँ को मारने का पराक्रम भीम रुपी शिवाजी महाराज ने किया था। अफजल का वध करने का असामान्य कार्य सामान्य मनुष्य का हों ही नहीं सकता सभासद इस संदर्भ में लिखते हैं कि, "शिवाजी राजा भीमच. त्यानींच अफजल मारिला. हे कर्म मनूष्याचे नव्हे. अवतारीच होता."[६६] अर्थात शिवाजी महाराज मनुष्य के रुप में भीम के ही अवतार थे। इसी कारण उन्होंने असामान्य पराक्रम दिखाते हुए अफजलखाँ को मारा हैं। यहा असंभव कार्य मनुष्य का नही हो सकता। वे अवातारी ही थे। शिवाजी महाराज के अदभूत और असामान्य पराक्रमी को देखकर ही मराठी साहितयकारों ने उन्हें अवतारी पुरुष के रुप में प्रकट किया हैं। वस्तु : शिवाजी महाराज कार्यक्षम, कर्तृत्वान, पराक्रमी महापुरुष ही थे।

इस प्रकार मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज को भगवान शिवजी, भीम, राम आदि का अवतार माना हैं। जो धर्म स्थापना के लिए पृथ्वी पर अवतरित हुए हैं। उन्हें अवतारीत पुरुष मानने का कारण यही भी था कि, प्राचीन साहित्य परंपरा से में राजा को ईश्वर के अवतारी रुप में गुण-गान किया था। उसी परंपरा के अनुसार मराठी साहित्य में भी अवतारी पुरुष का वर्णन किया गया हैं। भारतीय समाज के जन मानस के पटल पर बहुत प्राचीन काल से ही असामान्य, अद्भूत पराक्रम करनेवाले व्यक्ति और महापुरुषों को ईश्वरीय अवतार माना जाता हैं। शत्रु पक्ष के लोग भी उनके पराक्रमों कार्यो को देखकर दैवी अवतार, चमत्कारी, जादुगार, राक्षसी आदि कहते हैं। परंतु शिवाजी महाराज में अदभूत

असामान्य कार्यक्षमता थी। आदिलशाह और मुगल बादशाह शिवाजी महाराज को मराठा सामाज्य स्थापना के लिए खुदा ने ही भेजा है यह समझकर चुप हो जाते थे।

३.२.२३. कीर्ति और यशवंत राजा :

कोई राजा अगर कठिन परिस्थितियों में असामान्य पराक्रम दिखाकर सफलता प्राप्त करता हैं, तो उसकी कीर्ति देश और विदेशों में होती हैं। कभी भी कठिन लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए विपरित परिस्थितियों में भी सफलता प्राप्त करने वाले व्यक्ति ही पराक्रमी होता है। शिवाजी महाराज ने कठिन और विपरित परिस्थितियों में अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लिया था। उन्होंने शक्ति शाली राजाओ को पराजित कर यश प्राप्त किया था। इसलिए उनके पराक्रम और यश की कीर्ति भारत और विश्व स्तर पर गायी जा रही हैं। उनके यश के पराक्रम की कीर्ति का गान मध्यकालीन मराठी साहित्यकारों ने भी किया हैं। आदिलशाह के सरदार अफजल खाँ के वध के बाद पूरे भारत वर्ष में शिवाजी महाराज की कीर्ति फैल चुकी थी। इस कारण शाहिर अज्ञानदास ने शिवाजी महाराज की मुक्तकंठ से कीर्ति का गान किया हैं। विजापुर के आदिलशाह के शहरों में लोग शिवाजी महाराज यश की चर्चा करने लगें थे। इस संदर्भ में मल्हार चिटणिस लिखते हैं कि, "शहर भर पादशहात शिवाजी राजा बुडवितो हेच जन चर्चा करुं लागले."[६७] अर्थात अफजल खाँ के वध के बाद पूरे आदिलशाही के विजापुर शहरों में सभी लोग शिवाजी महाराज के पराक्रम की चर्चा कर रहे हैं। शहरों के लोग अब शिवाजी महाराज के द्वारा आदिलशाही को भी नष्ट होने की चर्चा कर रहे हैं। उनके पराक्रमी यश की चर्चा पूरे देशी राजा और विदेशी शासकों में होती थी। औरंगजेब के कैद से निकलना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन था। बडी सहजता से शिवाजी महाराज कैद से निकलर स्वराज्य में आ गये थे। इस प्रकार के असामान्य कार्य कर यश प्राप्त करने पर राजा की कीर्ति पुरे भारत वर्ष में फैल

गयी थी। उनके कीर्ति, पराक्रम, यश को सुनकर शत्रु पक्ष के या मित्र पक्ष के राजा सरदार, सेना प्रजा के मन में उन्हें देखने की जिज्ञास बनी रहती थी। उनके यश और कीर्ति को सुनकर भाग्यनगर के लोग उन्हें देखने के लिए बडी संख्या में खडे हो गये थे। सभासद लिखते हैं कि, "नगर-नागरिक लोक कोट्यानकोटी राजा पाहावयास उभे राहिलें. नारींनी मंगळ आर्त्या अगणित अजळून राजियास दिले."[६८] अर्थात शिवाजी महाराज भागानगर के कुतुबशाह को मिलने के लिए जाते हैं। इनके यश और कीर्ति के बारे में भागानगर वासीयों ने बहुत सुना था। शिवाजी महाराज को देखने के लिए कोटीयों के तादात (संख्या) में लोग रास्ते पर खडे रहें थे। अनेक महिलाओं ने उनकी आरती उतारकर स्वागत किया था। इनकी कीर्ति भूसत्ताओं के साथ-साथ समुद्र सत्ताओं तक पहुँची थी। समुद्र पर सत्ता प्रस्थापित करनेवाला मध्यकालीन भारत का एकमेव अद्वितीय शिवाजी राजा था। समुद्र पर सत्ता प्रस्थापित करना धर्म के अनुसार पाप माना जाता था। इस प्रकार के अविवेकी विचारों को शिवाजी महाराज नहीं मानते थे। शिवाजी महाराज की यश और कीर्ति सातों समुद्र पार पहुँच चुकी थी। उन्होंने विदेशी समद्री सत्ताओं को हराया था।

शिवाजी महाराज यशवंत और कीर्तिवान राजा थे। उनके यश और कीर्ति को कवियों और शिवकालीन संत ने भी गाये हैं। संत तुकाराम महाराज, रामदास स्वामी ने उनकी वीरता, बुध्दि चातुर्यता पराक्रम, यश, कीर्ति, वैभव संपन्नता का वर्णन भी किया है। शिवाजी महाराज के यश और कीर्ति के संदर्भ में रामदास स्वामी लिखते हैं कि, "यशवंत, कीर्तिवंत सामर्थ्यांत वरदवंत धन्य धन्य तुमची कीर्ति। विश्व विस्तारली।"[६९]

अर्थात रामदास स्वामी लिखते हैं कि, आप (शिवाजी महाराज) यशवंत, कीर्तिवंत है। आप शक्तिशाली है। आपको वरदान प्राप्त हुआ हैं। आपके पराक्रम और वीरता के कारण आपकी कीर्ति पूरे विश्व में फैल चुकी हैं। पूरे विश्व में

आपकी यश और कीर्ति का गान किया जा रहा हैं। अधिकांश कवि राजा की झुठी तारिफ कर मान, सम्मान, धन, सत्ता, पद, प्राप्त करते हैं। परंतु यह वर्णन संतों नें निस्वार्थ भाव से किया हैं। वे किसी की झुठी तारिफ नहीं करते हैं। संत तुकाराम महाराज, रामदास स्वामी ने निस्वार्थ रुप से उनके यश कीर्ति, पराक्रम का गान किया हैं।

इस प्रकार मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के यश और उनके कीर्ति का गान किया हैं। वे यशवंत और कीर्तिवंत राजा थे। उनका यश चारों दिशाओं में फैल चुका था। अपने पडोसी राज्य तक ही नहीं बल्कि देश और विदेशों में उनकी यश और कीर्ति पहुँची थी। यशवंत और कीर्तिवंत राजा शिवाजी महाराज को देखने के लिए कोटियों की संख्या में लोग रास्तों पर खडे रहते हैं। उनकी यश और कीर्ति हजारों नहीं लाखों सालो तक चिरंतर रहेगी। उनसे भारतीय समाज, देश, विश्व के लिए प्रेरणा हमेशा मिलती रहेगी।

३.२.२४. दूरदर्शिता :

मध्यकालीन भारत में अधिकांश राजा, ऐश्वर्य संपन्न और विलासी जीवन में डूब गये थे। उन्हें लोगों की चिंता थी न समाज और देश की चिंता थी। वे केवल अपने छोटे राज्य को ही अपना देश समझते थे। उनके मन में संकुचित राष्ट्रियता बनी हुई थी। वे केवल अपने दरबारी जीवन में ही व्यस्त रहते थे। लेकिन इसी काल में व्यापक राष्ट्रियता और राष्ट्र प्रेम के पुरस्कार करनेवाले छ. शिवाजी महाराज का भी जन्म मध्यकाल में हुआ था। उन्होंने अनेक राजाओं को संघटित कर विदशी सत्ताओं को विरोध किया था। उन विदेशी सत्ताओं के खतरों को शिवाजी महाराज ने अपने दृष्टिता से पहचान लिया था। विदेशी सत्ताओं ने समुद्र के तटवर्ती भागों पर कब्जा जमाना शुरु किया था। शिवाजी महाराज ने उन विदेशी सत्ताओं का वहाँ सत्ता स्थापन करने ही नहीं दिया। कहाँ जाता है कि शिवाजी महाराज के ही कारण अंग्रेज सौ या डेढ सौ साल बाद भारत में स्थायी

हो गये थे। शिवाजी महाराज के बाद धिरे-धिरे वे देश को कब्जे में कर अपनी सत्ता पूरे भारत में फैला दी थी। अंग्रेजों के नीतियों को शिवाजी महाराज ने पहले ही आपने दुरदृष्टि से पहचान ली थी। उन्होंने समुद्रपर विदेशीयों की सत्ता प्रस्तापित होते देखकर उन्होंने नौसेना दल की स्थापना की थी। सागर युध्द के लिए जहाजों और अरमारों की व्यवस्था की थी। सागरी युध्द के लिए उन्होंने युध्द सामग्री का निर्माण किया था। इस संदर्भ में डॉ. वसंत मोरे लिखते हैं कि, "शिवाजी ने पाँच सौं जहाज बनाने के लिए दस लाख होन खर्च किये। उन जहाजों पर बारुद और तोपे सजाई। पडाव, मचवा, गलबत, होडी, महागिरी पाल, जुग, गुराबा ऐसे कई प्रकार के जहाज बनाए और सागर पर नियंत्रण करने लगे।"[७०] शिवाजी महाराज ने समुद्र युध्द के लिए एक सशक्त नौसेना दल बनाया था। इन्होंने अंग्रेज, डच, पोर्तूगज, हब्शि, सिध्दी आदि सत्ताओं को पराजित किया था। उनके जहाज युध्दों के लिए तैयार रहते थे।

शिवाजी महाराज अच्छि तरह जानते थें कि राज्य का प्राण दुर्ग और किलों में होता हैं। इसलिए उन्होंने दुर्ग और किलों का निर्माण किया हैं। स्वराज्य की सुरक्षा के लिए दुर्ग और किल्ले के पुनर्निर्माण किया। इनके इस दुरदर्शि नीति को सप्त प्रकरणात्मक चरित्र में लिखा हैं कि, "जांगा जांगा कोकणांत व मावळांत, देशांत, डोंगर चांगला आढळेल तेथे व समुद्र किनारां किल्ले बांधावे ऐसे करितो जाले. यासि कारण येक देशास प्रांतास जाग्याचा आधार होतो."[७१] अर्थात शिवाजी महाराज ने दुरदृष्टि से स्वराज्य की सुरक्षा के लिए दुर्ग और किलों का निर्माण किया हैं। कोकण और मावळ प्रदेश में जगह-देखकर पहाडियों में और संमदर के किनारे किल्लों का निर्माण कार्य शुरु किया था। इसका कारण एक ही था कि देश और प्रदेश की सुरक्षा सुलभ हो। मध्यकालीन राजा भी यहाँ सोचते थे कि जिसके पास में दुर्ग है उसके आस-पास के प्रदेश पर उसका अधिकार होता था। राज्य की सत्ता और सुरक्षा का सम्बध दुर्ग और किल्लों से था।

शिवाजी महाराज के दुरदर्शि विचारों से ही उन्होंने वतनदारी व्यवस्था बंद करने का निर्णय लिया था। उन वतनदारों द्वारा जनता से मनमाना कर वसूल करना बंद कर दिया। उन्हें स्वराज्य की ओर से वेतन देना शुरु किया था। उन्हें पता था कि, यह वतनदार, जमिनदार, सेठ साहूकार, पाटील, देशमुख आदि लोग प्रजा का शोषण कर रहे हैं। इस शोषण से प्रजा में असंतोष निर्माण होगा तो प्रजा राजा और राज्य से द्रोह करेंगी। इसलिए वतनदारी, जमीनदारी बंद करके वेतनदारी शुरु की थी। सैनिकों के साथ युध्द में नशा, नारी, और नृत्य वर्जित था। उन्हें पता था कि शराब के कारण नशे में व्याभिचार, अत्याचार, राजद्रोह जैसी विकृती मन तैयार हो सकती थी। एक राजा को स्वयं शिक्षित होना अत्यावश्यक हैं। स्वयं तो शिक्षित थे ही, पर अपने दोनों बेटों (जेष्ठपुत्र संभाजी राजे, द्वितीय पुत्र राजाराम को शास्त्र और शस्त्र की शिक्षा दी थी। उनके जेष्ठ पुत्र संभाजी राजे स्वयं एक कवि थे। शत्रुओं के साथ संधि का प्रस्ताव तब रखा जब स्वराज्य की हानी होनेवाली हैं। शक्तिशाली शत्रुओं के सामने वे कभी झुके नहीं बल्कि कुछ समय और वर्ष तक शक्तिशाली सेना, साधन को एकत्रित किया था।

इस प्रकार मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज एक दुरदृष्टि राजा के रुप में वर्णित हुए हैं। उन्होंने विदेशी शत्रुओं से समुद्र सत्ता का धोखा पहचानकर विदेशी सताओं के विरुध्द युध्द किए। नौसेना दल का निर्माण किया। शत्रु से स्वराज्य की रक्षा के लिए दुर्ग तथा किलों का निर्माण किया। स्वराज्यद्रोह रोकने के लिए वतनदारी बंद कर वेतनदारी शुरु की थी। राज्य में व्यसनाधिनता को बंद कर दिया था। स्वयं के पुत्रों को शिक्षित और प्रशिक्षित कर उन्हें शास्त्र, शस्त्र की शिक्षा दी थी। शत्रु शक्ति को देखकर अपनी दूरदर्शिता से स्वराज्य की हानी दिखाई दे रही हो, तो शत्रु के साथ संधान बाध लिया था।

३.२.२५. उदारमतवादी :

कोई भी रचनाकार अपनी साहित्य रचना का नायक उदात्त चरित्र वाले पात्र को ही बनाता हैं। रचना में नायक उदार अंतकरण वाला ही होता हैं। साहित्य किसी न किसी चरित्र के उदात्त रुप को प्रस्तुत करता हैं। शिवाजी महाराज भी मध्यकालीन मराठी साहित्य रचना में उदात्त नायक बने हैं। शिवाजी महाराज के उदात्य भाव, विचार, आचरण की अभिव्यक्ति मध्यकालीन मराठी साहित्य में हुई हैं। उन्होंने अपने स्वराज्य में तत्कालीन १८ प्रकार की जातियों के लोगों को सेना में भर्ती किया था। जिसमें मराठा, ब्राह्मण, नाई, कोळी, तेली, तांबोली, महार, मातंग, चमार, कुंभार, गडरिए आदि अन्य जातियाँ का समावेश था। हिंदू धर्म के बावजूद मुस्लीम धर्म के भी सैनिक प्रमुख पद पर कार्यरत रहें है। उन्होंने जाति धर्म से परे जाकर गुणों को महत्व दिया था। उनका युध्द संघर्ष किसी धर्म के विरुध्द नहीं था बल्कि अन्याय, अत्याचार के विरुध्द था। उनका धर्म संघर्ष नही बल्कि राजनीतिक सत्ता संघर्ष था। वे हिंदू और मुस्लिम दोनों धर्मों को प्रति उदात्य का भाव रखते हैं। उनको लिए मंदिर और मस्जित दोनों बराबर हैं। उनके इसी धार्मिक उदारत के बारे में सभासद लिखते हैं-"मुलखात देव देवस्थाने जागा जागां होतीं त्यास दिवाबत्ती, नैवेद्य, अभिषक, स्थान, पाहुन यथयोग्य चालविंले मुसलमानांचे पीर मसिदी त्याची दिवाबत्ती नैवेद्य स्थान पाहुन चालविले."[७२]

अर्थात शिवाजी महाराज ने अपने स्वराज्य में जहाँ-जहाँ मंदिर या श्रध्दा स्थान है वहॉ दिया बत्ती, नैवेद्य चढाना, अभिषक कराना यथा संभव निरंतर चालु रहने दिया। उसी तरह जहाँ मुसलमान के पीर हैं, मस्जिद थी वहीं पर भी दियाबत्ती की स्वराज्य के खर्च से पूरी व्यवस्था की थी। उन्होंने अपने विचार एक धर्म में संकुचित न रखते हुए उदात्य भाव रखे थे।

युध्द भूमि में उन्होंने अपनी उदारता से शरणार्थी शत्रुओं को अभयदान दिया था। शिवाजी महाराज को उदारता सुशोभित करती है। उन्होंने मुगल, आदिलशाह के अनेक सरदारों के युध्द में उदार अंतकरण से अभयदान दिया था। मुगलशाह के सरदार दिलेरखाँ, हुसेनखाँ, बहलोल खाँ, कासिम खाँ जैसे अनेकों को अभयदान दिया था। मुगलों ने बीजापुर के आदिलशाह पर आक्रमण किया था। आदिलशाह हताश, निराश होकर शिवाजी महाराज से रक्षण की याचना कर रहें थे। यह आदिलशाही है, जिन्होंने शिवाजी महाराज के पीता शाहजी राजे को कैंद कर लिया था। फिर भी शिवाजी महाराज ने बडे ही उदारता दिखाते हुए अंत आदिलशाही का स्वयं रक्षक किया था। खान आदिलशाह ने शिवाजी महाराज से धन्यवाद ज्ञापीत करने के लिए वकिल भेजा था। सप्तप्रकरणात्मक चरित्र में लिखा हैं कि "पूर्वि आम्ही तुम्हा करिता शहाजी राजे यास पीडा केल्या वगैरे सर्व एकीकडे ठेऊन हे गोष्ट तुम्हीं करुन दिगांत कीर्ती मेळविलीत! वंश जपणाची धन्य केलीत!!"[७३] अर्थात शिवाजी महाराज ने आदिलशाह के प्रदेश को जीत रहे थे। इसके परिणाम स्वरुप आदिलशाह ने शिवाजी महाराज के पिता शहाजी राजे को कैद कर लिया था। उसी आदिलशाही को मुगलों से रक्षण कर आदिलशाही नष्ट होने से बचाया था। आदिलशाह का वकिल संदेश लाकर शिवाजी महाराज से कहते हैं कि, हमने आपके कारण आपके पिता शहाजी को कैद कर यातना दी थी। इस बात को आप भूलकर उदात्य भाव से हमारे राज्य की रक्षा की अपने आपके वंश को शोभित काम किया है। आप धन्य हो आपने आदिलशाही से बचाकर देश में कीर्ति प्राप्त की हैं। इस प्रकार आदिलशाह ने उनके पिता शहाजी को कैद कर यातना देने पर भी उदात्य भाव से आदिलशाही की मदत की थी। शिवाजी महाराज की धर्म नीति और राजनीति अत्यंत उदार थी। युध्द में शत्रुओं को अभयदान देकर युध्दनीति की उदारता को प्रकट किया है। दान देते समय अपने कभी अहंकार या द्वेष नहीं रखा बडी उदारता से लोगों को दान दिया था।

अपने सौतेला भाई व्यंकोजी राजे कर्नाटक में पिता शाहजी महाराज की जागीर को संभाल रहे थे। पिता की मृत्यु के पश्चात दोनों का अधिकार शहाजी के जागीर पर समान रुप से होना चाहिए था। उन्होंने व्यंकोजी राजे को यह बात कहीं तो शिवाजी महाराज के विरुध्द युध्द करना शुरु किया। शिवाजी महाराज के सरदार रधुनाथराव और हंबीरराव ने व्यंकोजी राजे को परास्त किया था। फिर भी शिवाजी महाराज ने उदारता पत्र लिखकर दोनों सरदारों को कहते हैं, "व्यंकोजी राजे आपले धाकटे बंधू आहेत. मूलबुध्दी केली. त्यास तोही आपला भाउ त्यास रक्षणें. त्याचे राज्य बुडवूं नका."[७४] अर्थात सौतेले भाई को अपने सरदारों ने पराजित करने के बाद भी उन्होंने कहाँ की वह मेरा जेष्ठ भाई है। उन्होंने बच्चें के बुध्दि की तरह सोंचा हैं। वह भी मेरा बडा भाई है, उनके राज्य को आप नष्ट ना करें। उनके राज्य का रक्षण करे। इस तरह अपने भाई को जीता हुआ प्रदेश वापस कर बडी उदारता से व्यंकोजी राजे को क्षमा कर देते हैं। समकालीन औरंगजेब ने तो सत्ता के लिए अपने पिता और भाईयों का खुन किया था। उसमें उदात्य भाव, भावना और विचार नहीं थे। शिवाजी महाराज ने ऐसा कभी नहीं किया था।

इस प्रकार मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज को उदारमतवादी राजा के रुप का वर्णन किया हैं। शिवाजी महाराज सभी जाति, धर्म, पंथ की प्रजा के साथ उदारमतवादी थे। समाज के सभी वर्गों के प्रजा को अपने साथ लेकर स्वराज्य निर्माण किया था। धार्मिक उदारता के साथ-साथ राजनीतिक उदारता भी दिखाई देती हैं। वे युध्द में बडे उदारता के साथ शरणार्थी शत्रुओं को क्षमा कर अभयदान देते थे। वे दान देते समय बीना संकोच किए बडी उदात्य भाव से सभी को समान दान देते हैं। वे अपने भाव, भावना, विचार, आचार, उदात्य रखते थे। शिवाजी महाराज एक श्रेष्ट उदारमतवादी राजा थे।

३.२.२६. न्यायप्रिय राजा :

समाज में दीन, हीन, अशक्त, शोषित वंचितों पर हमेशा अन्याय होता रहता है। समाज में शोषित और शोषक दो वर्ग होते है शोषक वर्ग जो दीन, हिन, शोषितों पर अपनी सत्ता, ताकत का उपयोग कर उनके उपर अन्याय करता हैं। मध्यकालीन भारत में जाती और धर्म के आधार पर न्यायव्यवस्था थी। न्याय व्यवस्था में सबके लिए समान न्याय देने का काम महाराज ने किया हैं। उनके स्वराज्य में न्याय जात, धर्म, पर आधारित नहीं था। सबके लिए समान न्याय और समान दंड मिलता था। उनकी न्यायव्यवस्था एक आदर्श और पारदर्शि थी। अन्याय करनेवालों को दंडित किया जाता था। गुन्हेगार केवल गुन्हेगार होता है वह किसी जात या धर्म का नहीं होता। प्राचीन एवं मध्यकालीन समाज पर धर्मसत्ता का राजनीति और न्याय नीति पर अधिकार स्थापित हो चुका था। शहाजहाँ, औरंगजेब, जेसे कुछ अन्य राजा लोंग हिंदू धर्मी लोगों के लिए अलग नियम बनाये थे। उनके शासन में केवल हिंदूओं को 'जजिया' कर लगाया जाता था। इस प्रकार की अन्यायी व्यवस्था को शिवाजी महाराज ने विरोध कर न्याय का राज्य स्थापित किया था। उनके 'हिंदवी' स्वराज्य में सभी को समान न्याय मिलता था।

राज्य में वतनदारों जमिंनदारों के कारण रयत (प्रजा) पर अन्याय हो रहा था। उन वतनदार, जमिनदार, जैसे अधिकारियों के अधिकार पर पाबंदी लगा दी। राझां गाँव के पाटील ने एक गरीब किसान की पुत्री पर आत्याचार किया था। यह घटना शिवाजी महाराज को पता चली तो उन्होंने रांझा पाटील को बंदी बनाकर उसे दंडित किया था। उस समय उन्होंने जात, धर्म, को न देखकर अत्याचारी के गुन्हेगारी को देखा था। उनके राज्य में वतनदार, जमिनदार, पाटील, देशमुख आदि पदाधिकारीयों को सामान्य लोगों की तरह रहने का आदेश दिया था। उनके उँचे बुर्जो को गीराया गया और आम लोगों के बीच रहने का

नियम बनाया ताकि सभी के मन में समानता की भावना रहें। उनके राज्य में सबको समान अधिकार और समान्य न्याय मिलता था। राज्य के सभी देशमुख, वतनदार, पाटील, कुलकर्णी, जमीनदारों के हक्कों पर पाबंदी दी। इस संदर्भ में सभासद लिखते हैं कि, "जमिनदारा गल्ला व नक्त गाँव पाहुन देशमुखास व देशकुलकर्णी यास व पाटील कुलकर्णी यांस हक्क बांधून दिला. जमीनदारांनी वाडा बुरुजांचा बांधू नये. घर बांधून राहावे. ऐसा मुलकाचा बंद केला."[७५] अर्थात शिवाजी महाराज सभी को समान न्याय और अधिकार थे। स्वराज्य में जमिनदारों, देशमुख, कुलकर्णी, पाटील के अधिकारों पर पाबंदी ला दी। जमिनदारों को बडे बुर्जो अपने घर बनाने से पहरहेज किया था। सभी सामान्य लोगों की तरह रहने का आदेश दिया। सभी को समान रहने के लिए उन्होंने नियम बनाया था। इस कारण लोगों के मन उपर समान न्याय या समता की भावना प्रस्थापित कई है। शिवाजी महाराज ने न्यायदान करते समय कभी भी अपना, पराया, जात, धर्म, पंथ को नहीं देखा था। उनका न्याय भेदभाव रहित था। न्याय दान करने से पहले दोनों पक्षों को अपने मतों का प्रकट करने का अधिकार था। प्राथमिक स्तर पर न्याय देने के लिए गुणी व्यक्तियों को चुना जाता था। किसी भी अत्याचारी व्यक्ति को क्षमा नहीं दी जाती थी। उनके राज्य में न्याय में बिल्कुल विलंब नहीं होता था। न्यायदान जलद गति से होता था। न्यायदान करते समय गुन्हेंगार की गुन्हेगारी (अत्याचार) की तीव्रता, परिस्थितियों के देखा जाता था। जिसने ज्यादा अत्याचार किया है, उसे कठोर दंड दिया जाता था। इस संदर्भ में सप्तप्रकरणात्मक बखर में लिखा है कि, "यथायोग्य पाहुन शिक्षा करावी स्वल्प अन्याय (असेल तर) उग्र, दंड न करावा, बहुत अन्याय (असेल) त्यास स्वल्प दंड असें न होतां पाहुन करावें, ऐसे केलें."[७६]

अर्थात स्वराज्य में अगर किसी ने अन्याय, अत्याचार किया है, तो उसे दंडित किया ही जाता था। दंड देते समय भी उस गुन्हेंगार पर अन्याय नहीं होना चाहिए। जीसने छोटा गुनाह किया उसे अल्प दंड दिया जाए। जिसने बहूत बडा

अपराध किया हो उसे बडा (कठोर) दंड दिया जाना चाहिए। अन्याय की तीव्रता के अनुसार दंड का नियम बनाया था। किसी अपराधी व्यक्ति पर उसके अपराध से अधिक दंड देने से उसपर अन्याय न हो इसके प्रति सतर्क रहते थे। स्वराज्य में निरपेक्ष, समय पर समान न्याय मिलता था।

इस प्रकार मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के न्यायप्रियता का वर्णन किया हैं। उन्होंने अन्याय अत्याचार का विरोध कर न्याय, सदाचार के राज्य की प्रस्थापित किया है। उनकी न्यायव्यवस्था भेदभाव से रहित, दोषरहित, गुण सहित थी। न्यायव्यवस्था में गुणी लोगों को सम्मान और चोर को दंड मीलता था। अपराध की तीव्रता को देखकर दंडित करने का प्रावधान था। शिवाजी महाराज की एक आदर्श पारदर्शि, जलद न्यायव्यवस्था थी। वे एक आदर्श न्यायव्यवस्था के आदर्श न्यायधिश थे।

३.२.२७. बहुजन प्रतिपालक :

मध्ययुगीन भारत के अधिकांश भागों पर मुस्लिम सत्ता स्थापित हो चुकी थी। उनके कुछ राजा महाराजा अन्य धर्मो के लोगों पर अन्याय अत्याचार कर रहे थे। उनके प्रति जनता के मन में भी विद्रोह की भावना थी। इस विद्रोह की भावना को संघटित करने के लिए उन लोगों की सक्षम, कुशल, नेतृत्व छ. शिवाजी महाराज के रुप में मिल गया था। उन्होंने शोषित, पीडित, अन्यायी, अत्याचारी, समाज को न्याय देने के लिए स्वराज्य का निर्माण किया था। इस काल में जनता का शोषण तीन स्तरों पर हो रहा था। मुगल बादशाह, उसके अधिन राजा और स्थानिय अधिकारी से जनता का शोषण होता था। छ. शिवाजी महाराज ने अपने स्वराज्य में प्रांतिय और स्थानियों सत्ताओं के हक्क पर पाबंदी ला दी थी। स्वराज्य में अधिकत्तर लोगों की संख्या किसान वर्ग थी। मध्य काल में किसानों का अत्याधिक शोषण किया जा रहा था। उनकी उपज के अनुसार या जमिन के अनुसार वार्षिक 'कर' न माँगते हुए मनमाने अधिकार चलाकर उनसे

'खेतसारा' (महसुल) जमा किया जाता था। शिवाजी महाराज ने पहले किसानों की जमिन नापने का काम किया हैं। उसके बाद उन्होंने खेत में उपज के अनुसार उस पर सालाना सरकारी हिस्सा (कर) लेने का निर्णय लिया था। सभासद इस संदर्भ में लिखते हैं कि, "जमीन मोजून, आकारुन गांवची गांवास मोजून चौकशी केली. बिधेयास पिकाचा आकार करुन पांच तक्षिमा पिकांच्या करुन तीन तक्षिमा रयतेस द्याव्या. दोन तक्षिमा दिवाणांत घ्याव्या. येणे प्रमाणे रयतेपासून घ्यावे."[७७] अर्थात शिवाजी महाराज ने गाँव किसानों के कूल जमीन क्षेत्र को नाप लिया। किसान के खेती की के उपज अनुसार पाँच हिस्से (भाग) बनाये जाते थे। उस पाँच हिस्सों में से तीन हिस्सा किसान को मिलते थे। स्वराज्य के लिए दो भाग (तक्षिणा) सरकारी दिवानखाने में जमा कर दियी जाते थे। शिवाजी महाराज ने उत्पन्न (उपज) पर आधारित कर लगाया था। इस कारण किसान का शोषण बंद हो गया था। किसान को खेती कसने के लिए मुफ्त में औजारों का प्रबंध होता था। पशुपालन के लिए गोशाला या अन्य दुधजन्य पशुओं का प्रबंध कराते थे। किसान हितौषि राजा के रुप में शिवाजी महाराज को माना जाता हैं।

स्त्री के प्रति उनका उदात्य दृष्टिकोन इतिहास और सर्वसंपन्नन हैं। उन्होंने अपने सेनाओं को आदेशित किया था कि, दूसरे प्रदेश की स्त्री के उपर अत्याचार न करें शिवाजी महाराज के विरुध्द युध्द में 'रायबागीन' स्त्री युध्द हार गयी थी। उस शत्रु स्त्री के शुरता की प्रशंसा कर उसे गौरवान्वित किया था। उन्होंने स्त्री दीन, दलित, अनाथ, बच्चों का रक्षण किया हैं। स्वराज्य के सभी प्रजा का उन्होंने रक्षण किा था। शिवाजी महाराज के समकालीन संत तुकाराम महाराज को सम्मानित करने के लिए उनके घर विपुल धन और घोडा भेजा था। संत तुकाराम महाराज धन और घोडे को वापस करते हुए पत्र में उपदेश देते हैं कि, "अनाथांच्या काजा साह्य व्हावे।"[७८] अर्थात संत तुकाराम महाराज के उपदेशात्मक पत्र के वाक्य से यही संदेश मिलता हैं कि, शिवाजी महाराज अनाथों की रक्षा

और उसे सहाय्यता करते हैं। तुकाराम महाराज भी उन्हें अनाथों के दु:ख में सहाय्यता करने का उपदेश देते हैं। शिवाजी महाराज दीन, दलित, शोषित, पीडित, व्यक्तियों के प्रतिपालक के रुप में उनकी रक्षा करते हैं। इसी का परिणाम यह हैं कि उनके राज्य की सभी प्रजा सुखी, संपन्न है। सभी अपने-अपने धर्म (सत्य) के अनुसार अचरण करने लगे थे। इस संदर्भ में 'सप्त प्रकरणात्मक चरित्र' में लिखा है कि, "सर्वजन सुखी राज्यांत ऐसे होतें जालें. सर्वास धर्मे करुन चालावें ही वासना निर्माण होती जाली. याप्रमाणे धर्मेकरुन राज्य संपादन करुन, नीतिकरुन (सर्व प्रजांचें) पालन पोषण करिते जाले."[७९]

अर्थात शिवाजी महाराज के हिंदवी स्वराज्य में सभी प्रजा सुखी और संपन्न थी। सभी लोग धर्म (सत्य) के मार्ग पर चल रहे थे। उन्होंने धर्म (सत्य) का राज्य स्थापित किया था। अपने नीति, विचारों, के अनुसार सभी प्रजा के पालक (रक्षक) बन गये थे। स्वराज्य में प्रजा इसलिए सुखी है कि, शिवाजी महाराज की नीति बहुजन प्रतिपालक थी। सभी प्रजा का पालन करने की जिम्मेदारी का निर्वाहन उन्होंने किया था।

इस प्रकार मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराजे के 'बहुजन प्रतिपालक' रुप का वर्णन किया हैं। उन्होंने स्वराज्य स्थापना कर सभी जाति, धर्म,पंथ, सम्प्रदाय, स्त्री-पुरुष, किसान, दलित, पीडित, शोषित जनता पर होनेवाले शोषण से मुक्त किया है। इसी के परिणाम स्वरुप जनता उनके राज्य में सुरक्षित सुखी और संपन्न थी।

३.२.२८. स्त्री के प्रति आदरभाव :

कुछ प्राचीन ग्रंथों में स्त्री को शुद्र माना गया हैं। स्त्री केवल भोगवस्तु के रुप में देखने की धारणा समाज में स्थापित हो चुकी थी। मध्यकाल में भी स्त्री के प्रति समाज का दृष्टिकोन कुछ उसी प्रकार का रहा था। युध्द में विजयी राजा हारे हुए राजा की रानियों को दासी बनाकर दरबार में रखते थे। स्त्री राजदरबार

में राज नर्तकी के रुप में लोगों का मनोरंजन करती थी। पराजित प्रदेश की स्त्रियों के उपर सरदार, सैनिकों का अत्याचार होता था। शिवाजी महाराज का स्त्री के प्रति पुजनीय और आदरयुक्त दृष्टीकोन रहा हैं। स्त्री चाहे स्वराज्य की हो या शत्रु राज्य की उन्होंने स्त्री का हमेशा आदर किया था। उनके राजदरबार नर्तकी और सेना में मनोरंजक के लिए स्त्री वर्जित थी। स्वराज्य में स्त्री के उपर उन्होंने कभी अन्याय, अत्याचार नहीं होने दिया था। बल्कि स्त्री का अत्याधिक सम्मान किया गया। स्वराज्य या शत्रु प्रदेश की स्त्रियों का कोई कष्ट न हो इसलिए उन्होंने सेना, सरदारों को आदेश दिया था कि, "लष्करांत बायको व बटकी व कलावंतीण नसावी. जो बाळगील त्याची गर्दन मारावी. परमुल्यात पोर बायका न धरावी."[८०] अर्थात शिवाजी महाराज ने अपने सभी सेना और सरदारों को आदेश दिया था कि युध्द के मुहिम पर सेनाओं को अपनी पत्नी को लेकर जाना मना था। सेनाओं के दल में नारी प्रेमिका या नर्तकी के लिए मनाई की गयी थी। फिर भी अगर किसी ने ऐसा करने का प्रयास किया तो उनकी गर्दन काटने का आदेश दिया था यह एक अपराध मानकर उसे मृत्यु दंड दिया जाता था। शत्रु प्रदेश के बच्चों और स्त्रियों को पकडना वर्जित था। इस प्रकार का कठोर नियम शिवाजी महाराज ने बनाया था ।

कल्याण प्रांत विजय के बाद अहमद खाँ की पुत्रवधु जो अत्याधिक सुंदर थी। शिवाजी महाराज के सरदार अबाजी सोनदेव ने बंदी बनाकर विजय के नजाराने के रुप में उस पुत्र वध को दरबार में पेश किया गया। अबाजी सोनदेव के इस कुकृत्य पर शिवाजी महाराज अत्याधिक क्रौधित हो गये थे। सभी सैनिकों को आदेश दिया कि इस प्रकार का कृत्ये करने पर उन्हें कठोर दंड दिया जाएगा। उस सुभेदार की पुत्रवधु का बडा आदर और सम्मान कर उसकों सुरक्षित उनके राज्य में भेज दिया था। 'प्रबळगड' किले के आक्रमण पर किलेदार केसरी सिंह और अन्य राजपुत मोरे गये थे। किल्ले को जीतने के बाद किले के अंदर केसरी सिंह की माँ और बेटी मिल गयी थी। शिवाजी महाराज ने

उनका अत्याधिक सम्मान किया था। सप्तप्रकरणात्मक चरीत्र में लिखा हैं कि, "त्याची आई व लेंक सांपडलीं. तीं गौरव करुन जवळ ठेविलीं. कांहीं दिवशीं त्यासि समाधानानें आपले देशी जातो. बोललियावरी वस्त्रे द्रव्य देऊन लाऊन दिल्हीं."[८१] अर्थात शिवाजी महाराज ने 'प्रबळ गड' किल्ले को जीत लिया था। किले के अंदर ही किलेदार केसरी सिंह की माँ, बेटी पकडी गयी थी। उनको बडा आदर देकर अपने किल्ले पर साथ में रखा। उनका गौरव करके कुछ दिनों के बाद वे स्वयं शिवाजी महाराज को अपने प्रदेश में जाने की इच्छा व्यक्त करते हैं। शिवाजी महाराज ने उन्हें वस्त्र, द्रव्य (धन) देकर उनके साथ में सुरक्षा के लिए अपने सैनिक भेज दिये थे। शिवाजी महाराज ने स्वराज्य की स्त्रियों के साथ-साथ शत्रु स्त्री का भी आदर, गौरव किया था। युध्द में शत्रु स्त्री 'रायबागिन' पराक्रम दिखाकर उनके सैनिकों के साथ युध्द करती है। अंत वह शिवाजी महाराज की सेना से हार जाती है। उदयराम की पत्नी 'रायबागीन' के पराक्रम की सराहना करते हुए उसे क्षमा करते है। सप्तप्रकरण में लिखा है कि, "रायबागीन हीस बहु मान देऊन सोडून दिली."[८२]

अर्थात रायबागीन जो मुगलों के साथ रहकर शिवाजी महाराज के विरुध्द युध्द शुरु कर चुकी थी। सुरत आक्रमण से वापस आ रहे मराठा सेना पर रास्ते में आक्रमण करती हैं। अंतः वह मराठा सेना से हारकर शरण आती है। शिवाजी महाराज ने उसके पराक्रम को देखकर अत्याधिक सम्मान और उसे गौरवान्वित कर छोड दिया था। इस प्रकार शत्रु स्त्री से भी उन्होंने आदरता की दृष्टि दिखायी हैं। स्त्री का मान-सम्मान करके उसे अभयदान दिया हैं। स्वराज्य की स्त्रियों का रक्षण, संरक्षण और सम्मान होता था। स्वराज्य में स्त्री पर अत्याचार करनेवाले रांझा गाँव के पाटील को उन्होंने कठोर दंड दिया था। हिरकनी नामक स्त्री के साहस का गौरव कर उसी के नाम पर 'हिरकणी' नामक बुरुज बनाया था। अतः शिवाजी महाराज ने अनेक स्त्री को गौरव और सम्मान किया था। शिवाजी महाराज के लिए स्त्री आदरयुक्त, पुजनीय थी।

इस प्रकार शिवाजी महाराज स्त्री की रक्षा के लिए हमेशा तत्पर रहते थे। स्त्री के प्रति दृष्टिकोन में स्वराज्य और शत्रु राज्य की स्त्रियों में सम्मान और आदरयुक्त रहा है। उनके लिए सभी स्त्रियाँ पूजनिय रही हैं। इसलिए शिवाजी महाराज ने स्त्री की रक्षा, सुरक्षा, मान, सम्मान आदर कर उनका गौरव किया हैं। स्त्री के प्रति उनका दृष्टिकोन आदरयुक्त और पुज्यभाव का रहा हैं।

३.२.२९. आदर्श शासक :

राजा या नेता अपने कार्य, कर्तव्य, पराकृम से समाज और देश के सामने स्वयं का आदर्श प्रस्तुत करता है। समाज, देश राजा या नेता के कार्य और पराक्रम से प्रेरित होता है। शिवाजी महाराज हर युग के समाज, देश और विश्व के लिए आदर्श हैं। नेता समाज और देश का पथ दर्शक होता हैं। इनके विचार-आचार, निर्णय और कार्य, वर्तमान समाज के लिए प्रेरित और प्रभावित करते है। शिवाजी महाराज ने समाज के विभिन्न जाति, धर्म, पंथ, सम्पदाय को प्रेरित कर संघटित करने का काम किया है। समाज में समता प्रस्थापित की है। सामाजिक कुरीतियों, कुप्रथाओं को नकारा था। उन्होंने स्वराज्य में स्त्री-पुरुष दोनों के समान माना था। सामाजिक सती कुप्रथा का विरोध कर अपनी माता जीजाबाई को सती न जाने के लिए बाध्य किया था। इस संदर्भ में सभासद लिखते है कि, "मातुश्री अग्निप्रवेश करीत होती, तिचे मांडीवर बैसून गळां मिठी घालून आण घालून राहाविली."[८३] अर्थात मध्यकालीन भारतीय समाज में 'सती' नामक कुप्रथा थी। पिता शाहजी की मृत्यु होने पर उनकी शैया की अग्नि प्रवेश के लिए मता जीजाबाई तैयार हो रही थी। शिवाजी महाराज छोटे बच्चों की तरह माता जीजाबाई के मांडी पर बैठ गये थे। माता को प्यार से गले मिलकर अपनी कसम देकर सती जाने से मना लेते हैं। अत: जीजाबाई ने अपना निर्णय बदलकर सती जाने से रुक गयी थी। आदर्श नेता समाज देश को अपने कार्य और आचरण से नयी दिशा देता हैं। शिवाजी महाराज ने समाज को नयी दिशा देने के काम किया

है। उनकी सेनाओं में १८ प्रकार की जातियों के लोग समाविष्ट थे। उन्होंने जाति और धर्म के आधार पर भेद किया नहीं हैं। उनकी सेना में अनेक मुस्लिम लोग सेना, सरदार, सेना प्रमुख पद पर कार्यरत थे। नौसेना के प्रमुख दौलत खाँ, उनका वकील काजी हैदर, तोफखाना प्रमुख इब्राहिम खान, व्यक्तिगत सेवक मदारी मेहतर ऐसे अनगीनत नाम है, जो स्वराज्य के रक्षक थे। उनकी धार्मिक उदारता और सर्वधर्म समभाव, आदर्श शासक का प्रमाण हैं।

अपने स्वराज्य का शासन सुव्यवस्थित रुप से चले इसलिए उन्होंने आठ प्रमुख व्यक्तियों के लिए 'अष्टप्रधान मंडल' की स्थापना की थी। आठ पदो में १. मुख्यप्रधान २. अमात्य ३. अर्थ सचिव ४. मंत्री ५. सेनापति ६. सुमंत ७. न्यायाधिश ८. पंडितराव आदि थे। इन पदों के मंत्रिमुडल विभाग की जिम्मेदारी और उनके कार्य क्षेत्र को निश्चित किया था। इन सभी को शिवाजी महाराज के आज्ञा का पालन करना पडता था। इस संदर्भ में डॉ. साहेबराव गाठाळ लिखते है कि, "राज्य की नीति तय करने का अधिकार सर्वता: छत्रपति का ही था।"[८४] शिवाजी महाराज राज्य के हित के लिए महत्वपूर्ण निर्णय और नीतियों को स्वयं तैयार करते थे। अष्टप्रधान विभाग के आठ मंत्रियों पर शिवाजी महाराज का ही अधिकार था। वे अष्टप्रधान मंडल के प्रमुख मुखिया थे। अष्टप्रधान मंडल की स्थापना के कारण शासन को सुव्यवस्था मिली थी।

वे एक कुशल और आदर्श राजनीतिज्ञ हैं। उनकी राजनीति साम, दाम, दंड, भेद पर आधारित थी। राजनीति में कोई सर्वकालिक शत्रु या मित्र नहीं होता हैं। उनके मुगल, कुतुब, आदिल, पोर्तुगज, फेंच, अंग्रेज, शत्रु होने पर भी उन्होंने उनके साथ मित्रता कर संधि कर ली थी। अपने पिता शहाजी को कैद करनेवाले आदिलशाही का रक्षण किया था। मुगल बादशाह औरंगजेब के पुत्र शाहआलम के साथ मित्रता बनाई थी। एक आदर्श शासक जन कल्याणकारी और उसका शासन लोकतांत्रिक मूल्य पर आधारित होता हैं। शिवाजी महाराज के हिंदवी स्वराज्य में

स्वातंत्र्य, समता, बंधुता और न्याय जैसे लोक तांत्रिक मूल्यों का पूर्ण निर्वाहन किया हैं। उनका स्वराज्य प्रजा कल्याण के लिए स्थापित किया गया था। उन्होंने अन्याय, अत्याचार, के विरोध में न्याय और समताधिष्टित शोषण मुक्त समाज का निर्माण किया था। जिसमें स्त्री, पुरुष, गरिब, किसान, पीड़ित, शोषित सभा को समान न्याय मिलता था। उन्होंने सांस्कृतिक और धार्मिक समन्वयता के लिए मंदिर के साथ-साथ मस्जित बनाई थी।

इस प्रकार एक आदर्श विचार को प्रस्थापित करनेवाला और लोकतांत्रिक मूल्य का पालन करनेवाल शासक ही समाज, देश और विश्व के लिए आदर्श होता हैं। शिवाजी महाराज ने प्रजा समाज, धर्म, राजनीति युध्दनीति के क्षेत्र में एक आदर्श नेता और राजा के रुप में हमेशा प्रेरित करते रहेंगे। वर्तमान समय में भी उनके विचार, कार्य निर्णय की दुरदर्शिता एक आदर्श दीप स्तंभ के समान समाज और देश के लिए पथ दर्शक रहेंगे।

निष्कर्ष :

मध्यकालीन मराठी के साहित्यकारों ने शिवाजी महाराज के अंतरग और बहिरंग स्वरुप का चित्रण किया हैं। शिवाजी महाराज 'सूर्यवंशी' राजपुत राजवंश कूल के हैं। उनका जन्म सन १९ फरवरी १६३० को शिवनेरी किले पर हुआ है। उनके शिवाजी नाम को लेकर साहित्यकारों में मतभिन्नता हैं। शिवाजी महाराज की निश्चित वेशभूषा नहीं हैं। वे वेशांतर करने में सिध्दहस्त थे। शिवाजी महाराज सुदृढ शरिरवाले परिश्रमी, जिज्ञासू, तेज आँखे, अजानबाहु शरीर, मुँछे और दाढी रखते थे। शत्रु की अनुचित क्रिया चाहे शब्दों में हो या युध्दों में उस क्रिया तुरंत अपनी प्रतिक्रिया देते थे। शिवाजी महाराज के हिंदवी स्वराज्य की राजधानी रायगड किले के प्राकृतिक और भौतिक वैभवता का चित्रण किया हैं। युध्द की तैयारी कोई सुचना या संकेत के लिए नगाडे बजाए जाते हैं। शिवाजी महाराज के पास युध्द करने में शस्त्र के रुप में तुळजा, भवानी और जगदंबा तीन तलवारे

उपलब्ध थी। मराठी साहित्य में इस युध्द शस्त्र तलवारों के संदर्भ में ऐतिहासिक वर्णन या दंतकथा (किंवंदती) भी वर्णित की हैं। शिवाजी महाराज का राज्याभिषक ६ जुन, १६७४ में किले रायगढ़ पर गागाभट्ट के हाथों से संपन्न हुआ हैं। साहित्य में शिवाजी महाराज की मृत्यु के कारण संबंधी वर्णन में मतभिन्नता दिखाई देती है। शिवाजी महाराज की मृत्यु सन् ३ अप्रैल १६८० में हो गयी हैं।

शिवाजी महाराज के अंतरिक स्वरुप का भी वर्णन मध्यकालीन मराठी साहित्य में किया है। शिवाजी महाराज का बचपन मावल प्रदेश में दोस्तों के साथ बिता हैं। वे बचपन से ही प्रतिभा संपन्न थे। पिता शाहजी राजे के द्वारा विशेष विशेषज्ञ लोगों को शिवाजी महाराज की शिक्षा हेतू शिवनेरी किले पर भेज दिया था। उन्होंने शस्त्र और शास्त्र की शिक्षा प्राप्त की हैं। वे माता-पिता, संत, पंडित, विद्वान उम्र से बडे और बुजुर्ग व्यक्ति के प्रति मन में नम्रता का भाव रखते हैं। अपनी बौध्दिक चातुर्यता से विपरित परिस्थितियों में विजय प्राप्त करते हैं। कोई भी निर्णय भावना के वश में नहीं बल्कि बुध्दि के कसौटी पर लेते थे। रोहिडेश्वर के महादेव मंदिर में उन्होंने स्वराज्य की दृढ प्रतिज्ञा ली थी। शिवाजी महाराज बचपन से ही स्वाभिमानी थे। आदिलशाही और आगरा के दरबार के प्रसंग में अपने स्वाभिमान को जगाए रखा था। वे भवानी देवी, महादेवी माता-पिता पर श्रध्दाभाव रखते थे। शिवाजी महाराज बडे साहसी और निर्भिक राजा थे। अफजलखां भेट, शाईस्ताखां पर पुना के महल में जाकर छापा, आगरा के दरबार में औरंगजेब के अनुचित व्यवहार पर प्रतिक्रिया देने का साहस और निर्भयता के गुण परिलक्षित होते हैं। वे स्वराज्य हित के लिए दिन-रात कार्यक्षम रहते हैं। शिवाजी महाराज धर्मरहित साम, दाम, दंड, भेद की राजनीति करते थे। उनके राजनीतिक गुढता को कोई भी शत्रु समझ नहीं पाया था। पारंपारिक युध्दनीतियों के साथ उन्होंने अपनी स्वतंत्र गनिम कावा, छापामारी, निषायुध्द आदि युध्द तंत्र की शुरुआत की है। उनके स्वराज्य का प्रमुख उद्देश प्रजा का हीत ही था।

शिवाजी महाराज को स्वधर्म (हिंदू धर्म) के प्रति स्वाभिमान था। व्यक्तिगत जीवन में धर्म के प्रति श्रध्दा थी। उन्होंने हिंदू धर्म के पवित्र श्रध्दा स्थानों का निर्माण और उसकी रक्षा की है। उन्होंने हिंदू धर्म का रक्षण और उध्दार का कार्य किया है। वे युध्द के विपरित परिस्थितियों में पीठ दिखाकर या डरकर नहीं भागे बल्कि एक वीर योध्दो की तरह अंत तक लडते रहते है। उन्होंने अपने जीवन में अफजल खां, शाईस्ताखां, सुरत पर आक्रमण, आगरा कैद से पलायन आदि घटनाओं में जीत कर अपना पराक्रम दिखाया है। वे स्वयं पराक्रमी होने के साथ-साथ उनकी चतुरंगी सेना भी पराक्रमी है। उनका आदिल, मुगल, कुतुब, हब्शि, अंग्रेज, डच, फ्रेंच, सिध्दी आदि शत्रुओं पर अत्याधिक धाक हैं। वे गरीब पीडित शोषित, शिशु के उपर भी दया का भाव रखते हैं। उन्होंने भेद रहित उदात्त भाव से दान किया है। स्वराज्य के सभी वर्गों के प्रजा में दान देते है। वे युध्दवीर, दयावीर, दानवीर, वैभवसंपन्न राजा थे उनकी वैभवता सोने का सिंहासन, दुर्ग, किले, सेना, जहाजे, आरमार, हाथी, घोडे आदि में दिखाई देते है। शिवाजी महाराज भगवान शिवजी (महादेव) का अवतारी पुरुष है। उनके पराक्रम और यश की कीर्ति भारत और विदेशों में पहूँची है। वे दूरदर्शि परिणामों को ध्यान में रखकर निर्णय लेते हैं। शिवाजी महाराज दान, धर्म, राजनीति में अत्यंत उदार भाव रखते थे। उनके स्वराज्य में सभी को समान, जलद और पारदर्शक न्याय मिलता है। वे सभी प्रजा अर्थात बहुजनों का पालन और रक्षण कर्ता है। शिवाजी महाराज का स्त्री के प्रति अत्यंत पूजनिय दृष्टिकोण रहा है। उनके स्वराज्य में

स्त्रियों की रक्षा, सुरक्षा के साथ-साथ न्याय और सम्मान भी मिलता है। शिवाजी महाराज एक आदर्श राजा, लोकतांत्रिक शासक, के रुप में वर्तमान समाज को प्रेरित करते रहेंगे।

अत: शिवाजी महाराज के बहिरंग और अंतरंग स्वरुप के विभिन्न रुपों को मध्यकालीन मराठी साहित्यकारों ने वर्णित किया है। शिवाजी महाराज के बचपन से लेकर मृत्यु तक के प्रमुख कार्य घटना और गुणों का वर्णन मध्यकालीन मराठी साहित्य में दिखाई देता हैं।

संदर्भ सूची :

१. सं. र.वि. हेरवाडकर, सप्तप्रकारणात्मक चरित्र, पृ. सं. २१५

२. वही, पृ. सं. २३

३. वही, पृ. सं. २३

४. वही पृ. सं. ३०,३१

५. सं. य.न. केळकर, ऐतिहासिक पोवाडे (पहला भाग) अफजलखान-वध, पृ. सं. १७

६. सं. सदाशिव गाडगीळ और नरहर कुरुंदकर, श्री शिवप्रभु-चरित्र (सभासदाची बखर) पृ. सं. ६५

७. सं. य.न. केळकर, ऐतिहासिक पोवाडे (भाग पहिला), (अफजल खान-वध), पृ. सं. १९

८. सं. अ. रा. कुलकर्णी, रामचंद्रपंत आमात्यांचे 'आज्ञापत्र', पृ. सं. २२४

९. सं. र.वि. हेरवाडकर 'सत्पप्रकरणात्मक चरित्र', पृ. सं. १०३

१०. सं. य. न. केळकर, ऐतिहासिक पोवाडे (पहला भाग), (अफजलखान-वध), पृ. सं. ०९

११. सं. सदाशिव गाडगीळ और श्री नरहर कुरुंदकर, श्री शिवप्रभु चरित्र (सभासदाची बखर), पृ. सं. १०२

१२. सं. र.वि. हेरवाडकर, सप्तप्रकरणात्मक चरित्र, पृ. सं. ७६

१३. वही, पृ. सं. १४०

१४. वही, पृ. सं. ७८

१५. वही, पृ. सं. २१७

१६. वही, पृ. सं. २२३

१७. सं. सदाशिव गाडगीळ और नरहर कुरुंदकर, श्री शिवप्रभू-चरित्र (सभासदांची बखर), पृ. सं. १०५

१८. वही, पृ. सं. १२७

१९. सं. र. वि. हेरवाडकर, सप्तप्रकरणात्मक चरित्र, पृ. सं. २४७

२०. http://shivaryanchakhun.blogspct.com/२०१०/blog-post.html?m=१

२१. सं. र.वि. हेरवाडकर, सप्तप्रकरणात्मक चरित्र, पृ.सं. ३०

२२. शिखेर चंद्रशेखर, प्रतिइतिहास (तीसरी आवृत्ति), पृ. सं. ७९

२३. सं. सदाशिव गाडगीळ और श्री नरहर कुरुंदकर, श्री शिवप्रभु-चरित्र (सभासदाची बखर), पृ. सं. २३

२४. वही, पृ. सं. १०८

२५. सं. य.न. केळकर, ऐतिहासिक पोवाडे, (भाग पहिला, तानाजीचा पोवाडा), पृ. सं. ६२

२६. सं. सदाशिव गाडगीळ और श्री नरहर कुरुंदकर, श्री शिवप्रभु-चरित्र (सभासदाची बखर), पृ. सं. ६३

२७. श्री तुकाराम बाबांच्या अभंगाची गाथा, महाराष्ट्र शासन प्रकाशन, पृ. सं. ३२८

२८. डॉ. वसंत मोरे, छ. शिवाजी की साहित्यिक प्रतिमा, पृ. सं. ८९

२९. सं.र. वि. हेरवाडकर, सप्तप्रकरणात्मक चरित्र, पृ. सं. ६२

३०. वही, पृ. सं. ३३

३१. वही, पृ. सं. १५१

३२. सं. य.न. केळकर, ऐतिहासिक पोवाडे, भाग पहिला, (अज्ञानदास-अफजल खान-वध), पृ. सं. १८

३३. सं. र. वि. हेरवाडकर, सप्तप्रकरणात्मक चरित्र, पृ. सं. १५०

३४. वही, पृ. सं. १३५

३५. सं. श्री सदाशिव गाडगीळ और श्री नरहर कुरुंदकर, श्री शिवप्रभू-चरित्र (सभासदाची बखर), पृ. सं. ६३

३६. सं. र.वि. हेरवाडकर, सप्तप्रकरणात्मक चरित्र, पृ. सं. ७४

३७. सं. श्री सदाशिव गाडगीळ और श्री नरहर कुरुंदकर, श्री शिवप्रभू-चरित्र (सभासदाची बखर), पृ. सं. ७७

३८. सं.र.वि. हेरवाडकर, सप्तप्रकरणात्मक चरित्र, पृ. सं. १२३

३९. सं. अ.रा. कुलकर्णी, रामचंद्रपंत अमात्यांचे 'आज्ञापत्र' पृ. सं. २१७

४०. सं. श्री सदाशिव गाडगीळ और श्री नरहर कुरुंदकर, श्री शिवप्रभू-चरित्र (सभासदाची बखर) पृ. सं. ७८

४१. सं.य.न. केळकर, ऐतिहासिक पोवाडे, (भाग पहिला), (तुळसीदास,तानाजीचा-पोवाडा), पृ. सं. ५२

४२. सं. अ.रा. कुलकर्णी, रामचंद्र अमात्याचे 'आज्ञापत्र', पृ. सं. २१४,२१५

४३. वही, पृ. सं. २८३

४४. सं. र.वि. हेरवाडकर, सप्तप्रकरणात्मक चरित्र, पृ. सं. १८४

४५. सं. सदाशिव गाडगीळ और श्री नरहर कुरुंदकर, श्री शिवप्रभू चरित्र (सभासदाची बखर), पृ. सं. ३१

४६. सं.र.वि. हेरवाडकर, सप्तप्रकरणात्मक चरित्र, पृ. सं. ९२

४७. वही, पृ. सं. ३१

४८. वही, पृ. सं. १३७

४९. वही, पृ. सं. १८३

५०. सं. सदाशिव गाडगीळ और श्री नरहर कुरुंदकर, श्री शिवप्रभू-चरित्र, पृ. सं. ४६

५१. सं. य. न. केळकर, ऐतिहासिक पोवाडे, भाग प्रथम, (अजलखान वध, अज्ञानदास), पृ. सं. १९

५२. सं. सदाशिव गाडगीळ और श्री नरहर कुरुंदकर, श्री शिवप्रभू चरित्र, पृ. सं. ४२

५३. य.न. केळकर, ऐतिहासिक पोवाडे, भाग प्रथम, (अफजलखान-वध, अज्ञानदास), पृ. सं. ५१

५४. सं. सदाशिव गाडगीळ और श्री नरहर कुरुंदकर, श्री शिवप्रभू चरित्र (सभासद बखर), पृ. सं. ९४

५५. सं. र. वि. हेरवाडकर, सप्तप्रकरणात्मक चरित्र, पृ. सं. ८३

५६. सं. सदाशिव गाडगीळ और श्री नरहर कुरुंदकर, श्री शिवप्रभू-चरित्र (सभासद बखर), पृ. सं. ६५

५७. सं. य.न. केळकर, ऐतिहासिक पोवाडे (प्रथम भाग) (अफजलखान-वध, अज्ञानदास), पृ. सं. २१

५८. सं. र. वि. हेरवाडकर, सप्तप्रकरणात्मक चरित्र, पृ. सं. ८१

५९. सं. य.न. केळकर, ऐतिहासिक पोवाडे, प्रथम भाग, (अफजलखान वध पोवाडा-शाहिर अज्ञानदास), पृ. सं. २२

६०. सं. सदाशिव गाडगीळ और श्री नरहर कुरुंदकर, श्री शिवप्रभू चरित्र (सभासद बखर), पृ. सं. १०५

६१. सं. य. न. केळकर, ऐतिहासिक पोवाडे, प्रथम भाग, (अफजलखान वध पोवाडा-अज्ञानदास), पृ. सं. १६

६२. डॉ. भिमसेन विद्यालंकार, शिवाजी, पृ. सं. ९६

६३. सं. लक्ष्मण पांपारकर, श्री रामदास स्वामींचे समग्र ग्रंथ, पृ. सं. ३५६

६४. सं.य.न. केळकर, ऐतिहासिक पोवाडे, प्रथम भाग, (अज्ञानदास, अफजलखान-वध), पृ. सं. २२

६५. सं. सदाशिव गाडगीळ और श्री नरहर कुरुंदकर, श्री शिवप्रभू-चरित्र (सभासदाची बखर), पृ. सं. ०८

६६. वही, पृ. सं. ३०

६७. सं.र.वि. हेरवाडकर, सप्तप्रकरणात्मक चरित्र, पृ. सं. ८३

६८. सं. सदाशिव गाडगीळ और श्री. नरहर कुरुंदकर, श्री शिवप्रभू-चरित्र, (सभासदाची बखर), पृ. सं. १०८

६९. सं. गं. बा. सरदार, रामदास दर्शन, पृ. सं. ९६,९७

७०. डॉ. वसंत मोरे, छ. शिवाजी महाराज की साहित्यिक प्रतिमा, पृ. सं. २०४

७१. सं. र.वि. हेरवाडकर, सप्तप्रकरणात्मक चरित्र, पृ. सं. ९३

७२. सं. सदाशिव गाडगीळ और श्री नरहर कुरुंदकर, श्री शिवप्रभू-चरित्र (सभासद बखर), पृ. सं. ३९

७३. सं. र. वि. हेरवाडकर, सप्त प्रकरणात्मक चरित्र, पृ. सं. २४४

७४. सं. श्री सदाशिव गाडगीळ और श्री नरहर कुरुंदकर, श्री शिवप्रभू-चरित्र (सभासद बखर), पृ. सं. ११६

७५. वही, पृ. सं. ३८

७६. सं. र. वि. हेरवाडकर, सप्त प्रकरणात्मक चरित्र, पृ. सं. ११२

७७. सं. सदाशिव गाडगीळ और श्री नरहर कुरुंदकर, श्री शिवप्रभू-चरित्र (सभासद बखर), पृ. सं. ३८

७८. श्री तुकाराम बाबांच्या अभंगाची गाथा, महाराष्ट्र शासन प्रकाशन, पृ. सं. ३२८

७९. सं. र.वि. हेरवाडकर, सप्तप्रकरणात्मक चरित्र, पृ. सं. १२३

८०. सं. सदाशिव गाडगीळ और श्री नरहर कुरुंदकर, श्री शिवप्रभू-चरित्र (सभासद बखर), पृ. सं. ३४

८१. सं. र. वि. हेरवाडकर, सप्तप्रकरणात्मक चरित्र, पृ. सं. ९७

८२. वही, पृ. सं. ९६

८३. सं. सदाशिव गाडगीळ और श्री नरहर कुरुंदकर, श्री शिवप्रभू-चरित्र (सभासद बखर), पृ. सं. ८४

८४. डॉ. साहेबराव गाठाळ, मराठ्यांचा इतिहास, पृ. सं. १४४

चतुर्थ अध्याय

मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में वर्णित छत्रपति शिवाजी महाराज के स्वरुप का तुलनात्मक अध्ययन

चतुर्थ अध्याय

मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में वर्णित छत्रपति शिवाजी महाराज के स्वरुप का तुलनात्मक अध्ययन

४.०) प्रस्तावना

४.१) मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में वर्णित शिवाजी महाराज का बहिरंग स्वरुप :

४.१.१. शिवाजी महाराज के राजवंश का वर्णन

४.१.२. जन्म एवं नामकरण

४.१.३. आकृति और वेशभूषा

४.१.४. क्रिया-प्रतिक्रिया का चित्रण

४.१.५. किले रायगढ का वर्णन

४.१.६. शिवाजी महाराज के नगाडों का वर्णन

४.१.७. शिवाजी महाराज की तलवार का वर्णन

४.१.८. शिवाजी महाराज के राज्याभिषक का वर्णन

४.१.९. छत्रपति शिवाजी महाराज की मृत्यु

४.२) मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में वर्णित शिवाजी महाराज का अंतरंग स्वरुप :

४.२.१. बचपन और शिक्षा

४.२.२. नम्रता

४.२.३. बुध्दि चातुर्यता

४.२.४. दृढ प्रतिज्ञा

४.२.५. स्वाभिमान

४.२.६. श्रध्दावान

४.२.७. साहसी और निर्भयता

४.२.८. कार्यक्षमता

४.२.९. कुशल संघटक

४.२.१०. कुशल राजनीतिज्ञ

४.२.११. कुशल युध्दनीतिज्ञ

४.२.१२. प्रजाहित दक्ष

४.२.१३. स्वधर्माभिमानी

४.२.१४. हिंदू धर्म रक्षक

४.२.१५. वीर योध्दा

४.२.१६. पराक्रमी राजा

४.२.१७. पराक्रमी सेना नायक

४.२.१८. शत्रु पक्ष पर धाक

४.२.१९. दयावीर

४.२.२०. दानवीर

४.२.२१. वैभव संपन्न राजा

४.२.२२. अवतारी पुरुष

४.२.२३. कीर्ति और यशवंत राजा

४.२.२४. दूरदर्शिता

४.२.२५. उदारमतवादी

४.२.२६. न्यायप्रिय राजा

४.२.२७. बहुजन प्रतिपालक

४.२.२८. स्त्री के प्रति आदरभाव

४.२.२९. आदर्श शासक

चतुर्थ अध्याय

मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में वर्णित छत्रपति शिवाजी महाराज के स्वरुप का तुलनात्मक अध्ययन

४.०) प्रस्तावना :

भारतीय इतिहास में अनेक राजाओं के पराक्रम और वीरता पर साहित्य लिखा गया हैं। महाराष्ट्र क इतिहास ही नहीं बल्कि मध्यकालीन भारत के इतिहास को शिवाजी महाराज के पराक्रम, वीरता ने गौरवान्वित किया हैं। मध्यकालीन भारतीय इतिहास मराठों के इतिहास के बीना अधुरा प्रतित होता है। मध्यकालीन ऐतिहासिक राजा शिवाजी महाराज के चरित्र के उपर अनेक भाषाओं में साहित्य किया गया हैं। शिवाजी महाराज पर मध्यकाल में संस्कृत, हिंदी, मराठी इन प्रमुख भाषाओं में स्वतंत्र रुप से साहित्यिक रचनाएँ लिखी गयी हैं। मध्यकालीन हिंदी और मराठी साहित्यकारों ने शिवाजी महाराज के अंतरंग स्वरुप और बहिरंग स्वरुप का वर्णन किया हैं। दोनों भाषाओं के आदर्श स्वरुप का चित्रण किया हैं। शिवाजी महाराज का चरित्र साहित्यकारों को भी साहित्य (रचना) लिखने के लिए प्रेरित करता हैं। इसी चरित्र से प्रेरणा लेकर देश के अनेक महापुरुषों ने देश की सेवा की हैं। यह परंपरा वर्तमान समय में भी जारी हैं और आगे भी कई सदियों तक निसंदेह रहेगी। वर्तमान समय में गीरते हुए सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक मूल्य को देखकर समाज और देश को शिवाजी महाराज के आदर्श विचारों की अत्यंत आवश्यकता हैं। मध्यकालीन हिंदी मराठी दोनों भाषाओं के साहित्यकारों ने शिवाजी महाराज के स्वरुप का वर्णन किया हैं। शिवाजी महाराज के बहिरंग और अंतरंग स्वरुप के चित्रण का तुलनातम्क अध्ययन में किया गया हैं। उनके व्यक्तित्व के स्वरुप का तुलनात्मक अध्ययन करते समय प्रस्तुत अध्याय अध्ययन की सुविधा के लिए दो भागों में विभक्त किया हैं। १. शिवाजी महाराज के बहिरंग स्वरुप का तुलनात्मक अध्ययन

२. शिवाजी महाराज के अंतरंग स्वरुप का तुलनात्मक अध्ययन किया हैं। निम्नलिखित विभिन्न मुद्दों द्वारा शिवाजी महाराज के अंतरंग और बहिरंग स्वरुप का तुलनात्मक अध्ययन करेंगे।

४.१) मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में वर्णित शिवाजी महाराज का बहिरंग स्वरुप :

हिंदी मराठी के साहित्य में शिवाजी महाराज के व्यक्तित्व के बहिरंग स्वरुप का चित्रण निम्नांकित मुद्दों के आधार पर किया है। इस मुद्दों के अंतर्गत दोनों भाषाओं के साहित्य में वर्णित समानताएँ और विषमताओं को स्पष्ट करेंगे।

४.१.१. शिवाजी महाराज के राजवंश का वर्णन :

हिंदी : मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज को सिसौद कल का माना गया हैं। वे उत्तर भारत के क्षत्रिय सूर्यवंशी हैं। इस सूर्यवंशी कूल में अनेक पराक्रमी वीर योध्दा हुए हैं। उन्होंने भगवान शिवाजी को अपना 'सीर' देकर सिसौदिया की पदवी प्राप्त की हैं। वे रण में पत्थर के शिला समान अचल रहते हैं, इसलिए उन्हें भौसला कहाँ जाने लगा। 'सूर्यवंशी' कूल पृथ्वी पर श्रेष्ठ कूल माना जाता है। शिवाजी महाराज के कुल संदर्भ में भूषण लिखते हैं कि,

"सूर सिरोमनि सूर-कूल, शिव सरजा मकरंद।"

अर्थात शुर वीरों के 'सूर्यकुल' में शिवाजी राजा का जन्म हुआ हैं। शिवाजी महाराज के दादाजी मालोजी (मकरंद) राजे 'सूर्यवंशी' हैं। मालोजी राजा का सिसोदे कूल में जन्म हुआ हैं। अंत शिवाजी महाराज का राजवंश 'सूर्यवंशी' और उनका कूल सिसोदे था। वे रण अर्थात युध्द में पत्थर के शिला के समान अचल थे, इसलिए उन्हें 'रणभौसला' कहाँ जाता है। इस प्रकार मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज को सूर्यवंशी सिसोदे 'उपाधि' का वर्णन किया है।

मराठी : मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज का कुल 'सिसोदे' मानते हैं। यह सिसोदे कूल जो उत्तर भारत के क्षत्रिय राजपूत राणाजी के वंश से सम्बधित हैं। राणाजी उदयपूर के राजा थे। वे 'सूर्यवंशी' राजवंश में से थे। अतः शिवाजी महाराज भी 'सूर्यवंशी' माने जाते हैं। इन सूर्यवंशी का कूल सिसोदे था। इस संदर्भ में सभासद लिखते हैं कि, "राजे शुध्द क्षत्री शिसोदे उत्तरेहुन दक्षिणेस एक घराणें आलें. तेच राजियाचें घराणें शोधलें."[२]

अर्थात शिवाजी महाराज उत्तर भारत के क्षत्रीय 'सिसोदे' कूल के थे। उत्तर भारत के पूर्वजों में से एक क्षत्रिय घराना दक्षिण में आकर स्थायी हो गया था। इसी पूर्वजों के घराने में शिवाजी महाराज का जन्म हुआ हैं। उत्तर भारत के क्षत्रिय राजपुत 'सूर्यवंशी' माने जाते हैं। अंत शिवाजी महाराज सिसोदे कूल से हैं और उनका राजवंश 'सूर्यवंशी' हैं। मध्यकालीन मराठी साहित्य में उन्हें सिसोंदे कूल और 'सूर्यवंशी' राजवंश मानते हैं।

मध्यकालीन हिंदी-मराठी के साहित्यकारों ने शिवाजी महाराज को उत्तर भारत 'सूर्यवंशी' राजवंश से मानते हैं। उनका 'सिसोदे' कुल जो क्षत्रिय उदयपूर के राणाजी से सम्बध रखता हैं। दोनों भाषाओं के साहित्य में शिवाजी महाराज के राजवंश का वर्णन समान रुप से किया हैं। उन्हें सिसोदे कूल का 'सूर्यवंशी' राजवंश का राजा मानते हैं।

४.१.२. जन्म एवं नामकरण :

हिंदी : मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज के जन्म तिथि के बारे में कोई वर्णन नहीं किया हैं। शिवाजी महाराज का जन्म कब कहाँ हुआ? इसका वर्णन मध्यकालीन साहित्य में नही किया है। बडे आश्चर्य की बात यह है कि, मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज की माता 'जीजाबाई' का भी नाम नहीं आया है। मध्यकाल में केवल भूषण जन्म संबंध में कवि कहते हैं कि, जिस प्रकार से राजा दशरथ के राम और वासुदेव के कृष्णा ने जन्म लिया हैं

उसी प्रकार शहाजी के पुत्र शिवाजी महाराज ने जन्म लिया हैं। मध्यकालीन हिंदी साहित्यकारों ने उनके शारीरिक सुंदरता की दृष्टि से 'शिवाजी' यह नामकरण किया हैं। शिवाजी महाराज ने कामदेव का रुप धारण कर लिया हैं। उनकी अत्याधिक सुंदरता होने से 'शिवाजी' नाम रखा गया हैं। इस प्रकार का नामकरण संबंधि वर्णन किया हैं।

मराठी : मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के जन्म तिथि के बारे में प्रमुख दो मत स्पष्ट दिखाई देते है। शिवाजी महाराज पर लिखित कुछ जीवनियों में उनका जन्म शके १५४९ अर्थात सन १६२७ को माना गया हैं। वर्तमान समय में कुछ नये उपलब्ध प्रमाण और तत्कालीन पत्रों के आधार पर शिवाजी महाराज का जन्म शके १५५१ माना गया हैं। शिवकालीन शकावली में शिवाजी महाराज का जन्म शके १५५१ अर्थात इ. सन. १६३० माना हैं। शिवाजी महाराज के जन्म से संबधित वर्णन करते हुए शिव शकावली में लिखा है, "शके १५५१ शुक्ल नाम संवत्सरे फाल्गुन वध ३ शुक्रवार, हस्त घटी १८ प. ३२ गंड ५/७ ते दिवशी राजश्री शिवाजी राजे शिवनेरीस उपजले."[३] अर्थात शिवाजी माहराज का जन्म शुक्रवार को शके १५५१ सन् १६३० में 'शिवनेरी' केले पर हुआ हैं। अधिकांश लोग शिवाजी महाराज जन्म के संदर्भ में विश्वसनीय दस्तावेजों के आधार पर उनका जन्म अंग्रेजी के कैलंडर के १९ फरवरी १६३० को मानते हैं।

मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के नामकरण का संम्बध शिवनेरी किले पर स्थित 'शिवाई देवी' से जोडा हैं। शिवाजी की माता जीजाबाई ने पुत्र प्राप्ति के लिए शिवाई देवी से मन्नत माँगी थी। उनकी मन्नत पूरी होने के कारण अपने बेटे का नाम शिवाजी रखा था। संत तुकाराम महाराज 'शिवाजी' नाम को पवित्र मानते हैं। शिवाजी नामकरण का संबंध, शिवनेरी किल्ले, भगवान शिवजी, शिवाई देवी आदि के साथ जोडा गया हैं। मराठी साहित्य में नामकरण के सम्बंध में एकमत नहीं हैं।

अतः मध्यकालीन हिंदी के साहित्य में शिवाजी महाराज के जन्मतिथि का उल्लेख नहीं है। उनकी माता जीजाबाई का भी नाम नहीं हैं। उनके 'नाम' को कामदेव की सुंदरता प्राप्त करने से 'शिवाजी' नामकरण करने का वर्णन है। मध्यकालीन मराठी साहित्य में जन्म तिथि के बारे में मतभिन्नता हैं। नये अनुसंधान और समकालीन कुछ अन्य भाषा के साहित्यिक एवं ऐतिहासिक दस्तावेजों से उनका जन्म १६३० माना गया हैं। उनके नामकरण को भगवान शिवाजी के आशीर्वाद, शिवाई देवी, शिवनेरी किल्ले से जोड दिया हैं। मध्यकालीन दोनों भाषाओं में जन्म और नामकरण के संबंध में अत्याधिक भिन्नता दिखाई देती हैं।

४.१.३. आकृति और वेशभूषा :

हिंदी : मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज के आकृति (शरीर रचना) संबंधि वर्णन विस्तृत रुप से नहीं किया हैं। अप्रत्यक्ष रुप में शिवाजी महाराज की आकृति का वर्णन किया हैं। शिवाजी महाराज की भूजाएँ शक्तिशाली और उनके चेहरे पर सुर्य की तरह तेज दिखाई देता हैं। शिवाजी महाराज की शारीरिक रचना (आकृति) की जानकारी प्रत्यक्ष रुप से नहीं दी हैं। वे शारीरिक दृष्टि से अत्यंत सुंदर थे। कवि भूषण ने उनकी सुंदरता को कामदेव की सुंदरता के साथ समानता प्रस्थापित की हैं। अंतः शिवाजी महाराज शक्तिशाली भुजाएँ, मुँछों के साथ चेहरे पर सुर्य की तरह तेजस्वी था।

शिवाजी महाराज की निश्चित वेशभूषा नहीं है। वे वेषांतर करने में माहिर थे। कवियों ने शिवाजी महाराज को युध्द में शस्त्र-आस्त्रों में सज्जित धनुष्यधारी, तलवार धारी रुप का वर्णन किया हैं। आगरा में वे दिन दहाडे वेश बदलकर पलयान करते हैं। उनकी वेशभूषा के संदर्भ में हिंदी विश्व कोष में भी लिखा है कि, "वेषांतर, गुप्त भाव, अचानक धावा बोलना आदि उपयों में शिवाजी सिध्दहस्त थे।"[४] इससे स्पष्ट हैं कि शिवाजी महाराज अपनी निश्चित वेशभूषा नहीं रखते थे। शिवाजी महाराज शक्तिशाली भूजाएँ, तेजस्वी चेहरा, दाढी मुछों

वाली शरीर की आकृति थी। वे अत्याधिक सुंदर दिखाई देते हैं। उनकी वेशभूषा निश्चित नहीं है। वे युध्द के लिए तैयार होते समय शस्त्राओं से सुसज्जित रहते थे। उसी का अप्रत्यक्ष वर्णन वेशभूषा में किया गया हैं।

मराठी : एक बार बचपन में शिवाजी महाराज आदिलशाह के दरबार में गये थे। उस घटना का वर्णन 'सप्तकरणत्म चरित्र' जीवनी में किया हैं। वे दिखने में सुंदर थे। सुदृढ शरिर वाले अत्यंत परिश्रमी थे। मन में जिज्ञासू, बडी-बडी आँखें और भूजाओं में शक्ति थी। मराठी के साहित्य में भी जीवनीकारों ने शिवाजी महाराज के बचपन, किशोरवस्था और जवानी के शारीरिक आकृति का प्रत्यक्ष वर्णन नहीं किया हैं। उनकी वेशभूषा निश्चित दिखाई नहीं देती हैं। युध्द के लिए सुसज्जित होते समय उनकी वेशभूषा का वर्णन शाहिर 'अज्ञानदास' करते हैं कि,

"भगवंताची झील ज्वाला-आंतुन (तो) बारीक झगा त्याला।

मुसेजरीच्या सुरवरा। सरजा (जे) बंद सोडून दिली।"[५]

अर्थात शिवाजी महाराज अफजल खाँ को मिलने जाते समय उन्होंने चिलखत पहना था। इस के उपर किमती वस्त्रों की कमिज पहनी हैं और मुसेजरी नामक कपडे की सलवार पहनी थी। यह वेशभूषा पहनकर शस्त्र-अस्त्रों से सुसज्जित होकर वे खान को मीलने के लिए जाते हैं। शिवाजी महाराज के निश्चित वेषभूषा का वर्णन साहित्यकारों ने नहीं किया हैं। आगरा के दरबार से पलायन करते समय उन्होंने अलग वेषभूषा को पहना था। शिवाजी महाराज ने वेशभूषा बदलकर शत्रु को भी चमका दिया था।

अंत : दोनों भाषाओं के मध्यकालीन साहित्य में शिवाजी महाराज के आकृतियों का वर्णन किया हैं। उनकी भूजाएँ शक्तिशाली और चेहरें पर तेजस्वीता दिखाई देती हैं। शिवाजी महाराज के चेहरे पर दाढी मुछें भी थी। वे अत्यंत सुंदर दिखाई देते हैं। दोनों भाषाओं के साहित्यकारों ने उनकी आकृति का वर्णन

अप्रत्यक्ष रुप से लगभग समान रुप में किया हैं। शिवाजी महाराज की वेशभूषा दोनों साहित्यकारों ने वर्णित की हैं। शिवाजी महाराज वेषभूषा बदलने में माहिर थे। उनकी निश्चित वेशभूषा नहीं थी। युध्द के लिए तैयार होते समय उनके वेशभूषा का वर्णन साहित्य के कवियों ने किया हैं।

४.१.४. क्रिया-प्रतिक्रिया का चित्रण :

हिंदी : शिवाजी महाराज ने शत्रु की क्रिया और अनुचित व्यवहार पर तुरंत अपनी प्रतिक्रिया दी है। शत्रु अगर शिवाजी महाराज को अपमानीत करने लगता है तो उसके विरुध्द प्रतिक्रिया जरुर देते हैं। उन्होंने विपरित परिस्थितियों में भी शत्रुओं को प्रतिक्रिया दी हैं। शत्रुओं के अहंकार और घमंड को तोड देते है। शिवाजी महाराज दिल्ली के बादशाह औरंगजेब के दरबार में जाते है। दरबार में शिवाजी महाराज के साथ अनुचित व्यवहार किया जाता हैं। इस अनुचित व्यवहार पर भरे दरबार में प्रतिक्रिया स्वरुप औरंगजेब को सलाम नहीं करते है। वह अपमान पर क्रौधित होते हैं। इस प्रसंग का वर्णन कवि भूषण करते है कि,

"तमकते लाख मुख सिवा को निरखि भये,
श्याह मुख नौरंग सिपाह मूख पियरे।"[६]

अर्थात बादशाह औरंगजेब ने शिवाजी महाराज को पंचहजारी मनसबदारों के साथ खडा किया था। शिवाजी महाराज इसके प्रतिक्रिया स्वरुप अत्याधिक क्रोधित होते है। सभी दरबारी लोग उनके लाल हुए चेहरे को देखकर भयभित होते है। सिपाहियों के चेहरे का रंग तक उड जाता है। औरंगजेब शिवाजी महाराज को देखकर अपना गर्व और घमंड दिखाता हैं। उसकी इस क्रिया पर शिवाजी महाराज भी अपने मुछों पर ताँव देते हैं। युध्द में शत्रु को उसी के क्रिया अनुसार प्रतिक्रिया देते है। अफजल खाँ शिवाजी महाराज को धोखा देकर मारना चाहता था। शिवाजी महाराज को गले मीलने के बहाने से दबोचने की क्रिया को तुरंत अपनी प्रतिक्रिया देकर उसका वध करते हैं। शिवाजी महाराज विपरित

परिस्थितियों में भी क्रिया घटने पर अपनी प्रतिक्रिया देते थे। हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज के क्रिया प्रतिक्रिया का चित्रण किया हैं।

मराठी : शिवाजी महाराज ने शत्रु के अनुचित क्रिया पर अपनी प्रतिक्रिया दी थी। इस प्रतिक्रिया का वर्णन मध्यकालीन मराठी साहित्य में किया हैं। शिवाजी महाराज ने विपरित परिस्थितियों में भी शत्रु के क्रिया पर अपनी प्रतिक्रिया दी है। आदिलशाह का शक्तिशाली सरदार अफजल खाँ बडी फौज लेकर स्वराज्य में दाखिल हुआ था। शिवाजी महाराज और अफजल खाँ की भेट निश्चित हुई थी। शिवाजी महाराज अफजल खाँ को मीलने उसके सामने जाकर खडे होते हैं। अफजल खाँ शिवाजी महाराज को अपमान जनक शब्द का प्रयोग करता हैं। शिवाजी महाराज भी अफजल खाँ को उसी भाषा में प्रतिक्रिया देते हुए कहते हैं कि,

"अबदुल जातका भटारी। तुमने करना दुकानदारी"[७]

अर्थात अफजल खाँ को उसी भाषा के उत्तर देते हुए शिवाजी महाराज कहते हैं कि, 'तु भी तो भटारी जात है। तुझे तो दुकानदारी करना चाहिए। तु दुकानदारी छोडकर सरदार क्यों बन गया।' खाँ के पास दस हजार सेना की फौज होने पर भी खाँ के क्रिया पर अपनी प्रतिक्रिया देते थी। शिवाजी महाराज का दिल्ली के बादशाह औरंगजेब के दरबार में अपमान किया जाता हैं। शिवाजी महाराज भरे दरबार में औरंगजेब बादशाह को सलाम भी नहीं करते। उल्टा क्रौधित होकर सभी दरबारी नियमों को तोड देते है। युध्द में भी शत्रुओं के क्रिया के अनुसार अपनी प्रतिक्रिया देते हैं। शत्रु के मन में मित्रता का भाव है तो वे भी मित्रता के भाव की प्रतिक्रिया देते हैं। मध्यकालीन मराठी के साहित्य में शिवाजी महाराज के क्रिया-प्रतिक्रिया का चित्रण किया है।

मध्यकालीन हिंदी-मराठी के साहित्य में शिवाजी महाराज के क्रिया-प्रतिक्रिया का वर्णन किया हैं। दोनों भाषाओं में शिवाजी महाराज को विपरित

परिस्थितियों में भी क्रिया पर प्रतिक्रिया देने के स्वरुप का चित्रण किया है। दोनों साहित्य के क्रिया प्रतिक्रिया वर्णन में अत्याधिक समानता दिखाई देती है।

४.१.५. किले रायगढ़ का वर्णन :

हिंदी : शिवाजी महाराज ने स्वराज्य की राजधानी किल्ले रायगढ को बनाया हैं। मध्यकालीन हिंदी साहित्य में किले रायगढ का प्राकृतिक वर्णन भी किया हैं। स्वराज्य की राजधानी किले रायगढ़े का विस्तृत वर्णन हिंदी साहित्य में किया गया हैं। रायगढ़ किले की सभा और शोभा को देखकर यक्ष, किन्नर, सुर, असुर, गन्धर्व, सभी इस किले पर रहने की इच्छा व्यक्त करते हैं। किले के पर, उँचे महलों पर मोतियों की झालरे लटकी हुई हैं। संध्या के समय में महलों पर आकाश में तारों की तरह हिरे चमक रहे हैं। इस प्रकार का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन हिंदी साहित्य में किया है। कवि भूषण लिखते हैं- "जहाँ तहाँ ऊरध उठे हीरा किरन धन समुदाय है।"[८] अर्थात किले रायगढ पर सभी ओर हिरे मानो ऐसे चमक रहे है जैसे आकाश में चारों ओर तारे चमक रहे हो। किल्ले रायगढ के उपर फूलों का बगीचा है। इस बगीचे में चंपा, चमेली, कमल जैसे फूल हैं। किले पर भिन्न-भिन्न प्रकार के पेड और फल उपलब्ध है। रायगढ किले पर भिन्न-भिन्न पक्षियों की सुंदर आवाजों की गुँज सनाई देती है। रायगढ को फल, फूल, पेड-पौधें, पंछी रायगढ़ किले की प्राकृतिक सुंदरता को सुशोभित करते हैं। हिंदी के साहित्य में रायगढ़ किले के अतिश्योक्तिपूर्ण वर्णन के साथ ऐतिहासिक और प्राकृतिक वर्णन को पुर्णतः नकारा भी नहीं जा सकता।

मराठी : शिवाजी महाराज ने स्वराज्य का प्रथम राजनीतिक सत्ता केंद्र 'राजगढ' किले को बनाया था। यह किला असुरक्षित होने के कारण किले रायगढ को सत्ता का केंद्र बनाया जो स्वराज्य के मध्यभाग में यह किला था। इसी रायगढ किले को हिंदवी स्वराज्य की राजधानी बनाई। रायगढ किले पर राजा का निवासस्थान, प्रकट सभा, मंत्री सभा, धर्मसभा, चित्र सभा, आदर्श मंदिर,

रानीयों के रानी महल, गजशाला, पाकशाला, बारा महल, आठरा कारखाने, मत्तबर व्यक्तियों के लिए सरकारी इमारत पशुओं के लिए कोठियाँ बनाई गयी थी। किले पर बाजार पेठ की व्यवस्था भी की गयी थी। रायगढ किल्ले का ऐतिहासिक वर्णन मराठी के साहित्यकारों ने किया हैं। रायगढ किले के राजसिंहासन का भी वर्णन किया हैं। शिवाजी महाराज का यह राजसिंहासन ३२ मन सोने से बनाया गया था। इसे मौल्यवान नवरत्नों से सजाया गया था। मराठी के साहित्य में किले रायगढ के वर्णन में ऐतिहासिक को दर्शाया हैं।

मध्यकालीन दोनों भाषा के साहित्यकारों ने स्वराज्य की राजधानी किल्ले रायगढ का वर्णन किया है। हिंदी साहित्य में किल्ले रायगढ के वर्णन में अत्याधिक अतिश्योक्ति का प्रयोग किया हैं। मराठी साहित्य में किल्ले रायगढ के वर्णन में इतिवृतात्मक अधिक दिखाई देती है। हिंदी साहित्य में रायगढ किले का प्राकृतिक वर्णन विस्तृत रुप से किया हैं। हिंदी साहित्य की तुलना में किले रायगढ़ का प्राकृतिक वर्णन मराठी साहित्य में बहुत कम हुआ है। अतः दोनों साहित्य में स्वराज्य की राजधानी किले रायगढ के वर्णन भेद (अंतर) दिखाई देता हैं परंतु दोनों साहित्य में रायगढ किला का वर्णन किया है।

४.१.६. शिवाजी महाराज के नगाडों का वर्णन :

हिंदी : मध्यकाल में नगाडे (वाद्ययंत्र) के बजने से युध्द की तैयारी और युध्द के जीतने का संकेत मिलता हैं। शिवाजी महाराज की चतुरंगी सेना जब युध्द के लिए निकलती है, तो नगाडों की आवाज सुनाई देती हैं। नगाडों की आवाज से शत्रुओं के मन में भय उत्पन्न होता हैं। अनेक राज्य के राजा, प्रजा, स्त्री-पुरुष, शिवाजी महाराज के नगाडों की आवाज सुनकर अपने राज्य को छोडकर भाग जाते है। मध्यकालीन हिंदी के कवि भूषण ने नगाडों के वर्णन अतिश्योक्ति और कल्पना का सहारा लिया है। नगाडें की आवाज सुनकर शत्रुओं की स्त्री को अत्याधिक आतंकित दिखाया हैं। शिवाजी महाराज की धाक शत्रु पक्ष

पर जरुरी थी, परंतु कवि भूषण ने नगाडों की आवाजों के माध्यम से काल्पनिक चित्र प्रस्तुत किया है। शत्रु स्त्री नगाडों की आवाज से रहन-सहन, खानपान, अपना घरबार छोडकर ही आँखों में आँसू की नदियाँ बहाने लगती हैं। इस प्रकार शत्रु और शत्रु स्त्री का आतंक को दर्शाने हेतु नगाडे का वर्णन किया है। हिंदी साहित्य में नगाडों के वर्णन में अत्याधिक अतिश्योक्ति और काल्पनिक चित्रण वर्णित किया हैं।

मराठी : मध्यकालीन मराठी साहित्य में भी शिवाजी महाराज के युध्द की तैयारी और युध्द की जीत का संकेत देने के लिए नगाडे बजाये जाते थे। अफजल खाँ भेट के समय नगाडों की आवाजों का उपयोग किया था। पुरंदर किल्ले पर दिलेर खां ने आक्रमण किया था। पुरंदर किले की सुरक्षित रहने का संकेत देने के लिए नगाडें बजाये जाते थे। नगाडों की आवाजों से किल्ला सुरक्षित होने का संकेत मिलता था। इस संदर्भ में 'मल्हार चिटणिस' लिखते है कि, "नगारे करणे वाजूं लागले (की) किला हुशार आहे. तोफा चालू लागल्या."[९] अर्थात पुरंदर किल्ले पर मुगल सरदार दिलेर खां ने आक्रमण किया था। किलेदार और मराठा सेना उसको आक्रमण का प्रतिकार कर रही थी। किला सुरक्षित मराठों के हाथों में है, इसका संकेत देने के लिए नगाडे, कर्ने, तोफों की आवाजों की जा रही थी। मराठी साहित्यकारों ने नगाडों के साथ-साथ तोफे, बर्तन, कर्ना, इसका भी मुहिम का संकेत देने के लिए वर्णन किया है।

मध्यकालीन दोनों भाषा के साहित्यकारों ने नगाडों की आवाज मुहिम का संकेत देने के रुप में वर्णन किया हैं। मराठी साहित्य की तुलना में हिंदी साहित्य में नगाडों का अत्याधिक काल्पनिक और अतिश्योक्तिपूर्ण वर्णन किया हैं। नगाडों की आवाज से शत्रु पक्ष को अत्याधिक भयभित दिखाया हैं। इस प्रकार के वर्णन में अत्याधिक काल्पनिक दिखाई देती है। दोनों भाषा के साहित्य में युध्द के क्षेत्र

में नगाडों की आवाजों का वर्णन किया हैं। मध्यकालीन मराठी साहित्य की तुलना में हिंदी साहित्य में नगाडों का विस्तृत और अत्याधिक वर्णन किया गया है।

४.१.७. शिवाजी महाराज की तलवार का वर्णन :

हिंदी : शिवाजी महाराज का युध्द में प्रमुख शस्त्रास्त्रों में तलवार का अत्याधिक महत्त्व रहा हैं। शिवाजी महाराज का पराक्रम उनके तलवार के साथ जोडने का प्रयास किया गया है। उनकी तलवार कर्म करनेवाली धर्म का रक्षक है। तुर्क मुगल और अन्य शत्रुओं का नाश करने के लिए तलवार ने अवतार लिया हैं। मध्यकालीन हिंदी के कवि भूषण तलवार को 'कालिका देवी' (चंडी) का अवतार मानते हैं। शिवाजी महाराज की तलवार शेषनाग की सर्पिणी, खगराज, दक्षिण की ढाल, तुर्को का काल, हिंदू धर्म की रक्षक के रुप में मध्यकाल के हिंदी साहित्य में वर्णित किया है। शिवाजी महाराज तलवार के कारण अत्याधिक सुशोभित दिखाई देते हैं। कवि भूषण ने तलवार को शिवाजी महाराज का आभूषण (अलंकार) के रुप में भी प्रस्तुत किया हैं। उनके तलवार से ही उन्हें यश, दान, धन, कीर्ति मिली हैं। इस प्रकार भूषण के तलवार वर्णन में अत्यांधिक काल्पनिकता और अतिश्योक्ति दिखाई देती हैं। भूषण ने शिवाजी महाराज के पराक्रमी, वीरता को तलवार के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया होगा। हिंदी साहित्य में तलवार के स्वरुप वर्णन को हम ऐतिहासिक आधार नहीं दे सकते।

मराठी : शिवाजी महाराज के पास इतिहास प्रसिध्द तीन तलवारे थे। जिसमें भवानी, जगदम्बा और तुळजा शामिल है। 'भवानी' तलवार का वर्णन मराठी के साहित्य में किया गया है। शिवाजी महाराज की अत्याधिक इतिहास भवानी प्रसिध्द तलवार मानी जाती हैं। मराठी साहित्यकारों ने भी कहीं-कहीं शिवाजी महाराज के पराक्रम को तलवारों के साथ जोड दिया हैं। शिवाजी महाराज की 'भवानी' और 'तुळजा' नामक दो तलवारे २०० साल से लापता हैं।

'जगदम्बा' तलवार वर्तमान समय में इंग्लैड के म्युजियम में उपलब्ध हैं। 'जगदम्बा' तलवार स्पेन के राजा ने शिवाजी महाराज को भेंट रुप में दी थी। भवानी तलवार को साथ में लेकर शिवाजी महाराज अफजल खाँ को मिलने के तैयार होते हैं। इस घटना का वर्णन मल्हार चिटणीस करते हुए लिखते है कि, "उजवे हातीं भवानी तरवार घेऊन व विचवा गवे हातीं, वाघनखे पाठीढाल. याजप्रमाणे सिध्द झालें."[१०] अर्थात शिवाजी महाराज अफजलखाँ को मिलने जाते समय बिचवा, वाघनखों के साथ अपने दाहिने हाथों में भवानी तलावार लेकर तैयार हो गये थे। शिवाजी महाराज युध्द के लिए निकलते समय उनके प्रमुख शस्त्रों में भवानी तलवार रहती हैं। रात में पुना के महल में जाकर शाईस्ताखाँ की तीन उँगलियाँ को तलवार के वार से ही काट दी थी। युध्द में शिवाजी महाराज का प्रमुख शस्त्र तलवार ही था।

मध्यकालीन दोनों भाषा के साहित्य में शिवाजी महाराज के तलवार का वर्णन किया हैं। मध्यकालीन मराठी साहित्य की तुलना में हिंदी साहित्य में तलवार का अतिश्योक्ति और काल्पनिक वर्णन किया हैं। दोनों साहित्य में तलवार को ईश्वरीय अवतार के रुप में वर्णित किया हैं। शिवाजी महाराज की तलवार शत्रुओं को दंडित करती है। प्रजा की रक्षा करने के शिवाजी महाराज ने तलवार हाथ में उठाकर अनेक पराक्रम किये हैं। शिवाजी महाराज का पराक्रम और तलवार का अटूट सम्बध दोनों भाषाओं के साहित्यकारों ने दर्शाया हैं। मध्यकालीन दोनों भाषाओं के साहित्य में तलवार का वर्णन किया गया है।

४.१.८. राज्याभिषक का वर्णन :

हिंदी : शिवाजी महाराज का राज्याभिषक रायगढ किले पर सन् ६ जून १६७४ में हुआ था। मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज के राज्याभिषक प्रसंग का वर्णन उपलब्ध नहीं हैं। इसके दो प्रमख कारण हो सकते हैं। पहला कारण मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज के राजदरबारी

कवि भूषण ने 'शिवराज भूषण' यह प्रमुख ग्रंथ सन १६७३ में लिखकर पूरा किया था। इस ग्रंथ में १६७३ तक की घटनाओं का वर्णन हैं। यह ग्रंथ पूरा करने के बाद भूषण अपनी जन्मभूमि उत्तर भारत लौट गये थे। मध्यकालीन हिंदी के अन्य कवियों ने शिवाजी महाराज के जीवन चरित्र पर स्वतंत्र ग्रंथ नहीं लिखा था। दूसरा कारण यह भी हो सकता हैं कि, हिंदी साहित्य में राज्याभिषक वर्णन कवि भूषण या अन्य कवि ने किया होगा। लेकिन हिंदी साहित्य में वे रचना या वर्णन अभी तक उपलब्ध नहीं है। अंतः शिवाजी महाराज का राज्याभिषक वर्णन मध्यकालीन हिंदी साहित्य में उपलब्ध नहीं होता हैं।

मराठी : शिवाजी महाराज ने मध्यकालीन भारत में अपने स्वतंत्र सार्वभौम राज्य की स्थापना की थी। अपने राज्य को समाज, धर्म और राजनीति अधिष्ठान प्राप्त करने के लिए स्वयं का राज्यभिषक किया था। शिवाजी महाराज राज्यभिषक के बाद स्वतंत्र राज्य के स्वतंत्र और सार्वभौम राजा बन गये थे। मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के राज्याभिषक का वर्णन किया गया हैं। राज्याभिषक की पूरी तैयारी का वर्णन जीवनियों में वर्णित किया है। राज्याभिषक के समय सभी देशी-विदेशी राजा, सरदार, किल्लेदार को अमंत्रित किया गया था। अनेक जात, धर्म, पंथ, सम्प्रदाय के लोग राज्यभिषक समारोह पर आ गये थे। उनके रहने और भोजन की संपूर्ण व्यवस्था की गयी थी। इस समय लोगों को अत्याधिक दान दिया गया था। काशी के ब्राह्मण पंडित गागाभट्ट को रायगढ किले पर बुलाकर उनके हाथों से ६ जुन १६७४ में राज्याभिषक समारोह संपन्न हुआ था। इतिहास में भी यह घटना कोई सामान्य नहीं थी। यह भारतीय इतिहास को गौरवान्वित करनेवाली घटना थी। इस संदर्भ में सभासद लिखते हैं, "मऱ्हाटा पातशाहा येवढा छत्रपती जाला. ही गोष्ट कांही सामान्य जाली नहीं."[११]

अर्थात मध्यकालीन भारत में मराठा राजा छत्रपति हो गया। यह घटना कोई सामान्य नहीं है। शिवाजी महाराज मध्यकालीन भारत के पहले स्वतंत्र और सार्वभौम राजा बन गये थे। शिवाजी महाराज द्वारा दूसरा राज्यभिषक निश्चल पुरी गोसाई के हाथों से किया था।

दोनों राज्याभिषक का मध्यकालीन हिंदी साहित्य में वर्णन उपलब्ध नहीं हैं। मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के राज्यभिषक की तैयारी, व्यवस्था, सुविधा, दानधर्म का वर्णन किया हैं। गागाभट्ट के द्वारा उनका राज्याभिषक संपन्न हुआ था। शिवाजी महाराज के राजसिंहासन का भी वर्णन मराठी साहित्य में किया गया है।

४.१.९. शिवाजी महाराज की मृत्यु :

हिंदी : शिवाजी महाराज की मृत्यु ३ अप्रैल १६८० में हुई थी। मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज के मृत्यु के संदर्भ में कोई प्रमाण या वर्णन उपलब्ध नहीं होता हैं। राजकवि भूषण मृत्यु के समय उत्तर भारत में रहें होंगे। शिवाजी महाराज के मृत्यु का वर्णन किया भी होगा तो वह अभी हिंदी साहित्य में उपलब्ध नहीं हैं।

मराठी : मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के मृत्यु का वर्णन किया गया है। मध्यकालीन मराठी साहित्य के जीवनियों में शिवाजी महाराज की मृत्यु के दो कारण बताये हैं। पहले मतों के अनुसार शिवाजी महाराज 'ज्वर' नामक रोग से ग्रस्त होकर उनकी मृत्यु होती है। दूसरे मतों के अनुसार शिवाजी महाराज के पारिवारिक सत्ता संघर्ष के कारण उनकी पत्नी 'सोयराबाई' के द्वारा विष (जहर) देकर मारने का वर्णन है। सोयराबाई के द्वारा विष (जहर) देकर मारने का वर्णन 'शिवदिग्विज' नामक जीवनी में किया गया है। यह जीवनी सन १८१८ में लिखी हैं। इस जीवनी में अत्याधिक अनऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन किया है। मध्यकालीन शिवाजी महाराज पर लिखित सर्वाधिक

विश्वसनीय 'सभासद जीवनी' हैं। इस जीवनी में शिवाजी महाराज की मृत्यु 'ज्वर' नामक रोग के कारण होने का वर्णन किया है। सभासद लिखते हैं कि, "मग काही दिवसांनी राजास व्यथा ज्वराची जाहाली।"[१२] अर्थात शिवपुत्र राजा राम राजा की शादी के कुछ दिन बाद शिवाजी महाराज को 'ज्वर' नामक रोग हो गया था। इसी ज्वर नामक रोग से उनकी मृत्यु ३ अप्रैल १६८० को दोपहर में रविवार के दिन हो गयी थी। उनकी मृत्यु के बाद प्राकृतिक विनाश का काल्पनिक वर्णन किया है।

मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज की मृत्यु संबधि वर्णन उपलब्ध नहीं हैं। मध्यकालीन मराठी के जीवनीयिों में शिवाजी महाराज की मृत्यु सन् ३ अप्रैल १६८० को दोपहर में होने का वर्णन किया है। उनकी मृत्यु के बाद पृथ्वी पर प्राकृतिक अपदा आने का वर्णन किया है।

४.२) मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में वर्णित शिवाजी महाराज का अंतरंग स्वरुप

मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के अंतरंग स्वरुप का तुलनात्मक अध्ययन निम्नांकित मुद्दों के आधार पर करेंगे।

४.२.१. बचपन और शिक्षा :

हिंदी : मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज के बचपन का वर्णन विस्तृत रुप से नहीं किया हैं। हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज की पत्नीयों का, माता जीजीबाई, भाई और पुत्रों के बारे में कोई वर्णन नहीं मिलता हैं। शिवाजी महाराज के उपर पारिवारिक वर्णन के बजाए पराक्रम वर्णन के अधिक छंद लिखे हैं। कवि भूषण ने भी उनका बचपन बालक्रिडा को पराक्रम के साथ जोड दिया हैं। भूषण कहते हैं कि, "भूषण भनत बाललीला गढ़कोट जीत्यों"[१३] अर्थात भूषण कवि कहते है कि, शिवाजी महाराज ने बाल-क्रिडा करते समय हीं अपने प्रदेश के चारों दिशाओं के किलों को सहज ही जीत लिया था। भूषण के इस एक छन्द

के अलावा शिवाजी महाराज के बचपन का वर्णन हिंदी साहित्य में उपलब्ध नहीं है। मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज के शिक्षा के संदर्भ में कोई वर्णन उपलब्ध नहीं हैं।

मराठी : मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के बचपन का वर्णन किया गया हैं। बचपन से ही शिवाजी महाराज प्रतिभा संपन्न और कुशाग्र बुध्दि के थे। बचपन में ही मावल प्रदेश के मित्रों का संघटन बनाया था। माता जीजाबाई ने शिवाजी महाराज को संस्कारित कर रामायण, महाभारत, जैसे ग्रंथों की वीर कथाओं को सुनाया था। पिता शाहजी के द्वारा विद्वान और विषय विशेषज्ञ लोगों के मार्गदर्शन में शिवाजी महाराज की शिक्षा शुरु हुई थी। उन्होंने सात साल तक पढना, लिखना, घोडी पर बैठना, हत्ती पर बैठना, शस्त्र विद्या, नेमबाजी, बंदुक चलाना जैसे शस्त्र के साथ-साथ शास्त्र की भी शिक्षा अर्जित कर ली थी। १९ वीं शताब्दि में कुछ जीवनीकारों ने दादोजी कोंडदेव द्वारा शिक्षा प्राप्त करने का वर्णन हैं। शिवाजी महाराज के गुरु के गुरु में 'रामदास स्वामी' का भी नाम १९ वी शताब्दि में लिखित जीवनी में वर्णित किया हैं। यह दोनों भी वर्णन अनऐतिहासिक हैं। मध्यकालीन विश्वसनीय सभासद के जीवनी में दादोजी कोंडदेव और रामदास स्वामी दोनों का भी नाममात्र उल्लेख नहीं हैं। अंत शिवाजी महाराज की शिक्षा पिता शाहजी राजे के नियुक्त विषय विशेषज्ञ ने दी थी। माता जीजाबाई भी शिक्षित होने से उन्होंने शिवाजी महाराज को शिक्षा दी और संसकारित किया हैं।

मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के बचपन का वर्णन किया गया हैं। हिंदी साहित्य की तुलना में मराठी साहित्य में उनके बचपन का विस्तृत वर्णन किया हैं। शिवाजी महाराज का पारिवारिक वर्णन हिंदी साहित्य में मराठी की तुलना में कम दिखाई देता है। हिंदी साहित्य में उनकी शिक्षा के बारे में कोई वर्णन उपलब्ध नहीं हैं। मराठी साहित्य में पिता शाहजी राजे के द्वारा

नियुक्त किये गए विशेषज्ञ का वर्णन हैं। उनकी माता जीजाबाई ने उन्हें शिक्षा और संस्कार देने का काम किया हैं। शिवकालीन अत्यंत विश्वसनीय 'सभासद जीवनी' में दादोजी कोंडदेव और रामदास स्वामी का गुरु के रुप में नाम मात्र भी उल्लेख नहीं हैं। इसलिए उनके गुरु के रुप में उनकी माता जीजाबाई को मानना ही तर्क संगत होगा।

४.२.२. नम्रता :

हिंदी : मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज की नम्रता के गुणों का वर्णन किया है। शिवाजी महाराज अत्यंत विनम्र स्वभाव के थे। शिवाजी महाराज के अंदर विनम्रता का गुण झलकता हैं। वे बडों के प्रति हमेशा विनम्र रहते हैं। उनके द्वारा दान देते समय बीना अंहकार और घंमड न दिखाकर बडी विनम्रता दिखाते हैं। अपने उम्र से बडे लोगों के प्रति वे अत्यंत नम्रता रखते थे। मिर्जाराजे जयसिंह कुतुबशाह, फजल को लिखे पत्र की वाणी में विनम्रता दिखाते हैं। शिवाजी महाराज व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में हमेंशा विनम्रता से रहते हैं। उनके नम्रता में अपनत्व, ममता, आदर का भाव हमेशा झलकता हैं। नम्रता शिवाजी महाराज को सुशोभित करती हैं।

मराठी : मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के अत्याधिक नम्रता का वर्णन किया है। वे माता जीजाबाई, पिता शहाजी, समकालीन संत, विद्वान, के प्रति नम्रता का भाव रखते हैं। उनके वाणी में विनम्रता दिखाई देती हैं। अफजल खाँ द्वारा भेजे गये वकिल के प्रति अपनी विनम्र वाणी से उनका विश्वास प्राप्त करते हैं। भागानगर के कुतुबशाह को अपनी विनम्रता को प्रकट करते हुए कहते है कि, "तुम्ही न येणे. आपण वडील भाऊ मी धाकटा भाऊ. आपण पुढे न यावें."[१४] अर्थात भागानगर के कुतुबशाह उम्र में शिवाजी महाराज से बडे थे। कुतुबशाह मन में भय रखकर शिवाजी महाराज से स्वंय मिलने के लिए आ रहा था। कुतुबशाह को कसम देकर उन्हें न आने के लिए कहते हैं। शिवाजी

महाराज कुतुबशाह को बडे भाई का दर्जा देकर स्वयं मिलने के लिए जाते है। स्वराज्य के लिए युध्द में लडते हुए किसी सरदार या सेना की मृत्यु हो जाती है तो उनके प्रति संवेदना दिखाते हैं। तानाजी मालुसरे 'कोंढाना' किले के युध्द में शहिद होने पर बडी नम्रता के साथ उसके घर जाकर संवेदना दिखाते हैं।

मध्यकालीन हिंदी-मराठी के साहित्य में शिवाजी महाराज की नम्रता का वर्णन किया हैं। शिवाजी महाराज को नम्रता सुशोभित करती हैं। वे बडों के प्रति हमेशा विनम्र रहते थे। उनके विनम्रता में अपनत्व, ममता, आदरभाव दिखाई देता हैं। बडों का अत्यांधिक सम्मान करते थे। शिवाजी महाराज व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में भी अत्यंत नम्र स्वभाव के थे। उनकी वाणी में आचरण के स्वभाव से विनम्रता का भाव परिलक्षित होता हैं।

४.२.३. बुध्दि चातुर्यता :

हिंदी : शिवाजी महाराज को हिंदी साहित्य में बुध्दि चातुर्य राजा के रुप में वर्णित किया हैं। वे युध्द भूमि में अपनी असामान्य बुध्दि का परिचय देते हैं। भावना के आवेश में कोई गलत निर्णय नहीं लेते हैं। महाभारत के पाँच पांडवों के गुण शिवाजी महाराज में उपलब्ध हैं। पाँच पांडवों में से सबसे बुध्दिमान नकूल के जैसी बुध्दि शिवाजी महाराज को प्राप्त हुई थी। शिवाजी महाराज की बुध्दि भगवान शिवजी के आशीर्वाद और कृपा से निरंतर बढती जाती हैं। बुध्दि चातुर्य से उन्होंने आगरा के कैद से पलायन किया था। एक बुध्दिमान व्यक्ति सगुन और निर्गुन दोनों को बराबर का स्थान देते हैं। शिवाजी महाराज ने दोनों विचारों को समान मानकर दोनों विचारों में भेद नहीं करते हैं। शिवाजी महाराज ने असामान्य बुध्दिमता से अनेक असंभव कार्य को आसानी से पूरा किया है। उन्होंने अफजलखाँ, शाईसता खाँ, आगरा दरबार से पलायन के कठिन प्रसंग को अपनी बौध्दिक प्रतिभा से आसान बनाया था। मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज के बुध्दि चातुर्य का वर्णन किया हैं।

मराठी : मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के बुध्दि चार्तुयता का वर्णन किया है। शिवाजी महाराज प्रतिभा संपन्न और कुशाग्र बुध्दिमत्ता के धनी थे। वे जीवन में आये हुए संकटों और समस्याओं को बडे आसानी से हल करते हैं। कोई भी निर्णय लेने के लिए भावना की जगह बुध्दि को महत्त्व देते हैं। अपने पिता शाहजी राजे को आदिलशाह की कैद से छुडाने के लिए उन्होंने मुगलों की मदत ली थी। भावना के आवेश में उन्होंने आदिलशाह पर आक्रमण नहीं किया। अपनी कम सेना होने के बावजूद शक्तिशाली, अफजल खाँ, शाईस्ता खाँ को बुध्दि चातुर्य से पराजित किया था। शिवाजी महाराज औरंगजेब के दरबार में कैद कर लिए गये थे। अपने बौध्दिक चातुर्य से बीमारी का बहाना बनाकर अपनी वेशभूषा को बदलकर, कैद से पलायन करते हैं। शिवाजी महाराज के बुध्दिमता की प्रशंसा स्वयं संत तुकाराम महाराज ने की थी। तुकाराम महाराज कहते हैं कि, "सांगणे न लगे सर्वज्ञ तू राजा"[१५] अर्थात 'हे शिवाजी राजा आपको बताने की या समझाने की कोई जरुरत नहीं हैं। आप स्वंय सर्वज्ञानी (सभी जाननेवाले) राजा हैं।' मध्यकालीन मराठी कवि के साथ-साथ संत साहित्य में भी शिवाजी महाराज को 'सर्वज्ञ' राजा कहाँ गया है। शिवाजी महाराज अत्यंत बुध्दिमानी राजा थे।

मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज को प्रतिभा संपन्न, बुध्दिमानी राजा के रुप में वर्णित किया हैं। हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज को 'भगवान शिवजी' के कृपा से बुध्दि में बौध्दिक क्षमता को बढाने का वर्णन किया हैं। महाभारत के नकुल की बुध्दिमता के साथ उनकी तुलना की गयी हैं। हिंदी-मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज को बुध्दिमानी राजा के रुप में प्रस्थापित किया हैं। दोनों साहित्य में उनके पराक्रम को बुध्दिमता के साथ संबंध जोडा गया हैं।

४.२.४. दृढ प्रतिज्ञा :

हिंदी : शिवाजी महाराज ने किशोर अवस्था में ही हिंदवी स्वराज्य की दृढ प्रतिज्ञा ली थी। हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज ने कौन-सी प्रतिज्ञा ली इसका स्पष्ट उल्लेख नहीं किया हैं। मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज के प्रतिज्ञा (प्रण) का महत्व और उद्देश को संकेत रुप में स्पष्ट किया है। प्रतिज्ञा किसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए की जाती है। अप्रत्यक्ष रुप से शिवाजी महाराज के प्रण (प्रतिज्ञा) का वर्णन करते हुए कवि भूषण कहते हैं कि,

"जीवन में नर लोग बडो कवि भूषण भाषन पैज अडो हैं।

है नर लोग मैं राजा बडो सब राजन मैं शिवराज बडों हैं।।"[१६]

अर्थात सभी पृथ्वी के जीवों में नर जीव श्रेष्ठ हैं। इसी जीवन में मनुष्य प्रतिज्ञा लेता है इसलिए उसका जीवन श्रेष्ट है। पृथ्वी पर नर लोगों में राजा बडा होता है। पृथ्वी के सभी राजाओं में शिवाजी महाराज बडे हैं। शिवाजी महाराज की प्रतिज्ञा के सामने मेरु पर्वत और सागर भी छोटे दिखाई देते हैं। शिवाजी महाराज की तलवार ने भी प्रण किया है। उनकी तलवार पापियों को मारकर धर्म के प्राणि समुह का पालन करती हैं। पृथ्वी को निरम्लेच्छ करने के लिए युध्द करते हैं। अतः मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज की दृढ प्रतिज्ञा का अप्रत्यक्ष वर्णन किया गया है।

मराठी : मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के दृढ प्रतिज्ञा का वर्णन किया गया है। शिवाजी महाराज ने अपने १५ साल की किशोरावस्था में हिंदवी स्वराज्य की प्रतिज्ञा ली थी। सन १७ अप्रैल १६४५ में शिवाजी महाराज ने दादाजी नरसप्रभु देशपांडे को अपने जीवन के लक्ष्य का एक पत्र में उल्लेख करते हुए कहते हैं कि, "उसने (रोहिरेश्वर) हमें यश दिया और आगे वह (रोहिरेश्वर) सब मनोकामना हिंदवी स्वराज्य (निर्माण) करके पूर्ण करनेवाला हैं।"[१७] अर्थात शिवाजी महाराजने रोहिडेश्वर मंदिर में अपने कुछ साथियों के साथ 'हिंदवी

स्वराज्य' की स्थापना करने का लक्ष्य रखा था। अत: शिवाजी महाराज ने रोहिडेश्वर (महादेव) के मंदिर में अपने साथियों के साथ हिंदवी स्वराज्य की प्रतिज्ञा ली थी। रोहिडेश्वर की कृपा से हमारा जीवन लक्ष्य पूरा होगा। शिवकालीन संत रामदास स्वामी भी शिवाजी महाराज को 'निश्चय का महामेरु' कहते हैं। वे अपनी प्रतिज्ञा के प्रति हमेशा अटल रहे हैं। शिवाजी महाराज ने दृढ निश्चय कर हिंदवी स्वराज्य की स्थापना की है।

मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के दृढ प्रतिज्ञा का वर्णन किया है। हिंदी साहित्य में प्रतिज्ञा का अप्रत्यक्ष संकेत मात्र वर्णन किया है। शिवाजी महाराज ने कौन-सी प्रतिज्ञा ली थी? प्रतिज्ञा का लक्ष्य? इस संदर्भ में कोई वर्णन नहीं किया गया हैं। मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज ने उम्र १५ साल में (सन १६४५ में) रोहिडेश्वर महादेव के मंदिर में अपने साथियों के साथ 'हिंदवी स्वराज्य' के लक्ष्य को प्राप्त करने की इच्छा प्रकट करते हैं। मराठी भाषा साहित्य में 'हिंदवी स्वराज्य' स्थापना के लक्ष्य का वर्णन किया हैं। हिंदी भाषा में स्वराज्य स्थापना के बारे में प्रतिज्ञा का वर्णन नहीं है। हिंदी साहित्य में प्रतिज्ञा का महत्त्व और उसके उद्देश का वर्णन हैं। अंत हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज की प्रतिज्ञा का स्पष्ट वर्णन नहीं किया है।

४.२.५. स्वाभिमान :

हिंदी : मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज के स्वाभिमान का वर्णन किया हैं। शिवाजी महाराज ने विपरित परिस्थितियों में भी अपने स्वाभिमान को जगाये रखा था। देश के सभी छोटे-बडे राजा मुगल, आदिलशाह के अधिनता को स्वीकार कर रहें थे। औरंगजेब बादशाह को खुश करने का हर संभव प्रयास इन राजाओं के द्वारा किया जा रहा था। ऐसे समय में शिवाजी महाराज ने अपने स्वाभिमान के कारण वह किसी मुगलों, आदिलशाह, के अधिन न रहकर स्वतंत्र राज्य की स्थापना की थी। शिवाजी महाराज के स्वाभिमान के संदर्भ में

मध्यकालीन हिंदी के लाल कवि ने 'छत्रप्रकाश' में लिखा हैं कि, "ऐंड एक सिवराज निबाही। करै आपनै चित्त की चाही।।"[१८] अर्थात संपूर्ण भारत देश में एक शिवाजी राजा ही है जो अपने स्वाभिमान जगाये रखता हैं। अपने मन के अनुसार स्वतंत्र रुप से कार्य करता हैं। पूरे भारत वर्ष में शिवाजी महाराज ने अपने स्वाभिमान को अंत तक निभाया हैं। विपरित परिस्थितियों में भी स्वाभिमान को ठेस पहुँचने नहीं दी। उन्हें आगरा के दरबार में पंचहजारी छोटे नोकरदारों के साथ खडा किया गया था। शिवाजी महाराज इस अनुचित व्यवहार को देखकर भरे दरबार में औरंगजेब के सामने क्रोधित होकर कुछ अनसुने शब्द बोलकर दरबारी सभी नियमों को तोड देते हैं। औरंगजेब को न सलाम करते है न उसके सामने माथा टेकते हैं। शिवाजी महाराज के साथ न हाथ में कोई हथियार था और न ही साथ में कोई सेना की फौज थी। विपरित परिस्थितियों में स्वाभिमान को जगाये रखा था। इस प्रकार स्वाभिमान का वर्णन मध्यकालीन हिंदी साहित्य में किया गया है।

मराठी : शिवाजी महाराज बचपन से ही स्वाभिमानी थे। माता जीजाबाई ने उन्हें संस्कारीत किया था। पंताजी पंत के साथ आदिलशाह के दरबार में जाते है। बाल शिवबा दरबार में किसी के सामने न झुकते हुए आदिलशाह को भी सलाम नहीं करते। दरबार में सिधा अपने जगह पर जाकर बैठ जाते हैं। वे बचपन से ही यवनों के सामने कभी झुके नहीं थी। जब वह बडे हुए तो मुगल बादशाह औरंगजेब के दरबार में गये थे। औरंगजेब बादशाह ने अपने दरबार में शिवाजी महाराज को पंच हजारी मनसबदारों के साथ खडा किया था। शिवाजी महाराज ने इस अनुचित व्यवहार पर अपने स्वाभिमान को जगाया था। बादशाह के सभी दरबारी नियमों को तोडकर अनुचित व्यवहार पर क्रोधित हुए। शिवाजी महाराज को यवनों के सामने झुकना पसंद नहीं था। औरंगजेब बादशाह को दरबार में न सलाम किया और न कुर्निसात की थी। शिवाजी महाराज क्रोधित होकर अपने अपमान को दर्शाने लगे थे। उन्हें पता था दरबारी नियमों को तोडने

पर उन्हें दंडित किया जाएगा। ऐसे विपरति परिस्थितियों में उन्होंने अपने स्वाभिमान को जागृत रखा था।

मध्यकालीन हिंदी-मराठी के साहित्य में शिवाजी महाराज को स्वाभिमानी राजा के रुप में वर्णित किया हैं। वे बचपन से ही स्वाभिमानी थे। दोनों भाषा के साहित्य में शिवाजी महाराज को विपरित परिस्थियों में भी स्वाभिमान का चित्रण किया हैं। मराठी साहित्य में आदिलशाही दरबार और आगरा दरबार के प्रसंग का वर्णन स्वाभिमान दर्शाते हुए किया है। हिंदी साहित्य में स्वाभिमान का चित्रण औरंगजेब के आगरा दरबार में किया हैं। दोनों भाषा के साहित्य में शिवाजी महाराज के स्वाभिमानी स्वरुप का वर्णन किया है।

४.२.६. श्रध्दावान :

हिंदी : मध्यकाल के हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज को श्रध्दावान राजा के रुप में वर्णित किया हैं। शिवाजी महाराज। भवानी देवी, भगवान शिवजी, कृष्ण और पिताजी शहाजी पर श्रध्दा रखते हैं। शिवाजी महाराज माता जीजाबाई पर भी असिम निष्टा और श्रध्दा रखते हैं। मध्यकालीन हिंदी साहित्य में माता जीजाबाई का नाममात्र भी वर्णन नहीं किया है। भूषण कवि ने अपने 'शिवराज भूषण' ग्रंथ की शुरुवात ही भवानी देवी की आराधना से की हैं। भूषण कवि ने आदिशक्ति, कालिके, दैत्यसंहारक, जगन्माता, महिषासुर का वध करनेवाली, भवानी देवी को शिवाजी महाराज के विजय की कामना करते हुए आशीर्वाद माँगते हैं। शिवाजी महाराज बुंदेलखंड के राजा छत्रसाल को प्रेरित और उपदेशित किया था। इस समय भवानी पर श्रध्दा रखते हुए लाल कवि ने शिवाजी महाराज के उपदेश के संदर्भ में कहाँ था कि, "हमको भई सहाइ भवानी भय। नहिं मुगलन की मन मानी।।"[१९] अर्थात शिवाजी महाराज उपदेश में छत्रसाल राजा को कहते है कि, 'हमारे साथ भवानी देवी का आशीर्वाद है। हमें मुगलों की मनमानी पसंद नहीं हैं।' इस उपदेश के बाद छत्रसाल राजा ने स्वतंत्र

राज्य निर्माण किया था। भवानी देवी पर शिवाजी महाराज की श्रध्दा थी। उन्होंने प्रतापगड पर भवानी देवी का मंदिर भी बनाया था। लाल कवि ने कृष्ण को भी शिवाजी महाराज के श्रध्दा स्थान के रुप में वर्णन किया हैं। भूषण कवि ने शिवाजी महाराज को भगवान 'शिवजी' का श्रध्दास्थान माना हैं। भगवान शिवजी की कथा सुनने पर शिवाजी महाराज के चेहरे पर आनंद झलकता हैं। वे भगवान शिवजी के और भवानी देवी के भक्त थे। शिवाजी महाराज अपने पिता शाहजी राजा के प्रति आसिम निष्ठा एवं श्रध्दा रखते थे। कवि भूषण ने अपने अनेक छन्दों में शिवाजी महाराज के पराक्रम और गुणों को दर्शाते समय 'शाहजी के पुत्र शिवाजी' के रुप में उनका वर्णन किया हैं। जैसे साहिनंद, साहितने, साहि के सपुत, आदि शब्दों से शिवाजी महाराज के श्रध्दा रुप में पिता शहाजी का वर्णन किया हैं। अंत हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज की भवानी, कृष्ण, महादेव, पिता शहाजी पर श्रध्दा थी।

मराठी : मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के श्रध्दावान स्वरुप का चित्रण किया हैं। शिवाजी महाराज की भवानी देवी पर श्रध्दा थी। अफजल खाँ वध के बाद उन्होंने प्रतापगड पर भवानी देवी की मूर्ति की प्रतिष्ठापन की थी। शिवाजी महाराज के पूर्वज भगवान 'शिवजी' के भक्त थे। शिवाजी महाराज की 'शिवभक्ति' उनके पुर्वजों से मिली थी। शिवाजी महाराज ने रोहिडेश्वर मंदिर में हिंदवी स्वराज्य की शपथ ली थी। सेनाओं में आत्मविश्वास, उर्जा, शक्ति और एकता की भावनाओं को जगाने के लिए 'हर हर महादेव' की गर्जना (घोषणा) करते थे। शिवाजी महाराज अपने पिता शाहजी और माता जीजाबाई पर अटूट श्रध्दा रखते थे। पिता शाहजी बंगलूरु में स्थायी हो गये थे। माता जीजाबाई ने उन्हें शिक्षा और संस्कार दिये थे। शिवाजी महाराज अफजल खां का वध करने के लिए जाते समय अपनी माँ का आशीर्वाद लेते हैं। इस संदर्भ में शिवकालीन शाहिर अज्ञानदास अपने 'अफजलखाँ वध' पोवाडे में लिखते हैं कि, "शिवबास्मरे महादेवाला। गळा घातली मिठी। मातेच्या चरणाशी

लागला।"[२०] अर्थात अफजलखां को मिलने जाते समय शिवाजी महाराज भगवान शिवजी (महादेव) का स्मरण करते हैं। माता जीजाबाई के गले मिलकर उनके चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लेते हैं। शिवाजी महाराज मातृ-पितृ भक्त थे। शिवाजी महाराज के पिता शहाजी राजा को आदिलशाह ने कैद कर लिया था। शिवाजी महाराज ने मुगलों की सहायता से अपने पिता को छुडवाया था। शहाजी राजे स्वराज्य में आने पर बडे स्नेह से उनका आदर सत्कार किया था। अपने पिता शाहजी राजे के मृत्यु पर वे अत्याधिक शोक भी मनाते है। मराठी के मध्यकालीन कुछ जीवनियों में श्रध्दा स्थान के रुप में संत तुकाराम महाराज, याकुत बाबा, मौनी बाबा और रामदास स्वामी का वर्णन किया हैं। मध्यकालीन सभी मराठी के जीवनियों में ऐतिहासिक, वर्णनात्मक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण 'सभासद' जीवनी में इनमें से किसी का भी नाममात्र उल्लेख नहीं हैं। अतः विद्वान और संतों के प्रति उनके मन में श्रध्दा भाव था।

मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के श्रध्दावान स्वरुप का वर्णन किया हैं। दोनों भाषा साहित्य में शिवाजी महाराज के श्रध्दा को, आत्मविश्वास, शक्ति, प्रेरणा, उर्जा, मार्गदर्शक, सलाहकार के रुप में प्रकट किया हैं। दोनों साहित्य में शिवाजी महाराज को भवानी देवी, महादेव (भगवान शिवजी) पिता शाहजी राजे को श्रध्दा का समान रुप से वर्णन किया हैं। हिंदी साहित्य में कृष्ण (ब्रजनाथ) को श्रध्दा रुप 'लाल' कवि ने वर्णित किया हैं परंतु हिंदी तथा मराठी में भी अन्य किसी साहित्यकारों ने कृष्ण को श्रध्दा रुप नहीं माना है। मराठी की जीवनियों में संत तुकाराम महाराज, याकुत बाबा, मौनी बाबा, रामदास स्वामी को श्रध्दास्थान के रुप में वर्णित किया हैं। दोनों भाषा के साहित्यकार ने शिवाजी महाराज के श्रध्दावान स्वरुप का वर्णन किया है। दोनों भाषा के साहित्य में श्रध्दावान के स्वरुप वर्णन में अत्याधिक समानता दिखाई देती हैं।

४.२.७. साहसी और निर्भयता :

हिंदी : वीर तथा पराक्रमी पुरुष का मुख्य लक्षण वह साहसी और निर्भयी होता हैं। शिवाजी महाराज वीर और पराक्रमी राजा थे। वह विपरित और कठिन प्रसंगों पर भी साहस और निर्भयता से डटकर खडे रहें। आदिलशाह का शक्तिशाली सरदार १२ हजार की फौज लेकर स्वराज्य पर आक्रमण करने के लिए आया था। शिवाजी महाराज ने बडे साहस और निर्भयता से प्रत्यक्ष रुप से स्वयं जाकर उसका सामना किया था। निर्भय व्यक्ति ही अफजल खाँ को मिलने का साहस कर सकता था। शिवाजी महाराज केवल मिले ही नहीं अपितु अफजलखाँ का वध भी कर दिया था। एक लाख की सेना की फौज लेकर शाईस्ता खाँ स्वराज्य पर आक्रमण करने के लिए आया था। शाईस्ता खां एक लाख की सेना के बीच पुने के महल में रहने लगा था। एक रात शिवाजी महाराज ने अपना साहस जुटाकर बडे निर्भयता के साथ पुने के महल में प्रवेश किया। कडी सुरक्षा के बीच रहनेवाले शाईस्ता खाँ के शयन कक्ष में जाकर तलवार से वार किया था। तलवार के वार से शाईस्ता खाँ ने अपनी तीन उँगलियाँ गवाँ दी थी। मिर्जा राजे जयसिंह के साथ पुरंदर संधि कर मुगल बादशाह औरंगजेब के दरबार में गये थे। औरंगजेब बादशाह ने शिवाजी महाराज को मामुली पंच हजारी नौकरों के साथ खडा किया था। शिवाजी महाराज ने इस अनुचित व्यवहार का भरे दरबार में विरोध करने का साहस किया था। औरंगजेब के सभी दरबारी नियमों को तोडकर उसके सामने अपने मुच्छों पर ताव देकर निर्भयता को प्रकट करते हैं। मुगलों का प्रमुख व्यापार केंद्र सुरत शहर पर आक्रमण करने का साहस शिवाजी महाराज ने किया था। तत्कालीन समय में देश के किसी भी राजा में मुगलों के शहरों पर आक्रमण करने का साहस और निर्भिकता दिखाई नहीं देती है। शिवाजी महाराज किसी शत्रु से नहीं डरते थे बल्कि सभी शत्रु शिवाजी महाराज से डरते थे। आदिलशाह, औरंगजेब बादशाह, कुतुबशाह, पोर्तुगज, फ्रैंच, अंग्रेज, सिध्दी, हब्शी, फिरंगी, जेसे अनेक विदेशी

शासक शिवाजी महाराज से हमेशा भयभित होते थे। युध्द में शिवाजी महाराज शत्रु से डरकर कभी भागे नहीं थे। युध्द में विपरित परिस्थितियों में निडर होकर शत्रु का सामना किया था। शिवाजी महाराज ने साहस और निर्भयता के कारण अनेक असामान्य पराक्रम किये हैं। अंत मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज के साहस और निर्भयता के गुणों का वर्णन किया गया है।

मराठी : मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के साहस और निर्भयता का वर्णन किया है। उन्होंने साहस और निर्भयता के गुणों से अनेक पराक्रम प्रस्थापित किया है। वे कठिन प्रसंग, समस्याओं में भी साहस और निर्भयता के साथ खडे रहे थे। बारा हजार के फौज लेकर आनेवाले आदिलशाह के सरदार अफजलखाँ को बीना डरे बडे साहस के साथ उसको मिले थे। उनके सामने खडे होकर निर्भकता से वार्तालाभ भी किया था। अफजलखाँ के द्वारा वार करने पर बीना डरे उसका वध भी कर दिया था। एक लाख सेना की फौज लेकर स्वराज्य पर आक्रमण करने के लिए शाइस्ता खाँ पुने के महल में रहने लगा था। लाखों सेना की सुरक्षा के बीच महल में रनेवाले शाईस्ता खाँ को बीना डरे एक महल में घुसकर उसके उपर वार करते है। इस प्रसंग में शाईसता खाँ की तीन उँगलिया कट गयी थी। शाईस्ता खाँ भयभित होकर दिल्ली भाग जाता है।

पुरंदर संधि के बाद औरंगजेब को मिलने के लिए के लिए आगरा दरबार में जाते हैं। जाते समय वे अपने पुत्र संभाजी राजा को भी साथ लेकर जाने का साहस करते हैं। औरंगजेब ने शिवाजी महाराज को पंच हजारी साधारण नोकरों के बीच में खडा करता हैं। शिवाजी महाराज इस अनुचित व्यवहार का विरोध करते है। शिवाजी महाराज निर्भयता के साथ सभी दरबारी नियमों को तोडने का साहस करते हैं। औरंगजेब के सामने उसके क्रोधित होकर विरोध स्वरुप कुछ अनसुने शब्द बोलते हैं। इससे बादशाह औरंगजेब स्वयं भयभित दिखाई देता हैं।

मुगलों का प्रमुख व्यापार केंद्र सुरत शहर पर आक्रमण करने की किसी में भी साहस और हिंम्मत नहीं थी। शिवाजी महाराज ने मुगलों के सुरत शहर पर आक्रमण करने का साहस किया हैं। युध्द क्षेत्र में विपरित परिस्थितियों में भी कभी शत्रु से डरकर भागे नहीं थे। सभी शत्रु शिवाजी महाराज से ही डरते थे। अंत : मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के साहस और निर्भयता का वर्णन किया है।

मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के साहस और निर्भयता के गुणों का वर्णन किया है। दोनों साहित्य में समान रुप से उनके अफजलखाँ प्रसंग, शाईस्ता खाँ का पुने के महल का प्रसंग, औरंगजेब दरबार और सुरत पर आक्रमण आदि घटनाओं का वर्णन करते हुए उनके साहस और निर्भयता के गुणों का वर्णन किया है। दोनों भाषा के साहित्य में साहस और निर्भयता के वर्णन में अत्याधिक समानता दिखाई देती हैं।

४.२.८. कार्यक्षमता :

हिंदी : मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज की कार्यक्षमता का वर्णन किया हैं। उनके यश और कीर्ति के पीछे कार्यक्षमता प्रबल रुप से दिखाई देती हैं। वे बचपन से ही कार्यक्षम बालक थे। बालक्रिडा में ही उन्होंने आदिलशाही के किले को जीतना शुरु किया था। किशोरावस्था में गोवलकुंडा और जवानी में दिल्ली के बादशाह औरंगजेब को जीत लिया था। उनकी कार्यक्षमता को देखकर सभी शत्रु अचंभित होते थे। स्वराज्य निर्माण के लिए शिवाजी महाराज दिन-रात कार्यतत्पर दिखाई देते हैं। अन्य राजाओं के लिए जो कार्य पूरे जीवनभर में संभव नहीं हैं वह कार्य शिवाजी महाराज केवल एक दिन में कर देते हैं। अपने उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए वे दिनरात कार्य तत्पर रहते थे। उन्होंने असंभव, असाधारण कार्य कर अपनी कार्यक्षमता सिध्द की हैं। पुने के महल में शाईस्ता खाँ के साथ लाखों की फौज थी। एक रात उस लाखों की

फौज के सुरक्षा को तोडकर शाईसता खाँ पर वार करते हैं। इस घटना में उसकी तीन उँगलियाँ जाती हैं। युध्द के दिनों में वे सारा दिन घोडे पर बीताने पर भी उन्हें वेदना नहीं होती थी। उनकी कार्यक्षमता को देख अन्य शत्रु के साथ-साथ मुगल बादशाह औरंगजेब भी पश्चाताप करता है। शिवाजी महाराज ने रात में औरंगजेब के किले जीते थे। इसे देखकर औरंगजेब हताश और निराश दिखाई देता है। शिवाजी महाराज कार्यक्षम एक राजा थे।

मराठी : मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के कार्यक्षमता का वर्णन किया हैं। वे स्वराज्य के लिए दिन-रात कार्यक्षम रहते थे। शिवाजी महाराज के असामान्य कार्यक्षमता को देखकर बादशाह औरंगजेब भी पश्चाताप कर रहा है। शिवाजी महाराज की कार्यक्षमता को देखकर शत्रु लोग उन्हें देव, राक्षस, जादुगार, चमत्कारी कहते हैं। औरंगजेब बादशाह कहता हैं कि, "शिवाजी बडा सैतान पैदा हुवा, जो कोण्हीं आजपर्यत कर्म न केलें, तेंच करितो."[२१] अर्थात बादशाह औरंगजेब शिवाजी महाराज की कार्यक्षमता शक्ति, पराक्रम को देखकर उन्हें राक्षस कहते हैं। ऐसा असंभव कार्य किसी सामान्य मनुष्य द्वारा संभव ही नहीं। उसे शिवाजी महाराज ने पूर्ण किया है। असामान्य कार्य करने का काम शिवाजी महाराज ही करते है। रात में शाईस्ता खाँ पर आक्रमण, सुरत पर आक्रमण, अफजल खाँ का वध, अमावस की रात में शत्रु की किले को जीतना, औरंगजेब दरबार की कैद से पलायन आदि घटनाएँ उनकी असामान्य कार्यक्षमता को सिध्द करती हैं।

मध्यकालीन हिंदी-मराठी के दोनों भाषाओं के साहित्यकारों ने शिवाजी महाराज की कार्यक्षमता का वर्णन किया हैं। शिवाजी महाराज में असामान्य कार्यक्षमता थी। उनकी कार्यक्षमता को देखकर शत्रु भी अचंभित होते हैं। वे रात-दिन कार्य करने के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं। अनेक युध्द उन्होंने रात के अंधेरे में किये थे। उनकी कार्यक्षमता को देख शत्रु उन्हें देव, राक्षस, जादुगार,

चमत्कारी कहते हैं। उन्होंने असंभव कार्य को अपनी कार्यक्षमता से पूरा किया है। अफजल खां वध, शाइ्रस्ता पर छापा, सुरत आक्रमण, आगरा दरबार से पलायन यह घटना उनकी कार्यक्षमता को सिध्द करती हैं। वे युध्द में दिन-रात तत्परता दिखाते हैं। उनके असामान्य कार्यक्षमता से अनेक असामान्य पराक्रम किए हैं। दोनों भाषाओं के साहित्य में शिवाजी महाराज को अत्याधिक कार्यक्षम राजा के रुप में प्रकट किया हैं।

४.२.९. कुशल संघटक :

हिंदी : शिवाजी महाराज को मध्यकालीन हिंदी साहित्य में कुशल संघटक के रुप में वर्णित किया हैं। राजा या राज्य की बडी शक्ति प्रजा और उनकी एकता में होती है। शिवाजी महाराज ने लोगों को अन्याय, अत्याचार, शोषण के विरुध्द संघटित किया। मावल प्रदेश के 'मराठा' लोगों का संघटन कर केवल आठरा वर्ष की अल्पायु में स्वराज्य स्थापना की शपथ ली। मराठा लोगों में मातृप्रेम और उसकी रक्षा करने के लिए प्रेरित किया था। प्रदेश के आसपास के छोटे-छोटे राजा किलेदार, सरदारों, को संघटित किया। बुंदेल खंड के राजा छत्रसाल, कुतबशाह, शहाआलम, रामसिंह को अपना मित्र बनाया था। विदेशी सत्ताओं के विरुध्द में अनेक राजाओं में चेतना और प्रेरणा जगाई थी। संघटित कर राष्ट्र संघटक का निर्माण किया था। शिवाजी महाराज ने राजा छत्रसाल को स्वतंत्र राज्य के लिए उपदेशीत और प्रेरित किया था। राजा छत्रसाल को शिवाजी महाराज ने अपना मित्र बनाकर उपदेश दिया था। इस दृष्टि से 'छत्रप्रकाश' में वर्णन लाल कवि करते हुए लिखते हैं कि, "करौ देश कौ राज छतारै। हम तुमतै कबहूँ नहीं न्यारै।।"[२२] अर्थात मध्यकालीन हिंदी के लाल कवि ने शिवाजी महाराज के द्वारा छत्रसाल राजा को उपदेश का वर्णन किया हैं। शिवाजी महाराज कहते हैं कि आप (राजा छत्रसाल) देश पर राज करों। हम और तुम दोनों एक ही हैं। किसी प्रकार की कोई मदत चाहिए तो माँग लेना। शिवाजी महाराज ने मुगलों के

विरुध्द देशी राजाओं का संघटन करने का काम किया हैं। वे एक कुशल संघटक थे।

मराठी : शिवाजी महाराज बचपन से ही मावळ प्रदेश के अपने मित्रों का संघटन कर स्वराज्य निर्माण की शपथ ली थी। मावळ प्रदेश के लोगों में अन्याय, अत्याचार के प्रति चेतना जगाकर उन्हें एकत्रित किया। मावळ प्रदेश के मराठा लोग उनके लिए जान भी देने के लिए तैयार हो गये थे। शिवाजी महाराज ने १८ प्रकार की जातियों के लोगों को अपने सेना में शामील किया था। सभी जाति, धर्म, पंथ सम्प्रदाय के लोगों को संघटित किया था। प्रदेश के आस-पास के किलेदार, सरदार, राजा शिवाजी महाराज के स्वराज्य में खुशी से शामिल हो रहे थे। मुगल आदिलशाही, विदेशी शासकों के विरुध्द स्वदेशी राजाओं का संघटन किया था। बुंदेलखंड के राजा छत्रसाल को स्वतंत्र राज्य निर्माण के लिए प्रेरित किया था। शिवाजी महाराज ने रामसिंह, शहाआलम, कुतुबशाह जैसे, मित्रों को अपने साथ रखा था। मिर्जा राजे जयसिंह को साथ लेकर आदिलशाह पर आक्रमण किया था। आदिलशाह के विरुध्द अनेक छोटे-मोठे राजा सरदारों को एकत्रित किया था। वे एक कुशल संघटक थे। स्वराज्य में किसी प्रमुख सरदार, किलेदार की युध्द में मृत्यु हो जाती तो उसके घर जाते थे। उनके घर के दुख दर्द को अपना समझते थे। उनके इस हमदर्दी और संवेदना के कारण लोगों में संघटन की भावना और स्वराज्य के प्रति प्रेम निर्माण होता था। तानाजी मालुसरे के शहिद होने पर उसके घर जाकर संवेदना प्रकट करते है। तानाजी के पुत्र 'रायबा' की शादी में अपने हाथों से आशीर्वाद देकर पिता का कर्तव्य निभाते है। स्वराज्य के लोग यह देखकर स्वराज्य के लिए अपनत्व की भावना दिखाकर संघटीत होते थे।

मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज को कुशल संघटक के रुप का वर्णन किया हैं। दोनों भाषाओं में समान रुप से उनके संघटन कार्य

को प्रकट किया हैं। अन्याय, अत्याचार के विरुध्द स्वराज्य की प्रजा का संघटक किया हैं। प्रदेश के आस-पास के सरदार, किलेदार, राजाओं को अपने स्वराज्य में शामिल किया था। विदेशी सत्ताओं के विरुध्द देश के राजाओं का मजबूत और शक्तिशाली संघटन बनाया था। स्वराज्य के लिए सेना, सरदार, किलेदार अपनी जान तक देने के लिए तैयार रहते थे। शिवाजी महाराज मध्यकाल के एक कुशल संघटक थे। इन्होंने अनेक राजा, सरदार किलेदारों का संघटन किया था।

४.२.१०. कुशल राजनीतिज्ञ :

हिंदी : मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज को राजनीतिज्ञ के रुप में वर्णित किया हैं। शिवाजी महाराज की राजनीति सामान्य लोगों के समझ से परे है। उनके राजनीतिक को उनके शत्रु मुगल, आदिल, कुतुबशाह भी राजनीतिक गुढता कोई सुलझा नहीं सकता था। शिवाजी महाराज के राजनीति गुढता के संदर्भ में भूषण लिखते है कि,

"राज-काज देखि कोई पावन भेव हैं।
कहरी यदिल, मौज लहरी कुतुब कहै,
बहरी निजाम के जितैया कहैं देव है।"[२३]

अर्थात शिवाजी महाराज के राज्यकारभार को देखकर उनके राजनीतिक के भेद (गुढता) को कोई भी नहीं पहचान सका। उनकी राजनीति को कहर ढानेवाला आदिलशाह, मनमौजी कुतुबशाह, निजाम को जीतनेवाला मुगल बादशाह औरंगजेब भी नहीं पहचान सकें। शिवाजी महाराज की राजनीतिक गुढता के कारण इन्हें सभी शत्रु भगवान कहते हैं।

शिवाजी महाराज ने अपने राजनीति में साम, दाम, दंड, भेद, का उपयोग किया है। उन्होंने समयानुरुप मुगलों से संधि कर अपने पिता शाहजी राजा को आदिलशाही के कैद से छुडवाया था। कुछ सालों बाद मुगल प्रदेशों पर आक्रमण

शुरु किया था। उनके व्यापार का केंद्र गुजरात के सुरत शहर पर आक्रमण कर उसे बेसुरत कर दिया था। मिर्जाराजे जयसिंह के साथ संधान बाँध कर अपने जीते हुए किलों को पुरंदर संधि में मुगलों को वापस कर दिये थे। मिर्जा राजे के साथ मीलकर आदिलशाही पर आक्रमण किया था। औरंगजेब के आगरा कैद से पलायन कर स्वराज्य में आ गये। औरंगजेब के बेटे शहाआलम के साथ मित्रता की। पुरंदर संधि में दिए हुए सभी किले को वापस जीत लिया था। मुगल के सरदारों को अलंकार, पैसे देकर उन्हें कुछ दिनों तक स्वराज्य पर आक्रमण करने से रोका था। मुगल सरदार बहादुर खां को दाम (पैसे, द्रव्य) देकर उसे स्वराज्य पर आक्रमण करने नहीं दिया। शिवाजी महाराज ने शत्रु के अनेक सरदारों और छोटे-बडे राजाओं को दंडित किया था। बहलोल खाँ और दिलर खाँ दो मुगलों के सरदारों के बीच भेद निर्माण करने में सफल हुए थे। अतः अकेले पडनेवाले दिलेर खां को पराजित किया था। शिवाजी महाराज ने अपने पिता को कैद करने वाले बीजापुर के आदिलशाही का रक्षण भी किया था। शिवाजी महाराज की राजनीति समय के अनुरुप बदलती रही हैं। वे राजनीति में किसी को भी अपना सर्वकालिक शत्रु नहीं मानते थे। इस प्रकार की राजनीति से शत्रु हमेशा दुविधा में रहते थे। उनकी राजनीतिक दांवपेच को शत्रु कभी समझ नहीं सके। अंत : शिवाजी महाराज एक कुशल राजनीतिज्ञ थे।

मराठी : मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज को कुशल राजनीतिज्ञ के रुप में वर्णित किया है। शिवाजी महाराज की राजनीति आदिल, मुगल, कुतुब और विदेशी शत्रुओं को कभी भी समझ नहीं आयी। शिवाजी महाराज ने समयानुरुप राजनीति निर्णय लिए थे। उन्होंने राजनीति में साम, दाम, दंड, भेद का स्थल, काल और भविष्य के परिणामों को देखकर निर्णय लेते थे। शत्रु अगर शक्तिशाली है और उसका विपरित परिणाम रयत (प्रजा) पर पडनेवाला है तो संधि कर ली। अनेक मुगली सरदारों को रिश्वत (दाम) देकर स्वराज्य पर आक्रमण होने नहीं दिया। राजनीति में साम, दाम, से कार्य नहीं

होता है तो शत्रुओं के उपर पूरी शक्ति के साथ आक्रमण कर उसे दंडित करते है। शिवाजी महाराज ने शत्रु के राज्य के अंदर भेद निर्माण करने की नीति भी अपनाई थी। मुगल सरदार दिलेर खाँ और बहादुर खाँ के बीच भेद निर्माण कर दिया था। बहादुर खाँ को रिश्वत देकर दिलेर खाँ को अपने सरदार के द्वारा पराजित किया था। राजनीति में उन्होंने किसी को भी अपना सर्वकालीक शत्रु या मित्र नहीं बनाया। शिवाजी महाराज ने पिता शाहजी राजे को कैद करने वाले आदिलशाही का स्वयं जाकर रक्षण किया था। शिवाजी महाराज की राजनीति धर्म से विरहित थी। धर्म और राजनीति दोनों को अलग-अलग रखा था। उनकी राजनीति निसंदेह धर्म से प्रेरित नहीं थी। शिवाजी महाराज एक कुशल राजनीतिज्ञ थे।

हिंदी-मराठी के साहित्यकारों ने शिवाजी महाराज के राजनीतिज्ञ स्वरुप का वर्णन किया हैं। उनकी राजनीतिक गुढता को कोई भी समझ नहीं पाया था। उन्होंने राजनीति में साम, दाम, दंड, भेद, का समय के अनुसार उपयोग किया था। उनकी राजनीति धर्म प्रेरित न होकर धर्म और राजनीति दोनों को विभक्त किया था। दोनों भाषा के साहित्यकारों ने शिवाजी महाराज को कुशल राजनीतिज्ञ के रुप का वर्णन किया है। राजनीतिज्ञ के स्वरुप वर्णन में दोनों भाषा साहित्य के अत्याधिक समानता दिखाई देती हैं।

४.२.११. कुशल युध्दनीतिज्ञ :

हिंदी : युध्द में विशिष्ट परिस्थितियों में निर्णय लेनी की कला को युध्द कुशलता कहाँ जाता है। शिवाजी महाराज कुशल युध्दनीतिज्ञ थे। युध्द क्षेत्र के तंत्र की उन्हें अच्छी जानकारी थी। युध्द में उन्होंने परंपरागत युध्दनीति के साथ-साथ आधुनिक युध्दनीतियों का भी उपयोग किया है। उन्होंने स्थल, काल, परिस्थितियों के अनुरुप युध्दनीतियों का उपयेग किया है। शिवाजी महाराज ने अपनी स्वयं की नई युध्द नीतियों का भी उपयोग किया है। नयी युध्दनीतियों में

गनिमकावा, छापामारी, निषायुध्द, शत्रु पक्ष में भय निर्माण करना आदि युध्दनीतियाँ उन्होंने अपनायी थी। शाईस्ता खाँ पर एक रात पुने के महल में घुसकर उसके उपर छापामारी की थी। जिस प्रकार शेर अचानक अपने पंजों से शत्रु पर घाव करता है, उसी प्रकार शिवाजी महाराज ने पुने के महल पर अचानक छापा मारा था। हिंदी साहित्य में निषा युध्द का विस्तृत वर्णन किया गया है। औरंगजेब बादशाह शिवाजी महाराज के निषा युध्द से परेशान होता है। निषा युध्द का वर्णन करते हुए भूषण लिखते हैं कि, "सावन भादौ की भारी कुहू की अँधारी चढि, दुग्ग पर जात मावली दल सचेत है।"[२४] अर्थात सावन और भादों के महिने की भारी बरसात में घोर अंधेरी रात में मावली सेना किले पर चढ रहे हैं। मावली सेना को रात में भी किले पर चढना मानों खेत में चलने के बराबर लगता है। शिवाजी महाराज ने शक्तिशाली शत्रु को देखकर अपनी सेना शक्ति को बढाने के लिए शत्रु के साथ संधि का प्रस्ताव रखा था। पुरंदर संधि में अपने किलें को मुगलों को दिये थे। शिवाजी महाराज के युध्दनीति के कारण शक्तिशाली आदिलशाह और मुगल बादशाह भी हार जाते थे। 'उम्राणी' युध्द में शत्रु को हारने के लिए मजबूर कर दिया था। शत्रु पक्ष की मिलने वाली रसद और पानी बंद कर दिया था। पानी के 'तालाब' पर मराठा सेना ने अधिकार प्राप्त कर लिया था। शत्रुओं को पीने के लिए मिलनेवाला पानी बंद कर दिया था। शिवाजी महाराज युध्द क्षेत्र में शरणागत को क्षमा कर देते थे। उनके युध्दनीति में उदारता दिखाई देती है।

मराठी : मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के युध्दीनीतिज्ञ स्वरुप का वर्णन किया हैं। शिवाजी महाराज युध्द करने से पहले शत्रु के कमजोरी की जानकारी लेने के लिए अपने गुप्तचर विभाग का सहारा लेते थे। गुप्तचरों की गुप्त जानकार के आधार पर अपनी युध्दनीतियों का उपयोग करते थे। शिवाजी महाराज ने परंपरागत युध्दनीतियों के साथ-साथ आधुनिक युध्द नीतियों का उपयोग किया था। शिवाजी महाराज ने स्वतंत्र 'गनिमकावा' युध्दनीति

का भी उपयोग किया था। युध्द में शत्रु को असावध देखकर उसके उपर अचानक आक्रमण करते थे। शत्रु सावधान हो जाये तब तक वापस अपने स्थान पर सुरक्षित चले जाते थे। शाईस्ता खाँ पुने के महल में रहता था। शिवाजी महाराज ने एक रात पुने के महल पर छापा मार दिया था। घायल शाईस्ता खाँ भयभित होकर वापस दिल्ली भाग गया था। सरदार तानाजी मालुसरे ने रात में कोंढाना किले पर चढाई की थी। मुगल किलेदार उदयभान को परास्त कर दिया था। छ. शिवाजी महाराज ने निषायुध्द का उपयोग भी किया था। युध्द में शरणागत शत्रु को अभयदान दिया था। उन्होंने युध्द में उदारता नीति का भी उपयोग किया था। समय के अनुसार शत्रु के साथ संधि भी की थी। समय के अनुसार मुगलों के साथ युध्द में संधि भी की थी।

मध्यकालीन हिंदी-मराठी के साहित्य में शिवाजी महाराज को कुशल युध्दनीतिज्ञ के रुप में चित्रित किया हैं। वे युध्द में परंपरागत युध्दनीति के साथ-साथ आधुनिक युध्दनीति का उपयोग करते थे। उन्होंने स्वतंत्र 'गनिमकावा' युध्दनीति का निर्माण किया था। हिंदी साहित्य में मराठी साहित्य की तुलना में 'निषायुध्द' का विस्तृत वर्णन किया गया हैं। शिवाजी महाराज ने छापामारी, कुटनीति, युध्द संधि, गनिम कावा, अचानक धावा बोलना, शत्रु पक्ष में अफवाहे फैलाना, भयभित कराना आदि युध्दनीतियों का दोनों साहित्यकारों ने समान रुप से वर्णन किया है।

४.२.१२. प्रजाहित दक्ष :

हिंदी : शिवाजी महाराज का राज्य 'रयत' का राज्य था। उनके राज्य का प्रमुख उद्देश्य प्रजा का हित था। शिवाजी महाराज ने किसान, स्त्री, पुरुष, बच्चें, गरीब सभी के कल्याण के लिए स्वराज्य स्थापन किया था। स्वराज्य के सभी वर्गों के लोगों को अपना राज्य लगता था। शिवाजी महाराज ने अन्याय, अत्याचार, शोषण से मुक्त राज्य निर्माण किया था। उन्होंने सभी प्रजा के दुःख, दर्द, पीड़ा,

वेदना का हरन कर (निकाल) दिया था। प्रजा की दीनता, पराधिनता को नष्ट कर दिया गया था। कवि भूषण लिखते हैं कि, "कढि गई रैयति के मन की कसक सब।"[२५] अर्थात शिवाजी महाराज ने रयत (प्रजा) के मन की सभी पीड़ा, वेदना, दुःख निकाल दिये है। सभी राज्य शोषण से मुक्त हो गया था। शिवाजी महाराज ने अपने अहंकार, प्रतिष्ठा के बजाय प्रजा का हित देखकर निर्णय लिया हैं। मिर्जा राजा जयसिंह के साथ संधि करने का प्रमुख कारण स्वराज्य की प्रजा का रक्षण करना था। शिवाजी महाराज के निर्णय प्रजाहित के विरुध्द कभी नहीं थे। स्वराज्य की प्रजा सुखी, संपन्न और सुरक्षित थी। शिवाजी महाराज का राज्य जन कल्याणकारी था। किसानों के लिए उन्होंने अनेक सुविधा और योजनाओं को शुरु किया था। सेना को सख्त आदेश था कि प्रजा के उपर अन्याय, अत्याचार न करें। प्रजा के उपर अन्याय अत्याचार करनेवालों को दंडित किया जाता था। मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज को प्रजा हितदक्ष राजा के रुप में वर्णित किया है।

मराठी : मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज राज के राज्य का प्रमुख उद्देश्य प्रजाहित माना गया हैं। शिवाजी महाराज प्रजाहित के प्रति हमेशा सर्तक रहते थे। स्वराज्य की प्रजा को दीन, दुःखी, पीडित, शोषित, अन्याय, अत्याचार से मुक्त कर दिया था। शिवाजी महाराज को रयत का राजा अर्थात 'प्रजा का राजा' कहाँ जाता हैं। प्रजा हित के लिए उन्होंने, जमिनदारी, वतनदारी, जहाँगीरदारी, देशमुख, देसाई, पाटील के अधिकारों की सीमित कर दिया था। यह लोग प्रजा के उपर अन्याय, अत्याचार करते थे। किसानों के लिए उन्होंने उनके उत्पादन पर आधारित कर लगाया था। सरकारी तिजोरी से किसानों को कम ब्याज पर कर्ज दिया जाता था। स्त्री के उपर अन्याय अत्याचार करेवालों को दंडित किया जाता। प्रजाहित के लिए उन्होंने अपने शत्रु के साथ संधि कर ली थी। प्रजा का किसी भी परिस्थितियों में नुकसान न हो इसलिए वे हमेशा सतर्क रहते थे। सेनाओं को आदेश दिया था कि, "स्वराज्यांतील आंबे,

फणस, आदि करुन हेही लांकडे आरमाराखा प्रयोजनाचीं, परंतु त्यास हात लावूं देऊ नये."[२६] अर्थात राज्य के किसानों के खेत में आम, फणस, के पेडों के काटकर, उसके लकडी का उपयोग अरमारों को बनाने में ना करें। उन पेडों को काटने के लिए हाथ भी न लगाए। इस प्रकार का आदेश शिवाजी महाराज ने दिया था। स्वराज्य में सभी वर्गों के लोगों का हित सर्वोतोपरी सर्वोतोपरी था। शिवाजी महाराज ने प्रजा हित को देखकर नियम बनाये थे। किसी प्रजा पर अन्याय, अत्याचार होने पर गुन्हेंगारों को दंडित किया जाता था।

मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के प्रजा हितदक्ष स्वरुप का चित्रण किया है। लोककल्याण के लिए स्वराज्य का निर्माण किया गया था। प्रजा का हित ही स्वराज्य का प्रमुख उद्देश्य था। शिवाजी महाराज प्रजाहित को ध्यान में रखकर अपने राजनीतिक निर्णय लेते थे। प्रजा पर अन्याय करनेवालों को दंडित किया जाता था। उनके राज्य में प्रजा, सुखी, संपन्न और सुरक्षित थी।

४.२.१३. स्वधर्माभिमानी :

हिंदी : शिवाजी महाराज को स्वधर्म के प्रति अभिमान था। मध्यकालीन कुछ मुस्लिम राजाओं की तरह उन्हें स्वधर्म का गर्व था, अहंकार बिल्कुल नहीं था। शिवाजी महाराज को हिंदू धर्म के प्रति आस्था और श्रध्दा थी। व्यक्तिगत जीवन में हिंदू धर्म के प्रति अभिमान था। हिंदू धर्म के विचार, आचरण संस्कृति का पालन करते थे। हिंदू धर्म के लोग ईश्वर पर अत्याधिक श्रध्दा रखते हैं। शिवाजी महाराज भी भवानी देवी, भगवान शिवजी, पर श्रध्दा रखते है। भगवान शिवजी की कथा सुनने पर उनका मन प्रसन्न हो जाता था। शिवाजी महाराज भगवान शिवजी के बडे भक्त थे कवि भूषण शिव भक्ति के बारे में कहते हैं कि, "सिव सेवक सिव गढपति"[२७] अर्थात किलों के पति (राजा) शिवाजी महाराज भगवान शिवजी के सेवक हैं। शिवाजी महाराज ने 'रायरेश्वर' भगवान शिवजी के

मंदिर में स्वराज्य की शपथ ली थी। हिंदू धर्म में दान को अत्याधिक महत्त्व है। शिवाजी महाराज ने अपने जीवन में अत्याधिक दान दिया था। स्वधर्म के अभिमान के कारण उन्होंने शत्रुओं से मंदिर, मूर्तियों का रक्षण किया हैं। हिंदू धर्म में मंदिर, मूर्ति, श्रध्दा और भक्ति का पवित्र स्थान हैं। शिवाजी महाराज ने अपने धर्म के मंदिर, मूर्ति, धर्मग्रंथ, गाय (पवित्र पशु) रुढी, परंपरा का रक्षण और संवर्धन किया था। शिवाजी महाराज स्वधर्माभिमानी राजा थे।

मराठी : मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के स्वधर्माभिमानी स्वरुप का चित्रण किया हैं। शिवाजी महाराज का जन्म हिंदू धर्म में हुआ था। उन्होंने अपने धर्म के आचार, विचार, रुढी, परंपराओं प्रथाओं का पालन किया हैं। हिंदू धर्म के व्यक्ति ईश्वर पर श्रध्दा रखते हैं। शिवाजी महाराज की भवानी देवी और महादेव पर असिम श्रध्दा थी। शिवाजी महाराज व्यक्तिगत जीवन में हिंदू धर्म के आचरण का पालन करते थे। वे भवानी देवी और भगवान शिवजी के भक्त थे। स्वधर्म के प्रति उन्हें गर्व और अहंकार नहीं था। अफजल खाँ को मिलने जाने से पहले उन्होंने भवानी देवी, भगवान शिवजी का स्मरण कर माता जीजाबाई का आशीर्वाद लेते हैं। शिवाजी महाराज व्यक्तिगत जीवन में भवानी देवी, भगवान शिवजी, मातृ-पितृ भक्त थे। अफजल खाँ का वध करने के बाद प्रतापगड पर भवानी देवी की मूर्ति की स्थापना की थी। शिवाजी महाराज ने भगवान के मंदिर, मूर्ति, धर्मग्रंथ, वेद, रुढ़ी, परंपरा, गाय (पवित्र पशु) का रक्षण किया हैं। हिंदू धर्म में दान को पुण्य का साधन माना जाता है। शिवाजी महाराज ने अपने जीवन में अत्याधिक दान दिया था। शिवाजी महाराज को व्यक्तिगत जीवन में हिंदू धर्म के प्रति आस्था और अभिमान था।

मध्यकालीन हिंदी-मराठी के साहित्य में शिवाजी महाराज को धर्माभिमानी स्वरुप का चित्रण किया हैं। शिवाजी महाराज के स्वधर्माभिमानी वर्णन में दोनों भाषा के साहित्य में अत्याधिक समानता दिखाई देती है। शिवाजी महाराज को

श्रध्दा, भक्ति, रुढी, परंपरा का पालन करनेवाले राजा के रुप में दोनों भाषा साहित्य में चित्रित किया है।

४.२.१४. हिंदू धर्म रक्षक :

हिंदी : मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज को हिंदू रक्षक के रुप में चित्रित किया हैं। संपूर्ण भारत वर्ष में मुस्लिम सत्ता प्रस्थापित हो चुकी थी। कुछ मुस्लिम शासक धर्मांध होने के कारण वह हिंदू धर्म के लोगों के उपर अन्याय अत्याचार करते थे। शिवाजी महाराज ने हिंदूओं की मर्यादाओं, रुढी, परंपरा, संस्कृति, धर्म ग्रंथ, मंदिर, मूर्तियों का रक्षण किया हैं। राज्य में सभी हिंदू धर्म के लोग अपने धर्म के अनुसार अचरण करने लगे थे। आदिलशाह और मुगल बादशाह औरंगजेब शासक में हिंदू धर्म के प्रति अनुदार की भावना थी। शिवाजी महाराज धार्मिक स्वतंत्रता के पुरस्कर्ता थे। हिंदू धर्म के उपर अन्याय अत्याचार करनेवालों को उन्होंने दंडित किया था। महाराज के डर से हिंदू धर्म पर अन्याय करनेवाले तुर्क लोग समुद्र के पार भाग गये है। शिवाजी महाराज ने हिंदू धर्म के भक्ति और आचरण के मार्ग का रक्षण किया हैं। इस संदर्भ में भूषण लिखते है कि, "वेद राखे विदित पुराण राखे सारयुत। राम नाम राख्यो अति रसना सुघर में।"[२८] अर्थात शिवाजी महाराज ने हिंदू धर्म के वेद, पुराणों के मतों की पूरी रक्षा की हैं। हिंदू धर्म के हर घर में राम के नामस्मरण की स्वतंत्रता दी थी। हिंदू धर्म के लोगों को धार्मिक स्वतंत्रता मिल गयी थी। हिंदू धर्म के आचार, विचार श्रध्दास्थानों का शिवाजी महाराज ने रक्षण किया था। धर्म रक्षण कार्य करते समय अन्यधर्मो पर अन्याय, अत्याचार नहीं किया था।

मराठी : मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज को धर्म का रक्षण माना हैं। शिवाजी महाराज हिंदू धर्म के उपर होनेवाले अन्याय, अत्याचार, को बचपन से ही देख रहे थे। इस प्रकार के धार्मिक अत्याचार को देखकर उनके मन में क्रोध निर्माण हुआ था। बचपन में आदिलशाह को मिलने के लिए बीजापुर

जाते समय रास्तों में हिंदू धर्म के पवित्र पशु 'गाय' को कुछ लोगों के द्वारा काटते हुआ देखा था। इस प्रकार पवित्र पशु गाय को कटते हुए देखकर उनके मन क्रोध आता हैं। इस घटना पर वे प्रतिक्रिया देखे हुए कहते हैं कि, "आपन रस्त्यांनी जातां गोवध होतो पाहताच त्याचा शिरछेद करावा औसे वाटते."[२९] अर्थात आदिलशाह से मिलकर अपने घर आने पर वे माता जीजाबाई से कहते है कि, रास्ते से जाते समय मैंने पवित्र गाय को कटते हुए देखा था। उस क्षण मेरे मन में आया की उस गाय को मारनेवालों का वही शिरछेद कर दे। शिवाजी महाराज ने हिंदवी स्वराज्य की स्थापना की। अपने स्वराज्य में किसी भी धर्म के उपर किसी प्रकार का अन्याय, अत्याचार नहीं होने दिया। हिंदू धर्म के पवित्र ग्रंथ, मंदिर, मूर्ति, रुढी, परंपरा, संस्कृति का रक्षण किया है। शिवाजी महाराज ने 'प्रतापगड' पर भवानी के मूर्ति की प्रतिष्ठान की थी। हिंदू धर्म के लोगों को भक्ति, नामस्मरण, धार्मिक आचरण का पूर्ण अधिकार था। शिवाजी महाराज ने हिंदू धर्म में 'धर्मशुध्दिकरण' संस्कार की शुरुवात की थी। कुछ हिंदू धर्म के लोगों को जबरदस्ती मुस्लिम बनाया गया था। उन्हें हिंदू धर्म में पुनः लाने के लिए 'धर्म शुध्दिकरण' संस्कार शुरु किया था। शिवाजी महाराज ने हिंदू धर्म का रक्षण करते समय दूसरे धर्म के श्रध्दास्थानों को अपवित्र नहीं किया था। शिवाजी महाराज धर्म स्वातंत्रता के पुरस्कर्ता थे।

मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज को हिंदू धर्म के रक्षक के रुप में चित्रण किया हैं। दोनों भाषा के साहित्य में शिवाजी महाराज को हिंदू धर्म के आचार, विचार, श्रध्दा स्थानों का रक्षण करनेवाले राजा के रुप में प्रस्तुत किया है। दोनों भाषा साहित्य में शिवाजी महाराज को धार्मिक स्वातंत्र्यता के पुरस्कर्ता के रुप में चित्रण किया है। शिवाजी महाराज ने हिंदू धर्म का रक्षण करते हुए अन्य धर्म का द्वेष नहीं किया था। शिवाजी महाराज के धर्म रक्षक स्वरुप का दोनों भाषा साहित्य के वर्णन में अत्याधिक समता दिखाई देती है।

४.२.१५. वीर योध्दा :

हिंदी : मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज को वीर यौध्दा के रुप में चित्रित किया हैं। शिवाजी महाराज ने युध्द में अपनी वीरता दिखाई है। शिवाजी महाराज की वीरता से आदिलशाह, औरंगजेब, तुर्क, सिध्दी, अंग्रेज, हब्शि सभी शत्रु परिचित है। वे युध्द में कभी पीठ दिखाकर नहीं भागे। विपरित परिस्थितियों में भी शत्रुओं के सामने युध्द के लिए डटकर खडे रहें।

युध्द में शत्रुओं के वार से बचना कठीन था। उस समय में भी वह अपने सेना को पूरी शक्ति के साथ हल्ला करने का आदेश देते हैं। युध्द क्षेत्र में हमेशा उन्होंने वीरता दिखाई हैं। शत्रु पक्ष के शरणार्थी को अभयदान दिया था। औरंगजेब के वजीर, सरदारों को मारकर स्वराज्य से दिल्ली भगा दिया था। युध्द करने के लिए एक सच्चे वीर यौध्दा की तरह उनके चेहरे पर उत्साह झलकता हैं। शिवाजी महाराज निर्भय और साहसी वीर थे। युध्द में उन्होंने कभी अपनी प्राणों की परवाह नहीं की थी। शिवाजी महाराज की वीरता को देखकर राजा, सरदार, काबूल, कंधार के वीर भी डर कर भाग जाते है। औरंगजेब बादशाह ने सेना का नेतृत्व करते हुए शिवाजी महाराज के साथ आमने-सामने एक भी युध्द नहीं किया था। औरंगजेब भी शिवाजी महाराज की वीरता को पहचान चुका था। हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज के वीरता की तुलना, राम, इंद्र, भिम, अर्जुन, विष्णु, भगवान शिवजी जैसे श्रेष्ठ पौराणिक वीरों के साथ की हैं। रणभूमि में शिवाजी महाराज के वीरता की बराबरी कोई भी नहीं कर सकता। शिवाजी महाराज के वीरता की कहानियाँ शब्दों में वर्णित नहीं की जा सकती। शिवाजी महाराज के वीरता की अकथनिय कहानियाँ है। शिवाजी महाराज एक श्रेष्ठ वीर यौध्दा हैं।

मराठी : मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के श्रेष्ठ वीर यौध्दा का चित्रण किया है। शिवाजी महाराज रणभूमि में स्वयं अपनी वीरता को

प्रकट करते हैं। सेना को आदेश देनेवाले राजा नहीं बल्कि सेना के साथ भूमि युध्द में अपनी वीरता दिखाते थे। शिवाजी महाराज ने अनेक युध्द स्वयं युध्दभूमि में जाकर लडे थे। युध्दभूमि में पूरी शक्ति तैयारी के साथ उतरते थे। वे दैवी शक्ति के बजाय अपनी सामर्थ्यशक्ति पर विश्वास करते थे। उन्होंने कभी निर्बल, शरणार्थी, स्त्रियों के उपर अपने शस्त्र नहीं उठाये थे। शिवाजी महाराज युध्दभूमि में विपरीत परिस्थितियों में भी डर कर कभी नहीं भागे। बल्कि शत्रुओं का डटकर सामना किया था। वे शक्तिशाली शत्रु से कभी डरते नहीं थे। शिवाजी महाराज की वीरता से आदिलशाह और मुगल बादशाह औरंगजेब के सरदार मैदान छोडकर भाग गये थे। शिवाजी महाराज साहसी और निर्भयता के साथ युध्द भूमि में उतरते थे। उन्हें अपनी शक्ति और भुजाओं पर पूरा विश्वास था। इनके वीरता से शत्रु पक्ष की सेना, सरदार, राजा, भयभित रहती थी। शिवाजी महाराज एक श्रेष्ठ वीर यौध्दा हैं।

मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज श्रेष्ठ वीर यौध्दा के स्वरुप का चित्रण किया हैं। हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज की वीरता की तुलना पौराणिक श्रेष्ठ वीरों के साथ की है। हिंदी साहित्य की तुलना में मराठी साहित्य में पौराणिक वीरों के साथ तुलना कम मात्रा में की गयी हैं। जैसे अफजल को दुर्योधन और शाईस्ताखाँ को रावन कहकर शिवाजी महाराज को भीम और राम की वीरता से तुलना की है। दोनों भाषा के साहित्य में उनके श्रेष्ठ वीरों के गुणों की प्रशंसा की गयी हैं। शिवाजी महाराज के वीर यौध्दा के स्वरुप वर्णन में दोनों भाषा के साहित्य में अत्याधिक समानताएँ दिखाई देती है।

४.२.१६. पराक्रमी राजा :

हिंदी : मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज को पराक्रमी राजा के रुप में चित्रित किया हैं। शिवाजी महाराज स्वयं युध्दभूमि में युध्द करने के लिए जाते थे। शिवाजी महाराज ने युध्द में अनेक पराक्रम किये है। असंभव कार्ये

को संभव करके नये पराक्रम प्रस्थापित किये है। बारह हजार की सेना की फौज लेकर आदिलशाह का सरदार आफजल खाँ शिवाजी महाराज को मारने के उद्देश्य से आया था। शिवाजी महाराज ने आदिलशाह के बडे शक्तिशाली सरदार का प्रतापगड के नीचे वध किया था। मुगल बादशाह औरंगजेब ने शाईस्ता खां को एक लाख की सेना देकर स्वराज्य के उपर आक्रमण के लिए भेजा था। शिवाजी महाराज ने शाईसताखाँ को पुने के महल में घुसकर उसके उपर वार किया था। तलवार की वार से शाईस्ता खाँ की तीन उंगलियों को काट दिया था। शाईस्ता पुने छोडकर दिल्ली भाग गया। शिवाजी महाराज ने मुगलों का प्रमुख व्यापार केंद्र गुजरात के सुरत शहर पर दो बार आक्रमण किया। इस आक्रमण में मुगली सेना और उनके सरदारों को पराजित किया था। औरंगजेब के द्वारा शिवाजी महाराज को आगरा के दरबार में कैद किया जाता है। मुगल सम्राट औरंगजेब के कैद से पलायन करते हैं। औरंगजेब की कडी सुरक्षा के बावजूद दिन दहाडे सही सलामत स्वराज्य में आ जाते है। आगरा के कैद से निकलना यह कोई मामुली काम नहीं था। मराठा और मुगलों के बीच आमने-सामने पहला सबसे बडा युध्द सालहेरी में हुआ था। इस युध्द का स्वयं शिवाजी महाराज ने नेतृत्व कर मुगलों की सेना और सरदारों को परास्त किया था। शिवाजी महाराज के पराक्रम से डरकर आदिल और मुगल भयभित रहते थे। औरंगजेब अपने दक्षिन के सरदारों को हमेशा बदलते रहता था। शिवाजी महाराज ने आदिल, मुगल, कुतुबशाह, अंग्रेज, हब्शि, तुर्क, सिध्दी आदि शत्रुओं को परास्त किया था। शिवाजी महाराज एक पराक्रमी राजा थे। उनका पराक्रम इतिहास प्रसिध्द भी हैं। हिंदी साहित्य में उनके पराक्रम का वर्णन किया है।

मराठी : मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के पराक्रम का वर्णन किया गया है। आदिलशाह के सरदार अफजल खां का वध शिवाजी महाराज ने किया था। बारह हजार की सेना साथ में होने के बावजूद अफजल का वध कर उसकी सेना को पराजित किया था। उनके इस पराक्रम की चर्चा पूरे

भारत में हो गयी थी। मुगल बादशाह औरंगजेब ने शिवाजी महाराज के विरुध्द एक लाख की सेना के साथ शाईस्ता खाँ को भेजा था। शाईस्ता खाँ लाखों की सेना की फौज लेकर पुने के महल में रहने लगा था। शिवाजी महाराज ने रात में शाईस्ता खाँ के शयन कक्ष में जाकर उसके उपर तलवार से वार किया था। इस वार में शाईस्ता खाँ की तीन उँगलियाँ कट गयी थी। शाईस्ता खाँ भयभित होकर अपनी लाखों की सेना को लेकर दिल्ली वापस चला गया था। मुगलों का प्रमुख व्यापार केंद्र शिवाजी महाराज ने सुरत पर दो बार आक्रमण किया था। इस आक्रमण में मुगली सेना को बुरी तरह पराजित किया था। मुगल बादशाह औरंगजेब ने शिवाजी महाराज को आगरा दरबार में कैद कर लिया था। कैदखानें में को कडी सुरक्षा होने के बावजूद शिवाजी महाराज वहाँ से पलायन करते हैं। शिवाजी महाराज ने आदिलशाह और मुगलों के अनेक सरदारों को पराजित किया था। मराठा और मुगलों के बीच हुए सालहेरी युध्द में उनकी सेना ने युध्द में विजय प्राप्त की थी। शिवाजी महाराज ने आदिल, मुगलों के साथ-साथ कुतुबशाह, सिध्दी, तुर्क, अंग्रेज, हब्शियों को पराजित किया था। अपने जीवन के अंतिम कुछ सालों में बीजापुर का रक्षण किया। इस प्रकार अनेक पराक्रम शिवाजी महाराज ने स्वयं युध्द में जाकर किये थे।

मध्यकालीन मराठी-हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज के पराक्रमों का वर्णन समान रुप से किया हैं। दोनों साहित्य में अफजलखाँ वध, शाईस्ता खाँ पराजय, सुरत आक्रमण, आगरा कैद से पलायन, सालेहरी युध्द में पराक्रम, विदेशी सत्ताओं को पराजित करने का पराक्रम जेसे घटनाओं के द्वारा उनके पराक्रम का वर्णन किया है। दोनों भाषा के साहित्य में पराक्रम के वर्णन में अत्याधिक समानता है।

४.२.१७. पराक्रमी सेना नायक :

हिंदी : मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज को पराक्रमी सेना का नायक के रुप में चित्रित किया हैं। शिवाजी महाराज स्वयं पराक्रमी होने से उनकी सेना में भी पराक्रम के लिए नयी उर्जा, प्रेरणा निर्माण होती थी। शिवाजी महाराज के पास चार प्रकार की सेना थी। उनके चतुरंगी सेना में पैदल, हाथी, घोडे और नौदल (नौसेना दल) शामिल थे। चतुरंगी सेना के सेना नायक शिवाजी महाराज थे। शिवाजी महाराज की आज्ञा से सेना ने रात के अंधेरे में भी अपना पराक्रम दिखाया था। रात के अंधेरे में सेनाओं ने अनेक युध्द जीत लिए थे। औरंगजेब आदिल अन्य शत्रु की सेना और सरदार शिवाजी महाराज की सेना से हार कर भाग जाते थे। शत्रु सभी शिवाजी की सेना से भयभित रहते थे। पैदल, घोड दल, हत्ती दल के साथ-साथ नौदल सेना ने भी अपना समुद्र पर पराक्रम दिखाया था। भूषण कहते हैं कि, "भूषण भनत फराँसीस अँगरेज मारि हबसी फिरंगी मारे उलटि जहाज हैं।"[३०] अर्थात भूषण कवि कहते है कि, समुद्र पर नौसेना दल ने अंग्रेज, फ्रान्स, हब्शि, फिरंगी के जहाजों को उलट दिया था। शिवाजी महाराज के भारतीय नौसेना दल का जनक कहाँ जाता है। भारत का पहला राजा था, जिन्होंने समुद्र पर अपना सत्ता स्थापित की थी। शिवाजी महाराज की चतुरंगी सेना के पराक्रम का वर्णन हिंदी साहित्य में किया गया हैं। शिवाजी महाराज पराक्रमी चतुरंगी सेना के नायक थे।

मराठी : सेना की जीत राजा की जीत और सेना की हार राजा की हार होती हैं। शिवाजी महाराज की सेनाओं ने शत्रुओं को हराकर अनेक पराक्रम किए हैं। शिवाजी महाराज ने चार प्रकार की सेनाओं का निर्माण किया था। उनके चतुरंगी सेना में पैदल, घोड दल, हत्ती दल, और नौदल की सेना थी। युध्द में चतुरंगी सेनाओं का उपयोग समय, काल, परिस्थिति के अनुसार किया जाता था। चारों प्रकार की सेनाओं ने अनेक पराक्रम किये हैं। उनके सेनाओं को 'मराठा

सेना।' कहा जाता था। सरदार तानाजी मालुसरे कोंढाना किले को जीतने के लिए एक रात केवल ५० सेनाओं को साथ में लेकर अपना पराक्रम दिखाया था। सुबह होने तक १८०० पठानों के किलेदार उदयभान को भी मृत्यु के घाट उतारकर किले को जीत लिया था। मराठा और मुगलों के बीच सालहेरी में भंयकर युध्द हुआ। सालहेरी में मराठा सेनाओं ने अपना पराक्रम दिखाकर विजय प्राप्त की थी। अफजल खाँ के वध के बाद मराठा सेनाओं ने उसके बारा हजार की सेना को पराजित किया था। शिवाजी महाराज ने मुगल सत्ता का प्रमुख व्यापार का केंद्र गुजरात के सुरत शहर पर दो बार आक्रमण किया था। नौसेना दल ने समुद्र पर सत्ता प्रस्थापित की थी। समुद्र सत्ता के प्रमुख शत्रु सिध्दी, दर्यासारंग, अंग्रेज, हब्शि, फ्रेंच, पोर्तुगज को हराने का पराक्रम सेनाओं ने किया था। शिवाजी महाराज पराक्रमी सेना, सरदारों के प्रमुख नायक थे।

मध्यकालीन हिंदी-मराठी के साहित्य में शिवाजी महाराज को सेना नायक के रुप में वर्णित किया हैं। उनकी मराठा सेनाओं ने लगभग सभी शत्रुओं को पराजित करने का पराक्रम किया था। दोनों भाषा के साहित्य में शिवाजी महाराज की पराक्रमी सेना और शिवाजी महाराज को पराक्रमी सेना नायक के रुप में चित्रित किया हैं। दोनों भाषा साहित्य में पराक्रमी सेना नायक के वर्णन में अत्याधिक समानता दिखाई देती हैं। दोनों भाषाओं में अत्याधिक समान घटना प्रसंग के आधार पर सेनाओं का पराक्रम वर्णन प्रकट किया हैं।

४.२.१८. शत्रु पक्ष पर धाक :

हिंदी : मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज की शत्रु पक्ष पर अत्याधिक धाक (भय) का वर्णन किया है। शिवाजी महाराज की आदिलशाह, औरंगजेब बादशाह, कुतुबशाह, अंग्रेज, पुर्तूगीज, फिरंगी, सिध्दी, हब्शि आदि शासकों पर धाक थी। आदिलशाह अफजल खाँ वध के बाद भयभित होकर शिवाजी महाराज के सामने संधि का प्रस्ताव रखता है। औरंगजेब बादशाह अपने

दरबार में शिवाजी महाराज को मिलने के लिए अपने आस-पास स्वामिभक्त सरदार और सेना को खडे करता है। शिवाजी महाराज को मिलते समय दरबार में निहत्थे बुलाता हैं। शिवाजी महाराज को दरबारी नियमों को तोडने के कारण कैद करते हैं। शिवाजी महाराज कैद से पलायन करते हैं। यह समाचार औरंगजेब सुनकर रात दिन भयभित रहता हैं। उस समय औरंगजेब की मनोदशा का वर्णन करते हुए भूषण कहते हैं कि, "चकित चकत्ता चौंकि चौंकि उठे बार बार। दिल्ली दहसति चितै चाह करषति है।"[३१] अर्थात चकता (औरंगजेब) शिवाजी महाराज के डर से सपने में बार-बार चौंककर उठता हैं। दिल्ली के सभी निवासी भयभित हो चुके हैं। औरंगजेब की सब सरदार, सेना भयभित दिखाई देती हैं। सरदार बजिर शिवाजी महाराज के साथ युध्द न करने का बहाना बनाते हैं। शत्रु पक्ष के किलेदार अपने किले के द्वार दिन में कभी-कभी खोलते हैं। देश के चारों भागों में शिवाजी महाराज की धाक बनी हुई हैं। फिरंगी, हब्शियों के रात की निंद उड चुकी हैं। शत्रु स्त्री अपने पति को शिवाजी महाराज से डरा हुआ देखकर शत्रु पक्ष की सेना, सरदारों की पत्नीयाँ भी भयभित होती हैं। हिंदी साहित्य में कवि भूषण ने शत्रु स्त्री को अत्याधिक भयभित दिखाया हैं। शत्रु स्त्री के आतंकीत वर्णन में भूषण कविने अतिश्योक्ति और कल्पना का सहारा लिया हैं। अतः शिवाजी महाराज की सभी शत्रुओं पर धाक थी। मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शत्रु पक्ष के उपर शिवाजी महाराज के धाक का वर्णन किया गया है।

मराठी : मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज का शत्रु पक्ष के उपर अत्याधिक धाक का वर्णन किया हैं। भारत के देशी-विदेशी शासकों के उपर शिवाजी महाराज का धाक (भय) था। अफजल खाँ वध के बाद आदिलशाही भयभित हों चुकी थी। इस संदर्भ में 'सप्तप्रकरणात्मक चरित्र' में लिखा है कि, "खान बुडविल्यावरुन सर्वासही दहशत ऐंसे जालें. यास उपाय काय करावा? या उपरि कांही ठीक दिसत नाही."[३२] अर्थात शिवाजी महाराज ने आदिलशाही सरदार अफजल खाँ के मारने के बाद आदिलशाही भयभित हो गयी थी। शिवाजी

महाराज के सामने उनके पास कोई उपाय नहीं रहा था। अत: आदिलशाही ने शिवाजी महाराज के साथ संधि कर ली थी। औरंगजेब बादशाह ने शिवाजी महाराज को आगरा के दरबार में कैद कर लिया था। शिवाजी महाराज अचानक कैदखाने से पलायन होने का समाचार औरंगजेब तक पहुँचा था। शिवाजी महाराज से भयभित होकर औरंगजेब रात-दिन पलंग पर बैठकर रहता था। शिवाजी महाराज के धाक के कारण वह पलंग के नीचे तक नहीं उतरता था। औरंगजेब के सरदार, किलेदार, सभी भयभित हो चुके थे। भागानगर का कुतुबशाह, पोर्तुगज, अंग्रेज, हब्शि, सिध्दी, फिरंगी इन सभी पर शिवाजी महाराज की धाक थी। इन शत्रुओं से शिवाजी महाराज कर (सालान लगान) वसुल करते थे। अत: सभी देशी विदेशी शासकों पर शिवाजी महाराज की अत्याधिक धाक निर्माण हो चुकी थी।

मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज का शत्रु पर धाक का वर्णन किया हैं। दोनों साहित्य में शत्रु पक्ष के धाक वर्णन में अत्याधिक समानता दिखाई देती हैं। दोनों साहित्य में आदिलशाह, मुगल बादशाह, उनके सरदार, वजीर, सेना, कुतुबशाह, अंग्रेज, पोर्तुगज, फ्रेंच, हब्शि, सिध्दी आदि पर धाक (डर, भय) का वर्णन किया हैं। मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शत्रु स्त्री को शिवाजी से अत्याधिक भयभित दिखाया गया हैं। मराठी साहित्य में इस प्रकार का वर्णन नहीं किया हैं। हिंदी में शत्रु स्त्री के भय वर्णन में अत्याधिक अतिश्योक्ति और कल्पना का सहारा लिया है। अंत : दोनों साहित्य में शिवाजी महाराज के शत्रु पक्ष पर धाक वर्णन किया गया हैं।

४.२.१९. दयावीर :

हिंदी : मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज के दया के भाव का वर्णन किया है। शिवाजी महाराज दयावान और दया के सागर हैं। वे दीन, दलित, गरीब, शोषित, पीड़ितों के साथ-साथ शत्रुओं पर भी दया का भाव रखते

हैं। कोई शत्रु दया की याचना करता है तो उसे अभयदान देते हैं। शुरवीरों को दया सुशोभित करती हैं। शिवाजी महाराज शुर वीर राजा थे। उन्हें दया का भाव सुशोभित करता हैं। शिवाजी महाराज मानवता धर्म का पालन करते थे। मानवता धर्म में मनुष्य, पशु, पंछी, प्राणियों के प्रति दया का भाव रखते हैं। शिवाजी महाराज ने अनेक शत्रु के किलेदारों को धर्म के नाम पर दया दिखाकर छोड दिया था। औरंगजेब बादशाह के कितने ही सरदारों, सेनापती और वजीरों को युध्द में शरण आने पर उनके उपर दया दिखाई हैं। कवि भूषण कहते है कि, "रावरे वजीर छोरि देत करि परजा।"[३३] अर्थात बादशाह के वजीर, सेनापती, सरदारों को युध्द में शरण आने पर उन्हें प्रजा के भाँति दया दिखाकर छोड देते थे। शिवाजी महाराज ने मोहकमसिंह, इखलास खाँ को युध्द में शरण आने पर उनके उपर दया दिखाई थी। मध्यकालन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज को दयावीर के रुप में वर्णित किया हैं।

मराठी : विद्या विनय के कारण शोभा पाती हैं, इसी प्रकार शौर्य, वीरता परक्रम दया भाव के कारण शोभा पाता हैं। शिवाजी महाराज सभी प्रजा के प्रति दया का भाव रखते हैं। शिवाजी महाराज दया के सागर हैं। शिवाजी महाराज प्रजा, सेना, सरदार, के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए उनके प्रति दयाभाव रखते हैं। शत्रुओं के उपर भी उन्होंने दया का भाव रखा था। अफजल खाँ वध के बाद अपने सेनाओं की आदेश देते हैं कि, "फिरंग ठेवी त्याला जाउद्या, त्याला। राखु नका तुम्ही उगारल्या पाइकाला।"[३४]

अर्थात जो सैनिक अपनी तलवार जमिन पर रखकर शरण आते हैं तो उसके उपर दया कर उसे छोड देना। कोई आपके उपर तलवार उठाने का प्रयास करें तो उसकी रक्षा न कर उसे मार देना। शत्रु पक्ष के सेना, सरदार, किलेदार अगर शरण में आते है, तो उसके उपर दया का भाव रखते है। सरदार तानाजी मालुसरे कोंढाना किले पर शहिद हुआ था। शिवाजी महाराज ने उसके

घर जाकर संवेदना दिखाते हुए दया का भाव प्रकट किया हैं। शिवाजी महाराज ने युध्दभूमि में भी अपनी दया भाव को प्रकट किया हैं।

मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के दया भाव का वर्णन किया हैं। दोनों भाषा के साहित्य में शिवाजी महाराज के दया वीरता का समान रुप से वर्णन किया गया हैं। दोनों भाषा के दयावीरता के वर्णन में अत्याधिक समानता दिखाई देती हैं।

४.२.२०. दानवीर :

हिंदी : मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज के दानी रुप का वर्णन किया हैं। शिवाजी महाराज का दान निस्वार्थ और भेदभाव रहित था। शिवाजी महाराज के द्वार से कोई खाली हाथ नहीं जाता था। उनके द्वार पर हमेशा दान के नगाडें बजते हैं। गरीब, भिक्षुक की हमेशा उनके द्वार पर भीड रहती थी। शिवाजी महाराज 'महादानी' है। उनके द्वार पर याचक चांदी की अपेक्षा लेकर आता तो उन्हें सोने का दान मिलता हैं। घोडे की अपेक्षा रखनेवालों की हाथी दान में मिलता हैं। याचक को उसकी इच्छा से बढकर दान मिल जाता था। शिवाजी महाराज के दान को देखकर लोग महादानी बली राजा, वेणु और राजा भोज के नाम को भूल गये थे। शिवाजी महाराज ने अपने राज दरबारी संस्कृत, हिंदी, मराठी कवियों को भी दान दिये हैं। शिवाजी महाराज सगुन और निर्गुन दोनों के समान रुप से दान देते हैं। उनका दान बीना घमंड और अहंकार से रहित था। शिवाजी महाराज के दानी रुप वर्णन में कहीं-कहीं अत्याधिक अतिशयोक्ति दिखाई देती है। अतिश्योक्तिपूर्ण वर्णन करते हुए कवि भूषण कहते हैं कि,

"तप करि-करि कमलापति सो माँगत यों,

लोग सब करि मनोरथ ऐसे साज के,

बैपारी जहाज के न राजा भारी राज को,

भिखारी हमैं किजै महाराज सिवराज के।"[३५]

अर्थात लोग भगवान विष्णु की तपस्या करते हैं। भगवान विष्णु (कमलापति) को अपनी इच्छा प्रकट करते हैं। भगवान विष्णु को वरदान में किसी जहाज का व्यापारी या बडे राज्य का राजा भी बनने की इच्छा नहीं रखते हैं। वह लोग तो शिवाजी महाराज के दरबार का भिक्षुक बनने की इच्छा प्रकट करते हैं। इस दानी रुप के वर्णन में अतिश्योक्ति दिखाई देती हैं। साहित्य में साहित्यकार के द्वारा कहीं-कहीं कल्पना और अतिश्योक्ति पूर्ण वर्णन प्रस्तुत करना स्वाभाविक हैं। शिवाजी महाराज का दानी रुप इतिहास सम्मत भी हैं। उन्होंने अनेक प्रसंग पर अत्याधिक दान दिया था। शिवाजी महाराज ने राज्यभिषक प्रसंग पर अत्याधिक दान दिया था। यह घटना शिवाजी महाराज के दानवीरता का ऐतिहासिक प्रमाण हैं। अनेक शत्रुओं को उनके सेना, सरदारों को जीवन दान दिया था। अतः हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज के दानवीर रुप का वर्णन किया है।

मराठी : श्रेष्ठ दानी वहीं होता है जो निस्वार्थ रुप से भेदभाव रहित दान करें। शिवाजी महाराज ने स्वराज्य के सभी दीन, दलित, पीडित, किसान, दुर्बल, शोषितों को दान दिया हैं। अफजल खाँ वध के बाद अपने घायल सेनाओं को हर संभव मदत के रुप में दान दिया था। संभाजी महाराज को काशी शहर से स्वराज्य में सही सलामत लानेवाले पंत बंधुओं को अत्याधिक दान दिया था। शिवाजी महाराज ने राजदरबारी संस्कृत, हिंदी, मराठी के कवियों को भी दान दिया था। मराठी के शाहिर अज्ञानदास, तुळसीदास ने स्वयं अपने पोवाडे में इस का वर्णन किया है। शाहिर तुळसीदास स्वंय लिखते है कि, "शिवाजी महाराजांचा। पोवाडा कटिबंध केला।। हजार रुपयाचा तोडा। हातामधीं घातला त्या रे तुळशीदास शाहीराच्या।।"[३६]

अर्थात शाहिर तुळसीदास ने स्वयं लिखा है कि, उन्होंने शिवाजी महाराज के आदेश पर पोवाडा लिखा हैं। शिवाजी महाराज ने स्वयं अपने हाथों से शाहिर तुळशीदास के हाथ में एक हजार रुपये का कंगन हात में पहनाया था। शिवाजी महाराज ने राजदरबारी कवियों को समय-समय पर विशेष दान दिया था। शिवाजी महाराज ने अत्याधिक दान राज्यभिषक प्रसंग में किया था। राज्यभिषक के समय सभी जाति, धर्म, पंथ, पंडित, विद्वान, ब्राह्मण, गोसाई, जटाधारी, सन्यासी, योगी आदि को वस्त्र, अलंकार, द्रव्य (अन्नदान) आदि का अत्याधिक दान किया था। शिवाजी महाराज की दानशुरता इतिहास प्रसिध्द हैं। उन्होंने शत्रुओं की सेना, सरदारों को युध्द में जीवनदान भी दिया था। मुगलों के सरदार लोदी खान, हुसेन खाँ, मोहकमसिंह, सावित्रीबाई (रायबागीन) को जीवनदान दिया था। अत: शिवाजी महाराज श्रेष्ठ दानवीर राजा थे।

मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के दानवीर स्वरुप का चित्रण किया हैं। दोनों भाषा के साहित्य में दानवीर रुप के वर्णन में अत्याधिक समानता हैं। हिंदी साहित्य में मराठी साहित्य की तुलना में दानवीरता के रुप वर्णन में कहीं-कहीं अतिश्योक्ति पायी जाती हैं। फिर भी शिवाजी महाराज की दानवीरता इतिहास प्रसिध्द हैं। उनका दान भेदभाव से रहित दान था। उनके राजदरबार में कवियों को भी दान मिलता था। दोनों भाषा के साहित्य में दानवीरता का वर्णित किया गया है। दोनों भाषा साहित्य में शिवाजी महाराज के दानी रुप के वर्णन में अत्याधिक समानता हैं।

४.२.२१. वैभव संपन्न राजा :

हिंदी : मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज के वैभव संपन्नता का चित्रण किया है। शिवाजी महाराज के राज्य में सभी प्रजा सुखी और धन संपन्न है। शिवाजी महाराज के साथ-साथ उनके नोकर, सरदार भी वैभव संपन्न हैं। शिवाजी महाराज के वैभव को देखकर भगवान कुबेर भी शरमाता हैं। शिवाजी

महाराज के राज्य की राजधानी रायगढ की वैभव संपन्नता को देखकर यक्ष, किन्नर, गंधर्व, सुर, असुर यहाँ रहने की इच्छा व्यक्त करते हैं। रायगढ की शोभा को देखकर मानों देव स्वयं यहाँ आकर रहना चाहते थे। रायगढ के महालों पर मोतियों की झालरें दिखाई देती हैं। स्वराज्य के उँचे-उँचे किले भी शिवाजी महाराज के वैभव संपन्नता को प्रकट करते हैं। उनके पहाडी किलों से अनेक नदी नाले प्रवाहित हो रहे है। शिवाजी महाराज की वैभव संपन्नता देवराज इंद्र से कई गुना बढी हैं। इंद्र के पास केवल एक हाथी और एक घोडा था। शिवाजी महाराज के पास लाखों घोडे और हजारों हाथी हैं। शिवाजी महाराज के हाथी, घोडे और शेकडों जहाज, आरमार, उनके सैन्य शक्ति के वैभव संपन्नता को अत्याधिक सुशोभित करते है। शिवाजी महाराज की वैभव-संपन्नता को देखकर शत्रु आश्चर्यचकित होते हैं। शिवाजी महाराज अपनी वैभव संपन्नता के उपर बिल्कुल घमंड नहीं करते हैं। शिवाजी महाराज वैभव संपन्न राजा थे। हिंदी साहित्य में उनकी वैभवसंपन्नता को दर्शाने के लिए पौराणिक राजा इंद्र और कुबेर के धन संपत्ती के साथ तुलना की हैं। इंद्र और कुबेर से भी अधिक वैभव संपन्नता शिवाजी महाराज की थी। शिवाजी महाराज को अत्याधिक वैभव संपन्न राजा के रुप का वर्णन करते समय कहीं-कहीं अतिश्योक्ति का प्रयोग हिंदी साहित्य में किया गया है।

मराठी : मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज की वैभव संपन्नता का वर्णन किया हैं। दानवीर वही होता है, जो स्वयं वैभव संपन्न हो। शिवाजी महाराज दानवीर राजा थे। उनके स्वराज्य की प्रजा, सरदार, सेना, सभी धनसंपन्न थे। शिवाजी महाराज की वैभव संपन्नता को देखकर आदिलशाह का सरदार अफजल खाँ अचंभित हुआ था। अफजल खां को मिलने के लिए शिवाजी महाराज ने अत्यंत सुशोभित शामियाने (मंडप) की व्यवस्था की थी। अफजल खां इस शामियाने को देखकर आदिलशाह और बादशाह के वैभव संपन्न की तुलना करता हैं। आदिलशाह और बादशाह औरंगजेब के पास भी इतने सोने, चांदी,

हिरे और मुल्यवान अभूषणों से बना हुआ शाही शामियाना भी नहीं था। शिवाजी महाराज के राज्यभिषक का राजसिंहासन ३२ मन के सोने से बनाया गया था। राजसिंहासन के स्तभों को हिरे, मोतियों से सुसज्जित किया गया था। शिवाजी महाराज के दुर्ग और किले स्वराज्य का राजवैभव हैं। शिवाजी महाराज के पास लाखों घोडे, हजारों हाथी, अठरा कारखाने, बारा महल, सोने-नाणी, हिरे मोती, नगद रुपये, जहाजे, अरमान आदि उनके स्वराज्य का वैभव हैं। शिवाजी महाराज का राज्य विस्तृत प्रदेश में फैला हुआ था। शिवकालीन संत रामदास स्वामी भी शिवाजी महाराज के राजवैभव का वर्णन करते हैं। अतः शिवाजी महाराज वैभव संपन्न राजा थे।

मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज को वैभवसंपन्न राजा के रुप में वर्णित किया हैं। दोनों भाषा के साहित्य में सुखी, संपन्न, प्रजा, सरदार, सुशोभीत रायगढ, उँचे-उँचे किले, घोडे, हाथी, जहाज, आरमार, हिरे, जवाहरात आदि की वैभव संपन्नता को समान रुप से वर्णित किया हैं। हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज के वैभव की तुलना करते हुए अतिश्योक्ति, अलंकारिकता, काल्पनिकता दिखाई देती हैं। हिंदी साहित्य की तुलना में मराठी साहित्य का वैभव वर्णन ऐतिहासिक वर्णन के अधिक निकट दिखाई देता है। हिंदी साहित्य का वैभव वर्णन पुर्णतः काल्पनिक भी नहीं कहाँ जा सकता। अतः दोनों भाषाओं के साहित्य में शिवाजी महाराज के वैभव वर्णन में अत्याधिक समानता दिखाई देती हैं।

४.२.२२. अवतारी पुरुष :

हिंदी : मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज को अवतारी पुरुष के रुप में वर्णित किया हैं। समाज और साहित्य की धारणा यह थी की पराक्रमी, वीर राजा में ईश्वर का अंश रहता हैं। भगवान विष्णू ने पृथ्वी का पालन करने के लिए नर रुप लेकर शिवाजी महाराज के रुप में जन्म हुआ है। शिवाजी महाराज

भगवान विष्णु के स्वभाव की तरह सभी कार्य कर रहे हैं। भूषण कवि लिखता हैं कि, "तू हरि को अवतार सिवा नृप काज सँवारै सबै हरि वारे।।"[३७] अर्थात भगवान विष्णु का अवतार लेकर उन्हीं के समान पृथ्वी रक्षण का कार्य शिवाजी महाराज कर रहे हैं। अन्याय, अत्याचारी लोगों को मारकर पृथ्वी का रक्षण करते हैं। जिस प्रकार राम ने अत्याचारी राक्षसों का वध किया, उसी प्रकार राम का अवतार लेकर शिवाजी महाराज म्लेच्छा (राक्षसों) का मर्दन कर रहे हैं। हिंदी कवियों ने शिवाजी महाराज को उनके कार्य और गुणों के आधार पर अलग-अलग पौराणिक वीर और विष्णु के ही अवतार माना हैं। उनके दानी रुप को देखकर कवियों ने उन्हें कर्ण का अवतार माना हैं। शिवाजी महाराज को धनुष्यधारण करनेवाले अर्जुन, पृथ्वी को धारणा करनेवाले शेषनाग, नृसिंह आदि का अवतार मानते हैं। मुगल, आदिल, कुतुबशाह भी शिवाजी महाराज को देव कहते हैं। अत: शिवाजी महाराज को प्रमुख रुप से भगवान विष्णु के अवातार के रुप में चित्रण किया हैं।

मराठी : मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज को भगवान 'शिवाजी' का अवतार माना गया हैं। भारतीय समाज और साहित्य में असंभव कार्य और पराक्रम करनेवाले असामान्य मनुष्य को ईश्वरीय अवतार माना जाता हैं। शिवाजी महाराज को मध्यकालीन मराठी साहित्य में भगवान 'शिवजी' का अवतार मानते हुए सभासद लिखते हैं कि, "जिजाई आऊ तिचे पोटीं राजश्री शिवाजी राजें पुत्र होतांच श्री शंभु महादेव जागृत येऊन स्वप्न जालें की 'आपणच अवतरलों' आहे."[३८] अर्थात माता जीजाबाई के पेट से पुत्र शिवाजी राजे का जन्म हुआ। जीजामाता के सपने में भगवान शंभू महादेव जागृत होकर स्वयं जन्म लेकर अवतरीत होने की बात कहते हैं। मध्यकालीन जीवनियों में शिवाजी महाराज को भीम और अफजल खाँ को दुर्योधन माना है। शिवाजी महाराज ने अफजल खाँ के सामने शक्तिशाली भीम की तरह पराक्रम दिखाया था। शाईस्ता खाँ लाखों सेना की फौज लेकर शक्तिशाली रावन की तरह स्वराज्य पर आक्रमण करने के लिये आया था। शिवाजी महाराज की कम सेना शक्ति होने

पर भी भगवान राम की तरह रावन रुपी शाईस्ता खाँ को पराजित किया था। मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज को भगवान 'शिवजी' का अवतार मानते हैं। उनके पराक्रम के कारण उन्हें शक्तिशाली भीम, राम आदि का अवतार मानते हैं।

मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज को ईश्वर का अवतार माना गया है। भगवान ने स्वयं शिवाजी महाराज का नर रुप धारण कर पृथ्वी पर धर्म की रक्षा की हैं। अन्यायी, अत्याचारी राक्षस रुपी शत्रु का वध किया हैं। हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज को भगवान 'विष्णु' का अवतार माना हैं। उनके गुण और कार्य के अनुसार उन्हें नृसिंह, कर्ण, अर्जुन, राम, पृथ्वी को धारण करनेवाले शेष नाग आदि पौराणिक वीरों का भी अवतार माना है। मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज को भगवान 'शिवजी' ने नर रुप में जीजाबाई के पेट से जन्म लिया है। भगवान शिवजी की तरह उन्होंने राक्षस (म्लेछो, शत्रु) को मारा गिराया हैं। उनकी शक्ति और पराक्रम आदि गुणों को देखकर उन्हें भीम, राम के रुप में भी वर्णित किया है। हिंदी साहित्य में पृथ्वी का रक्षण और पालन करनेवाले विष्णु का अवतार का वर्णन किया हैं। मराठी साहित्य में म्लेच्छ (राक्षस) का संहार करनेवाले भगवान 'शिवजी' का अवतार माना है।

अंत : शिवाजी महाराज को दोनों भाषा के साहित्यकारों ने ईश्वर (भगवान) का अवतार माना हैं। शिवाजी महाराज के ईश्वरीय अवतार रुप का दोनों साहित्यकारों ने वर्णन किया हैं।

४.२.२३. कीर्ति और यशवंत राजा :

हिंदी : मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज के यश और कीर्ति का वर्णन किया हैं। आदिलशाह के सरदार अफजल खां को मारकर देश में सर्वत्र उनकी कीर्ति पहुँच गयी थी। कवि भूषण कीर्ति वर्णन के संदर्भ में लिखते है, "यों तम तोमहि चाबि के चंद चहूँ दिसी चाँदनि चारु पसारी ज्यों अफजल्लहि

मारि मही पर कीरति श्री सिवराज बगारी।।"[३९] अर्थात जिस प्रकार चाँद आकाश में चारों दिशाओं के अंधकार को मीटाकर सुंदर चाँदनी का प्रकाश फैलाता हैं। उसी प्रकार शिवाजी महाराज ने अफजल खाँ का वध कर पूरे भारत के चारों दिशाओं में अपनी कीर्ति को फैलायी हैं। उनके द्वारा किये गये असामान्य पराक्रम की कीर्ति देश विदेशों में चुकी हैं। शिवाजी महाराज ने कठिन से कठिन और असंभव कार्य को पूरा करके यश प्राप्त किया हैं। शाईस्ता और आगरा दरबार से पलायन कर अदभूत यश प्राप्त किया था। शिवाजी महाराज का यश पवित्र और शुध्द हैं। भूषण कवि ने उनके यश की तुलना हंस, चंदन, कर्पुर की शुध्दता और पवित्रता से की गयी हैं। उनका यश निष्कलंक और दोषरहित हैं। शिवाजी महाराज के कीर्ति और यश का वर्णन मध्यकालीन हिंदी के साहित्य में किया हैं।

मराठी : मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के यश और कीर्ति का वर्णन किया हैं। विपरित परिस्थितियों में पराक्रम दिखाकर असंभव कार्य को संभव कर देश और विदेशों में अपनी कीर्ति फैलाई है। अदिलशाह के शक्तिशाली सरदार अफजल खाँ का वध किया था। इस असंभव और कठिन कार्य को पुरा करने के बाद उनकी कीर्ति देश के चारों दिशाओं में फैल गयी थी। शाईसताखाँ पर छापा और आगरा दरबार से पलायन करने के असंभव कार्य को पूरा करने पर देश विदेशों में उनकी कीर्ति हो चुकी थी। शिवाजी महाराज कर्नाटक जाते समय कुतुबशाह को मिलने गये थे। भागानगर के लोग कीर्तिवान शिवाजी महाराज के देखने के लिए रास्ते पर खडे थे। कुतुबशाह के भागानगर शहर के लोग शिवाजी महाराज की कीर्ति सुनकर देखने के लिए खडे रहे थे। रामदास स्वामी ने भी शिवाजी महाराज को यशवंत और कीर्तिवंत कहाँ था। मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के कीर्ति और यश का वर्णन किया है।

मध्यकालीन हिंदी-मराठी के साहित्यकारों ने शिवाजी महाराज के कीर्ति और यश का वर्णन किया है। दोनों साहित्य में शिवाजी महाराज की कीर्ति और यश को देश-विदेशों तक पहुँचने का वर्णन किया है। शिवाजी महाराज ने अपने अद्‌भूत पराक्रम से यश प्राप्त किया था। हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज के यश को दोषरहित शुध्द पवित्र और निर्मल चाँदनी की तरह माना हैं। मराठी साहित्य में भी उनके यश की तुलना पौराणिक वीर पुरुषों के यश के साथ की गयी हैं। दोनों भाषा के साहित्य में शिवाजी महाराज के कीर्ति और यश के वर्णन में अत्याधिक समानता दिखाई देती हैं।

४.२.२४. दूरदर्शिता :

हिंदी : मध्यकालीन हिंदी भाषा के साहित्य में शिवाजी महाराज के दुरदर्शिता गुणों का वर्णन किया है। शिवाजी महाराज राज्य के हित में निर्णय लेते समय वर्तमान, भूत, भविष्य के बारें में सोचते थे। उन्होंने अपने निर्णय से दूरदर्शिता का परिचय दिया हैं। अफजल खाँ को मिलने जाते समय उसके अंतर्मन को समझकर युध्द की भी तैयारी कर ली थी। बहलोल खां युध्द की तैयारी कर रहा था। शिवाजी महाराज ने युध्द शुरु करने से पहले ही सेनापति प्रतापराव को आक्रमण करने का आदेश देकर उसे पराजित करते हैं। शिवाजी महाराज के पिता शहाजी राजे को आदिलशाह ने कैद कर लिया था। शिवाजी महाराज को पता था की, आदिलशाह को मिलने गये तो स्वयं भी कैद हो सकते थे। शिवाजी महाराज ने मुगलों से संधि कर आदिलशाह पर दबाव डालकर पिता शहाजी राजे को कैद से छुडाया। वह अपने दूरदृष्टि के कारण ही शत्रु के साथ संधि करते थे। शिवाजी महाराज ने अपने दुरद्रष्टि से किलों का निर्माण और पुनर निर्माण किया था। शत्रु से स्वराज्य को सुरक्षित रखने के लिए किल्ले और दुर्ग का निर्माण करना अत्यावश्यक था। शिवाजी महाराज ने स्वराज्य की सुरक्षा के लिए अनेक किलों और दुर्ग का निर्माण किया था। उन्होंने जमिनदारी और

वतनदारी को बंद करने का निर्णय लिया था। उनके अधिकारों पर पाबंदी लाने पर स्वराज्य की जनता शोषण मुक्त हो गयी थी। शिवाजी महाराज ने समुद्र शासकों के धोखे को पहचान लिया था। उन्होंने समुद्र के भागों में दुर्ग का निर्माण किया था। समुद्र के तटवर्ती भागों पर विदेशी सत्ता का विस्तार न हो इसलिए उन्होंने स्वतंत्र नौसेना का निर्माण किया था। शिवाजी महाराज को भारतीय नौसेना के जनक माना जाता है। शिवाजी महाराज के द्वारा गये अत्याधिक निर्णय उनके दूरदर्शिता को स्पष्ट करते हैं। मध्यकालीन हिंदी साहित्य में उनके दूरदर्शिता का वर्णन किया गया है।

मराठी : मध्यकालीन अधिकांश देशी राजा केवल अपने छोटे से राज्य को ही देश समझते थे। वे राजा अपने ऐश्वर्य संपन्न दरबारी जीवन में ही अपनी धन्यता मानते हैं। इस काल में दुरदर्शिता, व्यापक राष्ट्रियता की सोंच रखनेवाले राष्ट्र निर्माता शिवाजी महाराज का जन्म हुआ था। शिवाजी महाराज के दूरदर्शि निर्णय प्रजा के हित का रक्षण करनेवाले थे। शिवाजी महाराज ने अफजल खाँ को मिलने जाते समय खाँ के द्वारा दगा होने का अंदाजा उन्हें था। इसलिए दूरदर्शि विचारों से ही उन्होंने अपने शरिर के उपर चिलखत धारण किये और उसके उपर साधारण वस्त्र धारण किये थे। अफजलखाँ के साथ युध्द की भी तैयारी की थी। शिवाजी महाराज के दूरदर्शि विचारों से अफजल खां का वध कर दिया था। शिवाजी महाराज ने अनेक बार रयत के हित रक्षण के लिए शत्रु से संधि कर ली थी। इस संधि के कारण रयत और स्वराज्य का रक्षण हुआ था। शिवाजी महाराज ने विदेशी शासकों के मनसुबे समझकर समुद्र के धोखे को पहचान लिया था। इन विदेशी शासकों को पराजित करने के लिए नौसेना दल का निर्माण किया था। उन्होंने समुद्र पर सत्ता प्रस्थापित करने के लिए और शत्रुओं को परास्त करने के लिए शेकडों जहाज खरिद लिये थे। नौसेना में स्वतंत्र आरमारों का निर्माण किया था। शिवाजी महाराज ने समुद्र के तटवर्ती भागों में दुर्ग का निर्माण किया था। दुर्ग निर्माण से समुद्र शत्रुओं से स्वराज्य की

रक्षा होने लगा था। शिवाजी महाराज ने अनेक किलों का निर्माण और पुराने किलों का पुनर्निमाण किया था। दुर्ग और किलों से स्वराज्य का रक्षण करना आसान हो गया था। शिवाजी महाराज की इस दूरदर्शिता के बारे में 'सप्तप्रकरणात्मक चरित्र' में लिखा है, "जांगा जांगा कोकणांत व मावळांत देशांत डोंगर चांगला आढळेल तेथे व समुद्र किनारां किल्लें बांधावे ऐसे करिते जाले. यासि कारण येक देशास प्रांतास जाग्याचा आधार होतो."[४०] अर्थात शिवाजी महाराज कोकण और मावळ प्रदेश में पहाडी क्षेत्र के जगहों पर और समुद्र के किनारों पर किलों का निर्माण करते रहें। किलों के निर्माण का एकमात्र कारण यह हैं कि, किले के आसपास के देश या प्रदेश के जगह पर अपना अधिकार रहेगा। शिवाजी महाराज के किलों की दुरदर्शि निर्णय के कारण ही प्रदेश और जनता की रक्षा आसानी से होने लगी थी। शिवाजी महाराज ने वतनदारी प्रथा को बंद कर वेतनदारी शुरु की थी। इस कारण से प्रदेश की जनता शोषण मुक्त हो गयी थी। शिवाजी महाराज ने युध्द करनेवाले सेनाओं के साथ नशा, नारी और नृत्य पर पाबंदी लगायी थी। इसके परिणाम स्वरुप राजद्रोह की घटनाएँ कम होने लगी थी। शिवाजी महाराज ने अपने दूरदर्शिता के कारण ही अपने दोनों पुत्रों को अच्छी शिक्षा और प्रशिक्षण की व्यवस्था कर दी थी। इसके परिणाम स्वरुप उनके दोनों पुत्र पराक्रमी हो गये थे। अत: शिवाजी महाराज के दूरदर्शिता गुणों का वर्णन मध्यकालीन मराठी साहित्य में किया हैं।

मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के दूरदर्शिता के गुणों का वर्णन किया हैं। दोनों भाषा के साहित्य में शिवाजी महाराज ने दुरदर्शिता से अफजल खाँ के अंतरर्मन को पहचाना, शक्तिशाली शत्रु के साथ संधि की, स्वराज्य की रक्षा और सुरक्षा के लिए दुर्ग और किलों का निर्माण किया था। विदेशी समुद्र शासकों शत्रुओं पर अंकुश रखने के लिए नौसेना दल की स्थापना कर अनेक जहाजों को खरीद लिया था। शिवाजी महाराज के अत्याधिक निर्णय वर्तमान, भूत और भविष्य के परिणामों के देखकर लिए गये थे। शिवाजी

महाराज एक दुरदर्शी राजा थे। अंतः दोनों भाषा के साहित्य में शिवाजी महाराज के दूरदर्शिता के वर्णन में अत्याधिक समानता दिखाई देती है।

४.२.२५. उदारमतवादी :

हिंदी : मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज को उदारमतवादी राजा के रुप में वर्णित किया हैं। शिवाजी महाराज के किसी भी जात, धर्म, पंथ, सम्प्रदाय, धर्म ग्रंथ और धर्मस्थान के प्रति उदारमतवादी विचार रहे हैं। शिवाजी महाराज की सेना में १८ प्रकार के जातियों का समावेश था। मुस्लिम धर्म के लोग भी सेना के उच्च पदों पर कार्यरत थे। शिवाजी महाराज को उदारता का गुण सुशोभित करता है। भूषण उनके उदारता के बारे में लिखते हैं कि, "सोहत उदारता औ सीलता खुमान मैं सौ।"[४१] अर्थात शिवाजी महाराज को उदारता और सुशिलता सुशोभित करती हैं। एक श्रेष्ठ राजा में उदारता का गुण होता हैं। शिवाजी महाराज के उदारता को कवि लोग उनके मन को सागर की उपमा देते हैं। शिवाजी महाराज को कवि दरियादिली (उदारमतवादी) कहते हैं। शत्रु को युध्द में क्षमा कर जीवनदान देकर उदारता को दर्शाया हैं। अपने पिता शाहजी राजा को कैद करनेवाले आदिलशाही को उदात्य भाव से क्षमा कर उनकी रक्षा की थी। अपनी उदारमतवादी विचारों से समाज में स्थित सगुन और निर्गुण पंथी दोनों का समान आदर करते हैं। शिवाजी महाराज दान देते समय उदार अंतकरण से बीना घंमड से दान देते हैं। शिवाजी महाराज की धर्मनीति भी अत्यंत उदार थी। अंत मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज के उदारनीतियों का वर्णन किया है।

मराठी : मध्यकालीन मराठी साहित्य के साहित्यकारों ने शिवाजी महाराज के उदारमतवादी रुप का वर्णन किया है। शिवाजी महाराज का स्वराज्य किसी एक जाति या धर्म का न होकर सभी प्रजा का राज्य था। शिवाजी महाराज का संघर्ष किसी धर्म के विरोध में नहीं बल्कि अन्याय, अत्याचार के विरोध में था।

शिवाजी महाराज का धर्म संघर्ष न होकर राजनीतिक सत्ता संघर्ष था। शिवाजी महाराज में धार्मिक उदारता दिखाई देती हैं। शिवाजी महाराज हिंदू और मुस्लिम दोनों के प्रति उदात्य भाव रखते थे। उन्होंने दोनों धर्मों के श्रध्दा स्थान मंदिर और मस्जिद की सुरक्षा की है। सभासद लिखते है कि, "मुलखात देव देवस्थानें जागा जागां होतीं. त्यास दिवाबत्ती नैवेद्य अभिषक, स्थान, पाहुन यथायोग्य चालविले. मुसलमानांचे पीर मसिदी. त्याची दिवाबत्ती नैवेद्य स्थान पाहुन चालविले."[४२] अर्थात शिवाजी महाराज ने जहाँ मंदिर हैं वहाँ पुजा, अभिषक, दिपक जलाने की व्यवस्था है। मुस्लिम धर्म के पीर, मस्जिद की भी व्यवस्था के लिए सरकारी पैसे का प्रबंध किया था। शिवाजी महाराज की धार्मिक नीति उदार थी। युध्द में भी उन्होंने शरणार्थीयों को क्षमा कर जीवनदान देकर अपनी उदारता दिखाई हैं। मुगलों ने बीजापुर के आदिलशाही पर आक्रमण किया था। आदिलशाही ने अपनी रक्षा के लिए शिवाजी महाराज को प्रार्थना की थी। शिवाजी महाराज ने अपने पिता शाहजी को कैद करनेवाले आदिलशाही को उदात्य भाव से क्षमा कर दिया था। अंत में आदिलशाही का रक्षण शिवाजी महाराज ने ही किया था। शिवाजी महाराज के सौतेले भाई व्यंकोजी राजे के द्वारा आक्रमण पर नाराजी प्रकट की थी। शिवाजी महाराज के सरदारों ने व्यंकोजी राजे को पूरी तरह परास्त किया था। शिवाजी महाराज ने मन की उदारता दिखाते हुए व्यंकोजी राजे को उनका राज्य पुनः वापस कर दिया था। अतः मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के उदारता भाव का वर्णन किया है।

मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज को उदारमतवादी राजा के रुप में वर्णित किया हैं। दोनों भाषा के साहित्य में उनके सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक उदारता का वर्णन किया हैं। दोनों भाषा के साहित्य में युध्द क्षेत्र में शत्रुओं को उदात्य भाव से जीवनदान देते हैं। दोनों भाषा के साहित्य में शिवाजी महाराज को उदारमतवादी राजा के स्वरुप वर्णन में अत्याधिक समानता दिखाई देती है।

४.२.२६. न्यायप्रिय राजा :

हिंदी : मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज को न्यायप्रिय राजा के रुप में वर्णित किया हैं। मध्यकाल में राजा ही न्यायदान का काम करते थे। शिवाजी महाराज ने गुन्हेगार को दंड देना और क्षमा करने का अधिकार अपने पास ही रखा था। उन्होंने अनेक राजा, सरदार, सेनाओं को क्षमा कर दिया था। शिवाजी महाराज के स्वराज्य में प्रजा के उपर अन्याय, अत्याचार नहीं होता था। स्वराज्य में आदर्श न्याय व्यवस्था को प्रस्थापित किया था। उनकी न्यायव्यवस्था जात, धर्म, पंथ, भेदभाव से रहित थी। उनका न्याय आदर्श, पारदर्शि, समताधिष्ठित और जलद गति से होता था। न्यायशिल राज्य में चोर को दंडित कर गुणों को सम्मानित किया जाता था। राज्य में स्त्री-पुरुष, गरीब शोषितों को न्याय मिलता था। गुन्हेंगार के गुन्हेगारी की तीव्रता को देखकर उसे दंडित किया जाता था। शिवाजी महाराज न्याय देते समय सभी को समान न्यायदान करते हैं। गुन्हगार गाँव का मुखियाँ, खानदानी मुसलमान, छोटे प्रदेश का राजा, सेनापति, सरदार, सेठ, साहुकार हो सभी को सामान्य लोगों की तरह दंडित करते थे। न्यायदान करते समय छोटा, बडा, पद, पैसा, सत्ता को नहीं देखते हैं। उन्होंने अपने सेनापति नेताजी पालकर को आदेश की पूर्ति न होने के कारण उन्हें पद से बरखास्त किया था। मराठों के छोटे-छोटे राजाओं की भी दंडित किया था। शिवाजी महाराज की न्यायनीति सारे विश्व के लिए आदर्श है। उनके स्वराज्य के जैसा न्यायदान पूरे संसार में कहीं दिखाई नहीं देता है। भूषण इस संदर्भ में कहते है कि, "तेरे सिवराज राज अदल जहान मैं।"[४३] अर्थात हे शिवाजी महाराज तुम्हारे जैसी न्यायशिलता पूरे संसार में कही पर भी दिखाई नहीं देती है। शिवाजी महाराज न्यायप्रिय राजा थे। उन्होंने स्वराज्य निर्माण ही अन्याय, अत्याचार का विरोध कर एक न्यायशील राज्य प्रस्थापित किया था। शिवाजी महाराज के न्यायप्रिय स्वरुप का वर्णन हिंदी साहित्य में हुआ है।

मराठी : मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज को न्यायप्रिय राजा के रुप में वर्णित किया है। दीनहीन, गरीब, शोषित, स्त्री-पुरुष, किसान, मजदूरों के उपर होनेवाले अन्याय को देखकर शिवाजी महाराज ने न्यायधिष्ठित हिंदवी स्वराज्य की स्थापना की थी। मध्यकाल में कुछ राजाओं के राज्य में धर्म प्रेरित न्याय व्यवस्था थी। शिवाजी महाराज ने जात, धर्म, पंथ, सम्प्रदाय में भेद न करते हुए न्यायदान किया था। स्वराज्य में जमिनदारी, वतनदार, पाटील, देशमुख के द्वारा होनेवाले अन्याय, अत्याचार को शिवाजी महाराज ने बंद कर दिया। उन्हें सामान्य लोगों के भाँति अन्याय करने पर दंडित भी किया था। रांझा पाटील ने एक किसान की गरीब लडकी पर अन्याय, अत्याचार करने उसे दंडित किया था। शिवाजी महाराज का न्यायदान आदर्श, पारदर्शक, भेदभाव रहित और अत्यंत जलद होता था। गुन्हेगार के अत्याचार की तीवृता को देखकर उसको दंडित किया जाता हैं। अपराधी को दंड देते समय गुन्हेगार के उपर भी अधिक अन्याय न हो इसके प्रति भी सर्तक थे। इस संदर्भ में 'सप्त प्रकरणात्मक चरित्र' में लिखा है कि, "यथायोग्य पाहुन शिक्षा करावी. स्वल्प अन्याय (असेल तर) उग्र दंड न करावा. बहुत अन्याय (असेल) तर त्यास स्वल्प दंड असें न होता पाहुन करावें."[४४] अर्थात प्राथमिक स्तर पर न्यायदान करने वालों को आदेश दिया था कि, अन्याय के स्वरुप को देखकर दंड देना चाहिए। अन्याय का स्वरुप कम हैं तो उसे कठोर शिक्षा न करें। अपराधि के द्वारा अन्याय अत्याधिक किया है तो उसे अल्प शिक्षा करें। अधिक अपराध और अन्याय करनेवालों को कठोर दंड देने का आदेश दिया था। शिवाजी महाराज की न्यायव्यवस्था में गुणी लोगों को न्यायदान करने के लिए न्यायधिश पद पर नियुक्त किया था। न्यायव्यवस्था के मुख्य न्यायधिश शिवाजी महाराज ही थे। हालांकि माता जीजाबाई ने उन्हें अनेक निर्णय लेने और लिये हुए फैसले बदलने की सलाह दी थी। न्यायिक दृष्टि से देखा जाए तो स्वराज्य में शिवाजी महाराज उच्च न्यायलय और माता जीजाबाई सर्वोच्य

न्यायलय की भूमिका में थे। मराठी के साहित्य में शिवाजी महाराज को न्यायप्रिय राजा के रुप में वर्णित किया है।

मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज को न्यायप्रिय राजा के रुप में वर्णित किया हैं। दोनों साहित्य में शिवाजी महाराज की न्यायव्यवस्था की विशषताओं में जलद, आदर्श, पारदर्शि, भेदभाव रहित स्वरुप का वर्णन किया हैं। अन्यायी व्यक्ति पर भी गुनाहों से अधिक दंड देकर अन्याय न हो इसके लिए भी सतर्क रहते थे। अन्यायी स्वरुप को देखकर न्यायदान किया जाता था। शिवाजी महाराज की आदर्श न्यायव्यवस्था पूरे संसार में प्रसिध्द है। मराठी साहित्य में माता जीजाबाई को न्यायदान में सलाहकार के रुप में वर्णित किया है। हिंदी साहित्य में माता जीजाबाई का वर्णन उपलब्ध नही हैं।

अंतः दोनो भाषा के साहित्य में शिवाजी महाराज को आदर्श न्यायप्रिय राजा के रुप में वर्णित किया हैं। दोनों भाषा के साहित्य में न्यायप्रिय राजा के वर्णन में अत्याधिक समानता दिखाई देती है।

४.२.२७. बहुजन प्रतिपालक :

हिंदी : मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज को बहुजन प्रतिपालक रुप में वर्णित किया है। शिवाजी महाराज स्त्री-पुरुष, किसान, मजदूर, दीन, दलित, पीड़ित, शोषित, गरीब, हिंदू-मुस्लिम स्वराज्य के सभी प्रजा के पालक (रक्षक) हैं। उनके स्वराज्य का उद्देश्य सभी प्राणी मात्रा के समुह को सुरक्षित, सुखी और संपन्न बनाना है। सभी अन्यायी, अत्याचारी (म्लेच्छों) लोगों का नाश कर प्रजा को धर्म (सत्य) के मार्ग पर लाने का काम किया है। कवि भूषण ने भी पृथ्वी को स्त्री के रुप में वर्णित कर उसकी रक्षणकर्ता के रुप में शिवाजी महाराज को प्रस्तुत किया है। पौराणिक हिंदू ग्रंथों के अनुसार भगवान विष्णु जगत के पालन-पोषण का कार्य करते है। उसी प्रकार शिवाजी महाराज भी भगवान विष्णु के पृथ्वी रक्षण का कार्य करते हैं। शिवाजी महाराज स्वराज्य के

सभी बहुजन प्रजा के पालन कर्ता हैं। मध्यकालीन भूषण कवि लिखते हैं। "तू सबको प्रतिपालनहार।"[४५] अर्थात शिवाजी महाराज तुम सभी प्रजा का पालनपोषण करनेवाले पालनकर्ता हो। शिवाजी महाराज सभी जाति, धर्म, पंथ, सम्प्रदाय, के लोगों का रक्षण और उनके पालनकर्ता हैं। उन्होंने बहुजनों का रक्षक और पालन किया हैं। मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज को बहुजन प्रतिपालक के रुप में वर्णित किया है।

मराठी : मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज को बहुजन प्रतिकाल रुप में वर्णित किया हैं। मध्यकाल में भारतीय जनता का तीन स्तरों पर शोषण किया जाता था। केंद्रित सत्ता में बादशाह, प्रांतिक सत्ता में उसके अधिन राजा और स्थानिक क्षेत्र में जमिनदार, वतनदार देशमुख, सेठ, साहुकार, पाटील, कुलकर्णी आदि लोग सामान्य जनता का शोषक वर्ग था। शिवाजी महाराज ने अपने स्वराज्य में इन सभी के अधिकारों पर पाबंदी कर दी थी। इसके कारण स्वराज्य का किसान वर्ग शोषण से मुक्त हुआ था। स्त्री के उपर अन्याय, अत्याचार करनेवालों को कठोर दंड दिया जाता था। स्वराज्य में सभी दीन, दलित, पीड़ित, शोषितों, अनाथों रक्षण किया जाता था। शिवकालीन महाराष्ट्र के संत तुकाराम महाराज ने शिवाजी महाराज को अनाथों की सहाय्यता करने का उपदेश भी दिया था। शिवाजी महाराज ने संत तुकाराम महाराज के उपदेशों का पालन किया था। स्वराज्य की सभी प्रजा का रक्षण और पालन करने के कारण उनके राज्य की प्रजा सुखी, संपन्न थी। सभी अपने-अपने धर्मों का पालन करते थे। इस संदर्भ में 'सप्त प्रकरणात्मक चरित्र' में लिखा हैं, "याप्रमाणे धर्मे करुन राज्य संपादन करुन, नीतीकरुन, (सर्व प्रजाचे) पालनपोषण करिते जाले."[४६] अर्थात शिवाजी महाराज ने हिंदवी स्वराज्य की स्थापना की थी। उनके स्वराज्य में सभी लोग अपने-अपने धर्म के अनुसार नैतिकता का पालन करने लगे थे। शिवाजी महाराज ने सभी स्वराज्य की प्रजा का पालन और रक्षण कार्य किया है।

शिवाजी महाराज के बहुजन प्रतिपालक के स्वरुप का वर्णन मध्यकालीन मराठी साहित्य में किया हैं।

मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के बहुजन प्रतिपालक रुप में वर्णित किया गया है। दोनों भाषा साहित्य में शिवाजी महाराज अपने स्वराज के सभी प्रजा का रक्षण और पालन करते हैं। वे दीन, दलित अन्याय, मजदूर, किसान, स्त्री-पुरुष, बच्चों के पालक और रक्षक के बन गये थे। अंत दोनों भाषा के साहित्य में शिवाजी महाराज को बहुजन प्रतिपालक के रुप का वर्णन किया है।

४.२.२८. स्त्री के प्रति आदरभाव :

हिंदी : मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज को स्त्री के प्रति आदरयुक्त और पुज्यभाव के स्वरुप का वर्णन किया है। प्राचीन काल में राजा के युध्द का मुख्य कारण स्त्री की सुंदरता होती थी। मध्यकाल में भी सत्ता और सुंदरी (स्त्री) के लिए युध्द होता रहा परंतु शिवाजी महाराज ने लोककल्याण के लिए युध्द कर हिंदवी स्वराज्य की स्थापना की थी। उनके स्वराज्य में स्त्री को आदर एवं सम्मान मिलता था। स्त्री के उपर अन्याय, अत्याचार करनेवालों को कठोर शिक्षा दी जाती थी। स्वयं माता जीजाबाई ने शिवाजी को संस्कारित किया था। शिवाजी महाराज का शत्रु पक्ष पर अत्याधिक धाक (भय, डर) था। मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शत्रु को स्त्री (पत्नी) अपने पति को भयभित होते देखकर स्वंय भी भयभित और डरी हुई दिखाई देती हैं। हिंदी साहित्य में शत्रु स्त्री के अंदर शिवाजी महाराज के प्रति डर के वर्णन में अत्याधिक अतिश्योक्ति और कल्पना का सहारा लिया हैं। शत्रु स्त्री अपने पति की असुरक्षिता होने कारण स्वंय भयभित है। उनके पति का शत्रु शिवाजी महाराज है, इसलिए वह डरती हैं। भूषण कवि कहते है कि, "अरितिय भिल्लिनि सों कहै, घन बन जाय इकन्त। सिव सरजा सों बैर नहीं, सुखी तिहारे कन्त।"[४७] अर्थात शिवाजी महाराज के शत्रु

की स्त्री भिल्लनी महिला के (आदिवासी) समाज की स्त्री से अपने भय का कारण बताती हैं। अरिनारी भिल्लनी से कहती हैं कि, तुम इसलिए सुखी हो क्योंकि तुम्हारे पति का शत्रु शिवाजी महाराज नहीं है। हम (शत्रु स्त्री) इसलिए दुःखी हैं कि हमारे पति का शत्रु शिवाजी महाराज है। अंत शत्रु स्त्री के पति सुरक्षित नहीं है, इसलिए शत्रु स्त्री शिवाजी महाराज से डरती हैं। आगरा से शिवाजी महाराज पलायन करने के बाद आगरा और दिल्ली के शहर की शत्रु स्त्रियाँ (मुस्लिम स्त्री) अपने सुरक्षितता के लिए माथे पर सिंदुर और बिंदी लगाती हैं। हिंदी साहित्य में शत्रु स्त्री की दयनियता, दुर्दशा के चित्रण में अतिश्योक्ति और अत्याधिक कल्पना दिखाई देती हैं। उनके वर्णन में एक बात स्पष्ट हो जाती है कि, हिंदू-स्त्री और स्वराज्य के सभी धर्मों की स्त्रियाँ सुरक्षित हैं। केवल शत्रु स्त्री अपने पति के कारण भयभित हैं। हिंदी साहित्य में भी किसी शत्रु स्त्री के उपर शिवाजी महाराज के द्वारा अन्याय, अत्याचार करने की घटना का वर्णन भी नहीं किया हैं। शत्रु स्त्री को केवल उनके अंतरमन में भयभित दिखाया है। इतिहास प्रमाण है कि, शिवाजी महाराज ने स्वराज्य की स्त्री की ही नहीं बल्कि शत्रुओं के स्त्रियों का भी सम्मान किया था। उनका सभी स्त्रियों के प्रति पुज्यभाव का दृष्टिकोन था।

मराठी : मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के स्त्री की प्रति आदरभाव के दृष्टिकोन का वर्णन किया हैं। मध्यकाल में स्त्री के प्रति भारतीय समाज का दृष्टिकोन भोगपरक था। माता जीजाबाई ने शिवाजी महाराज को संस्कारित किया था। जीजाबाई के संस्कार से ही शिवाजी महाराज में पर स्त्री के प्रति पुज्यनीय और आदरयुक्त दृष्टिकोन रहा हैं। स्वराज्य में स्त्री पर अन्याय, अत्याचार करनेवालों को कठोर शासन (शिक्षा) करते थे। अन्य राजाओं की तरह उन्होंने कभी शत्रु स्त्री को दासी या दरबार में नर्तकी का निम्न स्थान नहीं दिया था। कल्याण प्रांत जीतने के बाद सरदार अबाजी सोनदेव ने कल्याण प्रांत के सुभेदार अहमद खाँ को पुत्रवधु को बंदी बनाकर दरबार में भेट स्वरुप लाया गया

था। शिवाजी महाराज ने अपने सरदार अबाजी सोनदेव के इस कुकर्त्य पर नाराजगी जतायी थी। कल्याण के सुभेदार की पुत्र का राजदरबार में सम्मान कर उसे उसके प्रदेश में सुरक्षित भेज दिया था। शिवाजी महाराज ने अपने सेनाओं आदेश दिया था कि, "लष्करांत बायको व बटकी व कलावंतीण नसावी. जो बाळगील त्याची गर्दन मारावी. परमुलखात पोर बायका न धरावी."[४८] अर्थात शिवाजी महाराज ने सभी सेना सरदारों को आदेश दिया था कि युध्द करते समय सेनाओं के साथ पत्नी नृर्तकी, बटकी स्त्री को साथ में ना रखें। अगर ऐसा किसी ने किया तो उसकी गर्दन उडाने का आदेश दिया। युध्द में पराजीत प्रदेशों के बच्चों और स्त्रियों का हाथ न लगाए। उनके उपर कोई अन्याय या अत्याचार न करने का आदेश दिया था। शिवाजी महाराज ने शत्रु स्त्री का भी सम्मान और रक्षण किया था। प्रबगलगड किलें पर विजय प्राप्त करने के बाद उस किले के किलेदार केसरी सिंह की माँ और बेटी मिल जाती है। शिवाजी महाराज ने उनका अत्याधिक सम्मान किया था। उन्हें अपने राज्य में जाते समय अपनी सेना की सुरक्षा दी थी। शत्रु उदयराम की पत्नी रायबागीन ने शिवाजी महाराज के सेनाओं पर आक्रमण किया था। इस युध्द के कुछ ही दिनों में रायबागीन मराठा सेनाओं के शरण में आ जाती हैं। शिवाजी महाराज ने उस शत्रु के शुर रायबागीन की प्रशंसा कर उसे गौरवान्वित किया था। स्वराज्य में हिरकणी नामक स्त्री का सत्कार किया था। रांझा पाटील के द्वारा गरीब किसान पुत्री पर अत्याचार किया था। रांझा पाटील को अत्यंत कठोर शिक्षा दी गयी थी। अंत : मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज का स्त्री के प्रति पुजनिय, आदरयुक्त दृष्टिकोन का वर्णन किया है।

मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के स्त्री प्रति आदर युक्त दृष्टिकोन का वर्णन किया हैं। दोनों भाषा साहित्य में स्वराज्य की स्त्री सुरक्षित और सुखी हैं। स्त्री के उपर किसी प्रकार का अन्याय, अत्याचार नहीं होता था। हिंदी साहित्य में स्त्री के प्रति शिवाजी महाराज के दृष्टिकोन वर्णन में

अतिश्योक्ति और काल्पनिकता दिखाई देती हैं। मराठी साहित्य में स्त्री के दृष्टिकोन वर्णन में ऐतिहासिकता का अंश दिखाई देता है। हिंदी साहित्य में शत्रु स्त्री को भयभित, आतंकित दिखाया है। मराठी साहित्य में शत्रु स्त्री को भी सम्मानित और गौरवान्वित करने का वर्णन है। हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज के शत्रु स्त्री के उपर अन्याय, अत्याचार के घटना एवं प्रसंग का वर्णन कहीं पर भी नहीं किया हैं। शत्रु स्त्री अपने पति के भयभित होने से स्वंय शिवाजी महाराज से डरी हुई है। अत: स्त्री के प्रति शिवाजी महाराज का दृष्टिकोन आदर और पुज्यनीय था। दोनों भाषा के साहित्य में स्त्री के प्रति आदरयुक्त दृष्टिकोन का वर्णन किया है। हिंदी साहित्य की तुलना में मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज को स्त्री के प्रति अत्याधिक आदर भाव का वर्णन किया है।

४.२.२९. आदर्श शासक :

हिंदी : आदर्श शासक वहीं होता है, जो अपने राज्य की प्रजा को सुखी संपन्न और स्वतंत्र, बंधनमुक्त रखें। शिवाजी महाराज का राज्य जन कल्याणकारी था। राज्य में चोर को शिक्षा और गुणियों का अत्याधिक सम्मान मिलता था। शिवाजी महाराज का न्यायपूर्ण राज्य था। शिवाजी महाराज ने प्रजा के हित को ध्यान मे रखकर अपने राजनीतिक निर्णय लिए थे। स्वराज्य का प्रमुख उद्देश्य ही प्रजा का हित और उनका रक्षण करना था। शिवाजी महाराज ने अपने प्रजा के शोषण, दु:खों का निवारण किया हैं। इस संदर्भ में भूषण लिखते है कि, "कढ़ि गई रैयति के मन की कसक सब।"[४९] अर्थात स्वराज्य के सभी रैयति (प्रजा) मन के दु:खों का निवारण शिवाजी महाराज ने किया था। सभी प्रजा को अपने-अपने धर्म के अनुसार आचरण करने का पूर्ण स्वातंत्र्य था। शिवाजी महाराज धर्म निरपेक्ष राजा थे। स्वराज्य की शासन व्यवस्था को सुव्यवस्थित करने के लिए 'अष्टप्रधान मंडल' का निर्माण किया था। शिवाजी महाराज ने शत्रुओं के समुद्र मार्ग के धोखे को पहचानकर स्वतंत्र नौसेना का निर्माण किया था। स्वराज्य में

स्वतंत्र, समता, बंधुता, न्याय, धर्मनिरपेक्षता आदि लोकतांत्रिक मूल्यों को प्रस्थापित किया था। शिवाजी महाराज एक आदर्श शासन व्यवस्था के आदर्श शासक है। वे सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक क्षेत्र में एक आदर्श शासक थे। वर्तमान समय में भी शिवाजी महाराज को एक आदर्श, शासक माना जाता हैं। आदर्श शासक के रुप शिवाजी महाराज निरंतर समाज, देश, विश्व के लिए प्रेरित करते रहेगें।

मराठी : मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज को आदर्श शासक के रुप में वर्णित किया हैं। शिवाजी महाराज के निर्णय दूरदर्शि और प्रजा के हित में थे। उनका स्वराज्य लोगकल्याणकारी था। सामाजिक कुरीतियों का शिवाजी महाराज ने कडा विरोध किया था। अपने माता जीजाबाई को पिता शहाजी की मृत्यु पश्चात सती जाने से मना कर दिया था। उनके सामने सभी धर्म, जात, पंथ, सम्प्रदाय समान थे। वे धर्म निरपेक्ष राजा के प्रतिक हैं। शिवाजी महाराज स्वातंत्र्य, समता, बंधुता, न्याय के पुरस्कर्ता थे। राज्यशाही होने के बावजूद भी उनके स्वराज्य में लोकतात्रिंक मूल्य दिखाई देते हैं। स्वराज्य के मराठा सेनाओं में लगभग पैत्तिस प्रतिशत मुस्लिम सैनिक थे। सेना के अनेक प्रमुख पदों पर मुस्लिम धर्म के लोग थे। स्वराज्य में सुव्यवस्थित शासन व्यवस्था के लिए उन्होंने 'अष्टप्रधान मंडल' स्थापन किया था। आठ विभागों के प्रधान पदाधिकारीयों के मंत्रिमंडळ को शिवाजी महाराज की आज्ञा का पालन करना पडता था। स्वराज्य की नीति और निर्णय लेने का अंतिम अधिकार शिवाजी महाराज के हाथ में ही था। शिवाजी महाराज एक आदर्श राजनीतिज्ञ हैं। उन्होंने समय और परिस्थिति के अनुसार राजनीति में साम, दाम, दंड, भेद का उपयोग किया था। उन्होंने अपने राजनीति में किसी को भी सर्वकालीक शत्रु या मित्र नहीं बनाया था। स्वराज्य की प्रजा का हित और उनके रक्षण के लिए वह हमेशा कार्यक्षम दिखाई देते है।

मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज को एक आदर्श शासक के स्वरुप का वर्णन किया हैं। शिवाजी महाराज के राज्य में सभी को समान न्याय मिलता था। धर्मनिरपेक्षता का स्वराज्य पालन होता था। सभी प्रजा को शोषिण मुक्त कर दिया था। उनके स्वराज्य के शासन में लोकतांत्रिक मूल्यों का पालन किया गया था। राजनीतिक निर्णय स्वराज्य की प्रजा के हित को ध्यान रखकर लिया जाता था। उन्होंने लोग कल्याणकारी राज्य की स्थापना की थी। दोनों भाषा साहित्य में शिवाजी महाराज के आदर्श शासक रुप के वर्णन में अत्याधिक समानता दिखाई देती है।

निष्कर्ष :

मध्यकालीन हिंदी और मराठी भाषा के साहित्यकारों ने शिवाजी महाराज के व्यक्तित्व को वर्णित किया है। उनके व्यक्तित्व के बहिरंग और अंतरंग स्वरुप का चित्रण किया है। दोनों भाषा साहित्य में शिवाजी महाराज के 'सूर्यवंशी' श्रेष्ठ कूल का वर्णन करते हैं। इसी सूर्यवंशी राजवंश में उनका जन्म हुआ हैं। हिंदी साहित्य में जन्मतिथि उपलब्ध नहीं हैं। मराठी साहित्य में जन्मतिथि में मतभिन्नता है, परंतु उनका जन्म १९ फरवरी १६३० को हुआ है। नामकरण में हिंदी साहित्य उनके शारीरिक सुंदरता की ओर निर्देश करता है। मराठी साहित्य 'शिवाई देवी' के नाम से संबंध जोडकर 'शिवाजी' नामकरण का वर्णन कवि करते हैं। दोनों भाषा साहित्य में शिवाजी महाराज की आकृति में उनका सुंदर रुप, शक्तिशाली भूजाएँ, चेहरें पर दाढी और मुँछे का वर्णन लगभग समान रुप में है। घटना, प्रसंग, समयानुरुप बदलती वेशभूषा का वर्णन दोनों भाषा साहित्य में किया हैं। शत्रु के द्वारा अपमान करने या अनुचित व्यवहार पर तुरंत अपनी प्रतिक्रिया देते है। स्वराज्य की राजधानी किले रायगढ़ की सभा, शोभा व्यवस्था सुंदरता का भौतिक और प्राकृतिक चित्रण किया हैं। हिंदी साहित्य में रायगढ़ किले के वर्णन में अतिशयोक्ति दिखाई देती है। दोनों भाषा साहित्य में नगाडें का वर्णन किया

है। इसका उपयोग युध्द की तैयारी, विजय के संकेत, आदि के लिए होता है। इस में नगाडों का अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन हिंदी साहित्य में हुआ है। दोनों भाषा साहित्य में शिवाजी महाराज की तलवार को दैवी अवतार मानकर उसका वर्णन किया हैं। यह तलवार का वर्णन कल्पनिक और अतिशोक्तिपूर्ण हैं। हिंदी में शिवाजी महाराज के राज्याभिषक का वर्णन उपलब्ध नहीं है। मराठी में ०६ जुन १६७४ को राज्याभिषक समारोह गागाभट्ट के हाथों से संपन्न होता है। उनके मृत्यु के संदर्भ में हिंदी साहित्य में कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है, तो मराठी साहित्य में उनकी मृत्यु सन ३ अप्रैल १६८० में दोपहर के समय होने का वर्णन उपलब्ध हैं।

दोनों भाषा साहित्य में शिवाजी महाराज के अंतरिक स्वरुप और गुणों का वर्णन किया है। हिंदी साहित्य की तुलना मराठी साहित्य में उनके बचपन का वर्णन अधिक हैं। उनकी शिक्षा का वर्णन हिंदी में उपलब्ध नहीं है वहीं मराठी साहित्य में उनके पिता शहाजी राजे के द्वारा भेजे गये विशेषज्ञ के मार्गदर्शन में हुई है। उनकी माता जीजाबाई ने भी शिवाजी महाराज को शिक्षित और संस्कारित किया था। शिवाजी महाराज बड़ों के प्रति और लोगों को दान देते समय नम्रता का भाव हमेशा रखते है। दोनों भाषा साहित्य में शिवाजी महाराज के प्रतिभा संपन्नता की प्रशंसा हुई है। वे हिंदवी स्वराज्य की दृढ प्रतिज्ञा लेकर उसके प्रति अटल रहे थे। दोनों भाषा साहित्य में विपरित परिस्थितियों में भी शिवाजी महाराज के अंतरिक स्वाभिमान को वर्णित किया है। दोनों भाषा साहित्य में श्रद्धावान शिवाजी महाराज के रुप को वर्णित किया हैं। वे विपरित परिस्थितियों में साहस और निर्भयता के साथ डटकर परिस्थितियों का सामना करते हैं। दोनों भाषा साहित्य में उनके असामान्य कार्यक्षमता का वर्णन किया है। अन्याय, अत्याचार के विरुध्द लोगों को संघटित कर देश में एक मजबुत और शक्तिशाली संघटन तैयार किया था। उनकी राजनीति, साम, दाम, दंड, भेद पर आधारित थी। उनके राजनीतिक गुढता का वर्णन दोनों भाषा के साहित्य में किया हैं। परंपरागत युध्द नीति के साथ-साथ गनिम कावा, छापामारी, निषायुध्द, का

वर्णन दोनों साहित्य में किया हैं। शिवाजी महाराज के स्वराज्य का प्रधान उद्देश्य प्रजा का हित था।

दोनों भाषा के साहित्य में शिवाजी महाराज को स्वधर्म (हिंदू) के प्रति अभिमान और हिंदू धर्म के आचार, विचार, श्रद्‌धा स्थानों, संस्कृति के रक्षणकर्ता रुप का वर्णन किया हैं। दोनों भाषा साहित्य में उनके वीरता और पराक्रम का वर्णन अफजलखाँ वध, शाईस्ताखां, सुरत आक्रमन, आगरा दरबार, सालहेरी युध्द, आदि विभिन्न घटनाओं के आधार पर किया हैं। उनके नेतृत्व में चतुरंगी मराठा सेना नें आठ शासकों को पराजित किया है। शिवाजी महाराज की लगभग सभी शत्रु के उपर अत्याधिक धाक का वर्णन दोनों साहित्य में किया हैं। इस वर्णन में मराठी की तुलना हिंदी साहित्य में कहीं-कहीं कल्पना और अतिशयोक्ति भी आ गयी है। शिवाजी महाराज प्रजा, शत्रु की सेना, सरदार, राजा के दया का भाव रखते हैं। वे बडे श्रेष्ठ दानी है जो भेदभाव रहित दान देते है। उनके दानशुरता का वर्णन हिंदी साहित्य में अतिशयोक्ति पूर्ण किया गया हैं। शिवाजी महाराज की वैभव संपन्न के वर्णन में दुर्ग, किले, हाथी, घोडे, जहाज, अरमार, हिरे-जवाहरात, प्रजा, सेना, सरदारों की वैभव संपन्नता को वर्णित किया हैं। शिवाजी महाराज के पराक्रमों को देख हिंदी साहित्य में उन्हें भगवान विष्णु का अवतार मानते है, तो मराठी साहित्य में भगवान शिवजी के अवतारी पुरुष रुप का वर्णन किया हैं। उनकी यश और कीर्ति पुरे देश के चारों दिशाओं में और विदेशों तक फैली हुई है। उनके दूरदर्शि निर्णय का दोनों भाषा के साहित्य में वर्णित किया हैं। शिवाजी महाराज उदारमतवादी, न्यायप्रिय और बहुजन प्रतिपालक राजा के रुप में दोनों भाषा में वर्णन किया है। मध्यकालीन हिंदी साहित्य की तुलना में मराठी साहित्य में स्त्री के प्रति आदरयुक्त और पूजनिय दृष्टि का वर्णन किया है। हिंदी साहित्य में स्वराज्य की स्त्री को छोडकर शत्रु स्त्री को अत्याधिक भयभित दिखाया है। परंतु इस प्रकार का वर्णन केवल

काल्पनिक हैं। दोनों साहित्य में शिवाजी महाराज को आदर्श लोकतांत्रिक मूल्यों का पालन करनेवाले शासक के रुप में वर्णित किया हैं।

अत: शिवाजी महाराज के बहिरंग और अंतरंग स्वरुप में दोनों भाषा साहित्य में अत्याधिक समानता दिखाई देती हैं। उनके कुछ स्वरुपगत विशेषताओं के संबंधी दोनों भाषा साहित्य में वैषम्य भी दिखाई देता हैं। हिंदी साहित्य में स्वरुप वर्णन करते समय कहीं-कहीं अत्याधिक अतिशयोक्ति दिखाई देती है। परंतु व्यापक रुप से दोनों भाषा साहित्य में शिवाजी महाराज के बाह्य और अंतरिक स्वरुप का वर्णन किया है। इस बाह्य और अंतरिक स्वरुप वर्णन में अत्याधिक समानता दिखाई देती हैं।

संदर्भसूची :

१. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, पृ. सं. ९५

२. सं. श्री सदाशिव गाडगीळ और नरहर कुरुंदकर, श्री शिवप्रभू चरित्र (सभासदाची बखर), पृ. सं. १०२

३. वही, पृ. सं. १०

४. सं. नगेंद्रनाथ बसु, हिंदी विश्वकोश, पृ. सं. ९०

५. सं. य.न. केळकर, ऐतिहासिक पोवाडे (प्रथम भाग), पृ. सं. १७

६. सं. पं. हरिशंकर शर्मा, शिवाबावनी, पृ. सं. ६७

७. सं. य.न. केळकर, ऐतिहासिक पोवाडे (प्रथम भाग), पृ. सं. १९

८. सं. प. राजनारायण शर्मा, शिवराजभूषण,पृ. सं. १०

९. सं. र. वि. हेरवाडकर, सप्तप्रकरणात्मक चरित्र, पृ. सं. १४०

१०. वही, पृ. सं. ७८

११. सं. श्री. सदाशिव गाडगीळ और नरहर कुरुंदकर, श्री शिवप्रभू चरित्र, (सभासदाची बखर), पृ. सं. १०५

१२. वही, पृ. सं. १२७

१३. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराजभूषण, पृ. सं. ०८

१४. सं. श्री. सदाशिव गाडगीळ और श्री नरहर कुरुंदकर, श्री शिव प्रभु-चरित्र, (सभासदाची बखर), पृ. सं. १०८

१५. श्री तुकाराम बाबांच्या अभंगाची गाथा, महाराष्ट्र शासन प्रकाशन, पृ. सं. ३२८

१६. सं. पं. राजनारायण शर्मा, भूषण-ग्रंथावली, पृ. सं. १७५

१७. डॉ. वसंत मोरे, शिवाजी महाराज की साहित्यिक प्रमिमा, पृ. सं. ८९

१८. सं. श्यामसुंदरदास बा. ए. और कृष्णबल्देव वर्म्मा, लाल कवि रचित छत्रप्रकाश, पृ. सं. ७८

१९. वही, पृ. सं. ७९

२०. सं. य.न. केळकर ऐतिहासिक पोवाडे, (भाग पहिला, अज्ञानदास अफजलखान-वध) पृ. सं. १८

२१. सं. र. वि. हेरवाडकर, सप्तप्रकरणात्मक चरित्र, पृ. सं. १३५

२२. सं. श्यामसुंदरदास बा. ए. और कृष्णबल्देव वर्म्मा, लाल कवि रचित छत्र प्रकाश, पृ. सं. ७९

२३. सं. प. राजनारायण शर्मा, शिवराजभूषण, पृ. सं. ४०

२४. वही, पृ. सं. ६२

२५. सं. प. हरिशंकर शर्मा शिवा-बावनी, पृ. सं. ९८

२६. सं. अ.रा. कुलकर्णी, रामचंद्र अमात्याचे आज्ञापत्र, पृ. सं. २८३

२७. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, पृ. सं. ०८

२८. सं. पं. हरिशंकर शर्मा, शिवाबावनी, पृ. सं. १०२

२९. सं. र. वि. हेरवाडकर, सप्तप्रकरणात्मक चरित्र, पृ. सं. ३१

३०. सं. आ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, भूषण ग्रंथावली, पृ. सं. २१३

३१. सं. पं. हरिशंकर शर्मा, शिवा बावनी, पृ. सं. ९३

३२. सं. र. वि. हेरवाडकर, सप्तप्रकरणात्मक चरित्र, पृ. सं. ८३

३३. सं. प. हरिशंकर शर्मा, शिवा बावनी, पृ. सं. ९१

३४. सं. य.न. केळकर, ऐतिहासिक पोवाडे (भाग पहिला), पृ. सं. २१

३५. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, पृ. सं. १६८

३६. सं. य.न. केळकर, ऐतिहासिक पोवाडे, पृ. सं. ६३

३७. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, पृ. सं. १३६

३८. सं. श्री सदाशिव गाडगीळ और श्री नरहर कुरुंदकर, शिवप्रभू-चरित्र, (सभासद बखर), पृ. सं. ०८

३९. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराजभूषण, पृ. सं. २२

४०. सं. र. वि. हेरवाडकर, सप्तप्रकरणात्मक चरित्र, पृ. सं. ९३

४१. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, पृ. सं. ८२

४२. सं. सदाशिव गाडगीळ और श्री नरहर कुरुंदकर, श्री शिवप्रभू चरित्र, (सभासद बखर), पृ. सं. ३९

४३. सं. पं. राजनारायण शर्मा, भूषण ग्रंथावली, भाग ख, फुटकर, पृ. सं. १०७

४४. सं. र.वि. हेरवाडकर, सप्तप्रकरणात्मक चरित्र, पृ. सं. ११२

४५. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराजभूषण, पृ. सं. १३६

४६. सं. र.वि. हेरवाडकर, सप्तप्रकरणात्मक चरित्र, पृ. सं. १२३

४७. सं. पं. राजनारायण शर्मा, शिवराज भूषण, पृ. सं. १०२

४८. सं. पं. श्री सदाशिव गाडगीळ और श्री नरहर कुरुंदकर, श्री शिवप्रभू चरित्र, पृ. सं. ३४

४९. सं. हरिशंकर शर्मा, शिवा बावनी, पृ. सं. ९८

पंचम अध्याय

उपसंहार एवं निष्कर्ष

पंचम अध्याय

उपसंहार एवं निष्कर्ष

५.१) उपसंहार :

साहित्य अपने समय के समाजिक और राजनीतिक व्यवस्था को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से प्रकट करता है। समाज की व्यवस्था का समग्र अंकन साहित्य के माध्यम से कम-अधिक मात्रा में प्रकट होता ही है। साहित्य समाज और इतिहास का अभिन्न अंग है। साहित्य में पौराणिक और ऐतिहासिक नायकों के चरित्र का चित्रण भी किया जाता है। प्राचीन पौराणिक संस्कृत साहित्य में पौराणिक देवी, देवताओं, राजाओं के युध्द और वीर कथाओं का वर्णन किया है। पौराणिक साहित्य में व्यक्ति, व्यक्ति का चरित्र, घटना या प्रसंगों में वीरता की अभिव्यक्ति हुई है। मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में पौराणिक व्यक्ति, चरित्र, घटना या प्रसंगों के स्थान पर ऐतिहासिक व्यक्ति, चरित्र, घटना या प्रसंगों का वीरता पूर्ण चित्रण किया हैं। भारतीय इतिहास के मध्यकाल में दक्षिण भारत का 'मराठा' राजा (शासक) शिवाजी महाराज थे। हिंदी-मराठी साहित्य में ऐतिहासिक घटना, प्रसंगों के माध्यम से उनके व्यक्तित्व के स्वरुप को वर्णित किया हैं। शिवाजी महाराज केवल महाराष्ट्र या देश के लिए नहीं, बल्कि विश्व के समग्र समाज और देशों के लिए आदर्श और प्रेरणा स्थान बन चुके हैं। उन्होंने अपने स्वराज्य में आदर्श लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना की है। मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य भी इस महान राजा के बहिरंग और अंतरंग स्वरुप को वर्णित करता है। दोनों भाषा के मध्यकालीन साहित्य में शिवाजी महाराज के व्यक्तित्व स्वरुप तथा प्रभाव का अध्ययन इस शोध-प्रबंध में किया हैं।

शिवाजी महाराज के स्वरुपगत अध्ययन की दृष्टि से प्रस्तुत शोध-प्रबंध का शीर्षक **"मध्यकालीन हिंदी मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज : एक अध्ययन"** यह

है। इस शोध-प्रबंध के शीर्षक को विषय विवेचन की दृष्टि से पाँच अध्ययन में विभाजित किया है।

मध्यकालीन हिंदी-मराठी के ऐतिहासिक वीरकाव्य के प्रमुख कवि : संक्षिप्त परिचय : इस अध्याय में मध्यकालीन हिंदी-मराठी के ऐतिहासिक वीरकाव्य के प्रमुख कवियों का संक्षिप्त परिचय दिया हैं। इस अध्याय को अध्ययन की दृष्टि से प्रमुख दो चरणों में विभाजित किया है। प्रथम चरण का शीर्षक 'मध्यकालीन हिंदी के ऐतिहासिक वीरकाव्य के प्रमुख कवि' यह हैं। इसके अंतर्गत प्रथमतः ऐतिहासिक साहित्य में 'वीरकाव्य' की पृष्टभूमि को स्पष्ट किया है। आदिकालीन हिंदी साहित्य में ऐतिहासिक वीरकाव्य का संक्षिप्त परिचय दिया हैं। मध्यकालीन हिंदी साहित्य में वीरकाव्यधारा के स्वरुप को स्पष्ट किया हैं। हिंदी के मध्यकालीन ऐतिहासिक वीर काव्य के प्रमुख पाँच कवियों के व्यक्तित्व और कृतित्व का अध्ययन किया हैं। आदिकालीन हिंदी के ऐतिहासिक वीरकाव्य की परंपरा का निर्वाहन करनेवाले मध्यकालीन कवि केशवदास है। कवि केशवदास के के व्यक्तित्व में उनका संक्षिप्त जीवन परिचय और कृतित्व में उनके द्वारा लिखित ऐतिहासिक वीरकाव्य रतन बावनी, वीरसिंह देव चरित, जहाँगीर चंद्रिका का संक्षिप्त परिचय दिया है। ऐतिहासिक वीरकाव्य के दूसरे प्रमुख कविभूषण के व्यक्तित्व में जन्मतिथि, नाम, बाल्यकाल, उनके आश्रयदाता और मृत्यु को स्पष्ट किया हैं। कवि भूषण के ऐतिहासिक कृतियों में शिवराज भूषण, शिवा बावनी, छत्रसाल दशक और कुछ स्फुट पदों के ऐतिहासिक विषयवस्तु को स्पष्ट किया है। मध्यकालीन ऐतिहासिक वीरकाव्य के 'लाल' कवि के व्यक्तित्व में जन्म काल, आश्रयदाता और उनकी मृत्यु पर प्रकाश डाला हैं। लाल कवि एकमात्र ऐतिहासिक 'छत्रप्रकाश' के काव्य कृति का परिचय दिया है। कवि सूदन के उपलब्ध जानकारी के आधार पर जन्म, गुरु, आश्रयदाता अध्ययन कर उनके 'सुजान चरित्र' इस ऐतिहासिक वीरकाव्य का संक्षिप्त परिचय दिया है। मध्यकालीन हिंदी साहित्य में अंतिम कवि और ऐतिहासिक वीरकाव्य के भी अंतिम

चरण के प्रमुख कवि पदमाकर हैं। उनके व्यक्तित्व में जन्म काल, नाम, आश्रयदाताओं के नाम और कवि पद्‌माकर की मृत्यु को स्पष्ट किया हैं। कवि पद्‌माकर की ऐतिहासिक कृतियों में हिम्मत बहादुर विरुदावली' कृति का संक्षिप्त परिचय दिया हैं।

अध्ययन के दूसरे चरण का शीर्षक 'मध्यकालीन मराठी के ऐतिहासिक वीरकाव्य के प्रमुख कवि' हैं। अध्याय के द्वितीय चरण में आदिकालीन मराठी साहित्य के पौराणिक वीररसात्मक काव्य को स्पष्ट किया हैं। इस आदिकालीन मराठी साहित्य में ऐतिहासिक वीरकाव्य उपलब्ध नहीं हैं। उसके पश्चात मध्यकालीन मराठी के ऐतिहासिक वीरकाव्य का संक्षिप्त परिचय दिया है। मध्यकालीन मराठी साहित्य के ऐतिहासिक वीरकाव्य के प्रमुख पाँच कवियों का व्यक्तित्व और कृतित्व प्रस्तुत करने का प्रयास किया हैं। मध्यकालीन प्रमुख ऐतिहासिक कवि अनंत फंदी हैं। शाहिर अनंत फंदी के व्यक्तित्व में उनका जन्म, माता-पिता, बाल्यकाल, परिवार, आश्रयदाता और उनके मृत्यु को स्पष्ट किया है। कवि अनंत फंदी के ऐतिहासिक कृतियों में 'माधव निधन काव्य', 'नाना फडणिस', 'यशवंतराव होळकर', 'दूसरा बाजीराव' और अन्य ऐतिहासिक पवाडों की रचना की है। ऐतिहासिक वीरकाव्य दूसरे प्रमुख कवि होनाजी बाळा के व्यक्तित्व में जन्म, शिक्षा, आश्रयदाता, मृत्यु के संदर्भ में अध्ययन किया है। उनके ऐतिहासिक काव्य कृतियों में सवाई माधवराव, दूसरे बाजीराव, खडकी और अष्टि युध्द, खर्ड्या के ऐतिहासिक युध्द, आदि घटनाओं पर पवाडों की रचना की हैं। कवि शाहिर परशराम के जीवन परिचय में उनका जन्म, शिक्षा, आश्रयदाता और उनके मृत्यु की घटना पर प्रकाश डाला है। कवि परशराम ने समाज, राजनीति और देश के तत्कालीन ऐतिहासिक घटनाओं पर काव्य लिखा है। उनके ऐतिहासिक काव्य कृतियों के संक्षिप्त परिचय को स्पष्ट किया हैं। मध्यकालीन शाहिरी साहित्य में उनकी भाषा और स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण है। शाहिर कवि प्रभाकर का व्यक्तित्व उनका जन्म, परिवार, आश्रयदाता को स्पष्ट किया है। अतः

गरीबी से जुझते हुए उनकी मृत्यु हुई हैं। कवि प्रभाकर के ऐतिहासिक वीर काव्य में सवाई माधवराव, मराठा और निजामों के बीच खर्ड्या ऐतिहासिक युध्द का सजीव चित्रण किया है। अहिल्यादेवी होळकर, सयाजीराव आदि के उपर ऐतिहासिक पवाडों की रचना की है। मध्यकालीन मराठी के शाहिरी साहित्य में प्रभाकर कवि के भाषा और स्थान को स्पष्ट किया हैं। मध्यकालीन प्रमुख शाहिरों में अंतिम कवि सगनभाऊ के जन्म, व्यवसाय, आश्रयदाता और उनकी मृत्यु को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। उनकी ऐतिहासिक कृतियों में दूसरा बाजीराव, खडकी युध्द, पानिपत युध्द का वर्णन अपने पवाडों के माध्यम से किया हैं। मध्यकालीन शाहिरी साहित्य (पवाडों) में उनका महत्व और स्थान को स्पष्ट किया है।

अत : मध्यकालीन मराठी और हिंदी के ऐतिहासिक वीरकाव्य के मूलतत्व संस्कृत के पौराणिक ग्रंथों से मिलते हैं। मध्यकाल के हिंदी साहित्य का वीरकाव्य और मराठी साहित्य तंत काव्य अर्थात शाहिर काव्य ही ऐतिहासिक वीरकाव्य हैं। दोनों भाषा के काव्यधारा में ऐतिहासिक वीरकाव्य लिखे गये हैं। मध्यकालीन दोनों भाषा साहित्य के ऐतिहासिक वीर काव्यधाराओं के प्रमुख पाँच-पाँच कवियों का व्यक्तित्व और कृतित्व स्पष्ट किया हैं।

मध्यकालीन हिंदी साहित्य में वर्णित छत्रपति शिवाजी महाराज का स्वरुप : इस अध्याय में मध्यकालीन हिंदी साहित्य में वर्णित शिवाजी महाराज के स्वरुप को स्पष्ट किया हैं। शिवाजी महाराज का स्वरुप स्पष्ट करने के लिए इस अध्याय को दो चरणों में विभाजित किया है। अध्याय के प्रथम चरण का शीर्षक 'मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज का बहिरंग स्वरुप' यह है। अध्याय के इस पहले चरण के शीर्षक में शिवाजी महाराज के बहिरंग स्वरुप को सात मुद्दों के आधार पर स्पष्ट किया है। शिवाजी महाराज के 'सूर्यवंशी' राजवंश का वर्णन किया है। इनका संबंध उत्तर भारत के क्षत्रिय राजपुत के वंश से है।

भूषण भी लिखते हैं कि "सूर सिरोमनि सूर-कुल, सिव सरजा मकरंद।" (सं.प. राजनारायन शर्मा, शिवराज भूषण) अर्थात पृथ्वी पर 'सूर्यकूल' सर्वश्रेष्ठ है। इसी श्रेष्ठ 'सूर्यवंशी' कूल में शिवाजी महाराज के दादाजी मकरंद (मालोजी) राजे का जन्म हुआ है। मालोजी राजा के पुत्र शाहजी राजे की और शहाजी राजे की संतान शिवाजी महाराज थे। उनका जन्म शिवनेरी किले पर माता जीजाबाई के कोख से हुआ। अत्याधिक सुंदर रुप बालक होने से उनका शिवाजी नामकरण किया गया है। उनकी शारीरिक आकृति और वेशभूषा के वर्णन को स्पष्ट किया है। उनकी शक्तिशाली भुजाएँ के साथ-साथ दाढी, मुँछे और चेहरे पर तेजस्वीता झलकती है। उनकी वेशभूषा घटना, प्रसंगों के साथ बदलती रहती हैं। शत्रु के अनुचित क्रिया या घटनाओं पर तुरंत प्रतिक्रिया देते हैं। किले रायगढ़ के प्राकृतिक और भौतिक सुंदरता का चित्रण किया है। यह चित्रण करते समय कहीं-कही अत्याधिक अतिश्योक्तिपूर्ण वर्णन किया हैं। उनके नगाडों के वर्णन से शत्रु पक्ष अत्याधिक भयभित होता है। शत्रु पक्ष नगाडों की आवाजों से आतंकित होता है। इस नगाडों के वर्णन में अत्याधिक अतिशयोक्ति और कल्पनात्मकता चित्रण वर्णित करने का प्रयास किया है। शिवाजी महाराज के तलवार का मानवीकरण करते हुए उसे दैवी अवतार के वर्णन को स्पष्ट किया है। तलवार के वर्णन में चमत्कारिकता और अत्याधिक काल्पनिकता दिखाई देती है। मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज के राज्याभिषक और मृत्यु के संदर्भ में कोई जानकारी उपलब्ध नहीं हैं।

इस अध्याय के द्वितीय चरण का शीर्षक 'मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज का अंतरंग स्वरुप' यह है। हिंदी साहित्य में वर्णित शिवाजी महाराज के अंतरंग स्वरुप को स्पष्ट करने के लिए २९ मुद्दों का आधार लिया है। शिवाजी महाराज का बचपन दक्खन के पहाडियों में बीता है। वह बचपन से ही पराक्रमी थे। उनकी शिक्षा का वर्णन मध्यकालीन हिंदी साहित्य में उपलब्ध नहीं है। वह बचपन से ही प्रतिभा संपन्न बालक थे। वे बडों के प्रति अत्याधिक

नम्रता दिखाते हैं। उनके बुध्दि की तुलना पाँच पाडवों में से 'नकुल' के साथ की हैं। शिवाजी महाराज में पाँच पाडवों के समग्र गुणों का संचय दिखाई देता हैं। वह अपने स्वराज्य की दृढ प्रतिज्ञा के प्रति अटल रहकर उसका अंत तक निर्वाहन करते हैं। वे अत्यंत स्वाभिमानी थे। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपने स्वाभिमान को आहत नहीं पहुँचने दी। उनके मन में भवानी देवी, भगवान शिवजी, कृष्ण, माता-पिता और बडों के प्रति अत्याधिक श्रध्दा थी। उन्होंने शक्तिशाली शत्रुओं का साहस और निर्भयता के साथ सामना किया था। उनके निर्भय और साहस के गुणों का वर्णन किया हैं। स्वराज्य के प्रति वे दिन-रात कार्यतत्पर रहते हैं। उनके अंदर असामान्य कार्यक्षमता थी। शिवाजी महाराज ने प्रथमत: अन्याय-अत्याचार के विरुध्द प्रजा को संघटित किया और उसके बाद सरदार, छोटे-मोठे देशी राजाओं का संघटन बनाया था। वे एक कुशल राजनितिज्ञ थे। उन्होंने समयानुरुप साम, दाम, दंड, भेद की राजनीति का उपयोग किया है। उनकी राजनीति के गुढता को कोई भी शत्रु समझ नहीं पाया था। उनके कुशल युध्दनीति का भी वर्णन किया हैं। परंपरागत युध्दनीतियों के साथ-साथ स्वतंत्र युध्दनीतियों का निर्माण किया था। उनका गनिम कावा, निषा युध्द, छापामारी आदि युध्द तंत्र प्रयोग को स्पष्ट किया हैं। उनके स्वराज्य का प्रमुख उद्देश लोककल्याण ही था। वे प्रजाहित दक्ष राजा थे। स्वधर्म (हिंदूधर्म) के स्वधर्म के प्रति उनके मन में पुरी आस्था, श्रध्दा, निष्ठा थी। उन्हें स्वधर्म का अभिमान था। हिंदू धर्म के रुढी, परंपरा, धर्म ग्रंथ, श्रध्दा स्थानों का रक्षण किया हैं। वे हिंदूधर्म और संस्कृति के रक्षक थे। शिवाजी महाराज केवल व्यक्तिगत जीवन में हिंदू धर्म के तत्वों का आचरण करते थे।

शिवाजी महाराज एक वीर यौद्धा थे। उनकी तुलना पौराणिक वीर योध्दाओं के साथ की गयी हैं। वे युध्दक्षेत्र में कभी शत्रु को पीठ दिखाकर भागे नहीं। अपने जान की बाजी लगाकर रणभूमि में शत्रुओं से लडते रहें। वीरता के सभी गुण उनमें सम्मिलित है। शिवाजी महाराज के अफजलखां वध, शाहीस्तेखाँ

पर छापा, आगरा दरबार पलायन, सुरत पर आक्रमण, कर्नाटक स्वारी, सालहेरी युध्द आदि घटनाओं के माध्यम से उनके पराक्रम को स्पष्ट किया है। वे पराक्रमी चतुरंगी मराठा सेना के नायक थे। उनकी सेनाओं ने बडे-बडे शक्तिशाली शत्रु सेनाओं को परास्त किया था। शिवाजी महाराज की शत्रु पक्ष के उपर अत्याधिक धाक थी। उनके धाक (डर) को वर्णित करते समय कहीं-कहीं अतिशयोक्ति और काल्पनिक वर्णन हुआ हैं। शत्रु पक्ष के सेना, सरदारों पर उन्हें पर दया का भाव रखते थे। उनका दानी रुप साहित्य के साथ-साथ इतिहास प्रसिध्द भी है। उन्होंने प्रजा, सेना, सरदार, अन्य राजा को भी दान दिया था। शत्रुओं के अनेक सेना, सरदारों को युध्द भूमि में हारे या पकडे जाने पर उन्हें जीवनदान दिया था। कवियों ने उनकी अत्याधिक दानवीरता की प्रशंसा करते समय कहीं-कहीं अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया हैं। शिवाजी महाराज के वैभवसंपन्नता को स्पष्ट किया है। उनकी वैभवसंपन्नता की तुलना धन, संपत्ति कुबेर और इंद्र इन पौराणिक देवताओं के साथ की हैं। शिवाजी महाराज को भगवान विष्णु के अवतार रुप में वर्णित किया हैं। भगवान विष्णु की तरह पृथ्वी रक्षण और पालन का कार्य शिवाजी महाराज के हाथों से हो रहा है। इस वर्णन में पौराणिक ग्रंथों की मान्यता के अनुसार राजा ईश्वर का होता है' इसी विचारधारा को प्रकट किया है। उनके असंभव कार्य को देखकर साहित्य में उनके अवतारी रुप का वर्णन हुआ है। उनकी कीर्ति देश विदेशों के चारों दिशाओं में फैल चुकी है। शिवाजी महाराज के निर्णय में भविष्य के परिणामों की सतर्कता दिखाई देती हैं। वे अत्यंत उदारमतवादी राजा थे। स्वराज्य में सभी को समान भेदभाव रहित न्यायदान किया है। वे स्वराज्य की सभी प्रजा (बहुजनों) के रक्षक और पालक थे। स्त्री के प्रति उनके मन में अत्यंत आदरता का भाव रहा हैं। स्वराज्य के सभी स्त्रीयों की रक्षा, सुरक्षा और सम्मान किया जाता था। एक आदर्श राज्य के आदर्श राजा के रुप में शिवाजी महाराज को वर्णित किया है।

अत: मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज के बहिरंग और अंतरंग स्वरुप का वर्णन किया है। यह वर्णन करते समय कहीं-कहीं प्रशंसा, अतिशयोक्ति, और काल्पनिकता आ गयी हैं। साहित्य में विभिन्न ऐतिहासिक घटना, प्रसंगों के आधार पर उनके व्यक्तित्व को प्रकट किया है। शिवाजी महाराज पर लिखित मध्यकालीन साहित्य भारतीय स्वाभिमान को प्रकट करता है। वे भारतीय साहित्य और इतिहास को भी गौरवान्वित करते हैं।

मध्यकालीन मराठी साहित्य में वर्णित छत्रपति शिवाजी महाराज का स्वरुप: इस अध्याय में मध्यकालीन मराठी साहित्य में वर्णित शिवाजी महाराज के स्वरुप को स्पष्ट किया है। शिवाजी महाराज के स्वरुप को स्पष्ट करने के लिए इस अध्याय को प्रमुख दो चरणों में विभाजित किया है। प्रथम चरण का शीर्षक 'मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज का बहिरंग स्वरुप' यह है। उनके बहिरंग स्वरुप को नौं मुद्दों के आधार पर स्पष्ट किया है। इसमें प्रथमत: शिवाजी महाराज के राजवंश को स्पष्ट किया है। मध्यकालीन मराठी साहित्य के 'सप्त प्रकरणात्मक चरित्र' जीवनी में लिखा है कि 'हे उदारपुरचे राणाजीचे घरातील वंश सिसोदे कूळपरंपरा पुरुष, पिढ्या लाऊन या प्रांती हिंदूस्थानातुन आले, रजपूत राजवंश महाराष्ट्र देशी म्हराठे म्हणवितात' (शिवछत्रपतिचे सप्तप्रकरणात्मक चरित्र, प्र. सं. २१५) अर्थात शिवाजी महाराज उदयपूर के रजपुत राजा राणाजी के सिसोदे कुल से हैं। राणाजी के वंशज उत्तर भारत से दक्षिण भारत में आकर यही पर स्थायी शासक और निवासी हो गये। यह सर्वश्रेष्ठ 'सुर्यवंशी' राजवंश से थे। शिवाजी महाराज की जन्मतिथि और नामकरण में मतभिन्नता है। कुछ ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर उनका जन्म सन् १९ फरवरी, १६३० को शिवनेरी दूर्ग पर हुआ हैं। शिवाजी महाराज की आकृति (रंग, रुप, शरिर) का संक्षिप्त वर्णन किया है। उनकी घटना, प्रसंगों के आधार पर बदलती वेशभूषा का वर्णन किया हैं। विभिन्न घटित घटनाओं में शत्रु के अनुचित व्यवहार पर प्रतिक्रिया देते है। किले रायगड के प्राकृतिक और

भौतिक वैभव के सुंदरता पर प्रकाश डाला है। शिवाजी महाराज के युध्द प्रसंग में बजते हुए नगाडे से विजय का संकेत प्राप्त होता है। उनके तुळजा, भवानी, जगदंबा इन तीन तलवारों का वर्णन और उस वर्णन में किंवदंती और इतिहास को स्पष्ट किया हैं। शिवाजी महाराज के ६ जुन, १६७४ के राज्याभिषक समारोह की तैयारी और समारोह के चित्र को प्रस्तुत किया हैं। शिवाजी महाराज की मृत्यु ३ अप्रैल, १६८० में हुई हैं। उनके मृत्यु की घटना के कारणों में साहित्यिक और ऐतिहासिक दोनों मतों की चर्चा की हैं।

इस अध्याय के दूसरे चरण का शीर्षक 'मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज का अंतरंग स्वरुप' यह हैं। द्वितीय चरण में शिवाजी महाराज के अंतरंग स्वरुप को स्पष्ट करने के लिए २९ मुद्दों का आधार लिया हैं। उनका बचपन दक्षिण पहाडियों के मावल प्रदेश में अपने दोस्तों के साथ खेल कुद के साथ-साथ उनका संघटन कर तोरणा किले को जीत लिया हैं। माता जीजाबाई के सानिध्य में शिक्षा, संस्कारों के साथ पिता शाहजी राजे के विश्वस्त विशेषज्ञ सेवकों के द्वारा दी गयी। वे अत्याधिक नम्रता और असामान्य बुध्दि संपन्नता के धनी थे। शिवाजी महाराज के द्वारा सन् १७ अप्रैल १६४५ को स्वराज्य की दृढ प्रतिज्ञा ली गयी थी। उनमें विपरित परिस्थितियों में उनके आंतरिक साहस, निर्भयता, स्वाभिमान के गुणों का वर्णन किया हैं। उनके मन में भवानी देवी, महादेव, माता-पिता, संत और बडों के प्रति श्रध्दा हैं। स्वराज्य के प्रति उनकी असामान्य कार्यक्षमता का वर्णन किया हैं। शिवाजी महाराज ने स्वराज्य की प्रजा, सरदारों के साथ-साथ देशी राजाओं का भी संघटन किया है। शिवाजी महाराज के साम,दाम, दंड, भेद, की राजनीति के साथ उनकी राजनीतिक विशेषताओं को स्पष्ट किया हैं। उनके द्वारा युध्द के रणभूमि में परंपरागत और नये युध्दतंत्र का प्रयोग किया गया। शिवाजी महाराज प्रजाहित के प्रति हमेशा तत्पर रहते है। उन्हें स्व-धर्म (हिंदू) के प्रति अभिमान था। वे धर्म की रुढी परंपरा संस्कृति का रक्षण करते हैं। वे वीर योध्दा, पराक्रमी राजा और पराक्रमी सेना के नायक थे।

इस कारण शत्रुपक्ष के उपर उनकी अत्याधिक धाक दिखाई देती हैं। साहित्य में वर्णित उनके दयावीर, दानवीर रुप को प्रकट करने का प्रयास किया हैं। शिवाजी महाराज अत्याधिक धनसंपन्न तथा वैभव संपन्न राजा हैं। शिवाजी महाराज को मध्यकालीन मराठी साहित्यकारों ने भगवान 'शिवजी' के अवतारी पुरुष के रुप का वर्णन किया हैं। इसमें पौराणिक धर्म ग्रंथों की मान्यता जो 'राजा ईश्वर का अंश होता हैं' इसी को पुनस्थापित करने के लिए यह वर्णन साहित्य में किया हैं। देश-विदेशों में उनकी कीर्ति और यश का वर्णन किया गया। शिवाजी महाराज दूरदर्शि, उदारमतवादी, न्यायप्रिय राजा थे। वे धर्म, पंथ, संम्प्रदाय के भेदभाव को न मानकर उदात्त अंतकरण से सभी को समान मानते थे। उनके दूरदर्शि निर्णय और स्वराज्य की भेदभाव रहित समान न्याय व्यवस्था को स्पष्ट किया है। शिवाजी महाराज ने किसी एक जाती, धर्म, पंथ, सम्प्रदाय, के लिए कार्य न करते हुए समग्र बहुजन की रक्षा और पालन का कार्य किया है। स्त्री के प्रति उनका दृष्टिकोण अत्यंत पुजनिय और आदरभाव का रहा हैं। उनका हिंदवी स्वराज्य एक आदर्श लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था के मूल्यों की स्थापना करनेवाला शासन और शासक हैं। साहित्य में उनके अंदर एक आदर्श शासक के गुणों को स्पष्ट किया हैं।

अत: मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के बहिरंग और अंतरंग स्वरुप को विभिन्न मुद्दों के द्वारा स्पष्ट किया हैं। शिवाजी महाराज समाज, धर्म, देश, राजनीति, संघटक, स्वाभिमानी, साहसी, दया, दान, युध्दवीर वैभव संपन्न, पराक्रमी, दुरदर्शि, न्यायप्रिय, उदारमतवादी राजा के रुप में प्रेरित करते रहेंगे। वे बहुजनों का रक्षण करनेवाले स्त्री को पुजनिय माननेवाले एक आदर्श, राजा और शासक देश और विश्व को सर्वकालीन आदर्श रहेंगें।

मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में वर्णित छत्रपति शिवाजी महाराज के स्वरुप का तुलनात्मक अध्ययन : इस अध्याय में मध्यकालीन हिंदी-मराठी के

साहित्य में शिवाजी महाराज के स्वरुप का तुलनात्मक अध्ययन किया हैं। उनके स्वरुप को लेकर दोनों साहित्य में भेद, साम्य को भी वर्णित किया हैं। प्रस्तुत अध्ययन को दो चरणों में विभाजित किया हैं। अध्याय के प्रथम चरण का शीर्षक 'मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में वर्णित शिवाजी महाराज के बहिरंग स्वरुप का चित्रण' यह हैं। इस प्रथम चरण में शिवाजी महाराज के बहिरंग स्वरुप को दोनों भाषा साहित्य में वर्णित नौं मुद्दों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन किया हैं। दोनों भाषा के साहित्य में शिवाजी महाराज के 'सूर्यवंशी' क्षत्रिय राजपुत के वर्णन को स्पष्ट किया हैं। मध्यकालीन हिंदी में उनके जन्मस्थान, तिथि के संदर्भ में कोई जानकारी उपलब्ध नहीं हैं। मराठी साहित्य में उपलब्ध जानकारी के आधार पर उनका जन्म १९ फरवरी, १६३० को शिवनेरी दूर्ग पर हुआ हैं। उनके नामकरण संबंधी के मताभिन्नता को स्पष्ट किया हैं। शिवाजी महाराज की आकृति, शरिररचना, रंगरुप के समानता को स्पष्ट किया हैं। घटना, प्रसंग के अनुसार उनके बदलती हुई वेशभूषा को वर्णित किया हैं। शत्रु के द्वारा अनुचित व्यवहार पर विपरित परिस्थितियों में उनका विरोध करते हुए प्रतिक्रिया देते हैं। दोनों भाषा के साहित्य में किले रायगड की भौतिक और प्राकृतिक सुंदरता को वर्णित किया है। हिंदी साहित्य में रायगढ़ किले के कहीं-कही अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया हैं। युध्द की तैयारी और विजय के संकेत स्वरुप नगाडों की आवाजों का वर्णन किया हैं। इस नगाडों के वर्णन में हिंदी साहित्य के अतिशयोक्ति को प्रस्तुत किया है। शिवाजी महाराज की तलवार को अवतारवादी, दैवीशक्ति के किवंदती या काल्पनिक वर्णन को स्पष्ट किया है। मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज के राज्यभिषेक और उनकी मृत्यु के संबंध में कोई वर्णन उपलब्ध नहीं हैं। मराठी साहित्य में ६ जुन, १६७४ के राज्याभिषक समारोह और ३ अप्रैल, १६८० में उनकी मृत्यु के घटनाओं का वर्णन किया गया है।

इस अध्याय के दूसरे चरण का शीर्षक 'मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में वर्णित शिवाजी महाराज के अंतरंग का स्वरुप' में शिवाजी महाराज के अंतरंग

स्वरुप को स्पष्ट किया हैं। दोनों भाषा साहित्य में वर्णित उनके अंतरंग स्वरुप का तुलनात्मक अध्ययन किया है। अंतरंग स्वरुप के तुलनात्मक अध्ययन को २९ मुद्दों के आधार पर स्पष्ट किया हैं। मध्यकालीन हिंदी साहित्य की तुलना मराठी साहित्य में बचपन और शिक्षा का अधिक विस्तृत वर्णन किया हैं। मध्यकालीन हिंदी साहित्य में उनके शिक्षा के विषय में कोई वर्णन उपलब्ध नहीं हैं। शिवाजी महाराज व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में अत्याधिक नम्र थे। वे बचपन से ही प्रतिभा संपन्न थे। वह असामान्य बुध्दि के धनी थे। शिवाजी महाराज हिंदवी स्वराज्य की दृढ प्रतिज्ञा लेकर उसे पुरा किया हैं। हिंदी के तुलना में मराठी साहित्य में दृढ प्रतिज्ञा का विस्तृत वर्णन दिया हैं। दोनों भाषा साहित्य में शिवाजी महाराज के स्वाभिमान को स्पष्ट किया हैं। वे अत्याधिक श्रध्दावान राजा थे। उनके व्यक्तिगत जीवन में धर्म, ईश्वर, परंपरा, श्रध्दास्थानों के प्रति अत्याधिक श्रध्दा दिखाई हैं। उन्होंने शक्तिशाली शत्रुओं के सामने भी साहस और निर्भयता से युध्द कर जीत प्राप्त की हैं। स्वराज्य के प्रति दिन-रात कार्यतत्पर रहते थे। उनके अंदर असामान्य कार्यक्षमता थी। उन्होंने मावळ प्रदेश की प्रजा, सरदार, देश के राजाओं को शत्रु के विरुध्द संघटित किया था। दोनों साहित्य में शिवाजी महाराज की साम, दाम, दंड, भेद और गुढ़ राजनीति को समान रुप से स्पष्ट करने का प्रयास किया हैं। उनके द्वारा परंपरागत युध्द तंत्रों के साथ-साथ स्वतंत्र गनिमी कावा, छापा मारी, निषायुध्द के तंत्र का निर्माण किया था। स्वराज्य का प्रमुख उद्देश सभी प्रजा के हित का रक्षण करना है। उन्होंने शोषणमुक्त समाज का निर्माण किया था। स्वराज्य की सभी प्रजा सुखी, सुरक्षित और संपन्न थी। शिवाजी महाराज को स्वधर्म (हिंदू धर्म) के प्रति अभिमान और श्रध्दा थी। उन्होंने हिंदू धर्म के रुढी, परंपरा, धर्मग्रंथ श्रध्दास्थानों का रक्षण और पालन किया है। उनको वीर योद्धा और पराक्रमी राजा के रुप में स्पष्ट किया हैं। वे युध्दभूमि में कभी शत्रु से डरकर भागे नहीं। शक्तिशाली शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर असामान्य पराक्रम दिखाया हैं। वे स्वंय युध्दभूमि में युध्द करने के लिए

उतरते थे। उन्होंने देश के शक्तिशाली आठ शत्रुओं को परास्त किया हैं। उनकी चतुरंगी (हाथी,घोडे, पैदल और नौसेना) सेना ने भी अपना असामान्य पराक्रम दिखाया हैं। शिवाजी महाराज और मराठा सेना का शत्रु पक्ष पर जबरदस्त धाक था। हिंदी साहित्य में शत्रुपक्ष पर धाक वर्णन में अतिशयोक्ति और कहीं-कहीं कल्पना का आधार लिया है। शिवाजी महाराज दयावीर, दानवीर थे। वे शत्रुपक्ष के युध्द में पकडे जाने पर अनेक सरदार, सेनाओं के उपर दया दिखाकर उन्हें छोड दिया करते है। उनकी दानवीरता इतिहास प्रसिध्द हैं। वे अत्याधिक दानी राजा थे। उन्होंने प्रजा, सेना, सरदार, कवि अन्य देश के राजाओं को भी दान दिया था। हिंदी साहित्य में मराठी साहित्य की तुलना दानशुरता के वर्णन में कहीं-कहीं अतिशयोक्ति पायी जाती है। शिवाजी महाराज के वैभव संपन्नता को स्पष्ट किया हैं। हिंदी के साहित्य में वैभव संपन्नता के तुलना वर्णन में कहीं-कहीं पौराणिक राजा और ईश्वर के साथ अतिशोक्तिपूर्ण वर्णन किया है। हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज को भगवान विष्णु का अवतार मानते है, तो मराठी साहित्य में उन्हें भगवान 'शिवजी' का अवतार माना है। इन दोनों प्रकार के वर्णन में साहित्यकार ने राजा के संदर्भ में परंपरागत परिपाठी की मान्यताओं को प्रकट किया हैं। शिवाजी महाराज के असामान्य पराक्रम से उनकी कीर्ति चारों दिशाओं और विदेशों तक फैल चुकी हैं। उनका यश निर्मल और शुध्द हैं। इस पराक्रम के यश का गान कवि लोग कर रहे हैं। शत्रु पक्ष के लोग भी उनके यश और कीर्ति से उन्हें प्रत्यक्ष देखने की मन में जिज्ञासा रखते हैं। शिवाजी महाराज के निर्णय प्रजा हित में वर्तमान, भूत, भविष्य, की परिस्थितियाँ और परिणामों को ध्यान में रखकर लिए जाते हैं। शिवाजी महाराज अत्यंत उदारमतवादी राजा थे। उनकी सोंच, विचार और स्वराज्य स्थापना का उद्‌देश अत्यंत व्यापक था। जात-धर्म, पंथ, सम्प्रदाय श्रध्दास्थान और शत्रु के प्रति भी उनका विचार उदारमतवादी था। वे धर्म, राजनीति, समाजनीति में उदारमतवादी विचारधारा का पालन करते थे। उन्होंने अपने स्वराज्य में एक आदर्श न्यायव्यवस्था को निर्माण किया था। उनकी

न्यायव्यवस्था भेदभाव रहित और गुण सहित थी। स्वराज्य में गुनहगारों को जलद गति से दंड दिया जाता है। शिवाजी महाराज के न्याय प्रियता के स्वरुप को स्पष्ट किया हैं। शिवाजी महाराज किसी एक जाती, धर्म, के रक्षक या प्रतिपालक नहीं बल्कि समस्त मानवता के रक्षक और पालनकर्ता हैं। स्त्री के प्रति उनका आदरयुक्त दृष्टिकोण था। स्वराज्य के सभी स्त्रियों के साथ-साथ शत्रु प्रदेश के स्त्रियों का भी आदर और सम्मान करते हैं। हिंदी साहित्य में शत्रु पक्ष के स्त्रियों को शिवाजी महाराज से अत्याधिक भयभित दिखाया हैं। यह भय उनके मन में केवल अपने पति के शत्रु शिवाजी महाराज होने के कारण उत्पन्न हुआ है। इतिहास साक्षी है कि शिवाजी महाराज सभी स्त्रियों को पुजनिय मानते हैं। यह संस्कार उनकी माता जीजाबाई से मिला था। दोनों साहित्य में शिवाजी महाराज के आदर्श लोकतांत्रिक शासन और आदर्श के रुप को स्पष्ट किया हैं। उनके स्वराज्य में स्वातंत्र्य, समता, बंधुता और समान न्याय के मूल्यों की प्रतिष्ठापना हो चुकी थी।

अतः शिवाजी महाराज मध्यकालीन दोनों भाषा साहित्य में असामान्य सर्वगुण संपन्न व्यक्तित्व के रुप में प्रस्थापित हो चुके हैं। उनका स्वराज्य लोकतांत्रिक मूल्यों पर आधारित एक आदर्श शासन व्यवस्था थी। इस आदर्श शासनव्यवस्था के वे अत्यंत आदर्श राजा, नेता, शासक और प्रमुख प्रशासक थे। शिवाजी महाराज हमेशा भारतीय इतिहास और साहित्य को निः संदेह प्रेरित और गौरवान्वित करते रहे।

उपसंहार एवं निष्कर्ष : शोधप्रबंध का अंतिम अध्याय 'उपसंहार एवं निष्कर्ष' यह है। मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के बहिरंग और अंतरंग स्वरुप का सार स्पष्ट किया हैं। इस अध्याय में शोध प्रबंध के सभी अध्यायों का सार सारांश रुप में प्रस्तुत किया हैं। शोध प्रबंध के कार्यकाल में आए

अनुभवों के आधार पर वर्तमान समाज की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए मैं सकारात्मक दृष्टिकोण रखकर निम्नलिखित निष्कर्षों पर पहुँचा हूँ।

निष्कर्ष :

१. शिवाजी महाराज को लेकर मध्यकालीन हिंदी साहित्य की तुलना में मराठी साहित्य में अत्याधिक साहित्य लिखा गया हैं। हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज पर कवि भूषण और लाल कवि का वर्णन ही उपलब्ध होता है। मराठी साहित्य में शाहिर अज्ञानदास, तुलशीदास और मध्यकालीन बखर (जीवनी) साहित्य भी उपलब्ध हैं।

२. मध्यकालीन हिंदी-मराठी के ऐतिहासिक वीरकाव्य का मूल तत्व प्राचीन भारतीय पौराणिक साहित्य में दिखाई देते हैं। प्राचीन भारतीय संस्कृत ग्रंथों में वेद, पुराण, रामायण, महाभारत की कथाओं में पौराणिक वीर चरित्र नायक दिखाई देते हैं। इसी काव्य की परंपरा का विकसित रुप ऐतिहासिक वीरकाव्य है।

३. शिवाजी महाराज को लेकर हिंदी साहित्य के मध्यकाल में उनके समकालीन साहित्य लिखा गया हैं। परवर्तित काल में कम साहित्य लिखा होगा; परंतु आज उपलब्ध नहीं हैं। वहीं मराठी साहित्य में उनके समकालीन और उनके बाद भी मध्यकाल में जीवनियों की रचना हो चुकी हैं।

४. दोनों भाषाओं के मध्यकालीन साहित्य में शिवाजी महाराज के 'राजवंश' का वर्णन किया हैं। वह उत्तर भारत के क्षत्रिय राजपुत 'सूर्यवंशी' राजवंश के वंशज हैं। उत्तर भारत से वे दक्षिण में आकर यही स्थायी रहने लगे और दक्षिण प्रदेश के शासक बने।

५. दोनों भाषा के साहित्य में शिवाजी महाराज को श्रध्दावान राजा के रुप में वर्णित किया हैं। इसी दृष्टि से उनकी भवानी देवी, भगवान शिवजी, स्वधर्म, धर्मस्थान, रुढ़ी, परंपरा आदि पर सकारात्मक श्रध्दा थी।

६. मध्यकालीन साहित्य में शिवाजी महाराज के स्वाभिमान को वर्णित किया हैं। दोनों भाषा साहित्य में शिवाजी महाराज के स्वाभिमान वर्णन में आगरा दरबार की घटना का विस्तृत विवेचन किया है। दरबार में औरंगजेब बादशाह के सामने अपना सर नही झुकाया और न बादशाह के दरबारी नियमों का पालन किया था।

७. दोनों भाषा के साहित्यकारों ने शिवाजी महाराज के युध्दवीर, दयावीर, दानवीर स्वरुप को स्पष्ट किया है। युध्दभूमि से वे कभी हारकर भागे नहीं। शरणार्थी शत्रु के प्रति दया का भाव दिखाया है। उन्होंने प्रजा, सेना, सरदार, भिक्षूक, कवियों को दान दिया है।

८. दो भाषा के साहित्यकारों ने शिवाजी महाराज की पराक्रमिता और वीरता को दर्शाने के लिए अधिकतर अफजलखां वध, शाईस्ताखाँ के उपर छापा, आगरा दरबार, सुरत पर आक्रमण, सालहेरी युध्द आदि घटनाओं का वर्णन समान रुप से किया हैं।

९. दोनों भाषा के साहित्य में उनके नये युध्दतंत्र का वर्णन किया हैं। उनकी छापामारी, गनिम कावा, निषा युध्द के युध्दनीति को स्पष्ट किया हैं। समय और परिस्थिति के अनुरुप वे अपनी युध्दनीतियों का उपयोग करते थे।

१०. दोनों भाषा के मध्यकालीन साहित्य में शिवाजी महाराज को कुशल राजनीतिज्ञ के रुप में वर्णित किया हैं। वे राजनीति में साम, दाम, दंड, भेद का उपयोग करते थे। उनकी राजनीतिक निर्णय की गुढता को कोई भी शत्रु के समझ नहीं सका था।

११. मध्यकालीन दोनों भाषा साहित्य में शिवाजी महाराज को कुशल संघटक के रुप में वर्णित किया है। उन्होंने यवनों के विरुध्द असंघटित जनता को संघटित किया हैं। विभिन्न प्रदेश के सरदार और छोटे-छोटे राजाओं का भी संघटन तैयार किया था।

१२. दोनों भाषा के मध्यकालीन साहित्य में शिवाजी महाराज को हिंदू धर्म और संस्कृति के रक्षक रुप को प्रस्तुत किया हैं। वे मंदिर, धर्मग्रंथ, नामस्मरण रुढ़ी, परंपरा का रक्षण करते हैं।

१३. मध्यकालीन साहित्य में उन्हें अवतारी पुरुष के रुप में वर्णित किया है। हिंदी साहित्य में भगवान विष्णु के अवतार माना है तो मराठी साहित्य में भगवान 'शिवजी' का अवतार माना गया है। दोनों साहित्यकारों की परंपरागत दृष्टि इस वर्ण में दिखाई देती है। मध्यकालीन समाज और साहित्य में चरित्र नायक में 'राजा ईश्वर का अंश होता है' इस मान्यता को प्रस्थापित करने का प्रयास किया है।

१४. साहित्य में स्त्री के प्रति शिवाजी महाराज के आदरयुक्त दृष्टिकोण को प्रकट किया है। परंतु हिंदी साहित्य में शत्रु स्त्री के अंतरमन को आतंकित (भयग्रस्त) वर्णित किया हैं। इस प्रकार का वर्णन अनऐतिहासिक और काल्पनिक सिध्द होता है। शिवाजी महाराज ने स्वराज्य और शत्रु राज्य की स्त्रियों का हमेशा सम्मान किया हैं। मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज का स्त्री के प्रति पूजनिय दृष्टिकोण को दर्शाया है।

१५. दोनों भाषा के साहित्य में शिवाजी महाराज को बहुजन प्रतिपालक रुप में प्रकट किया है। वे गरिब, दलित, पीड़ित, शोषित, स्त्री, पुरुष, किसान और सभी प्रजा के पालक और रक्षक हैं।

१६. मध्यकालीन दोनों भाषा के साहित्य में शिवाजी महाराज के उदात्त विचार, भावों को उजागर किया है। वे समाज धर्म, राजनीति में उदात्य दृष्टिकोण रखते हैं। सभी धर्मों का समान रुप से आदर करते थे। राजनीति में कभी भी किसी को सर्वकालिक शत्रु नहीं बनाया हैं। शरणार्थी शत्रु को उदात्यभाव से क्षमा करते थे।

१७. मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज को आदर्श राजा के रुप में वर्णित किया हैं। उन्हें लोकतांत्रिक मूल्य स्वातंत्र्य, समता, बंधुता और

समान न्याय के प्रतिष्ठाता रुप को वर्णित किया हैं। स्वराज्य में सभी प्रजा के मुक्त रुप से अपने धर्मों के अनुसार जीवन यापन करने का अधिकार था।

१८. दोनों भाषा के साहित्य में शिवाजी महाराज के बहिरंग और अंतरंग स्वरुप वर्णन में अत्याधिक समानताएँ दिखाई देती हैं।

१९. दोनों भाषा के साहित्य में शिवाजी महाराज के स्वरुप को लेकर इतिहास की तुलना में अत्याधिक काल्पनिकता दिखाई देती है। हिंदी साहित्य में रायगढ़, नगाडे, तलवार के वर्णन में कल्पना का अंश दिखाई देता हैं। मराठी साहित्य में भी तलवार के वर्णन में किंवदंती दिखाई देती है।

२०. दोनों भाषा के साहित्य ने शिवाजी महाराज के श्रेष्ठ मानवीय गुणों का वर्णन प्रस्तुत किया हैं। उनमें, प्रेम, दया, दान, त्याग, सदाचार, नम्रता, समर्पण, ममता, संवेदना, कर्तव्यदक्षता, दुरदर्शिता आदि मानवीय गुणों का समुच्चय शिवाजी महाराज में दिखाई देता हैं।

परिशिष्ट

संदर्भग्रंथ सूची

परिशिष्ट :

संदर्भग्रंथ सूची :

अ) मूल ग्रंथों की सूची :

१. सं. पं. राजनारायण शर्मा, महाकवि भूषण कृत शिवराजभूषण, (पाँचवा संस्करण) हिंदी भवन प्रकाशन, रानी मंडी, इलाहाबाद-३

२. सं.पं. हरिशंकर शर्मा, महाकवि भूषण कृत, शिवा-बावनी, रमाप्रसाद एण्ड बदर्स, बुक सेलर्स, आगरा,

३. सं. पं. राजनारायण शर्मा, भूषण ग्रंथावली, हिंदी- भवन प्रकाशन, लाहौर, दूसरा संस्करण, सन १९९८

४. सं. श्यामसुंदरदास बा. ए. और कृष्णबल्देव वर्मा, लाल कवि रचित छत्रप्रकाश, काशी नागर प्रचारिणी सभा, इलाहाबाद, सन १९१६

५. सं. आ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, भूषण ग्रंथावली, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली

६. सं. श्री सदाशिव रामचंद्र गाडगीळ आणि श्री नरहर कुरुंदकर, कृष्णाजी अनंत सभासद कृत श्री शिवप्रभू-चरित्र, (सभासदाची बखर), विद्यामंदिर प्रकाशन, सदाशिव पेठ, पुणे-२

७. सं. र. वि. हेरवाडकर, सप्तप्रकरणात्मक चरित्र, प्रकाशन निरंक

८. सं. अ. रा. कुलकर्णी, रामचंद्र, आमात्यांचे आज्ञापत्र, डायमंड पब्लिकेशन, सदाशिव पेठ, पुणे ४११०३०

९. सं. य.न. केळकर, ऐतिहासिक पोवाडे, प्रथम भाग, सदाशिव पेठ, पुणे, सन् १९२८

आ) सहाय्यक ग्रंथ सूची :

१. टीकमसिंह तोमर, हिंदी वीरकाव्य, प्रथम संस्करण, हिंदूस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद, १९५४

२. सं. डॉ. उदयनारायण तीवारी, वीरकाव्य, प्रथम संस्करण, भारती भंडार प्रकाशन, लिडर प्रेस, इलाहबाद

३. सं. श्री. लक्ष्मीनिधि चतुर्वेदी, महाकवि केशवदास की कविप्रिया, मातृभाषा मंदिर, दारागंज, प्रयाग, सन १९५२

४. डॉ. राजमल बोरा, भूषण और उनका साहित्य, द्वितीय संस्करण, साहित्य रत्नालय, गिलिस बाजार, कानपुर, सन १९८७

५. डॉ. भगवानदास तिवारी, भूषणः साहित्यिक एवं ऐतिहासि अनुशिलन, साहित्य भवन, प्रा. लि. इलाहाबाद

६. डॉ. वसंत मोरे, छ. शिवाजी की साहित्यिक प्रतिमा, प्रथम संस्करण, शिवसंग्राम प्रकाशन, फुलेवाडी, कोल्हापुर, महाराष्ट्र

७. डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त, हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद

८. आ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, हिंदी साहित्य का अतीत, दूसरा भाग, श्रृगारकाल, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली

९. सं. धीरेन्द्र वर्मा, हिंदी साहित्य, द्वितीय खंड, भारतीय हिंदी परिषद, प्रयाग

१०. डॉ. भगीरथ मिश्र, हिंदी साहित्य का ब्रहत इतिहास, सप्तम भाग, रीतिकाल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी

११. डॉ. हरदेव बाहरी, हिंदी काव्यशैलियों का अध्ययन, भारती प्रेस प्रकाशन, इलाहबाद

१२. डॉ. एम.एल. गुप्त, मध्यकालीन भारत का इतिहास, साहित्य रत्नालय प्रकाशन, कानपुर, सन् २००६

१३. डॉ. आर. के. परुथी, मुगल साम्राज्य का पतन तथा विदेशी शक्तियों का आगमन, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस दरियागंज, नई दिल्ली

१४. आ. रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, विश्वभारती प्रकाशन, घनवटे चेम्बर्स, सीताबर्डी, नागपुर

१५. सी. बा. हार्डिकर, मराठा राज्य की स्थापना अथवा छत्रपति शिवाजी, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, १९७२
१६. डॉ. रमा नवले, भूषण का प्रशस्ति काव्य, विकास प्रकाशन, कानपुर
१७. डॉ. धनंजय, हिंदी के ऐतिहासिक नाटकों में ऐतिहासिक तत्व, रचना प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम-१९७०
१८. डॉ. प्र. न. जोशी, मराठी वाङ्मयाचा विवेचक इतिहास, स्नेहवर्धन प्रकाशन, सदाशिव पेठ, पुणे
१९. डॉ. नगेंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, मयुर पेपरबैक्स, नौएडा
२०. डॉ. शम्भूनाथ पाण्डेय, आदिकालीन हिंदी साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
२१. सं. डॉ. रामसजन पाण्डेय, हिंदी साहित्य का इतिहास, संजय प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली, सन् २००४
२२. डॉ. ईश्वरदत्त शील, हिंदी साहित्य का मध्यकाल, गरिमा प्रकाशन, कानपुर
२३. श्री. गो. स. सरदेसाई, मराठों का नवीन इतिहास, प्रथम खण्ड, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी प्रा. लि. आगरा
२४. सुमन राजे, हिंदी साहित्य का आधा इतिहास, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली
२५. डॉ. महेन्द्रकुमार, रीतिकालीन रीतिकवियों का काव्य शिल्प, आर्य बुक डिपो, करौल बाग, नई दिल्ली
२६. डॉ. शिवकुमार शर्मा, हिंदी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ, आशोक प्रकाशन, दिल्ली, सन् १९८९
२७. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना, हिंदी के प्राचीन कवि, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, सन् १९७२
२८. डॉ. राजकिशोर पांडेय, हिंदी साहित्य का उत्तर मध्ययुग हिंदी साहित्य भंडार, लखनऊ-३

२९. डॉ. सुमन राजे साहित्येतिहास (आदिकाल) ग्रंन्यम कानपुर
३०. दीक्षित हरिश्चंद्र, भूषण का वीरकाव्य, शोध प्रबंध, प्रकाशन, दिल्ली, सन् १९७१
३१. सं. वि. ल. भावे, महाराष्ट-सारस्वत खंड-१, पॉप्युलर प्रकाशन, मंबई
३२. ल. रा. नासिराबादकर, प्राचीन मराठी वाङमयाचा इतिहास, फडके प्रकाशन, कोल्हापुर
३३. म. ना. अदवंत, पैंजण, चित्रशाळा प्रकाशन, पुणे, सन १९५४
३४. म.ना. सहस्त्रबुध्दे, मराठी शाहिरी वाङमय, ठोकळ प्रकाशन, पुणे.
३५. प्रा. रा. श्री. जोग, मराठी वाङमयाचा इतिहास, खंड तीसरा, महाराष्ट्र साहित्य परिषद, पुणे
३६. श्री. व. आ. डहाके, मराठी साहित्य आणि संस्कृति, पॉप्यूलर प्रकाशन, मुंबई, सन २००५
३७. सं. डॉ. माधव गादेकर, मध्ययुगीन व आधुनिक गद्य वाङमय, कैलास नगर, नांदेड, सन २००८
३८. प्रा. जयसिंगराव पवार, मराठी साम्राज्याचा उदय आणि अस्त, अजब पुस्तकालय, कोल्हापुर, प्रथम अवृत्ती, सन १९७२
३९. डॉ. एस. एस. गाठाळ, मराठ्यांचा इतिहास, कैलाश पब्लिकेशन्स औरंगपुरा, औरंगाबाद, महाराष्ट्र
४०. द. के. केळकर, मराठी साहित्यांचे सिंहावलोकन, मनोहर ग्रंथमाला प्रकाशन, सदाशिव पेठ, पुणे-२
४१. चंद्रशेखर शिखरे, प्रतिइतिहास, जिजाई प्रकाशन, पुणे, तीसरी आवृत्ती, सन २००७
४२. डॉ. भिमसेन विद्यालंकार, शिवाजी, राजपाल एड सन्स प्रकाशन, दिल्ली सन १९६९
४३. तुकाराम बाबांच्या अभंगाची गाथा, महाराष्ट्र शासन प्रकाशन, पुणे

४४. सं. लक्ष्मण पांपारकर, श्री रामदास स्वामींचे समग्र ग्रंथ, ढवळे प्रकाशन, मुबंई, सन १९३०

४५. सं. चौहान देवीसिंह, मूल लेखक-परमानंद, पर्णालपर्व ग्रहणाख्यान, निरंक.

४६. सिंह रघुवीर, शिवाजीज् व्हिजीट टू औरंगजेब ऑट आग्रा, इंडियन हिस्ट्री कॉग्रेस, कलकत्ता.

४७. बाबासाहेब पुरंदरे, राजगड, राजहंस प्रकाशन, पुना

४८. श्री. गं. ब. ग्रामोपाध्ये, मराठी बखर वाङ्मयाचा पूनर्विचार, मेहता पब्लिसिंग हाऊस पूना-सन् १९८०

४९. श्री. रा. न. जोशी, श्री समर्थ रामदासांचे समग्र ग्रंथ, चित्रशाला प्रेस, पुना द्वितीय संस्करण सन् १९९२

५०. स. ना. जोशी, रायगडावरील शिवाजी महाराजांच्या सिंहासनाची आणि इतर व्यवस्था, भारतीय इतिहास संशोधन मंडल, पुना सन् १९४०

५१. मा. म. देशमुख, मध्ययुगीन भारताचा इतिहास, विश्वभारतीय प्रकाशन नागपुर, प्रथम सं. सन् १९६८

५२. सं. य.न. केळकर, ऐतिहासिक पोवाडे, खण्ड दुसरा, सदाशिव पेठ, पुणे, सन १९४३

इ) शब्दकोश :

१. सं. डॉ. राजमल बोरा, भूषण शब्दकोश, अभय प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण सन् २००५

२. सं. रामचंद्र पातक, आदर्श हिंदी शब्दकोश, भार्गव बुक डिपो, वाराणसी

३. सं. मुहम्मद मुस्तफा खाँ, उर्दू हिंदी शब्दकोश, हिंदी भवन, लखनऊ

४. सं. य. रा. दाते, महाराष्ट्र शब्दकोश, प्रथम भाग, य.र. जोशी प्रकाशन, पुणे

५. सं. ग. रं. भिडे, अभिनव मराठी ज्ञानकोश, भाग तृतीय, ज्ञानकोश मंडल कोल्हापुर, सन् १९६७

६. सं. जया दडकर और अन्य, संक्षिप्त मराठी वाङ्मयकोश, जी. आर. भटकळ, फाउंडेशन, मुंबई

७. सं. श्री. ह.अ. भावे, हिंदी-मराठी शब्दकोश, वरदा प्रकाशन, प्रा. लि. पुणे, सन २०१०

ई) पत्र-पत्रिका :

१. दै. लोकमत समाचार, १९ फरवरी २०१६

२. दै. पुण्यनगरी समाचार, १९ फरवरी २०१८

३. दै. लोकसत्ता समाचार, १२ जनवरी २०१८

४. दै. सकाळ समाचार, ३ अप्रैल, २०१९

५. दै. सामना समाचार, २७ अप्रैल, २०२१

उ) इंटरनेट वेबसाईट :

१. hi.m. विकिपीडिया org/wiki/इलियाड

२. https://hi.m. विकिपीडियाorg/wiki/सूदन

३. http://Shivaryanchakhun.blogspct/२०१०/blogpost.html? m=०१

"मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज : एक अध्ययन"

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विद्यापीठ, नांदेड.

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, नांदेड के मानव्यविद्या संकाय अंतर्गत पीएच.डी.(हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध-प्रबंध

:: शोध छात्र ::

श्री. वानखेडे विलास कोंडिबा
एम.ए., बी.एड.,एम.फिल, सेट (हिंदी)

:: शोध निर्देशक ::

डॉ. भगवान एन. जाधव
सहयोगी प्राध्यापक
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग एवं अनुसंधान केंद्र,
पीपल्स कॉलेज, नांदेड

:: अनुसंधान केंद्र ::

पीपल्स कॉलेज, नांदेड
दिसंबर-२०२१

पंचम अध्याय

उपसंहार एवं निष्कर्ष

५.१) उपसंहार :

साहित्य अपने समय के समाजिक और राजनीतिक व्यवस्था को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से प्रकट करता है। समाज की व्यवस्था का समग्र अंकन साहित्य के माध्यम से कम-अधिक मात्रा में प्रकट होता ही है। साहित्य समाज और इतिहास का अभिन्न अंग है। साहित्य में पौराणिक और ऐतिहासिक नायकों के चरित्र का चित्रण भी किया जाता है। प्राचीन पौराणिक संस्कृत साहित्य में पौराणिक देवी, देवताओं, राजाओं के युध्द और वीर कथाओं का वर्णन किया है। पौराणिक साहित्य में व्यक्ति, व्यक्ति का चरित्र, घटना या प्रसंगों में वीरता की अभिव्यक्ति हुई है। मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में पौराणिक व्यक्ति, चरित्र, घटना या प्रसंगों के स्थान पर ऐतिहासिक व्यक्ति, चरित्र, घटना या प्रसंगों का वीरता पूर्ण चित्रण किया हैं। भारतीय इतिहास के मध्यकाल में दक्षिण भारत का 'मराठा' राजा (शासक) शिवाजी महाराज थे। हिंदी-मराठी साहित्य में ऐतिहासिक घटना, प्रसंगों के माध्यम से उनके व्यक्तित्व के स्वरुप को वर्णित किया हैं। शिवाजी महाराज केवल महाराष्ट्र या देश के लिए नहीं, बल्कि विश्व के समग्र समाज और देशों के लिए आदर्श और प्रेरणा स्थान बन चुके हैं। उन्होंने अपने स्वराज्य में आदर्श लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना की है। मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य भी इस महान राजा के बहिरंग और अंतरंग स्वरुप को वर्णित करता है। दोनों भाषा के मध्यकालीन साहित्य में शिवाजी महाराज के व्यक्तित्व स्वरुप तथा प्रभाव का अध्ययन इस शोध-प्रबंध में किया हैं।

शिवाजी महाराज के स्वरुपगत अध्ययन की दृष्टि से प्रस्तुत शोध-प्रबंध का शीर्षक **"मध्यकालीन हिंदी मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज : एक अध्ययन"** यह

है। इस शोध-प्रबंध के शीर्षक को विषय विवेचन की दृष्टि से पाँच अध्ययन में विभाजित किया है।

मध्यकालीन हिंदी-मराठी के ऐतिहासिक वीरकाव्य के प्रमुख कवि : संक्षिप्त परिचय : इस अध्याय में मध्यकालीन हिंदी-मराठी के ऐतिहासिक वीरकाव्य के प्रमुख कवियों का संक्षिप्त परिचय दिया हैं। इस अध्याय को अध्ययन की दृष्टि से प्रमुख दो चरणों में विभाजित किया है। प्रथम चरण का शीर्षक 'मध्यकालीन हिंदी के ऐतिहासिक वीरकाव्य के प्रमुख कवि' यह हैं। इसके अंतर्गत प्रथमतः ऐतिहासिक साहित्य में 'वीरकाव्य' की पृष्टभूमि को स्पष्ट किया है। आदिकालीन हिंदी साहित्य में ऐतिहासिक वीरकाव्य का संक्षिप्त परिचय दिया हैं। मध्यकालीन हिंदी साहित्य में वीरकाव्यधारा के स्वरुप को स्पष्ट किया हैं। हिंदी के मध्यकालीन ऐतिहासिक वीर काव्य के प्रमुख पाँच कवियों के व्यक्तित्व और कृतित्व का अध्ययन किया हैं। आदिकालीन हिंदी के ऐतिहासिक वीरकाव्य की परंपरा का निर्वाहन करनेवाले मध्यकालीन कवि केशवदास है। कवि केशवदास के के व्यक्तित्व में उनका संक्षिप्त जीवन परिचय और कृतित्व में उनके द्वारा लिखित ऐतिहासिक वीरकाव्य रतन बावनी, वीरसिंह देव चरित, जहाँगीर चंद्रिका का संक्षिप्त परिचय दिया है। ऐतिहासिक वीरकाव्य के दूसरे प्रमुख कविभूषण के व्यक्तित्व में जन्मतिथि, नाम, बाल्यकाल, उनके आश्रयदाता और मृत्यु को स्पष्ट किया हैं। कवि भूषण के ऐतिहासिक कृतियों में शिवराज भूषण, शिवा बावनी, छत्रसाल दशक और कुछ स्फुट पदों के ऐतिहासिक विषयवस्तु को स्पष्ट किया है। मध्यकालीन ऐतिहासिक वीरकाव्य के 'लाल' कवि के व्यक्तित्व में जन्म काल, आश्रयदाता और उनकी मृत्यु पर प्रकाश डाला हैं। लाल कवि एकमात्र ऐतिहासिक 'छत्रप्रकाश' के काव्य कृति का परिचय दिया है। कवि सूदन के उपलब्ध जानकारी के आधार पर जन्म, गुरु, आश्रयदाता अध्ययन कर उनके 'सुजान चरित्र' इस ऐतिहासिक वीरकाव्य का संक्षिप्त परिचय दिया है। मध्यकालीन हिंदी साहित्य में अंतिम कवि और ऐतिहासिक वीरकाव्य के भी अंतिम

चरण के प्रमुख कवि पदमाकर हैं। उनके व्यक्तित्व में जन्म काल, नाम, आश्रयदाताओं के नाम और कवि पद्माकर की मृत्यु को स्पष्ट किया हैं। कवि पद्माकर की ऐतिहासिक कृतियों में हिम्मत बहादुर विरुदावली' कृति का संक्षिप्त परिचय दिया हैं।

अध्ययन के दूसरे चरण का शीर्षक 'मध्यकालीन मराठी के ऐतिहासिक वीरकाव्य के प्रमुख कवि' हैं। अध्याय के द्वितीय चरण में आदिकालीन मराठी साहित्य के पौराणिक वीररसात्मक काव्य को स्पष्ट किया हैं। इस आदिकालीन मराठी साहित्य में ऐतिहासिक वीरकाव्य उपलब्ध नहीं हैं। उसके पश्चात मध्यकालीन मराठी के ऐतिहासिक वीरकाव्य का संक्षिप्त परिचय दिया है। मध्यकालीन मराठी साहित्य के ऐतिहासिक वीरकाव्य के प्रमुख पाँच कवियों का व्यक्तित्व और कृतित्व प्रस्तुत करने का प्रयास किया हैं। मध्यकालीन प्रमुख ऐतिहासिक कवि अनंत फंदी हैं। शाहिर अनंत फंदी के व्यक्तित्व में उनका जन्म, माता-पिता, बाल्यकाल, परिवार, आश्रयदाता और उनके मृत्यु को स्पष्ट किया है। कवि अनंत फंदी के ऐतिहासिक कृतियों में 'माधव निधन काव्य', 'नाना फडणिस', 'यशवंतराव होळकर', 'दूसरा बाजीराव' और अन्य ऐतिहासिक पवाडों की रचना की है। ऐतिहासिक वीरकाव्य दूसरे प्रमुख कवि होनाजी बाळा के व्यक्तित्व में जन्म, शिक्षा, आश्रयदाता, मृत्यु के संदर्भ में अध्ययन किया है। उनके ऐतिहासिक काव्य कृतियों में सवाई माधवराव, दूसरे बाजीराव, खडकी और अष्टि युध्द, खर्ड्या के ऐतिहासिक युध्द, आदि घटनाओं पर पवाडों की रचना की हैं। कवि शाहिर परशराम के जीवन परिचय में उनका जन्म, शिक्षा, आश्रयदाता और उनके मृत्यु की घटना पर प्रकाश डाला है। कवि परशराम ने समाज, राजनीति और देश के तत्कालीन ऐतिहासिक घटनाओं पर काव्य लिखा है। उनके ऐतिहासिक काव्य कृतियों के संक्षिप्त परिचय को स्पष्ट किया हैं। मध्यकालीन शाहिरी साहित्य में उनकी भाषा और स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण है। शाहिर कवि प्रभाकर का व्यक्तित्व उनका जन्म, परिवार, आश्रयदाता को स्पष्ट किया है। अत:

गरीबी से जुझते हुए उनकी मृत्यु हुई हैं। कवि प्रभाकर के ऐतिहासिक वीर काव्य में सवाई माधवराव, मराठा और निजामों के बीच खर्ड्या ऐतिहासिक युध्द का सजीव चित्रण किया है। अहिल्यादेवी होळकर, सयाजीराव आदि के उपर ऐतिहासिक पवाडों की रचना की है। मध्यकालीन मराठी के शाहिरी साहित्य में प्रभाकर कवि के भाषा और स्थान को स्पष्ट किया हैं। मध्यकालीन प्रमुख शाहिरों में अंतिम कवि सगनभाऊ के जन्म, व्यवसाय, आश्रयदाता और उनकी मृत्यु को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। उनकी ऐतिहासिक कृतियों में दूसरा बाजीराव, खडकी युध्द, पानिपत युध्द का वर्णन अपने पवाडों के माध्यम से किया हैं। मध्यकालीन शाहिरी साहित्य (पवाडों) में उनका महत्व और स्थान को स्पष्ट किया है।

अत : मध्यकालीन मराठी और हिंदी के ऐतिहासिक वीरकाव्य के मूलतत्व संस्कृत के पौराणिक ग्रंथों से मिलते हैं। मध्यकाल के हिंदी साहित्य का वीरकाव्य और मराठी साहित्य तंत काव्य अर्थात शाहिर काव्य ही ऐतिहासिक वीरकाव्य हैं। दोनों भाषा के काव्यधारा में ऐतिहासिक वीरकाव्य लिखे गये हैं। मध्यकालीन दोनों भाषा साहित्य के ऐतिहासिक वीर काव्यधाराओं के प्रमुख पाँच-पाँच कवियों का व्यक्तित्व और कृतित्व स्पष्ट किया हैं।

मध्यकालीन हिंदी साहित्य में वर्णित छत्रपति शिवाजी महाराज का स्वरुप : इस अध्याय में मध्यकालीन हिंदी साहित्य में वर्णित शिवाजी महाराज के स्वरुप को स्पष्ट किया हैं। शिवाजी महाराज का स्वरुप स्पष्ट करने के लिए इस अध्याय को दो चरणों में विभाजित किया है। अध्याय के प्रथम चरण का शीर्षक 'मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज का बहिरंग स्वरुप' यह है। अध्याय के इस पहले चरण के शीर्षक में शिवाजी महाराज के बहिरंग स्वरुप को सात मुद्दों के आधार पर स्पष्ट किया है। शिवाजी महाराज के 'सूर्यवंशी' राजवंश का वर्णन किया है। इनका संबंध उत्तर भारत के क्षत्रिय राजपुत के वंश से है।

भूषण भी लिखते हैं कि "सूर सिरोमनि सूर-कुल, सिव सरजा मकरंद।" (सं.प. राजनारायन शर्मा, शिवराज भूषण) अर्थात पृथ्वी पर 'सूर्यकूल' सर्वश्रेष्ठ है। इसी श्रेष्ठ 'सूर्यवंशी' कूल में शिवाजी महाराज के दादाजी मकरंद (मालोजी) राजे का जन्म हुआ है। मालोजी राजा के पुत्र शाहजी राजे की और शहाजी राजे की संतान शिवाजी महाराज थे। उनका जन्म शिवनेरी किले पर माता जीजाबाई के कोख से हुआ। अत्याधिक सुंदर रुप बालक होने से उनका शिवाजी नामकरण किया गया है। उनकी शारीरिक आकृति और वेशभूषा के वर्णन को स्पष्ट किया है। उनकी शक्तिशाली भुजाएँ के साथ-साथ दाढी, मुँछे और चेहरे पर तेजस्वीता झलकती है। उनकी वेशभूषा घटना, प्रसंगों के साथ बदलती रहती हैं। शत्रु के अनुचित क्रिया या घटनाओं पर तुरंत प्रतिक्रिया देते हैं। किले रायगढ़ के प्राकृतिक और भौतिक सुंदरता का चित्रण किया है। यह चित्रण करते समय कहीं-कही अत्याधिक अतिश्योक्तिपूर्ण वर्णन किया हैं। उनके नगाडों के वर्णन से शत्रु पक्ष अत्याधिक भयभित होता है। शत्रु पक्ष नगाडों की आवाजों से आतंकित होता है। इस नगाडों के वर्णन में अत्याधिक अतिशयोक्ति और कल्पनात्मकता चित्रण वर्णित करने का प्रयास किया है। शिवाजी महाराज के तलवार का मानवीकरण करते हुए उसे दैवी अवतार के वर्णन को स्पष्ट किया है। तलवार के वर्णन में चमत्कारिकता और अत्याधिक काल्पनिकता दिखाई देती है। मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज के राज्याभिषक और मृत्यु के संदर्भ में कोई जानकारी उपलब्ध नहीं हैं।

इस अध्याय के द्वितीय चरण का शीर्षक 'मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज का अंतरंग स्वरुप' यह है। हिंदी साहित्य में वर्णित शिवाजी महाराज के अंतरंग स्वरुप को स्पष्ट करने के लिए २९ मुद्दों का आधार लिया है। शिवाजी महाराज का बचपन दक्खन के पहाडियों में बीता है। वह बचपन से ही पराक्रमी थे। उनकी शिक्षा का वर्णन मध्यकालीन हिंदी साहित्य में उपलब्ध नहीं है। वह बचपन से ही प्रतिभा संपन्न बालक थे। वे बडों के प्रति अत्याधिक

नम्रता दिखाते हैं। उनके बुध्दि की तुलना पाँच पाडवों में से 'नकुल' के साथ की हैं। शिवाजी महाराज में पाँच पाडवों के समग्र गुणों का संचय दिखाई देता हैं। वह अपने स्वराज्य की दृढ प्रतिज्ञा के प्रति अटल रहकर उसका अंत तक निर्वाहन करते हैं। वे अत्यंत स्वाभिमानी थे। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपने स्वाभिमान को आहत नहीं पहुँचने दी। उनके मन में भवानी देवी, भगवान शिवजी, कृष्ण, माता-पिता और बडों के प्रति अत्याधिक श्रध्दा थी। उन्होंने शक्तिशाली शत्रुओं का साहस और निर्भयता के साथ सामना किया था। उनके निर्भय और साहस के गुणों का वर्णन किया हैं। स्वराज्य के प्रति वे दिन-रात कार्यतत्पर रहते हैं। उनके अंदर असामान्य कार्यक्षमता थी। शिवाजी महाराज ने प्रथमतः अन्याय-अत्याचार के विरुध्द प्रजा को संघटित किया और उसके बाद सरदार, छोटे-मोठे देशी राजाओं का संघटन बनाया था। वे एक कुशल राजनितिज्ञ थे। उन्होंने समयानुरुप साम, दाम, दंड, भेद की राजनीति का उपयोग किया है। उनकी राजनीति के गुढता को कोई भी शत्रु समझ नहीं पाया था। उनके कुशल युध्दनीति का भी वर्णन किया हैं। परंपरागत युध्दनीतियों के साथ-साथ स्वतंत्र युध्दनीतियों का निर्माण किया था। उनका गनिम कावा, निषा युध्द, छापामारी आदि युध्द तंत्र प्रयोग को स्पष्ट किया हैं। उनके स्वराज्य का प्रमुख उद्‌देश लोककल्याण ही था। वे प्रजाहित दक्ष राजा थे। स्वधर्म (हिंदूधर्म) के स्वधर्म के प्रति उनके मन में पुरी आस्था, श्रध्दा, निष्ठा थी। उन्हें स्वधर्म का अभिमान था। हिंदू धर्म के रुढी, परंपरा, धर्म ग्रंथ, श्रध्दा स्थानों का रक्षण किया हैं। वे हिंदूधर्म और संस्कृति के रक्षक थे। शिवाजी महाराज केवल व्यक्तिगत जीवन में हिंदू धर्म के तत्वों का आचरण करते थे।

शिवाजी महाराज एक वीर यौद्‌धा थे। उनकी तुलना पौराणिक वीर योध्दाओं के साथ की गयी हैं। वे युध्दक्षेत्र में कभी शत्रु को पीठ दिखाकर भागे नहीं। अपने जान की बाजी लगाकर रणभूमि में शत्रुओं से लडते रहें। वीरता के सभी गुण उनमें सम्मिलित है। शिवाजी महाराज के अफजलखां वध, शाहीस्तेखाँ

पर छापा, आगरा दरबार पलायन, सुरत पर आक्रमण, कर्नाटक स्वारी, सालहेरी युध्द आदि घटनाओं के माध्यम से उनके पराक्रम को स्पष्ट किया है। वे पराक्रमी चतुरंगी मराठा सेना के नायक थे। उनकी सेनाओं ने बडे-बडे शक्तिशाली शत्रु सेनाओं को परास्त किया था। शिवाजी महाराज की शत्रु पक्ष के उपर अत्याधिक धाक थी। उनके धाक (डर) को वर्णित करते समय कहीं-कहीं अतिशयोक्ति और काल्पनिक वर्णन हुआ हैं। शत्रु पक्ष के सेना, सरदारों पर उन्हें पर दया का भाव रखते थे। उनका दानी रुप साहित्य के साथ-साथ इतिहास प्रसिध्द भी है। उन्होंने प्रजा, सेना, सरदार, अन्य राजा को भी दान दिया था। शत्रुओं के अनेक सेना, सरदारों को युध्द भूमि में हारे या पकडे जाने पर उन्हें जीवनदान दिया था। कवियों ने उनकी अत्याधिक दानवीरता की प्रशंसा करते समय कहीं-कहीं अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया हैं। शिवाजी महाराज के वैभवसंपन्नता को स्पष्ट किया है। उनकी वैभवसंपन्नता की तुलना धन, संपत्ति कुबेर और इंद्र इन पौराणिक देवताओं के साथ की हैं। शिवाजी महाराज को भगवान विष्णु के अवतार रुप में वर्णित किया हैं। भगवान विष्णु की तरह पृथ्वी रक्षण और पालन का कार्य शिवाजी महाराज के हाथों से हो रहा है। इस वर्णन में पौराणिक ग्रंथों की मान्यता के अनुसार राजा ईश्वर का होता है' इसी विचारधारा को प्रकट किया है। उनके असंभव कार्य को देखकर साहित्य में उनके अवतारी रुप का वर्णन हुआ है। उनकी कीर्ति देश विदेशों के चारों दिशाओं में फैल चुकी है। शिवाजी महाराज के निर्णय में भविष्य के परिणामों की सतर्कता दिखाई देती हैं। वे अत्यंत उदारमतवादी राजा थे। स्वराज्य में सभी को समान भेदभाव रहित न्यायदान किया है। वे स्वराज्य की सभी प्रजा (बहुजनों) के रक्षक और पालक थे। स्त्री के प्रति उनके मन में अत्यंत आदरता का भाव रहा हैं। स्वराज्य के सभी स्त्रीयों की रक्षा, सुरक्षा और सम्मान किया जाता था। एक आदर्श राज्य के आदर्श राजा के रुप में शिवाजी महाराज को वर्णित किया है।

अतः मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज के बहिरंग और अंतरंग स्वरुप का वर्णन किया है। यह वर्णन करते समय कहीं-कहीं प्रशंसा, अतिशयोक्ति, और काल्पनिकता आ गयी हैं। साहित्य में विभिन्न ऐतिहासिक घटना, प्रसंगों के आधार पर उनके व्यक्तित्व को प्रकट किया है। शिवाजी महाराज पर लिखित मध्यकालीन साहित्य भारतीय स्वाभिमान को प्रकट करता है। वे भारतीय साहित्य और इतिहास को भी गौरवान्वित करते हैं।

मध्यकालीन मराठी साहित्य में वर्णित छत्रपति शिवाजी महाराज का स्वरुप: इस अध्याय में मध्यकालीन मराठी साहित्य में वर्णित शिवाजी महाराज के स्वरुप को स्पष्ट किया है। शिवाजी महाराज के स्वरुप को स्पष्ट करने के लिए इस अध्याय को प्रमुख दो चरणों में विभाजित किया है। प्रथम चरण का शीर्षक 'मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज का बहिरंग स्वरुप' यह है। उनके बहिरंग स्वरुप को नौं मुद्दों के आधार पर स्पष्ट किया है। इसमें प्रथमतः शिवाजी महाराज के राजवंश को स्पष्ट किया है। मध्यकालीन मराठी साहित्य के 'सप्त प्रकरणात्मक चरित्र' जीवनी में लिखा है कि 'हे उदारपुरचे राणाजीचे घरातील वंश सिसोदे कूळपरंपरा पुरुष, पिढ्या लाऊन या प्रांती हिंदूस्थानातुन आले, रजपूत राजवंश महाराष्ट्र देशी म्हराठे म्हणवितात' (शिवछत्रपतिचे सप्तप्रकरणात्मक चरित्र, प्र. सं. २१५) अर्थात शिवाजी महाराज उदयपूर के रजपुत राजा राणाजी के सिसोदे कुल से हैं। राणाजी के वंशज उत्तर भारत से दक्षिण भारत में आकर यही पर स्थायी शासक और निवासी हो गये। यह सर्वश्रेष्ठ 'सुर्यवंशी' राजवंश से थे। शिवाजी महाराज की जन्मतिथि और नामकरण में मतभिन्नता है। कुछ ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर उनका जन्म सन् १९ फरवरी, १६३० को शिवनेरी दूर्ग पर हुआ हैं। शिवाजी महाराज की आकृति (रंग, रुप, शरिर) का संक्षिप्त वर्णन किया है। उनकी घटना, प्रसंगों के आधार पर बदलती वेशभूषा का वर्णन किया हैं। विभिन्न घटित घटनाओं में शत्रु के अनुचित व्यवहार पर प्रतिक्रिया देते है। किले रायगड के प्राकृतिक और

भौतिक वैभव के सुंदरता पर प्रकाश डाला है। शिवाजी महाराज के युध्द प्रसंग में बजते हुए नगाडे से विजय का संकेत प्राप्त होता है। उनके तुळजा, भवानी, जगदंबा इन तीन तलवारों का वर्णन और उस वर्णन में किंवदंती और इतिहास को स्पष्ट किया हैं। शिवाजी महाराज के ६ जुन, १६७४ के राज्याभिषक समारोह की तैयारी और समारोह के चित्र को प्रस्तुत किया हैं। शिवाजी महाराज की मृत्यु ३ अप्रैल, १६८० में हुई हैं। उनके मृत्यु की घटना के कारणों में साहित्यिक और ऐतिहासिक दोनों मतों की चर्चा की हैं।

इस अध्याय के दूसरे चरण का शीर्षक 'मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज का अंतरंग स्वरुप' यह हैं। द्वितीय चरण में शिवाजी महाराज के अंतरंग स्वरुप को स्पष्ट करने के लिए २९ मुद्दों का आधार लिया हैं। उनका बचपन दक्षिण पहाडियों के मावल प्रदेश में अपने दोस्तों के साथ खेल कुद के साथ-साथ उनका संघटन कर तोरणा किले को जीत लिया हैं। माता जीजाबाई के सानिध्य में शिक्षा, संस्कारों के साथ पिता शाहजी राजे के विश्वस्त विशेषज्ञ सेवकों के द्वारा दी गयी। वे अत्याधिक नम्रता और असामान्य बुध्दि संपन्नता के धनी थे। शिवाजी महाराज के द्वारा सन् १७ अप्रैल १६४५ को स्वराज्य की दृढ प्रतिज्ञा ली गयी थी। उनमें विपरित परिस्थितियों में उनके आंतरिक साहस, निर्भयता, स्वाभिमान के गुणों का वर्णन किया हैं। उनके मन में भवानी देवी, महादेव, माता-पिता, संत और बडों के प्रति श्रध्दा हैं। स्वराज्य के प्रति उनकी असामान्य कार्यक्षमता का वर्णन किया हैं। शिवाजी महाराज ने स्वराज्य की प्रजा, सरदारों के साथ-साथ देशी राजाओं का भी संघटन किया है। शिवाजी महाराज के साम,दाम, दंड, भेद, की राजनीति के साथ उनकी राजनीतिक विशेषताओं को स्पष्ट किया हैं। उनके द्वारा युध्द के रणभूमि में परंपरागत और नये युध्दतंत्र का प्रयोग किया गया। शिवाजी महाराज प्रजाहित के प्रति हमेशा तत्पर रहते है। उन्हें स्व-धर्म (हिंदू) के प्रति अभिमान था। वे धर्म की रुढी परंपरा संस्कृति का रक्षण करते हैं। वे वीर योध्दा, पराक्रमी राजा और पराक्रमी सेना के नायक थे।

इस कारण शत्रुपक्ष के उपर उनकी अत्याधिक धाक दिखाई देती हैं। साहित्य में वर्णित उनके दयावीर, दानवीर रुप को प्रकट करने का प्रयास किया हैं। शिवाजी महाराज अत्याधिक धनसंपन्न तथा वैभव संपन्न राजा हैं। शिवाजी महाराज को मध्यकालीन मराठी साहित्यकारों ने भगवान 'शिवजी' के अवतारी पुरुष के रुप का वर्णन किया हैं। इसमें पौराणिक धर्म ग्रंथों की मान्यता जो 'राजा ईश्वर का अंश होता हैं' इसी को पुनस्थापित करने के लिए यह वर्णन साहित्य में किया हैं। देश-विदेशों में उनकी कीर्ति और यश का वर्णन किया गया। शिवाजी महाराज दूरदर्शि, उदारमतवादी, न्यायप्रिय राजा थे। वे धर्म, पंथ, संम्प्रदाय के भेदभाव को न मानकर उदात्त अंतकरण से सभी को समान मानते थे। उनके दूरदर्शि निर्णय और स्वराज्य की भेदभाव रहित समान न्याय व्यवस्था को स्पष्ट किया है। शिवाजी महाराज ने किसी एक जाती, धर्म, पंथ, सम्प्रदाय, के लिए कार्य न करते हुए समग्र बहुजन की रक्षा और पालन का कार्य किया है। स्त्री के प्रति उनका दृष्टिकोण अत्यंत पुजनिय और आदरभाव का रहा हैं। उनका हिंदवी स्वराज्य एक आदर्श लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था के मूल्यों की स्थापना करनेवाला शासन और शासक हैं। साहित्य में उनके अंदर एक आदर्श शासक के गुणों को स्पष्ट किया हैं।

अत: मध्यकालीन मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के बहिरंग और अंतरंग स्वरुप को विभिन्न मुद्दों के द्वारा स्पष्ट किया हैं। शिवाजी महाराज समाज, धर्म, देश, राजनीति, संघटक, स्वाभिमानी, साहसी, दया, दान, युध्दवीर वैभव संपन्न, पराक्रमी, दुरदर्शि, न्यायप्रिय, उदारमतवादी राजा के रुप में प्रेरित करते रहेंगे। वे बहुजनों का रक्षण करनेवाले स्त्री को पुजनिय माननेवाले एक आदर्श, राजा और शासक देश और विश्व को सर्वकालीन आदर्श रहेंगें।

मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में वर्णित छत्रपति शिवाजी महाराज के स्वरुप का तुलनात्मक अध्ययन : इस अध्याय में मध्यकालीन हिंदी-मराठी के

साहित्य में शिवाजी महाराज के स्वरुप का तुलनात्मक अध्ययन किया हैं। उनके स्वरुप को लेकर दोनों साहित्य में भेद, साम्य को भी वर्णित किया हैं। प्रस्तुत अध्ययन को दो चरणों में विभाजित किया हैं। अध्याय के प्रथम चरण का शीर्षक 'मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में वर्णित शिवाजी महाराज के बहिरंग स्वरुप का चित्रण' यह हैं। इस प्रथम चरण में शिवाजी महाराज के बहिरंग स्वरुप को दोनों भाषा साहित्य में वर्णित नौं मुद्दों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन किया हैं। दोनों भाषा के साहित्य में शिवाजी महाराज के 'सूर्यवंशी' क्षत्रिय राजपुत के वर्णन को स्पष्ट किया हैं। मध्यकालीन हिंदी में उनके जन्मस्थान, तिथि के संदर्भ में कोई जानकारी उपलब्ध नहीं हैं। मराठी साहित्य में उपलब्ध जानकारी के आधार पर उनका जन्म १९ फरवरी, १६३० को शिवनेरी दूर्ग पर हुआ हैं। उनके नामकरण संबंधी के मताभिन्नता को स्पष्ट किया हैं। शिवाजी महाराज की आकृति, शरिररचना, रंगरुप के समानता को स्पष्ट किया हैं। घटना, प्रसंग के अनुसार उनके बदलती हुई वेशभूषा को वर्णित किया हैं। शत्रु के द्वारा अनुचित व्यवहार पर विपरित परिस्थितियों में उनका विरोध करते हुए प्रतिक्रिया देते हैं। दोनों भाषा के साहित्य में किले रायगड की भौतिक और प्राकृतिक सुंदरता को वर्णित किया है। हिंदी साहित्य में रायगढ़ किले के कहीं-कही अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया हैं। युध्द की तैयारी और विजय के संकेत स्वरुप नगाडों की आवाजों का वर्णन किया हैं। इस नगाडों के वर्णन में हिंदी साहित्य के अतिशयोक्ति को प्रस्तुत किया है। शिवाजी महाराज की तलवार को अवतारवादी, दैवीशक्ति के किवंदती या काल्पनिक वर्णन को स्पष्ट किया है। मध्यकालीन हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज के राज्यभिषेक और उनकी मृत्यु के संबंध में कोई वर्णन उपलब्ध नहीं हैं। मराठी साहित्य में ६ जुन, १६७४ के राज्याभिषक समारोह और ३ अप्रैल, १६८० में उनकी मृत्यु के घटनाओं का वर्णन किया गया है।

इस अध्याय के दूसरे चरण का शीर्षक 'मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में वर्णित शिवाजी महाराज के अंतरंग का स्वरुप' में शिवाजी महाराज के अंतरंग

स्वरुप को स्पष्ट किया हैं। दोनों भाषा साहित्य में वर्णित उनके अंतरंग स्वरुप का तुलनात्मक अध्ययन किया है। अंतरंग स्वरुप के तुलनात्मक अध्ययन को २९ मुद्दों के आधार पर स्पष्ट किया हैं। मध्यकालीन हिंदी साहित्य की तुलना मराठी साहित्य में बचपन और शिक्षा का अधिक विस्तृत वर्णन किया हैं। मध्यकालीन हिंदी साहित्य में उनके शिक्षा के विषय में कोई वर्णन उपलब्ध नहीं हैं। शिवाजी महाराज व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में अत्याधिक नम्र थे। वे बचपन से ही प्रतिभा संपन्न थे। वह असामान्य बुध्दि के धनी थे। शिवाजी महाराज हिंदवी स्वराज्य की दृढ प्रतिज्ञा लेकर उसे पुरा किया हैं। हिंदी के तुलना में मराठी साहित्य में दृढ प्रतिज्ञा का विस्तृत वर्णन दिया हैं। दोनों भाषा साहित्य में शिवाजी महाराज के स्वाभिमान को स्पष्ट किया हैं। वे अत्याधिक श्रध्दावान राजा थे। उनके व्यक्तिगत जीवन में धर्म, ईश्वर, परंपरा, श्रध्दास्थानों के प्रति अत्याधिक श्रध्दा दिखाई हैं। उन्होंने शक्तिशाली शत्रुओं के सामने भी साहस और निर्भयता से युध्द कर जीत प्राप्त की हैं। स्वराज्य के प्रति दिन-रात कार्यतत्पर रहते थे। उनके अंदर असामान्य कार्यक्षमता थी। उन्होंने मावळ प्रदेश की प्रजा, सरदार, देश के राजाओं को शत्रु के विरुध्द संघटित किया था। दोनों साहित्य में शिवाजी महाराज की साम, दाम, दंड, भेद और गुढ़ राजनीति को समान रुप से स्पष्ट करने का प्रयास किया हैं। उनके द्‌वारा परंपरागत युध्द तंत्रों के साथ-साथ स्वतंत्र गनिमी कावा, छापा मारी, निषायुध्द के तंत्र का निर्माण किया था। स्वराज्य का प्रमुख उद्देश सभी प्रजा के हित का रक्षण करना है। उन्होंने शोषणमुक्त समाज का निर्माण किया था। स्वराज्य की सभी प्रजा सुखी, सुरक्षित और संपन्न थी। शिवाजी महाराज को स्वधर्म (हिंदू धर्म) के प्रति अभिमान और श्रध्दा थी। उन्होंने हिंदू धर्म के रुढी, परंपरा, धर्मग्रंथ श्रध्दास्थानों का रक्षण और पालन किया है। उनको वीर योद्‌धा और पराक्रमी राजा के रुप में स्पष्ट किया हैं। वे युध्दभूमि में कभी शत्रु से डरकर भागे नहीं। शक्तिशाली शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर असामान्य पराक्रम दिखाया हैं। वे स्वंय युध्दभूमि में युध्द करने के लिए

उतरते थे। उन्होंने देश के शक्तिशाली आठ शत्रुओं को परास्त किया हैं। उनकी चतुरंगी (हाथी,घोडे, पैदल और नौसेना) सेना ने भी अपना असामान्य पराक्रम दिखाया हैं। शिवाजी महाराज और मराठा सेना का शत्रु पक्ष पर जबरदस्त धाक था। हिंदी साहित्य में शत्रुपक्ष पर धाक वर्णन में अतिशयोक्ति और कहीं-कहीं कल्पना का आधार लिया है। शिवाजी महाराज दयावीर, दानवीर थे। वे शत्रुपक्ष के युध्द में पकडे जाने पर अनेक सरदार, सेनाओं के उपर दया दिखाकर उन्हें छोड दिया करते है। उनकी दानवीरता इतिहास प्रसिध्द हैं। वे अत्याधिक दानी राजा थे। उन्होंने प्रजा, सेना, सरदार, कवि अन्य देश के राजाओं को भी दान दिया था। हिंदी साहित्य में मराठी साहित्य की तुलना दानशुरता के वर्णन में कहीं-कहीं अतिशयोक्ति पायी जाती है। शिवाजी महाराज के वैभव संपन्नता को स्पष्ट किया हैं। हिंदी के साहित्य में वैभव संपन्नता के तुलना वर्णन में कहीं-कहीं पौराणिक राजा और ईश्वर के साथ अतिशोक्तिपूर्ण वर्णन किया है। हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज को भगवान विष्णु का अवतार मानते है, तो मराठी साहित्य में उन्हें भगवान 'शिवजी' का अवतार माना है। इन दोनों प्रकार के वर्णन में साहित्यकार ने राजा के संदर्भ में परंपरागत परिपाठी की मान्यताओं को प्रकट किया हैं। शिवाजी महाराज के असामान्य पराक्रम से उनकी कीर्ति चारों दिशाओं और विदेशों तक फैल चुकी हैं। उनका यश निर्मल और शुध्द हैं। इस पराक्रम के यश का गान कवि लोग कर रहे हैं। शत्रु पक्ष के लोग भी उनके यश और कीर्ति से उन्हें प्रत्यक्ष देखने की मन में जिज्ञासा रखते हैं। शिवाजी महाराज के निर्णय प्रजा हित में वर्तमान, भूत, भविष्य, की परिस्थितियाँ और परिणामों को ध्यान में रखकर लिए जाते हैं। शिवाजी महाराज अत्यंत उदारमतवादी राजा थे। उनकी सोंच, विचार और स्वराज्य स्थापना का उद्देश अत्यंत व्यापक था। जात-धर्म, पंथ, सम्प्रदाय श्रध्दास्थान और शत्रु के प्रति भी उनका विचार उदारमतवादी था। वे धर्म, राजनीति, समाजनीति में उदारमतवादी विचारधारा का पालन करते थे। उन्होंने अपने स्वराज्य में एक आदर्श न्यायव्यवस्था को निर्माण किया था। उनकी

न्यायव्यवस्था भेदभाव रहित और गुण सहित थी। स्वराज्य में गुनहगारों को जलद गति से दंड दिया जाता है। शिवाजी महाराज के न्याय प्रियता के स्वरुप को स्पष्ट किया हैं। शिवाजी महाराज किसी एक जाती, धर्म, के रक्षक या प्रतिपालक नहीं बल्कि समस्त मानवता के रक्षक और पालनकर्ता हैं। स्त्री के प्रति उनका आदरयुक्त दृष्टिकोण था। स्वराज्य के सभी स्त्रियों के साथ-साथ शत्रु प्रदेश के स्त्रियों का भी आदर और सम्मान करते हैं। हिंदी साहित्य में शत्रु पक्ष के स्त्रियों को शिवाजी महाराज से अत्याधिक भयभित दिखाया हैं। यह भय उनके मन में केवल अपने पति के शत्रु शिवाजी महाराज होने के कारण उत्पन्न हुआ है। इतिहास साक्षी है कि शिवाजी महाराज सभी स्त्रियों को पुजनिय मानते हैं। यह संस्कार उनकी माता जीजाबाई से मिला था। दोनों साहित्य में शिवाजी महाराज के आदर्श लोकतांत्रिक शासन और आदर्श के रुप को स्पष्ट किया हैं। उनके स्वराज्य में स्वातंत्र्य, समता, बंधुता और समान न्याय के मूल्यों की प्रतिष्ठापना हो चुकी थी।

अत: शिवाजी महाराज मध्यकालीन दोनों भाषा साहित्य में असामान्य सर्वगुण संपन्न व्यक्तित्व के रुप में प्रस्थापित हो चुके हैं। उनका स्वराज्य लोकतांत्रिक मूल्यों पर आधारित एक आदर्श शासन व्यवस्था थी। इस आदर्श शासनव्यवस्था के वे अत्यंत आदर्श राजा, नेता, शासक और प्रमुख प्रशासक थे। शिवाजी महाराज हमेशा भारतीय इतिहास और साहित्य को नि: संदेह प्रेरित और गौरवान्वित करते रहे।

उपसंहार एवं निष्कर्ष : शोधप्रबंध का अंतिम अध्याय 'उपसंहार एवं निष्कर्ष' यह है। मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज के बहिरंग और अंतरंग स्वरुप का सार स्पष्ट किया हैं। इस अध्याय में शोध प्रबंध के सभी अध्यायों का सार सारांश रुप में प्रस्तुत किया हैं। शोध प्रबंध के कार्यकाल में आए

अनुभवों के आधार पर वर्तमान समाज की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए मैं सकारात्मक दृष्टिकोण रखकर निम्नलिखित निष्कर्षों पर पहुँचा हूँ।

निष्कर्ष :

१. शिवाजी महाराज को लेकर मध्यकालीन हिंदी साहित्य की तुलना में मराठी साहित्य में अत्याधिक साहित्य लिखा गया हैं। हिंदी साहित्य में शिवाजी महाराज पर कवि भूषण और लाल कवि का वर्णन ही उपलब्ध होता है। मराठी साहित्य में शाहिर अज्ञानदास, तुलशीदास और मध्यकालीन बखर (जीवनी) साहित्य भी उपलब्ध हैं।

२. मध्यकालीन हिंदी-मराठी के ऐतिहासिक वीरकाव्य का मूल तत्व प्राचीन भारतीय पौराणिक साहित्य में दिखाई देते हैं। प्राचीन भारतीय संस्कृत ग्रंथों में वेद, पुराण, रामायण, महाभारत की कथाओं में पौराणिक वीर चरित्र नायक दिखाई देते हैं। इसी काव्य की परंपरा का विकसित रुप ऐतिहासिक वीरकाव्य है।

३. शिवाजी महाराज को लेकर हिंदी साहित्य के मध्यकाल में उनके समकालीन साहित्य लिखा गया हैं। परवर्तित काल में कम साहित्य लिखा होगा; परंतु आज उपलब्ध नहीं हैं। वहीं मराठी साहित्य में उनके समकालीन और उनके बाद भी मध्यकाल में जीवनियों की रचना हो चुकी हैं।

४. दोनों भाषाओं के मध्यकालीन साहित्य में शिवाजी महाराज के 'राजवंश' का वर्णन किया हैं। वह उत्तर भारत के क्षत्रिय राजपुत 'सूर्यवंशी' राजवंश के वंशज हैं। उत्तर भारत से वे दक्षिण में आकर यही स्थायी रहने लगे और दक्षिण प्रदेश के शासक बने।

५. दोनों भाषा के साहित्य में शिवाजी महाराज को श्रध्दावान राजा के रुप में वर्णित किया हैं। इसी दृष्टि से उनकी भवानी देवी, भगवान शिवजी, स्वधर्म, धर्मस्थान, रुढ़ी, परंपरा आदि पर सकारात्मक श्रध्दा थी।

६. मध्यकालीन साहित्य में शिवाजी महाराज के स्वाभिमान को वर्णित किया हैं। दोनों भाषा साहित्य में शिवाजी महाराज के स्वाभिमान वर्णन में आगरा दरबार की घटना का विस्तृत विवेचन किया है। दरबार में औरंगजेब बादशाह के सामने अपना सर नही झुकाया और न बादशाह के दरबारी नियमों का पालन किया था।

७. दोनों भाषा के साहित्यकारों ने शिवाजी महाराज के युध्दवीर, दयावीर, दानवीर स्वरुप को स्पष्ट किया है। युध्दभूमि से वे कभी हारकर भागे नहीं। शरणार्थी शत्रु के प्रति दया का भाव दिखाया है। उन्होंने प्रजा, सेना, सरदार, भिक्षूक, कवियों को दान दिया है।

८. दो भाषा के साहित्यकारों ने शिवाजी महाराज की पराक्रमिता और वीरता को दर्शाने के लिए अधिकतर अफजलखां वध, शाईस्ताखाँ के उपर छापा, आगरा दरबार, सुरत पर आक्रमण, सालहेरी युध्द आदि घटनाओं का वर्णन समान रुप से किया हैं।

९. दोनों भाषा के साहित्य में उनके नये युध्दतंत्र का वर्णन किया हैं। उनकी छापामारी, गनिम कावा, निषा युध्द के युध्दनीति को स्पष्ट किया हैं। समय और परिस्थिति के अनुरुप वे अपनी युध्दनीतियों का उपयोग करते थे।

१०. दोनों भाषा के मध्यकालीन साहित्य में शिवाजी महाराज को कुशल राजनीतिज्ञ के रुप में वर्णित किया हैं। वे राजनीति में साम, दाम, दंड, भेद का उपयोग करते थे। उनकी राजनीतिक निर्णय की गुढता को कोई भी शत्रु के समझ नहीं सका था।

११. मध्यकालीन दोनों भाषा साहित्य में शिवाजी महाराज को कुशल संघटक के रुप में वर्णित किया है। उन्होंने यवनों के विरुध्द असंघटित जनता को संघटित किया हैं। विभिन्न प्रदेश के सरदार और छोटे-छोटे राजाओं का भी संघटन तैयार किया था।

१२. दोनों भाषा के मध्यकालीन साहित्य में शिवाजी महाराज को हिंदू धर्म और संस्कृति के रक्षक रुप को प्रस्तुत किया हैं। वे मंदिर, धर्मग्रंथ, नामस्मरण रुढ़ी, परंपरा का रक्षण करते हैं।

१३. मध्यकालीन साहित्य में उन्हें अवतारी पुरुष के रुप में वर्णित किया है। हिंदी साहित्य में भगवान विष्णु के अवतार माना है तो मराठी साहित्य में भगवान 'शिवजी' का अवतार माना गया है। दोनों साहित्यकारों की परंपरागत दृष्टि इस वर्ण में दिखाई देती है। मध्यकालीन समाज और साहित्य में चरित्र नायक में 'राजा ईश्वर का अंश होता है' इस मान्यता को प्रस्थापित करने का प्रयास किया है।

१४. साहित्य में स्त्री के प्रति शिवाजी महाराज के आदरयुक्त दृष्टिकोण को प्रकट किया है। परंतु हिंदी साहित्य में शत्रु स्त्री के अंतरमन को आतंकित (भयग्रस्त) वर्णित किया हैं। इस प्रकार का वर्णन अनऐतिहासिक और काल्पनिक सिध्द होता है। शिवाजी महाराज ने स्वराज्य और शत्रु राज्य की स्त्रियों का हमेशा सम्मान किया हैं। मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज का स्त्री के प्रति पूजनिय दृष्टिकोण को दर्शाया है।

१५. दोनों भाषा के साहित्य में शिवाजी महाराज को बहुजन प्रतिपालक रुप में प्रकट किया है। वे गरिब, दलित, पीड़ित, शोषित, स्त्री, पुरुष, किसान और सभी प्रजा के पालक और रक्षक हैं।

१६. मध्यकालीन दोनों भाषा के साहित्य में शिवाजी महाराज के उदात्त विचार, भावों को उजागर किया है। वे समाज धर्म, राजनीति में उदात्य दृष्टिकोण रखते हैं। सभी धर्मों का समान रुप से आदर करते थे। राजनीति में कभी भी किसी को सर्वकालिक शत्रु नहीं बनाया हैं। शरणार्थी शत्रु को उदात्यभाव से क्षमा करते थे।

१७. मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज को आदर्श राजा के रुप में वर्णित किया हैं। उन्हें लोकतांत्रिक मूल्य स्वातंत्र्य, समता, बंधुता और

समान न्याय के प्रतिष्ठाता रुप को वर्णित किया हैं। स्वराज्य में सभी प्रजा के मुक्त रुप से अपने धर्मों के अनुसार जीवन यापन करने का अधिकार था।

१८. दोनों भाषा के साहित्य में शिवाजी महाराज के बहिरंग और अंतरंग स्वरुप वर्णन में अत्याधिक समानताएँ दिखाई देती हैं।

१९. दोनों भाषा के साहित्य में शिवाजी महाराज के स्वरुप को लेकर इतिहास की तुलना में अत्याधिक काल्पनिकता दिखाई देती है। हिंदी साहित्य में रायगढ़, नगाडे, तलवार के वर्णन में कल्पना का अंश दिखाई देता हैं। मराठी साहित्य में भी तलवार के वर्णन में किंवदंती दिखाई देती है।

२०. दोनों भाषा के साहित्य ने शिवाजी महाराज के श्रेष्ठ मानवीय गुणों का वर्णन प्रस्तुत किया हैं। उनमें, प्रेम, दया, दान, त्याग, सदाचार, नम्रता, समर्पण, ममता, संवेदना, कर्तव्यदक्षता, दुरदर्शिता आदि मानवीय गुणों का समुच्चय शिवाजी महाराज में दिखाई देता हैं।